UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178819

UNIVERSAL
LIBRARY

नीलोफ़र

[हास्यप्रधान सामाजिक उपन्यास]

लेखक

शौकत थानवी

लिप्यन्तरकार

नूरनबी अब्बासी

प्रकाशक

एन० डी० सहगल एण्ड सन्ज़

दरीबा कलां, दिल्ली।

प्रकाशक :
नारायण दत्त सहगल एन्ड सन्ज,
दरीबा कलाँ, दिल्ली ।

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण १९५९

मूल्य : छ रुपये पचास नये पैसे

आवरण : द्वारकाधीश

मुद्रक :
हरिहर प्रेस,
चावडी बाजार, दिल्ली ।

NEELOFAR SHAUKAT THANVI Rs. 6 50np.

१

****

शिहाब को पगडी तो खैर देनी पड़ी मगर टोपी कदमों पर रख कर दो कमरों और एक गुस्लखाने पर उसको कब्ज़ा जरूर मिल गया और अब वह फूला न समाता था कि आखिर खुदा ने उसकी भी सुन ली। खानाबदोश का दौर खत्म हुआ और अब वह भी घरवाला बन गया। जी हाँ, वह उन्हीं दो कमरों और एक गुस्लखाने को घर ही नहीं बल्कि दौलतखाना समझती था हालाँकि हाल यह था कि उस जहन्नुमी गर्मी में दिन तो ज्यों-त्यों कमरों के अंदर बसर करना ही पड़ता था मगर रात को चारपाई फुटपाथ पर निकालनी पड़ती थी—उस फ़ुट पाथ पर जो एक निहायत कुशादा (बहुत खुली) सड़क के किनारे था। उस सड़क पर गुज़रने वाली कारों की आँखों में घुस जाने वाली रोशनी और दिमाग को पाश-पाश कर देने वाले मोटरो के हार्न उसे फ़ुटपाथ पर भी रात गये तक सोने न देते थे। अलबत्ता वह अपने बिस्तर पर करवटें बदल-बदलकर दिल को समझाया करता था कि आज न सही कल सही, इन्हीं हालात में सो जाने की आदत पड़ जायगी। एकाध दिन तो उसे यह महसूस हुआ कि सड़क पर गुजरने वाली हर कार बस आई उसके सर पर और रौंदा उसको। मगर दो-चार दिन के बाद ही उसने कारो के गुज़रने पर पैर समेटना या गड़बड़ा कर उठना छोड़ दिया और अब वह इत्मिनान से उसी सड़क के

किनारे लेटा अजीब-अजीब बातें सोचा करता था : मसलन उसकी नज़र एक अज़ीमुश्शान कोठी के उस बोर्ड पर ज़रूर जम जाया करती थी जिस पर डाक्टर एम० ए० लतीफ़ी के नाम के साथ बेशुमार डिग्रियाँ लिखी हुई थीं। वह सोचा करता था कि इस मुख़्तसर-से खानदान को आखिर इतनी बडी कोठी की क्या जरूरत है ? एक तो इतनी बडी कोठी, उस पर तुर्रा यह कि उस कोठी के सब्ज़ाज़ार (उद्यान) इतने वसी (विशाल) कि ऐसी-ऐसी दो-चार कोठियाँ और भी बन सकती थी और रहने वाले उसमें गिनती के तीन-चार आदमी। खुद डाक्टर लतीफ़ी जिनको अपनी प्रैक्टिस चलने से ज्यादा इस बात की फ़िक्र रहती थी कि उनकी सौ फीसदी सफेद मूँछो का ताव किसी वक़्त भी ग़ैरमुतवाजिन (असंतुलित) न हो जाये। चुनाचे एक हाथ उनका हर वक़्त मूँछों को अमेठने मे मसरूफ़ नजर आता था। शिहाब को उनके मुताल्लिक यह फ़िक्र न जाने क्यों थी कि यह बेचारे आपरेशन करते वक़्त आखिर मूँछों पर ताव कैसे देते होगे जबकि उनका हाल यह था कि मोटर ड्राइव करते वक़्त भी वह मूँछों को न भूलते थे और मालूम होता था कि मूँछों के ही जरिये कार ड्राइव करते है। एक तो इस अजीमुश्शान कोठी के रहने वाले हुए यह डाक्टर साहब ; दूसरी उनकी बीवी थी जिनका नाम शिहाब ने 'उफ़्फ़ोह' रख छोड़ा था। वाकई मालूम यह होता था कि एक अजीमुश्शान लहमी (मांस का) पहाड़ है जिसमे जान पड़ गई है। यह बेगम साहबा कभी-कभी उस कोठी के सब्ज़ा-ज़ार पर शाम के वक़्त रखी हुई नज़र आती थी। एक निहायत खुश शक्ल-सी छरेरे बदन की साहबज़ादी भी सुबह तड़के घोड़े पर सवार कोठी से निकला करती थी। ब्रीचेस पहने, हाथ में नाज़ुक-सा चाबुक लिये, सर पर अंग्रेज़ी टोपी ओढ़े। मगर शाम को वही साहबज़ादी कभी शलवार-कमीस में, कभी साड़ी में और कभी-कभी ग़रारे मे इसी सब्ज़ाज़ार पर महवे-खराम (टहलती हुई) नज़र आया करती थीं। एक निहायत फ़िदवी (सेवक) क़िस्म के साहबज़ादे थे जो इसी सब्ज़ाजार पर उन्ही साहबजादी के पीछे-पीछे निहायत फ़िदवियाना (सेवा-भाव) अंदाज से फिरते हुए देखे जाते थे। उनके अलावा सफ़ेद वर्दी में काली पट्टियाँ बाँधे और पगड़ियों में पीतल के निशान लगाये कुछ बैरे और ख़ानसामे क़िस्म के लोग नजर आया करते थे। यह थी कुल आबादी उस कोठी

की और बस इतने ही लोग इतनी बड़ी कोठी में आबाद थे। अलबत्ता यह ज़रूर होता था कि आये दिन उस कोठी के इन्हीं सब्ज़ाज़ारों पर पार्टियाँ और दावतें हुआ करती थी और जिस दिन इस क़िस्म का कोई हंगामा होता था, शहाब की नींद और भी उचाट हो जाया करती थी : इसलिए कि रात गये तक मोटरों की आमदो-रफ़्त का सिलसिला जारी रहता था, और यह सिलसिला न भी जारी रहे तो भी बेहगम (बेसुर-ताल) क़हक़हों की आवाज़, रंग-बिरंगे क़ुमक़ुमों (बल्बों) की रोशनी और बर्तनों की झंकारें नींद को गायब कर दिया करती थी और वह करवटें बदल-बदलकर ज़िन्दगी के इसी नशेबो-फ़राज़ (उतार-चढ़ाव) पर ग़ौर करता रह जाता था कि अगर जिन्दगी का सही मफ़ूम (तात्पर्य) यह है जो इस कोठी में नज़र आ रहा है तो उस ज़िन्दगी को क्या कहा जायगा जो वह बसर कर रहा है और अगर असल ज़िन्दगी वह है जो वह बसर कर रहा है तो इस कोठी में जो ज़िन्दगी नज़र आती है उसका क्या नाम है ? और आखिर उसे इस नतीजे पर पहुँचना पड़ता कि यह ग़लत है कि इन्सान अशरफ-उल-मख़लूक़ात (सब प्राणियो मे श्रेष्ठ) है ; अलबत्ता यह हो सकता है कि इन्सानों में भी कुछ महज मख़लूक़ हैं और कुछ अशरफ़-उल-मख़लूक़ात।

आज भी डाक्टर लतीफी की कोठी के सब्ज़ाज़ार पर एक बहुत बड़ी दावत का एहतमाम (आयोजन) था। रात को आठ बजे से मोटरों का एक सैलाब उस कोठी की तरफ़ उमॅडना शुरू हुआ और उसकी उड़ाई हुई गर्द मे से शिहाब को जो उसका हिस्सा मिला वह हर मोटर के गुज़रने के बाद एक फुंकार मारकर मुँह और नाक मे घुसी हुई गर्द को उड़ाता रहा। हर मोटर के गुज़रने के बाद अपने तकिए झाड़ता रहा और यह शुग्ल रात के एक बजे तक मजबूरन उसे इख्तियार करना पड़ा। जब रात के एक बजे तमाम कारें रुख़्सत होगईं तो एक मरतबा उसने फिर बिस्तर और तकियों को झाड़ा ; सरहाने रखे हुए तौलिया से मुँह साफ किया और रूठी हुई नींद को मनाने के लिए लेट गया। यह तो उसको ख़बर नही कि कब उसकी आँख लगी मगर दो धमाकों के बाद जब वह चौंका है तो उसे महसूस यह हुआ जैसे अभी आँख लगी थी। उसकी बेदारी (जाग) के बाद एक फ़ायर उसके बिल्कुल क़रीब ही

हुआ और उसने देखा कि कोठी की चहारदीवारी पर से कोई धम से फाँदा है। साथ ही 'पकड़ना, जाने न पाये !' का एक ऐसा शोर कोठी के अन्दर से बुलन्द हुआ कि वह यकायक एक ही जस्त में उस फाँदने वाले के सर पर था मगर इससे कब्ल(पहले)कि वह उस पर क़ाबू हासिल करे, एक फ़ायर और हुआ और गोली उसके काँधे के पार थी। उसके बाद उसे कुछ पता नही कि क्या हुआ।

शिहाब ने जब होश की आँखें खोलीं तो वह पट्टियों में बंधा हुआ अस्पताल के एक बिस्तर पर पडा हुआ था और उसी कोठी वाले डाक्टर लतीफ़ी उस पर झुके हुए अपनी सफ़ेद मूँछों को अमेठने में मसरूफ़ थे। उनकी आँखों में मसर्रत की चमक थी जो उनकी ऐनक के शीशों को और भी चमका रही थी। शिहाब को होश में आता देख कर डाक्टर लतीफ़ी ने बडी यगानगत (अपनत्व) और मिठास से पूछा :

"कैसी तबियत है अब बरखुरदार ?"

शिहाब उन्हें गौर से देखकर रह गया। कुछ कह न सका तो पास ही खड़े हुए डाक्टर ने कहा, "बस अब यह बिल्कुल ठीक हैं, फ़िलहाल इनसे बात न कीजिये।" और नर्स को न जाने क्या इशारा किया कि उसने बढ़कर फ़ीडिग कप की टोटी शिहाब के मुँह से लगादी। अब शिहाब को इतना होश था कि उसने वह अर्क पी लिया जो उस फ़ीडिग कप में था और फिर अपने हवास में आकर कहा :

"यह अस्पताल है ?"

डाक्टर लतीफ़ी के कुछ कहने से पहले ही सर्जन ने कहा, "जी हाँ मिस्टर यह अस्पताल है जहाँ आप तन्दुरुस्त हो रहे है। फ़िलहाल आप आराम से लेटे रहिये ; ज़्यादा बात करना आपके लिए मुफ़ीद नही है।"

शिहाब को खुद भी चक्कर-सा आ रहा था। उसने आँखे बन्द करलीं और फिर जब आँखे खोली तो सर्जन और डाक्टर लतीफ़ी दोनों वहाँ से गायब थे। सिर्फ एक कामिनी-सी, सफ़ेद पोश नर्स एक कुर्सी पर बैठी कोई किताब पढ रही थी। शिहाब देर तक उसे देखता रहा, फिर उसने नर्स को किताब में मह्व पाकर खुद ही मुख़ातिब किया :

"मुझे प्यास मालूम होती है।"

नर्स ने किताब रखकर बग़ैर कोई जवाब दिये बाहर का रुख किया और फ़ौरन ही उस सर्जन के साथ कमरे में वापस आगई। सर्जन ने बड़ी शफ़कत (स्नेह) से मुस्कराते हुए कहा, "आपको प्यास मालूम होती है मिस्टर ? क्या पियेंगे आप, पानी या चाय ? मेरे ख़याल में आप फ्रूट ज्यूस पियें । डाक्टर लतीफ़ी आपके लिए निहायत शादाब फल लाये है, मैं अभी उनके लाए हुए सुर्ख माल्टों का अर्क आपको पिलवाता हूँ। जितना खून आपने बहाया है उससे ज़्यादा ये माल्टे पैदा करेंगे।"

इन सर्जन साहब ने डाक्टर लतीफ़ी को तो मना किया था कि मरीज़ से बातें न कीजिए मगर खुद निहायत बातूनी थे और ऐसी लच्छेदार बातें बनाते थे कि किसी तरह बातों का सिलसिला ही खत्म न होता था। नर्स उनकी बातें करता छोड़कर कब की जा चुकी थी और वह अभी तक माल्टो की शान में क़सीदा पढ रहे थे :

"इन माल्टों का रस खून-ही-खून होता है और होता ही क्या है ! इसी लिए तो मैने रेडब्लड माल्टों का तर्जुमा किया है, 'खूने-कबूतर' माल्टे या 'लहू लुहान' माल्टे। मैं तो यह कहता हूँ कि जिस खुशनसीब को ये माल्टे मयस्सर हों वह कुछ और खाये भी क्यों ? खुद मेरी गिज़ा आजकल सिर्फ माल्टों का रस ही होता है। चुनांचे देख लीजिये मैं खुद गोया एक क़िस्म का माल्टा बनकर रह गया हूँ।"

इस अर्से में नर्स माल्टों का रस फ़ीडिंग कप मे लेकर आगई थी, चुनांचे शिहाब ने माल्टों का रस पीकर इससे पहले कि डाक्टर साहब अपनी गुल अफ़शानी (पुष्प बिखेरना) शुरू करें, उनसे सवाल कर ही लिया :

"डाक्टर साहब मुझको हुआ क्या है ?"

सर्जन ने मुस्कराकर कहा, "आपको क्या होता, आपको वही हुआ है जो बहादुरों को होता है। आप अपनी जवानी और मर्दानगी के जोश में एक मुसल्लह (सशस्त्र) बदमाश पर फट पड़े थे और उस बुज़दिल ने आप पर गोली चला कर अपने लिए तो राहे-फ़रार निकाल ली मगर आप ही की वजह से वह अपने उस मक़सद में कामयाब न हो सका कि नीलोफ़र को ले जाता। आपने उस पर अचानक ऐसा छापा मारा कि वह आप पर फ़ायर करने के

बाद बस अपनी ही जान लेकर भागा और बेहोश नीलोफ़र को वहीं छोड़ गया।"

शिहाब ने कुछ याद करने की कोशिश करते हुए कहा, "नीलोफ़र ? नीलोफ़र कौन ?"

सर्जन ने हँसकर कहा, "कमाल है ! यानी आप नीलोफ़र को भी नहीं जानते ? डाक्टर लतीफ़ी की दुख्तरे-नेक अख्तर (सौभाग्यशालिनी सुपुत्री) नीलोफ़र। खैर अभी आप अपने दिमाग़ पर जोर न डालिये। आपके के लिए सिर्फ इतना ही मालूम हो जाना काफ़ी है कि आप निहायत खुशनसीब है कि वह गोली सिर्फ आपके शाने के पार हुई और बर वक़्त डाक्टरी इमदाद से आप खतरे से बाहर हो गये। मैंने भी आपको ब्लड-बैंक से मँगवाकर निहायत नजीबुत्तरफ़ैन (माता-पिता दोनों की ओर से शुद्ध) खून दिया है। डाक्टर लतीफी आपके लिए बेहद परेशान है। दिन में दो-दो और तीन-तीन मर्तबा आपके पास आते रहे और आज आपको होश में देखकर उनको इत्मिनान हुआ है। अच्छा अब आप आराम कीजिये। न बातें कीजिये, न दिमाग़ पर ज़ोर डालिये, बस खामोश लेटे रहिये।"

डाक्टर साहब ये हिदायात देकर चले गये और शिहाब ग़ौर करने लगा कि खामोश रहने के बाद गौर न करना क्योंकर मुमकिन है।

२

****

डाक्टर लतीफ़ी सुबह-शाम आते रहे; सर्जन लच्छेदार बातें बनाता रहा; नर्स किताब पढ़ती रही और शिहाब ज्यूस पी-पीकर सेहतयाब (नीरोग) होता

रहा । उसका ज़ख्म भर गया, कमज़ोरी भी दूर हो गई । पहले उसे बैठने की इजाज़त मिली, फिर खड़े होने की और फिर टहलने की । यहाँ तक कि आज डाक्टर लतीफ़ी उसे घर ले जाने के लिए आये थे और मूंछों पर ताव दे-देकर सर्जन की उस खास तवज्जो का शुक्रिया अदा कर रहे थे जो उसने शिहाब पर सर्फ़ की थी । नर्स ने बिल लाकर डाक्टर लतीफ़ी के सामने पेश कर दिया और डाक्टर लतीफ़ी ने नोटों की एक गड्डी निकालकर नर्स को देते हुए कहा :

"बाकी रकम मेहतर और वार्ड-बाइज़ को दे दीजियेगा ।"

शिहाब ने सर्जन से हाथ मिलाया, नर्स को ख़ुदा हाफ़िज़ कहा और डाक्टर लतीफी के साथ उनकी पैकार्ड में अपने दो कमरों और एक गुस्लखाने के सामने से गुजरता हुआ उसी कोठी में पहुँच गया जिसके सब्ज़ाज़ारों की हमाहमी (कोलाहल) उसकी नींद उचाट कर दिया करती थी । इस वक़्त भी इन्हीं सब्ज़ाजारों में से एक निहायत खूबसूरत किते (भाग) पर नशिस्त (बैठक) का एहतमाम था । अज़ीमुश्शान बेगम साहबा रखी हुई थीं और नीलोफ़र हल्के कासनी रंग के गरारे सूट में, अपने तर्शे हुए पेचीदा बालों में उसी रंग का चौड़ा रिबिन बाँधे गोया डाक्टर लतीफ़ी और उनके साथ आने वाले मेहमान की मुंतज़िर ही थी । एक कुर्सी पर वही फ़िदवी साहबज़ादे फ़ास्तई रंग के रेशमी सूट में बैठे सिकुड़ रहे थे कि डाक्टर लतीफ़ी ने पोर्च में गाड़ी को ले जाकर रोका । नीलोफ़र गाडी की तरफ़ बढी, वह साहबज़ादे कुर्सी से कसमसाते हुए उठे और भारी-भरकम बेगम साहबा ने अपने जिस्म में एक जलज़ले की कैफ़ियत पैदा करके गालिबन घूमकर, आने वालों को देखने की नाकाम कोशिश की । डाक्टर लतीफ़ी ने कार से बरामद होते ही नीलोफ़र से कहा :

"लो डार्लिंग, तुम्हारे मेहमान को मैं ले आया । देख लो, सूरत से तो यह पता ही नहीं चलता कि अस्पताल से आ रहे हैं । मालूम होता है कि किसी सेहतअफ़ज़ा (स्वास्थ्यप्रद) पहाड़ी मुकाम से तशरीफ़ आवरी हुई है ।"

फिर शिहाब से मुखातिब होकर कहा, "शिहाब, यह है मेरी बेटी नीलोफ़र और यह हैं मेरे भांजे मि० फ़रीद और वह रहीं बेगम साहबा उनको जाकर सलाम करो ।"

फिर मूंछों पर इस फ़ख्र से ताव दिया गोया अपना तार्रुफ़ (परिचय) भी

करा रहे हैं कि मैं हूँ इन अज़ीमुश्शान बेगम का शौहर, दाद दो मुझको। शिहाब ने निहायत शाइस्तगी से नीलोफ़र को सलाम किया; फ़रीद से हाथ मिलाया और आगे बढ़कर बेगम साहबा को आदाब बजाया तो बेगम साहबा ने अपने फूले-सूजे रुखे-रोशन पर तबस्सुम (मुस्कान) की कैफ़ियत पैदा करके कहा, "जीते रहिये मियाँ। खुदा का शुक्र है कि आप तन्दुरुस्त होकर अस्पताल से वापस आ गये। तबियत तो अब बिल्कुल ठीक है ना ?"

डाक्टर लतीफ़ी ने मूँछों से शुग्ल फ़र्माते हुए कहा, "बिल्कुल अच्छे हैं, बल्कि मेरा खयाल है कि पहले से कुछ ज़्यादा ही वज़न हो गया होगा और यह वज़न अभी और बढेगा बशर्ते कि इनको चाय, पानी, नाश्ता, खाना सब कुछ ठीक वक़्त पर मिलता रहे। और मै देख रहा हूँ कि आज पहला ही दिन है और चाय का वक़्त बड़ी खूबसूरती से टाला जा रहा है।

नीलोफर ने बड़े अंग्रेज़ी दुलार के साथ कहा, "डैडी, अभी तो आप आये है और आते ही चाय में देर की शिकायत कर दी। वह देखिये आ गई चाय।"

और उसी वक़्त दो-तीन बैरे आगे बढ़े और निहायत सलीक़े से नाश्ता दरम्यानी मेज़ों पर चुन दिया और चाय के बर्तन लगा दिये। डाक्टर लतीफ़ी ने शिहाब से कहा, "भई शिहाब, यह खान-ए-बेतकल्लुफ़ है और यहाँ 'आराम से हैं वो जो तकल्लुफ नहीं करते।' अब आप बजाय अपनी तीमारदारी कराने के खुद ही हाथ की सफ़ाई दिखाइये।"

यह कहकर खुद भी एक प्लेट लेकर उठे। उस प्लेट मे हर चीज़ काफ़ी मिक़्दार में लेकर प्लेट अपनी बेगम साहबा की खिदमत में पेश कर दी। फिर दूसरी प्लेट में अपने लिए कुछ चीज़ें लीं। शिहाब ने नाकल्लुफ़ाना बेतकल्लुफी के साथ अपनी प्लेट में चन्द चीज़ें उठा ली। नीलोफ़र भी अपनी लम्बी-लम्बी उँगलियों में चमचा लिये बेमौसम के सब्ज़ तले हुए टमाटर अपनी प्लेट में ले रही थी; मगर फरीद साहब अभी उस मेज़ से ज़रा दूर महज़ प्लेट लिये उसे बजा रहे थे कि डाक्टर साहब ने उनको गौर से देखते हुए कहा :

"फ़रीद साहब, अगर आप शिहाब की सेहतयाबी की खुशी मे यह दफ़ बजा रहे है तो खैर वर्ना आप भी इसको अपना ही घर समझें।"

फ़रीद साहब ने कुछ बल खाते हुए कहा, "जी हाँ, जी हाँ। मैं दरअसल

इस वक़्त ज़रा हल्का-सा नाश्ता करूँगा।"

नीलोफ़र ने बड़ी मतानत (गंभीरता) से कहा, "तो एकाध फल उठाकर सूँघ लीजिये।"

डाक्टर साहब ने क़हक़हा लगाकर, मूँछों पर ताव देते हुए कहा, "खूब, खूब कहा! वाक़ई इससे ज़्यादा हल्का नाश्ता आपके लिए और क्या तजवीज़ हो सकता है।"

अजीमुश्शान बेगम साहबा ने फ़र्माया, "शिहाब मियाँ, यह लीजिये यह केक घर ही का बना हुआ है।"

इससे पहले कि शिहाब बढ़कर केक ले डाक्टर साहब ने उसे रोकते हुए कहा, "कोई जबरदस्ती नही है कि चूंकि यह केक घर ही का बना हुआ है लिहाजा पाकिस्तानी मस्नूआत (कृत्रिमता) की सरपरस्ती का तमाम जज़्बा इसी को पसंद करने पर सर्फ़ कर दो। आपको मालूम नही शिहाब मियाँ, रफ़्ता-रफ़्ता खुद ही मालूम हो जायेगा कि हमारी बेगम साहबा अपनी पसंद का क़ायल सभी को करना चाहती है। अगर आपने यह केक खाया और खाकर ज़रूरत से ज़्यादा यानी मुशाइरे की किस्म की दाद न दी और फिर मरहमत फ़रमाइये (प्रदान कीजिए) न कहा तो इनके दिल में आपकी तरफ से शिकायत पैदा हो जायेगी।"

बेगम साहबा ने दो-तीन झटके लिये, मालूम हुआ कि हँस रही है, "यानी ख्वामख्वाह भी। मै तो सिर्फ़ इसलिए कह रही थी कि यह ताज़ा है।"

डाक्टर साहब ने एक सैंडविच खाकर मूँछों का ज़ाविया (कोण) दुरुस्त करते हुए कहा, "गोया बाकी तमाम चीजे बासी हैं। ये सैंडविच सिकंदरे-आजम की मेज से उठे हुए है, ये पेटीज रुडयर्ड किप्लिंग के उस नाश्ते से बची हुई है जो उसने 'मशरिक़ मशरिक़ है और मग़रिब मग़रिब और ये दोनों कभी नहीं मिल सकते।' वाला सच बोलने के बाद किया था और ये केले के कचालू अल्लामा 'इक़बाल' ने उस दिन खाये थे जब यह शेर कहा था कि :

मोती समझ के शाने-करीमी ने चुन लिये,
क़तरे जो थे मिरे अरक़े-इनफ़आल के।

बेगम साहबा ने आजिज़ आकर कहा, "तौबा है आपसे भी। मेरा मतलब

तो यह था कि अभी तक यह केक गर्म है, इस क़द्र ताज़ा है।"

डाक्टर साहब ने फिर मूँछों पर ताव दिया, "बेगम साहबा याद रखिये कि हर ताजा चीज़ खाने वाली नही हुआ करती। महज ताजगी कोई ख़ूबी नहीं है, ज़ायका भी होना चाहिये और आपकी इत्तला के लिए मैं अर्ज़ करना चाहता हूँ कि यह केक इतना ताव खा गया है कि इसमें तल्खी पैदा हो गई है।"

नीलोफ़र ने कहा, "डैडी की तरकीब यह भी होती है कि जो चीज़ खुद पसंद आजाये, उसकी बेहद बुराई करते हैं ताकि दूसरे उसे छोड़ दें।"

बेगम साहबा ने कहा, "मैं जानती हूँ, यही तरकीब हो रही है। अब तक तीन पीस खुद खा चुके है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "वह तो मैंने इसलिए खाये कि पहला पीस सख्त गर्म था जल्दी से निगल गया। दूसरा पीस खाकर कुछ शक-सा हुआ कि यह जल गया है। लिहाज़ा तीसरा पीस खाकर उस शक की तस्दीक़ करनी पड़ी।"

बेगम साहबा ने हँसकर कहा, "अब चौथा पीस खाकर यह अंदाजा कीजिये कि राय में तब्दीली का तो कोई इमकान नही।"

नीलोफर ने शिहाब की तरफ मुतवज्जे होते हुए कहा, "आप तो सचमुच कुछ नहीं खा रहे हैं; क्या आप भी ज़रा हल्का नाश्ता करते है?"

शिहाब ने नीलोफर के पसन्दीदा मटर के दो-तीन चमचे अपनी प्लेट में लेते हुए कहा, "मैं तो अपने नजदीक कुछ भारी नाश्ता कर रहा हूँ। ये मटर बहुत लजीज है।"

इसी किस्म की खुशगवार बातों के बाद जब नाश्ता खत्म हो गया तो डाक्टर साहब ने इत्मिनान से बैठकर कहा :

"भई शिहाब साहब, आप अगर इसको रस्मी बात न समझें तो मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता हूँ कि मुझे कतअन नहीं मालूम कि आप कौन हैं। तहकीकात से सिर्फ इतना पता चलता है कि सामने वाली कोठी का एक हिस्सा हाल ही में आपने किराये पर लिया है। आपके मालिक-मकान से सिर्फ़ यह मालूम हो सका कि आप गालिबन तालिबेइल्म (विद्यार्थी) हैं। फिर आपके मुलाज़िम से मालूम हुआ कि आपका वतन दरअसल लखनऊ था और तक़्सीमे-मुल्क़ (देश-विभाजन) के बाद से आप लाहौर ही को अपना वतने-सानी बनाये हुए हैं और

अपनी तालीम जारी रखने के लिए किसी अख़बार के दफ़्तर में भी काम करते हैं। ख़ैर, ये तमाम बातें तो अब आपसे मालूम हो जायेंगी, मगर आप सिर्फ़ मेरे ही नही बल्कि इस खानदान के मोहसिन (उपकारी) भी है।"

शिहाब ने वाक़ई कुछ महज़ूब (लज्जित) सा होकर कहा। "काश मुझको अपने उस एहसान की खबर भी होती। अस्पताल में डाक्टर साहब ने इशारतन कुछ कहा ज़रूर था मगर तफसीली तौर पर मुझे ख़ुद नहीं मालूम कि यह क़िस्सा था क्या।"

डाक्टर साहब ने कहा, "वह तमाम तफ़सीलात तो अब आपको मालूम होंगी। इस वक़्त तो मुझको सिर्फ यह कहना है कि आप ख़्वाह कोई भी हों अब आप हममें से है--इसी खानदान के एक फ़र्द।"

शिहाब ने रस्मन नही बल्कि वाकई शुक्रगुज़ारी के साथ कहा, "जिसका दुनिया में कोई न हो, वह इन शफ़कत आमेज (स्नेहयुक्त) अल्फ़ाज़ को सुनकर जिस कद्र खुश हो सकता है, उसका अंदाज़ा सिर्फ़ मैं ही कर सकता हूँ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "आपको गालिबन यह भी न मालूम होगा कि आपका मुलाजिम और आपका तमाम सामान उस मकान से इस मकान में आ चुका है। मैं चाहता हूँ कि जो कमरे मैने आपके लिए ठीक किये हैं वह आप चलकर देख लीजिये ताकि उनमे जो कोई कमी रह गई हो वह मैं आपसे मालूम कर लूं।"

शिहाब को डाक्टर लतीफ़ी ने इसका मौका भी न दिया कि वह इस इन्तेकाले-मकानी (मकान-परिवर्तन) पर उनसे किसी क़िस्म की बात करता। जो सवालात उसके ज़हन में पैदा हो सकते थे, उनके जवाब में डाक्टर लतीफ़ी खुद ही तक़रीर जारी रखते हुए उन कमरों में पहुँच गये जो शिहाब के लिए आरास्ता किये गये थे और जिनकी आरास्तगी (सजावट) में डाक्टर लतीफ़ी ने अपनी उलुलअज़्मी (दृढ़ संकल्प) का पूरा सबूत दिया था। शिहाब का तमाम सामान बंधा हुआ एक तरफ़ रखा था और ये कमरे निहायत क़ीमती और नफ़ीस सामान से आरास्ता थे।

३

****

ख्वाहमख्वाह के तकल्लुफ में पडने और इन्कार व इसरार (अस्वीकृति व आग्रह) का बाब खोलने के बजाय शिहाब ने यही मुनासिब समझा कि अगर डाक्टर लतीफ़ी की यही ख्वाहिश है कि वह यहाँ रहे तो दो-एक दिन मेहमान के तौर पर रहकर वह मुनासिब व खूबसूरत तरीके पर उनसे इजाज़त हासिल करके यहाँ से चला जायेगा। यहाँ जो शाहाना इन्तेजामात उसके लिए किये गये थे वह उसे कुछ अपनी औकात से बाहर नजर आये। बैठने के कमरे में आला दर्जे की ईरानी कालीन पर निहायत कीमती सोफे और दूसरा फर्नीचर था। सोने के कमरे में एक तरफ जो मसहरी उसके लिए आरास्ता की गई थी, वैसी मसहरियाँ उसने फ़िल्मों में तो देखी थी मगर उन पर सोने का कभी इत्तेफाक नही हुआ था। मसहरी क्या थी मालूम होता था किसी मुर्शिद की दरगाह है। उसी कमरे में दूसरी तरफ लिखने की मेज़ थी जिस पर निहायत कीमती स्टेशनरी सजी हुई थी और निहायत खूबसूरत रेक किताबों से पुर थे। इसी कमरे से मिला हुआ एक छोटा-सा कमरा था जिसमें कपड़ों की अजी-मुश्शान अलमारी थी। ड्रेसिंग टेबल भी ऐसी थी जैसी फिल्मी हीरोइन की होती है। इस ड्रेसिंग टेबल पर क्या कुछ न था : तरह-तरह के तेलों की हसीनो-जमील शीशियाँ, क्रीम, स्नो, पावडर, शेविंग का तमाम सामान, इत्र की छोटी-बड़ी कई शीशियाँ। उस कमरे के बाद ही वह गुस्लखाना था जिसमें कम से कम शिहाब का तो जी चाहता न था कि किसी किस्म की कोई गुस्ताखी करे। वह तक़्सीमे-मुल्क से पहले खुद एक खाते-पीते घराने का लडका था। अल्लाह का दिया खुद उसके घर में सब कुछ मौजूद था। मगर जो तक़ल्लुफ़ात यहाँ उसको नज़र आये वह उसको अपने अच्छे दिनों में भी हासिल न थे और अब तो

महाजिराना (शरणार्थी की-सी) ज़िन्दगी ने उसे फ़ुटपाथ पर सोना तक सिखा दिया था। अब वह उस नाज़ो-नेम का भला क्या तसव्वुर कर सकता था ? हद यह है कि जब रात के खाने से फ़ारिग होकर वह सोने के लिए आया तो उस मसहरी पर जाने से पहले कई मर्तबा हिचकिचाया और मुसलसल उसका दिल उससे यही कहता रहा, 'अयाज क़द्रे ख़ुद बशनास' (अयाज, अपने अस्तित्व को स्वय पहचान) मगर आखिरकार उसे ख़ुद अपने दिल को डाँटना पड़ा कि ऐसा भी क्या एहसासे-कमतरी। अब एक बड़े आदमी के मेहमान बन ही गये हो, तो जब तक मेहमान हो अपने को मेजबान के मेयार (स्तर) पर लाने की कोशिश करो। मगर इसके बावजूद रात भर उस मसहरी पर उसको यह एहसास करवटें बदलवाता रहा कि इत्तेफाक़ (संयोग) ने उसके साथ यह अजीब मज़ाक़ किया है। मालूम नहीं कब उसकी आँख लग गई और सुबह उस वक़्त बेदार हुआ जब ख़ुद उसका मुलाज़िम कय्यूम बिस्तर की चाय लेकर कमरे मे दाखिल हुआ। उसने बेदार होकर पूछा :

"क्या बात है कय्यूम ?"

क़य्यूम ने उस मसहरी ही का एक तख़्ता खेंच कर चाय की ट्रे रखते हुए कहा, "बिस्तर की चाय है साहब।"

शिहाब ने हैरत से क़य्यूम को देखते हुए कहा, "भई तुमको तो मालूम है कि मैं यह बिस्तर-विस्तर की चाय नही पीता।"

क़य्यूम ने बड़ी सादगी से कहा, "मगर यहाँ तो पिलाई जाती है साहब। आप यह चाय पीकर ग़ुस्ल कर लीजिए। फिर ब्रेकफ़ास्ट के लिए खाने के कमरे में जाना होगा।"

शिहाब ने चाय का घूँट लेते हुए कहा, "मगर कय्यूम, तुमने भी कुछ न कहा कि आख़िर हमारा मकान उस मकान से क्यों उठाया जा रहा है ?"

कय्यूम ने जवाब दिया, "मैं क्या कहता साहब, जब ख़ुद डाक्टर साहब वहाँ तशरीफ़ ले गये, अपने सामने सामान बँधवाया, मुझको एक अलग क्वार्टर दिया, आपके लिए ये कमरे ठीक कराये और साहब मेरी तो ऐसी ख़ातिर यहाँ हुई है कि मैं क्या कहूँ। डाक्टर साहब और बेगम साहबा बराबर मुझसे पूछती रहती थीं कि तुमको कोई तकलीफ़ तो नहीं है। यह देख लीजिए मेरे कपड़े

डाक्टर साहब ही ने दर्ज़ी बुलाकर सिलवाये हैं।"

शिहाब ने कहा, "ख़ैर जो कुछ हुआ वह तो होगया, मगर सामाम लाने के बाद अपना ही ताला लगाया है ना अपने कमरों मे ?"

कय्यूम ने कहा, "अपने कमरे कैसे साहब, उनका तो डाक्टर साहब ने हिसाब भी कर दिया और मालिक-मकान से कह दिया कि अब उन कमरों की ज़रूरत नही है।"

शिहाब ने चौककर कहा, "ज़रूरत कैसे नही है, आखिर यहाँ से जाकर रहेगे कहाँ ? तुमको तो मालूम है कि कितने दिन की दौड़-धूप के बाद यह सर छुपाने की जगह मिली थी।"

कय्यूम ने कहा, "साहब, अब आपको डाक्टर साहब जाने न देंगे। वह मुझसे कह चुके है कि तुम्हारे साहब को अपना मकान होते हुए किराये के मकान की ज़रूरत नही है।"

शिहाब ने कुछ परेशान होकर कहा, "भई, तकल्लुफ में तो ये बातें कही जाती है मगर तुम खुद गौर करो कि क्या मैं यह गवारा कर सकता हूँ कि हमेशा के लिए यहाँ रह जाऊँ ?"

क़य्यूम ने कहा, "अब यह तो आप जानें, मगर डाक्टर साहब आपको जाने न देंगे चाहे देख लीजियेगा।"

शिहाब कुछ अजीब चक्कर में था और उसको रह-रहकर एक चक्कर के बाद दूसरा चक्कर आ रहा था। मसलन उसने कय्यूम से कहा कि मेरे बक्स से एक जोड़ा कपड़ों का निकाल दो ताकि मैं गुस्ल करके पहन लूँ। तो उसने कहा कि वह सब कपड़े तो मुझको मिल गए है। आपके लिए कपड़े इस अल्मारी में मौजूद है। वह चकराकर अल्मारी की तरफ बढा और अल्मारी खोलकर उसे एक नया चक्कर आगया। इतने बहुत से कपड़े ! इतने कीमती कपड़े ! दर्जनों कमीसे, दर्जनों कुर्ते, दर्जनों पाजामे, बनियानें, रुमाल, मोज़े कई सूट टँगे हुए है, कई शेरवानियाँ हैं, कई बुशशर्टें है। नीचे के खानों में जूतों की एक कतार-की-कतार है। उसने घबराकर अल्मारी बन्द कर दी और अब वह वाक़ई सर थाम कर ड्रेसिंग टेबल के सामने वाली तिपाई पर बैठ गया। उसके ज़हन में हर ज़ाविये से यही सवाल उभर रहे थे कि यह सब क्या है ? क्यों है ? किस वास्ते है ? आखिर कय्यूम ने उसको चौंकाया :

नीलोफ़र जवान-उल-उम्र, शादी के क़ाबिल आप देख चुके हैं लिहाज़ा मुमकिन है कि आपके ज़हन में यह खयाल पैदा हो कि शायद मैंने उसके लिए आपका इन्तखाब किया है। जी नहीं, यह सवाल इसलिए पैदा नही होता कि नीलोफ़र के लिए किसी के इन्तखाब (चयन) का मुझको कोई हक नही है। यह इन्तेखाब उसे खुद करना है। मेरी बेलौसी (निस्स्वार्थता) का अन्दाज़ा आपको इससे हो सकता है कि अगर मुझे आपसे यह मालूम हो जाय कि आपको किसी और लड़की से दिलचस्पी है, या आपकी कही मँगनी या विवाह हो चुका है या आप शादीशुदा हैं तो भी मेरी आपके साथ वाबस्तगी (सम्बन्ध) में कोई फ़र्क पैदा न होगा। मै तो आपके साथ दरअसल इसलिए वाबस्ता हुआ हूँ कि मैं अब तक तन्हा था और जिस क़िस्म का साथी अपने लिए चाहता था, वह आप हैं। आपको नही मालूम कि मेरे चारों तरफ साजिशों के कितने जाल बिछे हुए है। क़ुसूर मेरा सिर्फ़ यह है कि मेरे पास चार पैसे है और इस दौलत के अलावा इतनी अक़्ल भी है कि मैं अपने और अपने खानदान पर मुहब्बत छिड़कने वालों के मुतल्लिक़ अंदाज़ा कर लेता हूँ कि ये मेरे नहीं बल्कि मेरी दौलत के जाँनिसारों में से हैं। मेरे इसी अंदाज़े ने दोस्त तो मेरे लिए कोई पैदा न किया अलबत्ता दुश्मनों की कोई कमी नहीं। अजीज़ सब ग़ैर बन चुके हैं और उन गैरों ने वाक़ई मेरे चारों तरफ़ साज़िशों के जाल फैला रखे हैं। उस रात का वाक़्या भी इसी क़िस्म की एक साज़िश का नतीजा था जो मैं आपको बाद में किसी वक़्त बताऊँगा। बहरहाल फ़िलहाल आप अपने को ख्वाह मेरा बेटा समझें, छोटा भाई समझें, दोस्त समझें, जो चाहे समझें मगर इस घर को और मुझको अपना समझ लें ताकि मुझे यह तकवियत (सामर्थ्य) हासिल हो जाये कि मेरा भी कोई है।" डाक्टर लतीफ़ी ने मुहब्बत से शिहाब का हाथ पकड़ लिया और शिहाब ने मुतास्सिर होकर सिर्फ़ इतना कहा :

"मैं आपका हूँ।"

४

****

ख्वाह यह डाक्टर लतीफी का खुलूस (मैत्रीभाव) हो या उनकी सहर-बयानी (बोली का जादू), बहरहाल शिहाब के ज़हन पर जो अजनबियत और मगायरत (दूरत्व) का एक बोझ-सा था, वह आखिर हल्का होगया और अब उसको महसूस होने लगा कि गोया जो गोली उसके शाने के पार हुई थी उससे दरअसल वह मर चुका है और मरजाने के बाद गरीके रहमत (स्वर्गवासी) होकर उस जन्नत मे आगया है जहाँ उसकी जिन्दगी ही कुछ-की-कुछ बनी हुई है। जिन्दगी का जो मेयार इख्तामे-तालीम (शिक्षा-पूर्ति) और फिर मुलाजमाना उरूज पर पहुँच जाने के बाद भी उसके वहमो-गुमान में न आ सकता था, वह उसे यहाँ हासिल था। चन्द दिन के आराम के बाद उसने सिलसिल-ए- तालीम तो फिर शुरू कर दिया था मगर डाक्टर लतीफ़ी की तरफ़ से उसे अब यह इजाजत न थी कि वह अपने तालीम के अखराजात (खर्च) पूरे करने के लिए अखबारों की कालम-नवीसी करता फिरे। उसने लाख कहा कि यह मआशी (आर्थिक) ज़रिया होने के अलावा खुद उसका ज़ौक़ भी है, मगर डाक्टर साहब की इस बात का कोई जवाब न था कि इस ज़ौक़ की तकमील इस तरह भी हो सकती है कि घर बैठे तसनीफ़ो-तालीफ़ (लेखन-कार्य) करो, अदबी रिसाइल (साहित्यिक-पत्रिकाओं) के लिए लिखते रहो। बहरहाल इस मजबूरी के लिए यह काम न करोगे तो तालीम के अखराजात कहाँ से पूरे होगे, यह शुग़्ल जारी नही रह सकता। डाक्टर लतीफ़ी को यह भी अदाजा हो चुका था कि शिहाब निहायत गय्यूर-नफ्स (गैरतमंद) नौजवान

है और ख्वाह उसको कैसी ही ज़रूरत हो वह कभी अपनी ज़रूरत का इज़हार नहीं कर सकता, न उसकी किसी माली इआनत (मदद) को क़ुबूल कर सकता है। उसकी तरकीब भी डाक्टर साहब के ज़रखेज़ (उपजाऊ) दिमाग़ ने यह निकाली कि एक दिन शिहाब को पकड़कर फिर अपने दफ़्तर वाले कमरे में बन्द कर लिया और उससे कहा :

"देखिए बन्दापरवर, आपकी ग़ैरत और हम्मियत (लज्जा) ने मेरा तो सच पूछिये, नाक में दम कर दिया है। आखिरकार अब मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि आप कोई इआनत तो कुबूल करेंगे नहीं ख्वाह अपनी अदना-से-अदना ज़रूरतों के लिए भी आपको कितना ही परेशान क्यों न होना पड़े। बहरहाल अब मैंने एक तरकीब निकाली है कि जो कुछ मैं आपके लिए कर चुका हूँ या जो कुछ मैं अब आपके लिए करूँ उसको आप कर्ज़ समझिये और यह मेरा वादा रहा कि उस कर्ज की पाई-पाई मैं वसूल कर लूगा। मगर शर्त यह है कि आप मुझसे एक और क़र्ज़ लेकर एक दवाखाना खोलदें। यह तो आपको मालूम हो ही चुका है कि इस शहर में मुझसे ज़्यादा प्रैक्टिस शायद किसी और डाक्टर की नही है। शहर के बड़े-बड़े केमिस्ट चाहते हैं कि मै उनकी सरपरस्ती करूँ, उनसे मुँह माँगा कमीशन मुकर्रर करलूं और मेरे नुस्खे उन्ही के यहाँ जाया करें। मगर मैंने अब तक यह नहीं किया और मेरे मरीज़ों को यह आज़ादी रहती है कि वह जहाँ से चाहें नुस्ख़ा बँधवायें। मगर अब आप मेरी सरपरस्ती में, मुझ ही से क़र्ज लेकर दवाखाना खोल दें। इस कारोबार में जो फायदा है उसका भी मुझको अंदाज़ा है। मै जानता हूँ कि जो रुपया आप मुझसे कर्ज़ लेंगे वह बहुत जल्द अदा कर देंगे। और इस तरह चलते हुए दवाखाने के मालिक बनकर अपनी खुदमुख्तारामा ज़िन्दगी भी बसर कर सकेंगे। मैं आपके दवाखाने के लिए मँझे हुए कम्पाउण्डरों और दूकानदारों का बन्दोबस्त भी कर दूंगा। चंद दिन खुद निगरानी करूँगा, उसके बाद आप खुद उस दवाखाने के नशेबो-फराज़ से वाकिफ़ होजायेंगे। रह गये आपके तालीमी मशागिल, उनमें इस दवाखाने से कोई रुकावट पैदा न होगी।"

शिहाब इस तजवीज़ की सोलह आने ताईद में था ; उसने कहा, "तालीमी मशागिल से तो मै अब फ़ारिग ही होने वाला हूँ । अगले महीने इम्तेहान देकर सिर्फ नतीजे का इन्तेजार रह जायेगा ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "बस तो फिर ठीक है । मै दवाखाने का बन्दोबस्त करता हूँ । अपने मतब का ही एक हिस्सा दवाखाने के लिए खाली किए देता हूँ और खाली ही क्या करना है, वह खाली तो पहा डी है । मैं बाक़ायदा आपने नाम एक चैक काट कर दवाखाने के लिए फर्नीचर बनवाता हूँ । दवाओ की फ़राहमी वगैरा मे एक महीना तो लग ही जायेगा, उसके बाद आप बैठिये यह दवाखाना लेकर ।"

शिहाब ने कहा, "मगर इस तरह आपकी यह उसूल-शिकनी तो बहरहाल होगी कि अब तक आप किसी दवाखाने की सरपरस्ती न करते थे ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह तो मैं इसलिए करता था कि खुद अपना दवाखाना खोलना चाहता भी तो न खोल सकता ; इसलिए कि मेरे पास उसका सँभालने वाला कोई न था । अब तुम मुझको मिल गये हो और मेरी यह ख्वाहिश है कि तुम्हारा कोई मुस्तकिल और मेयारी कारोबार हो तो यह दवाखाना क्यों न खोलूँ । मुझे इसका हक़ है कि अपना ज़ाती दवाखाना खोल लूँ । यह हक मैं तुमको इसलिए दे रहा हूँ कि एक तो मै अपनी प्रैक्टिस के साथ-साथ दवाखाने को सँभालने का वक़्त नहीं निकाल सकता, दूसरे तुम यह सवाल कर सकते हो कि अब तक मैंने यही हक़ किसी और को क्यों न दिया । इसका जवाब यह है कि अब तक मुझको कोई ऐसा आदमी न मिल सका जो मुझको वाक़ई अज़ीज़ भी हो । और तुम मुझको उसी तरह अज़ीज़ हो जैसे अल्लाह ताला ने मुझको औलादे-नरीना (पुरुष संतान) अता करदी है ।"

शिहाब के लिए इस बेसाख्ता खुलूस के बाद अब कोई गुजाइश न थी कि वह कतराने की कोशिश करे । सिवाय इसके कि उसने गर्दन झुकाकर और खुद अपने जज्बात पर काबू रखकर बमुश्किल तमाम सिर्फ़ यह कहा, "मुझसे ज़्यादा खुशक़िस्मत और कौन होगा जिसको आपके ऐसे शफ़ीक़ बुज़ुर्ग मिल गये ।"

डाक्टर साहब ने अपना दिल खोलकर शिहाब के सामने रखते हुए कहा,

"मेरे पास शिहाब मियाँ, शफकत की भी कभी कमी न थी; मगर मुझको अब तक इस शफ़क़त का कोई अहल न मिल सका । जो कोई मेरे करीब आया, उसकी नजर मेरी दौलत पर थी । मुझ पर जानें निसार करने वालों की कभी कमी न रही । मेरे पसीने पर अपना खून बहाने वाले भी बहुत-से नज़र आये मगर मैंने बहुत ही जल्द उनके ज़र्फ को परख लिया और वह सबै मुझसे ज़्यादा मेरी तिजोरी और मेरे बैंक-बैलेन्स के परिस्तार (पूजक) साबित हुए । तुम माशा-अल्लाह समझदार आदमी हो, इतना तो तुमको भी मालूम होगा कि एक साहबे-हैसियत के रिश्तेदार भी कुछ ज़्यादा ही होते है । चुनाचे मेरे भाई-बन्द भी बेशुमार हैं; मगर ये सब बिरादराने-यूसुफ है कि—बेच ही डालें जो यूसुफ सा बिरादर पायें । हद यह है कि इसी क़िस्म के एक अजीजे-करीब ने मुझ पर अपने बेपायाँ खुलूस और अपनी बेलौसी का ऐसा सिक्का जमाया कि बाव-जूद हर वक़्त चौकन्ना रहने के मैं धोखा खा ही गया और मैंने उनको और भी क़रीब लाने के लिए, उनके साहबज़ादे को इस खयाल से अपने पास रख लिया कि नीलोफर के लिए उससे बेहतर वर मुझको न मिल सकेगा । उन बरखुरदार को मैंने अपनी मर्जी के मुताबिक तालीम दिलवाई, विलायत भेजा और विलायत भेजने से कब्ल यह हिमाकत कर गुज़रा कि महज़ इस खयाल से कि यह साहब-जादे उस दुनिया-ए-रंगो-बू में जाकर अपने को बेलगाम न बना लें यह लगाम भी चढा दी कि नीलोफ़र का उनसे अक़्द (पाणिग्रहण) कर दिया और तै कर दिया कि उनकी वापसी के बाद रुख़सती भी हो जायेगी । वह साहबज़ादे विलायत में मुसलसल रह पड़े, इसलिए कि पाच साल तक उनको कोई सनद न मिल सकी । जो इम्तहान दिया उसमे फ़ेल हुए । बाद में पता चला कि वह बजाय किसी कालेज में पढ़ने के मक्तबे-ग़मे-इश्क (प्रेम-विछोह की शाला) में सबक़ लेते थे । चुनांचे जब उनको पाँच साल के बाद मजबूरन वापस बुलाया गया तो उनके साथ एक मेम साहबा भी तशरीफ़ लाई । गोया यही एक जीती-जागती डिग्री थी जो वह अपने साथ ला सके । मै ज़ाहिर है कि मायूस तो बहुत हुआ मगर मैंने फिर भी कुछ न कहा सिवाय इसके कि उनके वालिदे-मुहतरिम को बुलाकर अर्ज़ किया कि मेरी और आपकी क़िस्मत में जो कुछ लिखा था वह

पूरा हुआ, मगर अब इन हालात में गालिबन आप भी यह मुनासिब न समझेंगे कि मेरी बच्ची एक सौत के सर जाये। बेहतर यही है कि निहायत खामोशी के साथ तलाक हो जाये। यह सुनना था कि वह हजरत आँखें फेर गये। कि यह भी आपने एक ही कही। शुरफ़ा में कहीं यह भी होता है कि मनकूहा बीवी को तलाक दे दी जाये। इधर की दुनिया उधर हो जायगी मगर यह नही हो सकता। मैने दूसरी सूरत यह पेश की कि साहबजादे उन मेम साहब से निजात हासिल कर लें। मगर यह उनके इमकान मे न था कि बेटे के सर से उस विलायती इश्क का भूत उतार दें। लिहाजा वह शरई (इस्लाम के कानून का) उज् लाये कि एक मुसलमान चार अक़्द कर सकता है। दरअसल मक्सद उन का सिर्फ यह था कि मेरी तमाम दौलत मेरे वाहिद वारिस के जरिये उनकी हो जाये और जबकि यह हाथ आया खजाना हाथ से जाता नजर आया तो सच-मुच वह अपने हवास खो बैठे। अपनी चर्बजुबानी से मुझको समझाने की हर कोशिश मे ना काम रहकर वह जबरदस्ती पर उतर आये और महज यह समझ, कर अपना पल्ला भारी समझने लगे कि निकाह तो हो ही चुका है। मगर उन को यह खबर न थी कि बहर हाल मेरा भी कुछ असर-रुसूख है और साफ बात यह है कि मेरी दौलत की भी कुछ ताक़त है। नतीजा यह कि वह ज़बरदस्ती के बाद शुहदपन पर उतर आये कि हम तो जबरदस्ती लड़की को ले जा सकते हैं और उन्होने अपनी गुण्डा गर्दी से मुझे मरऊब करने की कोशिश की। आखिर मजबूर होकर मैने तलाक की दरख्वास्त दे दी और उन्होने लाख जोर लगाया, मगर आखिरकार हुआ वही जो मैं चाहता था। अदालत ने तलाक का फ़ैसला कर दिया मगर उसके बावजूद वह चैन से न बैठे और कानूनी शिकस्त (पराजय) खाने के बाद अपनी मुजरिमाना सरगर्मियाँ शुरू कर दी जिनकी इन्तहा उस रात हुई जिस रात आप ज़ख्मी हुए हैं। और अगर आप रहमत का फ़रिश्ता बन कर बीच में न आ जाते तो वह नीलोफ़र को ले ही गये थे उस रात।"

शिहाब ने निहायत गौर से डाक्टर साहब की वह दास्तान सुनी जिसे सुनते की दरअसल उसे उसी दिन से खोज थी जिस दिन डाक्टर साहब ने अजमालन

(संक्षेप में) यह कहा था कि मैं हर तरफ़ से साज़िशों से घिरा हुआ हूँ। बल्कि वह तो दरअसल उस रात वाले हादसे के सिलसिले की तफ़सीलात मालूम करना चाहता था। लेकिन उसने अज़खुद यह ज़िक्र इस खयाल से न छेड़ा कि मालूम नहीं डाक्टर साहब अपना यह घरेलू राज़ उसको बताना भी चाहें या नही। मगर अब जबकि खुद डाक्टर साहब ने तमाम क़िस्सा उसको सुना दिया था, उसने कहा :

"मगर डाक्टर साहब, जब आपकी मालूम है कि उस रात वाले हादसे का मुजरिम कौन है, आप आसानी से उसको बँधवा सकते है।"

डाक्टर साहब ने उस वक़्त भी अपनी मूँछों को नज़रअन्दाज़ न किया और उनका ताव दुरुस्त करते हुए कहा, "भाई वह ऐसी कच्ची गोलियाँ खेलने वाले नही है। वह खुद तो निहायत साहूकार बने अलग-अलग बैठे हैं और ये हरकतें उनके किराये के एजण्ट कर रहे हैं।"

शिहाब ने कहा, "इन हालात में तो आपको बहुत मोहतात रहना चाहिए।"

डाक्टर साहब ने कहा, "चुनांचे मैं हूँ मोहतात।"

शिहाब ने कहा, "मेरे खयाल में तो जितनी एहतियात होनी चाहिये नही होती। मसलन नीलोफर रोज़ाना राईडिंग भी करती हैं और तन्हा बाहर जाती है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "जी नही, उस रात के बाद नीलोफ़र कभी राइडिंग नही करती। वह गरीब तो खुद ही बेइन्तहा खाइफ़ है। शिहाब मियाँ, मगर सच पूछिये तो मै इस बच्ची से भी बेहद शर्मिन्दा हूँ कि मैंने उस अक़्द के सिलसिले मे उसके साथ वही सुलूक किया था जो मवेशियों के ताजिर गायें, भैंसे और बकरियाँ बेचने के सिलसिले मे करते हैं। यही वजह है कि अब मैं तै कर चुका हूँ कि उसकी शादी अब उसी से होगी जिससे वह खुद चाहे। मै अपनी उस ग़लती की तलाफ़ी करना चाहता हूँ।"

शिहाब ने इस बात से कोई दिलचस्पी न लेते हुए कहा, "मुझको नही मालूम था कि आपकी बज़ाहिर इस बाग़ो-बहार ज़िन्दगी में इतने काँटे भी बिछे हुए है।"

डाक्टर साहब ने शिहाब के शाने पर हाथ रखकर कहा, "क्या पूछते हो शिहाब मियाँ, इसीलिए तो तुम्हारे ऐसे रफ़ीक़ का मिल जाना मुझको नेमत नज़र आ रहा है।"

बाहर बेगम साहबा की आवाज आई, लिहाजा ये बातें यहीं पर छोड़कर डाक्टर साहब मय शिहाब के कमरे के बाहर निकल गये।

५

****

इतने दिन डाक्टर साहब के यहाँ रहते-रहते शिहाब सब ही से वाकिफ़ हो चुका था और उस घर के हर फर्द की उफ्तादे-तब्अ (स्वभावादि) का थोड़ा-बहुत उसने अंदाजा कर ही लिया था। मगर न समझ में आ सके तो डाक्टर साहब के भांजे फ़रीद साहब। अजब मिट्टी के बने हुए थे यह हज़रत भी। नीलोफ़र की ज़हानत उनको देखकर चमक उठती थी। डाक्टर साहब को नित-नई फब्तियाँ उन्ही को देखकर सूझती थी। हद यह है कि बेगम साहबा उन पर फिकरेबाजियाँ कर लेती थी और वह इसी में खुश थे। कुछ अजब छुई-मुई किस्म के इन्सान वाके हुए थे यह हजरत। सुना यह है कि जिस रात शिहाब ज़ख़्मी हुआ है, नीलोफ़र को तो खैर बेहोश किया गया था, मगर यह हज़रत खुद ही बेहोश हो गये थे और उनके लिए भी तिब्बी इमदाद की ज़रूरत पेश आई थी। खैर होश तो उनको कुछ देर के बाद आ गया था मगर क़ल्ब की हालत हफ़्तों ठीक नही हुई थी और इतना असर तो अब तक था कि रात को अपने कमरे का हर दरवाज़ा, हर खिड़की और हर रोशनदान बन्द करने के बाद सोते थे। बल्कि नीलोफ़र ने तो यह ख़बर भी उड़ा रखी थी कि कुछ

औरादो-वजाइफ़ (ईश्वर का नाम जपना) हैं जो रात को सोने से पहले आप पढ़ते हैं और खुद अपने ऊपर दम करके और तमाम कमरे में फूंककर सोते हैं। सिर्फ एक शिहाब ऐसा था जो न तो उनसे मज़ाक करता था और न ज्यादा मुँह लगता था। मगर यह हज़रत जहाँ तक उनसे हो सकता था उसको बोर करने की पूरी कोशिश करते थे और सिर्फ वही एक ऐसा था जिसके सामने यह ज़रा खुल-खेलते थे और चहक लेते थे। मसलन आ गये उसके कमरे में और शुरू कर दीं अपनी बकवास :

"कहिये शिहाब साहब, पढ़ी आपने अख़बार में वह खबर कि एक सोलह साल की लडकी एक दम लड़का बन गई ?"

शिहाब ने कोई दिलचस्पी लिए बगैर कह दिया, "जी हाँ, पढी थी।"

वह बडी तश्वीश से बोले, "साहब, यह तो बड़ी खतरनाक बात है।"

शिहाब ने बड़ी मतानत से कहा, "किसके लिए खतरनाक बात है ? उस लड़की के लिए या [illegible] आप कोई खतरा महसूस कह रहे है ?"

वह उसी तरह मुतव्हश (भयभीत) होकर बोले, "जी नही, मै तो यह कह रहा हूँ कि बड़ी गड़बड़ हो जाती होगी इन हालात में। अब मसलन उस लड़की की किसी लड़के से शादी ठहरी हुई होगी। अब वह लड़का बेचारा क्या करेगा ?"

शिहाब ने कहा, "टेनिस खेला करेगा उस लड़के से।"

वह मुतहैयर (विस्मित) होकर बोले, "जी टेनिस ? तो उससे क्या फायदा होगा ?"

शिहाब ने कहा, "उससे हाज्मा दुरुस्त रहेगा ; चुस्ती और मुस्तैदी पैदा होगी।"

और फिर शिहाब को खुद ही हँसी आ गई तो आप भी 'हे हे हे' करके हंसने लगे। उसी वक़्त नीलोफ़र भी आ मौजूद हुई तो शिहाब ने उसको भी बता दिया कि फ़रीद साहब आज यह ख़बर पढ़कर आये है।

नीलोफ़र ने आँखें निकालकर कहा, "अच्छा तो गोया अब आपके भी पर-पुर्ज़े निकल रहे हैं फ़रीद साहब ? यह आपने खबरें पढ़ना कब से शुरू कर

दीं ? आपको तो मैंने सिर्फ़ सिनेमा के इश्तेहार पढ़ने की इजाज़त दी थी।"

शिहाब ने कहा, "इस बेचारे को ख़बरें पढ़ने की क्यों मुमानिअत है ?"

नीलोफर ने बड़ी संजीदगी से कहा, "बडा खतरनाक होता है नौजवानों का खबरें पढना ; हवाई दीदा बनकर रह जाते है। भोलापन जाता रहता है और उनको सब मालूम हो जाता है कि दुनिया में क्या हो रहा है। अब आप ही देख लीजिये कि आज यह खबर पढली है जो रुखे-रोशन पर ठीकरे बरसने लगे हैं।"

शिहाब ने कहा, "इनको सबसे बडी फिक्र यह है कि जो लड़की लड़का बन गई है उसके मँगेतर लडके का अब क्या हाल होगा ?"

नीलोफर ने फिर फरीद को घूरा, "क्यो साहब, अब आप ये पक्की-पक्की बातें सोचने लगे है ? आखिर आपने खबर पढी किसकी इजाज़त से ?"

फरीद ने वाकई उज्र पेश किया, "जी वह तो अखबार खुला रखा था, नजर पड गई थी।"

नीलोफर ने कहा, "इसी का तो नतीजा है कि दीदों का पानी मर गया और आप एक नामहरम (अज्ञान) को यह खबर सुनाने आ गये।"

इस 'नामहरम' पर शिहाब का मारे हँसी के बुरा हाल हो गया। मगर नीलोफ़र के आस-पास कही हँसी न थी। वह बदस्तूर बिफरी हुई फरीद को घूर रही थी और फरीद साहब बेचारे महजूब (लज्जित) थे और पैमाइशे-दामाँ में लगे थे। नीलोफ़र ने उनको डॉटने का सिलसिला जारी रखते हुए कहा :

आज आपने अखबार पढा है, कल आप रिसाले पढ़ेंगे, और परसो नाविल पढ़ेंगे। यही है शरीफजादो के ढंग ? मैं तो आपको बड़ा मिस्कीन समझती थी। मगर मालूम होता है कि कुछ हवा लग गई है।"

शिहाब अपनी ने हँसी पर क़ाबू पाते हुए कहा, "नही अब ऐसा भी क्या ! हो गई एक मर्तबा गलती। अब इस थोड़े कहे को बहुत समझेंगे।"

नीलोफ़र ने बड़े ग़ुस्से से कहा, "जी नही, यह इनकी पहली ग़लती नहीं है। इनको तो आदत पड़ गई थी अखबार पढ़ने की। रोज सुबह चुपके से अखबार पढ़ लिया करते थे ; फिर दिन भर दिमाग़ चाटते थे कि डाक्टर

मुसद्दिक़ आखिर ख्वाहमख्वाह सियासत में पड़कर अपने को क्यों तबाह कर रहे हैं ? मतब क्यों नहीं खोलते ? प्राइवेट प्रैक्टिस क्यों नहीं करते ? और ज़रा सी नहर स्वेज के लिए यह क्या झगड़ा शुरू कर दिया है। न समुन्दर न दरिया ; जरा-सी नहर और यह तूमार !"

शिहाब ने हँसते हुए कहा, "यह तो बजाय इनको समझाने के आपने खबरें पढ़ने की मुमानिअत कर दी है।"

नीलोफर ने कहा, "साहब, पढ़ना क्या मानी, मैं तो इनको रेडियो पर भी खबरें सुनने नहीं देती। क्या जाने कोई ऐसी-वैसी खबर कान में पड जाये और शैतान के कान बहरे इनकी हालत गैर हो जाये। तमाम बातें उम्र से अच्छी मालूम होती है। अभी यह है ही क्या कि खबरें पढ़ें ? जी बचेगे तो ख़बरें भी पढ लेंगे। अठारह-उन्नीस बरस की उम्र भला इन बातों की होती है ?"

फरीद ने कहा, "जी नही, इक्कीस बरस।"

शिहाब ने कहा, "तो क्या आपकी उम्र इक्कीस साल की है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "अच्छा फ़र्ज कर लीजिए कि इक्कीस साल ही सही। रऊसा में इस उम्र के बच्चे आया की ऊँगली पकड कर टहला करते है। और क्यों हजरत फिर आपने अपने को हरी मिर्च बनाया ? हजार मर्तबा कहा है कि यह हरा सूट न पहना कीजिए और यह क्या लाल टाई ! मैं कहती हूँ आपको कोई पिजरे में बन्द करके चने की दाल न खिलाना शुरू कर दे। जाइये, जाकर सूट बदलिए। और आइन्दा न देखूँ आपको इस सूट मे।"

फ़रीद साहब कुछ लजाये हुए-से कूछ सिमटते अपना जिस्म चुराते कमरे से बाहर निकल गये तो शिहाब मारे हँसी के लोट-पोट हो गया और जब हँसी का यह दौरा खत्म हुआ तो उसने नीलोफ़र से कहा, "कमाल है साहब, क्या वाकई यह ऐसे है या बनते है ?"

नीलोफ़र ने भी अब हँसकर कहा, "जी हाँ,

कुछ तो होते हैं मुहब्बत में जुनूं के आसार
और कुछ लोग भी दवाना बना देते हैं

अभी आपने देखा ही क्या है ? यह तो अजीबो-ग़रीब चीज़ है।"

शिहाब ने कहा, "मगर यह तो आपके ख़ालाज़ाद भाई हैं ना ?"

नीलोफ़र ने कहा, "जी नहीं, इनका बयान यह है कि यह मेरे किसी न समझ में आनेवाले रिश्ते से फूफीज़ाद भाई होते हैं। मगर डैडी बेचारे को खुद भी अपनी उन हमशीरा-अज़ीजा की खबर नहीं है जिनके यह नूरेनजर, लख्तेजिगर हैं। बस आ गये थे एक दिन यूँही अपना सूटकेस और होल्डआल लिये कि मैं आपका भान्जा हूँ। बस उसी दिन से पड़े हुए है।"

शिहाब ने पूछा, "मगर शुग़ल क्या है ? और मक़सदे-तशरीफ आवरी क्या है ?"

नीलोफ़र ने निहायत बेबाकी के साथ कहा, "कोई शुग़ल ही होता तो इस बेफ़िक्री से रह क्यों पड़ते ? रह गया मक़सदे-तशरीफ आवरी तो वह ज़ाहिर है कि जनाब का खयाल यह है कि हम लोगों की अक़्ल पर अन्करीब ऐसे पत्थर पड़ जायेंगे कि इन हजरत को मेरे लिए मुन्तखब कर लिया जायेगा। और यह कह कर वह खुद ही झेंप-सी गई।

शिहाब ने हँसकर कहा, "मगर यह गलतफ़हमी तो आपके इस सुलूक के बाद खत्म हो जानी चाहिये थी।"

नीलोफ़र ने बड़ी- बूढ़ियों के-से अन्दाज से कहा, "ऐसे ही समझदार होते तो रोना ही काहे का था ? मगर इन हजरत का वजूद बड़ा गनीमत है, ज़रा तफ़रीह रहती है। डैडी भी इनसे बातें करके ज़रा अपने थके हुए दिमाग को ताज़ा कर लेते है। ममी को भी जरा दिलचस्पी हो जाती है। और मैं तो सच-मुच अगर यह न हों तो सख्त वीरान होकर रह जाऊँ। लुत्फ यह है कि जब से इन हजरत को यह मालूम हुआ है कि अपने लिए इन्तेखाब का हक सिर्फ़ मुझ ही को हासिल है, यह हज़रत बस मेरे इशारों पर नाचते रहते है। नामुमकिन है कि मैं कोई बात कहूँ और यह तामील न करें।"

शिहाब ने कहा, "अच्छा तो कभी आपसे दिल की बात कही भी ?"

नीलोफ़र ने जवाब दिया, "इतनी मजाल नहीं है, मैंने अपना काफ़ी रौब जमा रखा है।"

शिहाब ने कहा, "जी हाँ, इसका अन्दाज़ा तो मुझको भी हो चुका है।

मगर है अजीब चीज़ यह हजरत भी । मैं तो ख्वाहमख्वाह अब तक इनसे अपने को लिए-दिए रहा । यह तो निहायत दिलचस्प खिलौना हैं ।"

नीलोफ़र ने कहा, "अल्लाह आमीन के पाले-पोसे है, निहायत मुन्नी-मुन्नी बातें करते है । सचमुच मेरा तो कई मर्तबा इरादा हुआ कि इनके लिए एक दूध की शीशी मँगा दूँ और गले मे बिब बाँध दूँ ।"

फरीद साहब के मुताल्लिक ये तफ़सीलात मालूम करने के बाद शिहाब को महसूस हुआ कि उसने अब तक अपना वक़्त ही जाया किया है जो उनसे दिल-चस्पी नही ली । मगर उसे अब भी यह शक था कि यह शख्स दरअसल बना हुआ है । वरना यह कैसे मुमकिन है कि इस उम्र का एक अच्छा-खासा जवान इस तरह अँगूठा चूसता फिरे और अगर यह वाकई ऐसा ही है जैसा कि नज़र आता है तो यह दरअसल दिमाग़ी मरीज है ।

६

****

इसमें शक नहीं कि डाक्टर लतीफ़ी ने नीलोफ़र को लड़का और लड़की दोनों बनाकर अपने अरमान पूरे किए थे । लड़की तो ख़ैर वह थी ही मगर जिस वक़्त वह शिकारी लिबास में बन्दूक हाथ में लिए और अपने तर्शे हुए बाल टोप में छुपाए बाप के साथ शिकार पर जाती थी उस वक़्त कौन उसको पहचान सकता था कि यह डाक्टर साहब का बेटा नही बेटी है ? राइडिंग के मर्दाना लिबास में उसको देखकर शिहाब ने भी पहली नज़र में उसको डाक्टर साहब

का जवान राना फर्ज़न्द (पुत्र) ही समझा था । लिबास और वज़ग्र-कतग्र के अलावा उछल-कूद और दौड-धूप में भी वह किसी तरह लड़की नज़र न आती थी । मगर उसके बावजूद कि उसको तरबियत ही इस किस्म की दी गई थी, उसमें निसाइयत (स्त्रीत्व) भी बला की थी कि एक सुघड लड़की की तरह सारे घर को सँभाले हुए थी । माँ का जो हाल था वह तो ज़ाहिर ही है कि मूली अपने पत्तों ही भारी थी । मूली का नाम सुनकर ज़हन में एक छरैरा-सा तसव्बुर आता है ; मगर जो लोग जौनपुर की मूली देख चुके है उनको अन्दाज़ा होगा कि यह दुबली-पतली तरकारी भी जब हौलनाक होने को आती है तो क्या-से-क्या बन जाती है । जौनपुर की मूली एक ठेले पर सिर्फ एक लादी जा सकती है जिसको दो भैंसे खेंचते है । बहरहाल जिक्र था बेगम साहबा का कि वह बेचारी तो सिवाय बैठे-बैठे हाँपने के और किसी काम ही की न थी । सुना है किसी ज़माने में वह भी बड़ी नाजुक अदाम, कोमल कामिनी-सी थी, जब डाक्टर साहब उनको ब्याह कर लाये है । मगर सुसराल का आबोदाना ऐसा रास आया कि यहाँ आते ही टाइफाइड हुआ और मरते-मरते बची ; तो सेहतयाब होने का सिलसिला किसी तरह खत्म ही न किया । यहाँ तक कि अच्छी-खासी इमारत बन कर रह गई । बहरहाल अब यह बेचारी तो किसी काम की रह नही गई है बस जहाँ धरी है वहाँ धरी है । मगर नीलोफर है कि सारा घर सँभाले हुए है । इतनी बड़ी कोठी की आराइश व ज़ेबाइश; फिर सारे घर की सफ़ाई नौकरों का कण्ट्रोल ; घर का हिसाब-किताब ; मा और बाप दोनों की जरूरियात और मामूलात का खयाल ; मेहमानों की खातिर-तवाज़ो ; दावतों और पार्टियों का एहतमाम यह सब कुछ आखिर वह खुद ही तो करती थी ! इसके अलावा आलम यह था इन साहबज़ादी का कि बढ़-चढ़कर बाते बना रही है; फ़रीद पर चोटें हो रही है ; और एक-से-एक तर्शा हुआ फ़िक़रा उन हज़रत पर चिपका रही है कि कही ज़िक्र छिड़ गया खुद उनकी शादी का अब ज़ाहिर है दुपट्टे से मुँह तो न छुपायेगी, उँगलियों के नाखुन भी दाँतो से कतरना शुरू न करेंगी, सर पर पैर रखकर भागेंगी भी नही मगर आँखों में एक किस्म की शर्म ज़रूर नजर आजायेगी, चेहरा एकदम संजीदा ज़रूर हो जायेगा और ख्वाहम-

ख्वाह का कोई काम याद करके वहाँ से टल जाने की कोशिश ज़रूर करेंगी। शिहाब अक्सर इन मुतजाद (विरोधी) कैफ़ियात पर ग़ौर किया करता था और उसने नीलोफ़र को दो किस्मों में तक्सीम कर रखा था, कि कभी वह अपने असली खद्दोखाल में एक मशरिकी लड़की नजर आती है और कभी उस तरबियत में ढली नीलोफर दिखाई देती है जो उसको उसके चहीते बाप ने दी है। डाक्टर लतीफी कहने को तो कहा करते थे—कि मेरी बेटी पर से सौ बेटे क़ुरबान। मगर गौर किया जाये तो खुद उनको दर असल बेटे की तमन्ना थी और अब मजबूरी का नाम सब्र रखकर वह नीलोफर को कभी बेटा और कभी बेटी देखना चाहते थे। लिबास वगैरा को जाने दीजिए हाल तो यह था कि बाज औक़ात दुलार में आकर उसके मुताल्लिक बातें भी इसी किस्म की किया करते थे कि नीलोफ़र सुबह उठा तो मैंने उससे कहा क्यों बेटे शिकार पर नही चलोगे ? वह बड़ी खुशी से तैयार हो गया। मगर जब डाक्टर साहब मज्म-ए-आम में यह दुलार शुरू करते थे तो नीलोफ़र को बड़ी शर्म आती थी, बल्कि वह बुरा मान कर बाप को टोक भी देती थी। चुनाँचे आज सुबह ही नाश्ते के वक़्त डाक्टर साहब को इसी किस्म का दुलार आ गया। हालांकि इस वक़्त नीलोफ़र क़मीस, शलवार और दुपट्टे में थी, मगर मालूम नही डाक्टर साहब को क्यों लड़का नज़र आई कि अपने मूँछों को माइले-परवाज़ करते हुए कहा :

"क्यों बेटे, आज इतवार है ना ? क्या रहेगा आज का प्रोग्राम ? चलते हो एकाध मुर्गाबी ही मार लायें ?"

नीलोफ़र ने कनअँखियों से शिहाब की तरफ देखकर कहा, "डैडी, आप आखिर अपना यह लाड कब छोडेंगे ? अब मैं इतनी-सी तो नही हूँ कि चाहे मुझको लड़का कह दीजिए चाहे लड़की।"

बेगम साहबा ने भी नीलोफ़र की ताईद की "मुझे खुद ये चोंचले बुरे मालूम होते हैं।" डाक्टर साहब ने बड़ा-मुँह खोलकर कहा, "चोंचला मुद्दत के बाद यह टकसाली लफ़्ज़ सुना है। तो गोया मैं चोंचले बघारता हूँ। देखिए शिहाब साहब, अब यह लफ़्ज़ मुकम्मल हुआ। चोंचले के साथ अगर बघारना न कहा जाए तो कुछ उबला हुआ-सा चोचला मालूम होता है। बहरहाल तो

गोया अब हमारी बेटी इतनी बडी हो गई है कि उसको बेटा नहीं कहा जा सकता। बेहतर है कि मै कोशिश करूँगा कि सिर्फ़ बेटी समझूँ। हाँ तो डार्लिंग चलना नही है शिकार के लिए ?"

बेगम साहबा घबराई, "बस अब आप सब शिकार पर निकल जायेंगे और मै भाँय-भाँय करती इस कोठी मे अकेली रहूँगी।"

डाक्टर साहब ने अब वाकई चोचला बघारा, "अकेले रहें तुम्हारे दुश्मन, हम लोग शिकार खेलने जा रहे है; तुम फ़रीद मियाँ से बैठकर गुड़ियाँ खेलो।"

और फरीद मियाँ ने एक बल खाकर, बगलो मे मुँह देकर हँसना शुरु कर दिया तो बेगम साहबा ने उनका दिल रखने को कहा, "भला यह भी कोई बात है कि सब शिकार पर जायें और यह बेचारा मेरी वजह से घर पर ही रह जाए। जाना है तो इसको भी ले जाइए।"

डाक्टर साहब ने कहा, "कमाल करती हो, शिकार खेलने में बन्दूक़ चलाना पड़ेगी। अब मै वहाँ उनके लिए लखलखा और बेदमुश्क कहाँ से लाऊँगा कि फ़ायर की आवाज़ सुनकर गश खायें तो मैं उनकी तीमारदारी शुरू कर दूँ।"

नीलोफर ने कहा, "खैर यह तो डैडी मजाक कर रहे है, मगर फरीद साहब आप बन्दूक तो चला लेते होगे।"

फरीद ने गला साफ़ करते हुए कहा, "जी हाँ, कोशिश करूँ तो चला सकता हूँ।"

डाक्टर साहब ने बड़े गौर से उनको देखते हुए कहा, "कोशिश ? कोशिश से क्या मुराद है आपकी ? मेरी समझ में नही आया की बन्दूक़ चलाने के लिए कोशिश किस किस्म की होती है। आपकी मुराद वर्जिश से तो नही है।"

नीलोफ़र ने कहा, "सवाल यह है कि आपने कभी चलाई है बन्दूक ?"

फ़रीद ने बड़ी शशो-पंज के बाद कहा, "जी हाँ, एक मर्तबा।"

डाक्टर साहब ने बडी मतानत से कहा, "मगर साहबजादे वह तो वह बन्दूक थी जिसकी नाल के मुँह पर कार्क की डाट लगाते है।"

फ़रीद ने कहा, "जी नहीं, छर्रे वाली बन्दूक थी।"

डाक्टर साहब ने बरजस्ता कहा, "सदके जाऊँ उसको भी बन्दूक़ नही कहते।"

यह 'सदक़े जाऊँ' इस लोच और लचक के साथ डाक्टर साहब ने कहा कि किसी से हँसी जब्त न हो सकी। हद यह है कि मारे हँसी के बेगम साहबा के तो आँसू जारी हो गये। लुत्फ़ यह कि और सब तो हँस रहे थे मगर डाक्टर साहब दाँत पीस-पीस कर कुछ बुदबुदा रहे थे और बड़े ग़ुस्से से फ़रीद को देख रहे थे जो एक दिलरुबा के ख़म के साथ गर्दन लटकाये मुसलसल शर्मा रहे थे। शिहाब को क़िस्सों मे हँसी आ रही थी। कभी वह फ़रीद को देखकर हँस देता था और फिर अपने को सँभालता था। कभी डाक्टर साहब पर नज़र जाती थो और फिर उसको हँसी आ जाती थी। बमुश्किल तमाम यह हँसी का दौरा ख़त्म हुआ और डाक्टर साहब ने फिर शिकार का प्रोग्राम बनाना शुरू कर दिया।

"हाँ बेटी तो फिर क्या राय है ?"

नीलोफ़र ने बड़े फ़ैसलाकुन अन्दाज़ से कहा, "अगर आपका ऐसा ही जी चाहता है तो सिर्फ़ मैं आपके साथ चलूंगी।"

डाक्टर साहब ने हैरत से कहा, " क्या मतलब ? यानी शिहाब ने क्या गुनाह किया है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "डैडी, इनका इम्तहान सर पर आ गया है, रात-रात भर तो यह पढ़ते रहते है। आज कल इनके लिए ये सैर, शिकार सब बेमहल हैं।"

अब डाक्टर साहब को भी याद आ गया, "ओह यस; ठीक है, ठीक है। मुझे ख़याल ही न रहा था। मैं तो आज इन हज़रत से यह पूछने वाला था कि भई इम्तेहान हो या कुछ, मगर आदमी को अपनी बिसात के मुताबिक़ मेहनत करनी चाहिये।"

बेगम साहबा ने कहा, "ज़रा मुँह देखिए, इतना सा निकल आया है।"

हालाँकि बेगम साहबा के सामने सभी चेहरे उभरे हुए और मुँह इतने से निकले नज़र आते थे; मगर शिहाब को उनके इस इज़हारे-खुलूस से अपनी मा याद आ गई। वह भी यही देखा करती थी कि मेरे लाल का मुँह इतना-सा निकल आया है। उसने बड़ी मुहब्बत से बेगम साहबा की तरफ़ देखा तो वह बड़ी मुहब्बत से फिर बोली :

"मैं झूठ थोडी कहती हूँ जिससे चाहो पूछलो। अभी बीमारी से उठे हो, जितना खून बहाया है उतना अभी पैदा भी न हुआ होगा कि ऐसी मेहनत शुरू कर दी।"

नीलोफ़र ने कहा, "मेरा तो रात को कई मर्तबा इरादा हुआ कि मैं स्विच बन्द कर दूँ। बारह बजे आँख खुली तो पढ़ रहे थे; दो बजे देखा तो पढ रहे थे फिर तीन बजे तक तो मैं जागती रही और इनको देखती रही कि पढ रहे है।"

शिहाब ने कहा, "मुझे नहीं मालूम था कि आपकी नीद इस कदर उचाट हो रही है मेरे पढने की वजह से। मगर मेरे कमरे की रोशनी आपके कमरे तक कैसे जा सकती है ?"

नीलोफर ने कहा, "मैने कब कहा कि उस रोशनी की वजह से नीद नहीं आ रही थी ?"

डाक्टर साहब ने किस्सा मुख्तसर कर दिया, "बहरहाल इतना ज़्यादा पढ़ना भी गलत है। फर्ज कर लीजिये कि बीमार हो गये आप तो ? आराम, तफ़रीह और मेहनत इनका तवाजुन कायम रहना चाहिए। बहरहाल शिकार तो मैं मुलतवी करता हूँ, मगर आज रमी जमेगी। क्यों बेगम साहबा, रमी तो आपका भी महबूब खेल है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "जी हाँ डैडी, यह ठीक है। मगर फ़रीद साहब बेचारे को रमी भी नही आती।"

डाक्टर साहब ने बड़ी बेसाख्तगी से कहा, "तो यह हँडकुलिया पकायें।"

और फ़रीद बेचारा कहकहो में डूब कर रह गया। डाक्टर साहब ने ताश खेलने की मेज मँगाकर बेगम साहबा की मसहरी के क़रीब लगवादी और फिर खाने के कमरे से निकल कर बेगम साहबा के कमरे मे ताश खेलने को जमा हो गये। फरीद साहब के सुपुर्द यह काम हुआ कि वह नम्बर लिखें।

७

****

दवाख़ाने के एहतमाम शद्दोमद से जारी थे ; शिहाब का इम्तहान शुरू हो चुका था। डाक्टर साहब की कोठी की चहल-पहल अपने मामूल पर थी अल-बत्ता नीलोफ़र में आजकल कुछ ज़रूरत से ज़्यादा संजीदगी आ गई थी। वह बैडमिण्टन कोर्ट के हंगामे सर्द थे। वह प्यानो आजकल खामोश था जिस पर अलावा नित-नई धुन् निकालने के वह यह भी कोशिश किया करती थी कि बिल्लियों की लड़ाई की खौफनाक आवाज प्यानो से पैदा की जाये और जिस वक़्त रेडियो बज रहा हो, उस वक़्त भी रेडियो के गानों के साथ प्यानो से वह संगत करती रहे। हद यह कि डाक्टर साहब अपने अज़ीज़ दोस्त को रात के खाने पर बुलाना चाहा तो नीलोफर ने साफ़ इन्कार कर दिया कि डैडी जब तक शिहाब साहब का इम्तेहान ख़त्म न हो जाए इस क़िस्म की कोई तक़रीब न होना चाहिए। उसका अब सिर्फ़ यह प्रोगाम था कि सुबह तड़के उठकर अपनी खास निगरानी में ब्रेकफ़ास्ट तैयार करादे ताकि शिहाब को सही वक़्त पर नाश्ता मिल जाए। और उसकी वापसी के वक़्त से कुछ पहले ही वह निहायत इज्तेराब (व्याकुलता) के साथ बरामदे में टहलती हुई नज़र आती थी कि कब शिहाब वापस आये और वह सिर्फ़ यह पूछले कि पर्चा कैसे हुआ जिस दिन से इम्तेहान शुरू हुआ था आज तक एक दिन भी ऐसा न हुआ कि शिहाब वापस आया हो और नीलोफ़र उसको बरामदे में टहलती हुई नज़र न आई हो और उसने यह सवाल बेताबी के साथ न किया हो कि पर्चा कैसा हुआ। चुनांचे आज जब उसने उसी इन्तेज़ार के बाद यही सवाल शिहाब को देखते ही किया, तो शिहाब ने करीब आकर कहा :

"आप यह सवाल करने के बजाय मेरा चेहरा देखकर अन्दाज़ा कर लिया

कीजिये ।"

नीलोफ़र ने कहा, "जी नहीं, आपके चेहरे से अन्दाजा नहीं हो सकता । आप मुझे मुतमइन करने के लिए ख्वाहमख्वाह भी बश्शाश बन सकते हैं । मगर यह मुझे मालूम है कि ख्वाह मुतमइन करने का ही सवाल क्यों न हो आप झूठ नही बोल सकते ।"

शिहाब ने एक लम्हा खामोशी से नीलोफ़र को देखने के बाद बहुत कुछ कहना चाहा, मगर कहा सिर्फ़ यह कि, "आज का पर्चा भी अच्छा ही हुआ है ।"

और यह सुनकर नीलोफ़र मुतमइन हो गई । उसके चेहरे पर खौफ की सी क़ैफ़ियत उस जवाब को सुनने से पहले रोज़ हो जाया करती थी आज भी थी और जिस तरह रोज उस जवाब के बाद यह कैफ़ियत खत्म हो जाया करती थी आज मी खत्म हो गई और उसने जाते हुए शिहाब से कहा :

"लंच तैयार है, आप ताज़ादम होकर आजाइये ।"

शिहाब उन लोगों मे से ही न था कि ज़रा-सा इल्तफ़ात (प्रेम) सूँघ कर या खुद अपनी तरफ से किसी तवज्जो को इल्तफ़ात का रंग देकर अपने को गलत फ़हमियों में मुब्तिला करना शुरु कर देता । मगर आज उसके ज़हन में ये खयालात जरूर गूँजने लगे कि आखिर यह सब कुछ क्या है और क्यों है ? वह नीलोफ़र को एक खलण्डरी लड़की तो कभी भी न समझता था बल्कि हमेशा से उसका खयाल यह था कि वह जो कुछ नज़र आती है, उससे ज्यादा वह है जो नज़र नहीं आती । उसको मालूम था कि माहौल ने उसको एक अपटूडेट किस्म की तेज़-तर्रार लाडली बना रखा है मगर उसी के साथ उसका अन्दाज़ा था कि नीलोफर के महसूसात बहुत गहरे हैं और वह सिर्फ़ एक सतही-सी नाज़ो-नेम मे पली हुई लड़की नहीं है बल्कि उसमें बड़ी ज़िम्मेदाराना संजीदगी भी है । उसका निहायत गहरा मुतालिआ (अध्ययन) करने के बाद शिहाब इस नतीजे पर पहुँचा था कि उसकी खुसूसियात (विशेषताएँ) में अजीब इज्तमाए-जिद्दैन (विरोधियों का एकत्रीकरण) है ; यानी वह शादी-ब्याह के ज़िक्र पर एक खालिस शर्की (पूर्वी) लड़की बनकर शर्माना भी जानती थी और उसको यह भी आता था कि जब फ़रीद साहब के मुताल्लिक़ शिहाब ने तफसीलात दरियाफ़्त कीं तो उसने बेझिझक कह दिया, "जनाब का खयाल यह है कि हम

लोगों की अक़्ल पर अन्क़रीब ऐसे पत्थर पड़ जायेंगे कि इन हज़रत को मेरे लिए मुतख़ब कर लिया जायेगा।" कहने को तो यह कह गई थी मगर फिर खुद ही झेंप भी गई थी कि यह मैं क्या कह गई। मुख्तसर यह कि उसको समझना बडा मुश्किल था कि वह दर असल है क्या ? और बड़े ग़ौरो-फ़िक्र के बाद शिहाब सिर्फ यह समझा था कि वह दर असल एक मशरिकी लड़की है जिसपर मगरिबियत का मुलम्मा किया गया है। मगर जो सवाल आज शिहाब के जहन की सतह पर उभरे थे। वह न जाने कब से गैर महसूस तौर पर उस के ज़हन में जमा हो रहे होंगे। कोई और होता तो उसके बहकने के लिए सिर्फ़ इतना ही काफ़ी था मगर शिहाब ने इस तवज्जो और इस खुसूसियत की वजह सिर्फ़ यह करार दी कि जिस हादसे से वह इत्तेफ़ाक़न खुद उसी की मुदाखलत (हस्तक्षेप) की वजह से बच गई है, उसी हादसे ने नीलोफ़र को उससे इस क़द्र करीब कर दिया है। यह जज़्बा एहसानमंदी का भी हो सकता है, दोस्ती का भी हो सकता है और सबसे बड़ी बात यह है कि अब तो वह उसके घर एक बाकायदा फ़द्र था। लिहाजा अगर वह इस कद्र मुताल्लिक सी नज़र आती है तो उसमें इतने ताज्जुब की क्या बात है ? घूम-फिर कर उसके जहन में इस खुसूसियत और तवज्जो के दूसरे घटिया और पोच मफ़ूम भी आ रहे थे, मगर उसने न अपने को इतना गिराया, न अपने को उन सुस्त गलतफ़हमियों में मुब्तिला होने दिया।

अपने कमरे में पहुँच कर क़य्यूम को अपना मुतज़िर पाया जिसने उसके कपड़े बदलवाये और वह बहुत जल्द हाथ-मुँह धोकर खाने के कमरे मे पहुँच गया, जहाँ सब पहुँच चुके थे सिर्फ़ उसी का इन्तेज़ार था। चुनाचे डाक्टर साहब ने उसको देखते ही नारा बुलन्द किया :

"तशरीफ लाइये, मौलाना शिहाब।"

शिहाब ने क़रीब पहुँच कर कहा, "खुदा खैर करे। यह मौलाना का एज़ाज़ किस सिलसिले में अता हुआ है ?"

डाक्टर साहब ने मूंछों पर पैमाने-वफ़ा बाँधते हुए कहा, "भई मौलाना नही, और क्या हो ? ऐसे ज़ाहिदे-शब बेदार को कम-से-कम मौलाना ही कहा सकता है।"

शिहाब ने प्लेट खिसकाते हुए कहा, "ख़ैर, शब-बेदार को ज़्यादा-से-ज़्यादा बहुत कुछ भी कहा जा सकता है और इसी ज़्यादती के डर से मैं मौलाना के तिताब पर क़नाअत (संतोष) करता हूँ।"

बेगम साहबा ने बात का रुख बदल कर कहा, "आज का पर्चा कैसा रहा शिहाब मियाँ ?"

नीलोफ़र ने तुनक कर कहा, "आपको मेरी बात का तो यक़ीन आता ही नहीं जब तक खुद पूछकर तस्दीक न करें।"

शिहाब ने कहा, "बहरहाल आज आखिरी पर्चा था, अब नतीजा आएं तो पता चले कि पर्चे कैसे हुए है।"

डाक्टर साहब ने खुश हो कर कबाब उठाना मुलतवी करते हुए कहा, "आखिरी पर्चा था ? शुक्र है खत्म तो हुआ कफ़्यूं आर्डर।"

शिहाब ने कहा, "कफ़्यूं आर्डर ? कफ़्यूं आर्डर कैसा ?"

डाक्टर साहब ने कबाब पर प्याज के लच्छे डालते हुए कहा, "अरे साहब ऐसा-वैसा क़फ़्यूं आर्डर था ? कोई चीखकर बोले नही, रेडियो का वाल्यूम बस इतना रखा जाए और वह भी सिर्फ़ खबरो के वक़्त ; कोई खाना न हो, पार्टी न हो ; मुस्कराने मे मुज़ायक़ा (आपत्ति) नही मगर क़हक़हा बुलन्द न हो। हरेक के मुँह पर *No Hooting* की तख़्तियाँ लगा दी गई थी।"

नीलोफ़र ने मुँह बनाकर कहा, "डैडी, आप भी बात को इतना बढ़ा देते हैं कि राई का पहाड़ बन जाये। मैंने तो सिर्फ़ यह कहा था कि ख्वाहमख्वाह का शोर न हो, उससे पढ़ने में खलल (बाधा) होगा।"

डाक्टर साहब ने बेगम साहबा की गवाही दिलवाई, "बेगम, औलाद की-सी न कहना। खुदा को हाजिर-नाजिर जानकर मजाजी खुदा की गवाही दो कि एजाज को जब मैने खाने पर बुलाना चाहा है तो इन साहबज़ादी ने कैसा साफ़ इन्कार करके तोते की-सी आँखें फेर ली थी।"

बेगम साहबा ने कहा, "ठीक ही तो कहा था उसने, रात गये तक हा-हा हू-हू का सिलसिला रहता। वह बेचारा पढ़ता किस वक़्त ?"

डाक्टर साहब ने बात काट कर कहा, "गवाही तवील न कीजिए। सवाल सिर्फ़ यह है कि इन साहबज़ादी ने नामंज़ूर किया था या नहीं ?"

शिहाब ने कहा, "मुझे बड़ा अफ़सोस है कि कुछ जरूरत से ज्यादा एह-तियातें बरती गई वरना मैं तो सड़क के किनारे भी पढ़-पढ़ कर आखिर इम्ते-हान देता ही रहा हूँ।"

डाक्टर साहब ने जल्दी से यह ज़िक्र टाला, "खैर ख़ैर खैर, मतलब यह कि अब रहेगे खूब हंगामे, खुसूसन आज हम सबको जश्ने-निजात (मुक्ति-उत्सव) मनाना चाहिए। कहिए क्या प्रोग्राम है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "आज आप शौक से अन्कल ऐजाज़ को बुला सकते हैं। वह ठाठ की दावत करूँ कि वह भी याद करें।"

डाक्टर साहब ने बहुत सी सलाद मुँह में रखते हुए कहा, "ऐजाज़ बेचारा तो सुनहरी रेशे के देस में दौलत कमाने के सुनहरी ख्वाब देख रहा होगा। रह गई ठाठदार दावत, वह होना जरूर चाहिए ख्वाह किसी की हो।"

बेगम साहबा ने कहा, "यानी ख्वाहमख्वाह भी।"

डाक्टर साहब ने कहा. "मक्सद जरा हगामे से है, ज़रा चहल-पहल रहे। इतने दिनों के सन्नाटे के बाद रौनक को जरा जी चाहता है।"

नीलोफर ने कहा, "अगर आज आप कोई और हगामा अपने लिए तजवीज़ कर लें या शिहाब साहब को जरा दम लेने और आराम करने का मौक़ा देना मुनासिब समझें तो कल मैं सुरैया, कौकब और बिरजीस को खाने पर बुलाने का इरादा कर रही हूँ।"

डाक्टर साहब ने बच्चों की तरह खुश हो कर मगर बूढों की तरह मूँछें सँभाल कर कहा, "फिर तो गोया गाना भी होगा। भई, यह तुम्हारी कौकब बहुत ही अच्छा गाती है। मै तो तुम्हारी सालगिरह मे उसका गाना सुनकर हैरान ही रह गया कि फ़न की इतनी बारीकियाँ यह बच्ची जानती है। अच्छा तो फिर कल यह हंगामा सही ; मगर आज का सवाल है कि आज क्या हो।"

बेगम साहबा ने कहा, "आज के लिए यह करो कि टेलिफ़ोन कर दो अब्बासी साहब को, मुईन को, अमजद मियाँ को। ज़एमी हो जाए।"

डाक्टर साहब ने कहा, "देखो आपने कही अपने मतलब की बात ! बहर-हाल यही ठीक है। शिहाब तैयार हो जाइए, पिछली हार मैं आप से मेकअप करूँगा। तो बेटी, टेलिफ़ोन तुम करोगी या मैं करूँगा ?"

नीलोफ़र ने कहा, "आप क्या करेंगे, घण्टों नम्बर ढूंढते रह जायेंगे और किसी पोलिस पोस्ट से मिलाकर थानेदार से बातें करना शुरू कर देंगे। मैं किये देती हूँ फोन।" नीलोफर के उठने पर सब ही मेज़ से उठे और अपनी-अपनी तरफ़ चले गए।

८

****

रात की रमी-पार्टी बड़ा तूल खीच गई। एहतमाम था सिर्फ चाय का मगर इन्तेजाम करना पड़ा खाने का भी। फिर रात को बारह बजे एक काफ़ी का दौर भी हुआ। मुख़्तसर यह कि डेढ-दो बजे सब बिस्तर पर जा सके। इस लिए सुबह जब शिहाब उठा है तो उसे यही मालूम हो रहा था कि रात भी उसने हस्बे-मामूल घुटाई की है। आज सब ही ब्रेकफ़ास्ट के लिए देर मे मेज़ पर पहुँचे और डाक्टर साहब को तो नीलोफ़र गोया जबरदस्ती घसीट कर लाई वह मेज़ पर बैठे भी जमाइयाँ ले रहे थे; कहने लगे :

"एक तो जगाई, ऊपर से हार। कसम खाली थी जोकर ने मेरे पास न आने की। जब इन हज़रत को यानी फ़रीद साहब को मैंने अपने सर से टाला है कि ज़रा कुत्तों को आप ही अपने साथ लॉन पर टहला दीजिए तो जोकर ने आना शुरू किया। मैने कहा, जनाबेवाला आपको आखिर मुझसे क्या कद थी कि जोकरो पर पहरा लगाए बैठे थे, सर पर मेरे।"

फ़रीद ने कहा, "जी मुझे तो पता भी नहीं कि जोकर कौन से थे ?"

नीलोफ़र ने कहा, "कमाल करते हैं आप भी फ़रीद साहब ! जब कभी

रमी होती है, निहायत गौर से उस खेल को देखते हैं और अब तक खेल आना तो दर किनार आपको यह भी पता नहीं कि जोकर कौन से होते हैं ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "गनीमत समझो इसको कि इनको अब तक यह खेल नहीं आया वर्ना यह सबके साथ खेलते और सबका खेल खराब करते। हाँ बेटी तो आज तुम्हारी सहेलियाँ आ रही हैं ना ? भई मैं यह चाहता था कि सिद्दीकी और नियाज को भी बुला लेता, बशर्ते कि तुमको कोई एतराज़ न हो।"

नीलोफ़र ने कहा, "मुझे क्या एतराज होता। मेरी सहेलियाँ तो खैर चाय के वक्त से ही आ जायेंगी, आप उन दोनों को खाने पर बुला लीजिये।"

डाक्टर साहब ने कहा, "मकसद तो यह है कि कौकब का गाना उनको भी सुनवा दूं। ये दोनों बड़े हरिदास और सूरदास बनते है और बड़े-से-बड़े तानसेन को भी खातिर में नहीं लाते। ज़रा इन दोनों की तबियत साफ़ हो जायगी।"

बेगम साहबा ने कहा, "कहीं कौकब को तो एतराज न होगा ?"

नीलोफ़र ने बडे इस्तहकाक़ (अधिकार) के साथ कहा, "मजाल है उसकी जो एतराज़ करे ? और हाँ शिहाब साहब, आप भी जरा तैयार रहियेगा। मैंने दरअसल आप ही के बैडमिण्टन का ग़रूर चकनाचूर करने के लिए उनको बुलाया है। जरा बिरजीस और सुरैया के हाथ भी देखियेगा।"

शिहाब ने बडी मौलवियाना शान से कहा, "वह जिसको चाहे इज्जत दे, और जिसको चाहे ज़िल्लत दे।"

डाक्टर साहब ने क़हकहा लगाकर पूछा, "अरे भई तुम तो सचमुच मौलाना बनते जा रहे हो। बड़े दरवेशाना अदाज से बात की है इस वक़्त।"

शिहाब ने कहा, "और मैं क्या कहता, ख्वाहमख्वाह मुझे अभी से लजबि-अन्दाम करने को धमकाया जा रहा है, हालाँकि इतना अखलाक खुद मुझ मे है कि खवातीन से और खुसूसन जबकि वह मेहमान भी हों, एक शरीफ़ आदमी को हार जाना चाहिये।"

नीलोफ़र ने कहा, "अच्छा, अभी से यह तम्हीद है। हम आपकी हार को शराफ़त नही बल्कि शिकस्त समझेंगे और वह भी सिर्फ़ आपकी नहीं बल्कि अपनी भी। इसलिए कि मैंने उन दोनों को भी आपसे काफ़ी डरा रखा है। दूसरी बात यह है कि आपकी पार्टनर तो मैं ही हूँगी ना ?"

डाक्टर साहब ने बेटी को चिढ़ाया, "फिर तो इन बेचारे की हार बरहक हुई।"

नीलोफ़र ने वाकई चिढकर कहा, "आप जरा इनसे पूछ लीजिए शिहाब साहब से कि अब मै ऐसा कमज़ोर भी नहीं खेलती। तौबा है यहाँ बातों ही में इतना वक़्त हो गया। मैंने अब तक उन तीनों को फ़ोन तक नही किया है। तो डैडी में अंकल सिद्दीकी और अकल नियाज को भी फोन किये देती हूँ।"

और डाक्टर साहब का जवाब सुने बगैर वह यह जा और वह जा। उसके जाने के बाद सब अपनी-अपनी तरफ़ हो लिये। फरीद साहब ने, जिनको आज कई हफ्तों के बाद शिहाब के कमरे में आने की इजाज़त मिली थी, थोड़ी देर शिहाब को बोर किया। उसके बाद खुद शिहाब ने उनसे माज़रत (क्षमा) चाही कि इतने दिनो के बाद आज मै ज़रा सोने की भूली हुई मश्क को ताज़ा करना चाहता हूँ, इंशाअल्लाह खाने पर मुलाक़ात होगी। और उनको रुख़्सत करके वह सो गया। और चूँकि कय्यूम से यह कहकर सोया था कि अगर खाने के वक़्त तक मै न जागूँ तो मुझको जगाया न जाय, लिहाजा सचमुच ऐसा घोड़े बेचकर सोया कि खुद डाक्टर साहब ने उसको तीन बजे के करीब आकर जगाया कि ज़रा नहा-धोकर बाहर आओ, नीलोफ़र की सहेलियाँ आने ही वाली है। शिहाब ने उठकर गुस्ल किया, खेल के कपड़े पहने और जब वह बल्ला लेकर बाहर आया है तो जाल तन चुका था और वह तीनों मेहमान लड़कियाँ आ चुकी थी। बेगम साहबा और डाक्टर साहब के पास कुर्सी पर जो साहबज़ादी तमाशाई बनी बैठी थी, शिहाब ने समझ लिया कि यह तो है कौकब अब यह समझ में न आ सका कि कोर्ट में नीलोफ़र के अलावा जो दो लड़कियाँ कोशिश कर रही थी, उनमें से सुरैया कौन सी है और बिरजीस कौन सी। बहरहाल जैसे ही शिहाब क़रीब आये उन लड़कियों ने प्रैक्टिस बन्द करके उसी तरफ़ रुख किया और नीलोफ़र ने बढकर तार्रुफ (परिचय) कराया :

"ये है मेरी निहायत सईद (शुभ) और सआदतमन्द सहेली खुदा इन्हें महफ़ूज रखे बिरजीस ; और यह है खुदा इनकी उम्र में बरकत दे, अपनी जवानी का सुख देखें, मेरी अज़ीज़ अजजान सहेली सुरैया। और चलिये इनसे मिलाऊँ तानसेन-उन-निसवाँ (स्त्रियों में तानसेन) उस्ताद कौकब से।"

शिहाब ने झुककर उन दोनों को ताजीम दी और नीलोफर के इस शरारतआमेज़ तार्रुफ़ पर मुस्कराता हुआ कौकब के करीब आया, मगर यहाँ चूंकि कौकब के अलावा बुज़ुर्ग भी बैठे थे लिहाज़ा नीलोफर ने सिर्फ़ इतना ही कहा, "इनका तार्रुफ़ मैं करा चुकी हूँ, बाकी तार्रुफ़ यह खाने के बाद खुद करायेगी। अच्छा अब आप आइये मैदान में।।"

शिहाब ने कोट और मफ़लर उतारा, तीनों लडकियों ने अपने दुपट्टे पटके की तरह कसकर बाँधे, बाल समेटे और मैदान मे आगई। सुरैया और बिरजीस तैशुदा पार्टनर थी, लिहाजा शिहाब और नीलोफर पार्टनर बने। मगर अभी खेल शुरू भी न हुआ था कि डाक्टर साहब ने एक दम से चौक कर कहा ?

"अरे भई, वह हमारे बरखुरदार शटल काक कहाँ है ?"

नीलोफ़र ने कोट ही से जवाब दिया, "कौन फरीद साहब ? डैडी, वह ज़रा आज एहतमाम से बाहर निकलेंगे। उनको मालूम है कि आज का इज्तेमाअ जरा खतरनाक सा है।"

और उसी वक़्त फ़रीद साहब वाकई नोक-पलक से दुरुस्त, लहराते, बलखाते बरआमदे से बर आमद हुए। यहाँ खेल शुरू हो चुका था और बड़ी हमाहमी से शुरू हुआ था। खुद डाक्टर साहब के लिए यह पहला इत्तेफाक था कि शिहाब का खेल देखें। वह बड़े माहिराना और मँझे हुए अदाज़ से खेल रहा था। मगर यह भी वाक़या है कि सुरैया और बिरजीस का खेल भी मामूली न था। खुसूसन बिरजीस तो ऐसी अचानक प्लेसिंग करती थी और ऐसे नपे-तुले हाथ दिखाती थी कि शिहाब अगर ऐसा ही अच्छा खेलने वाला न होता तो ये दोनों लड़कियाँ उसे मार भगाती। मगर जब शिहाब ने उनके खेल का अंदाज़ा कर लेने के बाद अपनी महारत का मुज़ाहिरा शुरू किया तो थोड़ी ही देर मे बिरजीस ने एतराज़ कर लिया कि, "नही साहब, हमारा आपका कोई मुकाबला नही।" और सुरैया ने भी आखिर थक कर कह दिया कि, "खैर आप तक तो गनीमत है मगर आपके साथ प्रैक्टिस करके नीलोफ़र भी हमारे लिए खतरनाक बन जायेगी।"

इस एतराज के बाद शिहाब ने खेलने के बजाय उनको खिलाना शुरू कर दिया और रफ़्ता-रफ़्ता जिस संजीदगी से यह खेल शुरू हुआ था उसी हद तक

मज़ाक़ बनकर खत्म होगया। खेल के खत्म होने के बाद सब चाय की मेज़ पर आगये और अब ममदोहे···मजलिस फ़रीद साहब बन गये। उन सब लड़कियों ने मिलकर वह गत बनाई है इन हज़रत की कि तौबा भली। आखिर चाय के खत्म होने के बाद उन सबको यही छोड़कर कपड़े बदलने के बहाने से उन लड़कियों ने अपनी मजलिस नीलोफर के कमरे में गर्म करली। दरअसल इस अलैहदा मजलिस के लिए बिरजीस बहुत बेकरार थी, चुनांचे नीलोफर के कमरे में पहुँचते ही उसने इधर-उधर देखकर नीलोफ़र की आँखों-में-आँखें डालकर कहा।

"साहबजादी, तुम्हारे इन शिहाब साहब को हमने अक्छी तरह देख लिया और अब हमसे सुना कि तुम यह झूठ कहती हो कि यह तुम्हारे कोई नहीं है। यह तुम्हारे सब ही कुछ है।"

नीलोफ़र ने बडी तशवीश से कहा, "कौकब ऐसी हालत में उनको बेद मुश्क देना चाहिए या सुँघाने का कोई नमक काफ़ी होगा ?"

कौकब ने बड़ी संजीदगी से कहा, "भई मुझसे क्या पूछ रही हो, मेरा खुद यही खयाल है। मगर इतना मैं जानती हूँ कि इन्तखाब बुरा नहीं है।"

नीलोफ़र ने गर्दन हिलाते हुए कहा, "ओ मियाँ की टोडी ! यह तो खुद अपने दिल का चोर तूने पकड़वा दिया।"

सुरैया ने कहा, "जिसकी राय सबसे ज्यादा मुस्तनद है उससे कोई पूछता ही नही। हालाँकि बात यही पर खत्म हो जाती है कि वह किस दुलार से इनको कहते है—नीली !"

नीलोफ़र ने कहा, "तो आप क्यों लाल-पीली हो रही है ? नीली तो मुझको डैडी भी कभी-कभी कहते है। यह और बात है कि तुम सबके दिमाग में सिवाय इस एक बात के और कुछ आ ही नही सकता।"

बिरजीस ने कहा, "भई, अगर हमको वाकई यही मर्ज़ होता तो हम तुम्हारे इन लहरिया नवाब के लिए कुछ न कहते। हाय क्या हैण्डलूम जवाने-राना (सुन्दर नवयुवक) है !"

इस हैण्डलूम जवाने-राना पर सब खिलखिलाकर हँस पड़ीं और अभी यह तूफ़ान खत्म न हुआ था कि बाहर से तलबी हुई और ये सब उस महफ़िल में

आगये जहाँ तानबूरे के कान अमेठे जा रहे थे और तबले पर हथौड़ी चल रही थी। सिद्दीकी साहब और नियाज साहब भी आ चुके थे। इन सबसे कौकब, बिरजीस और सुरैया का तार्रुफ खुद डाक्टर साहब ने कराया और उसके बाद तै हुआ कि खाने से पहले भी सन्नाटा न रहे तो अच्छा है। चुनांचे कौकब ने पहले तो कुछ उस्तादी गाना सुनाकर उन सबको मबहूत (स्तभित) किया, उसके बाद हल्की-फुल्की चीज़ों मे भी अपने इन्तेखाब का सही मेयार पेश किया। खुसूसन 'हसरत' की गज़ल तो वह ऐसी गाई है कि सचमुच नशे आ गये। हद यह है कि खाने के लिए उठना भी सबको नागवार था और खाने के बाद तो कौकब ने सचमुच महफिल में मद्दो-जज़र की कैफ़ियत पैदा करदी।

६

****

शिहाब कपड़े बदल कर बाहर जाने के लिए तैयार ही था कि डाक्टर साहब-मोटा सा सिगार मुँह में दबाये आ पहुँचे और शिहाब समझ गया कि कोई निहायत अहम मामला दरपेश है। इसलिए कि डाक्टर साहब उमूमन (साधारणतया) उसके कमरे में उसी वक़्त आते थे जब कोई खास ही बात हो। दूसरे उसको याद आगया नीलोफ़र ने एक मर्तबा बताया था कि डैडी अगर सिगार पीते कभी नज़र आजायें तो समझ लेना चाहिए कि वह किसी ज़हनी उलझन में मुब्तिला हैं। उस वक़्त ये दोनों बातें साथ-साथ देखकर, उसने दिल-ही-दिल में कहा कि खुदा खैर करे, न जाने क्या बात है ? उसने खुद भी अंदाजा किया था कि जिस दिन बेगम साहबा का ब्लड-प्रेशर हो जाता है, डाक्टर साहब उनको दवा देकर खुद सिगार सुलगा लिया करते हैं। वह पूछने

ही वाला था कि बेगम साहबा की तबियत कैसी है कि डाक्टर साहब ने सोफ़े पर बैठकर एक डूका भरा मूंछों को मुरत्तब किया और सिगार का कश लेकर धुंएँ का बादल छोडते हुए बोले :

"सुनिये शिहाब मियाँ, किसी का एक शेर याद आ रहा है, हालाँकि अनवरी के शेर की चोरी है या तर्जुमा कह लीजिये, बहरहाल शेर सुनिये :

आसमाँ से जो कोई ताज़ा बला आती है
पूछती सबसे मिरे घर का पता आती है

शिहाब ने कहा, "जी हाँ, यह तो बड़ा भोडा सर्का (चोरी) है; वर्ना इसी बात को किसी ने एक मिसरे में भी जरीफाना अंदाज से कहा है :

ग़रीबख़ाना है मौजूद हर बला के लिए

डाक्टर साहब ने कहा, "जी हाँ यही समझ लीजिये। बहरहाल किस्सा यह है कि मेरे एक बिरादरे-मुहतरम व मुअज्जम (श्रद्धेय) जो बखुदा मेरे बिरादरे-मुहतरम व मुअज़्ज़म हरगिज नही है, और जिनको ज़िन्दगी मे पहली मर्तबा पिछले साल मैंने देखा था, जब वह एकदम से मेहमान बनकर आ गये थे और तक़रीबन चार माह मेरे यहाँ इस तरह क़याम फ़र्माया था कि मेरा इरादा हो गया था कि दरो-दीवार पर हसरत से नज़र करूँ और उनसे कह दूँ कि खुश रहो, हम तो सफर करते है। मगर न जाने मेरी कौन सी नेकी काम आ गई थी कि वह खुद ही तशरीफ़ ले गये थे। आज वह फिर तशरीफ़ ले आये है और बैठे हुए मुहब्बत छिड़क रहे है नीली पर और उनकी मा पर। खैर, वह शौक से तशरीफ लायें। मै मेहमानो से उस वक़्त तक नही घबराता जब तक वह अंग्रेजों की तरह हिन्दुस्तान मे न आयें। यह हज़रत अभी तो निहायत सिमटे-सिमटाये तशरीफ़ लाये है, अब यहाँ आकर फैलना शुरू करेंगे; फिर उनकी चिलम ड्राइंग रूम की सेण्ट्रल टेबल पर नज़र आयेगी। तहबंद धोकर बरामदे में सूखने को डाला करेंगे; पान की पिचकारियाँ लॉन पर नज़र आयेंगी। कभी वह किसी सोफ़े पर सोते नज़र आयेंगे और कभी मय हुक्के के के मेरे दफ़्तर के कमरे में बैठे दिमाग चाटते मिलेंगे आपको। हर काम में उनको दख़ल है और अब देख लीजियेगा कि घर का सारा इंतज़ाम सँभालकर बैठ रहेंगे।"

शिहाब ने मुस्कराकर कहा, "बड़े दिलचस्प आदमी मालूम होते हैं।"

डाक्टर साहब ने बेज़ारी से कहा, "जहन्नुम में गई उनकी दिलचस्पी अजीब बलाए-बेदरमाँ हैं। तशरीफ़ लाइये मैं उनसे मिलाऊँ आपको।"

शिहाब डाक्टर साहब के साथ हो लिया और बेगम साहबा के कमरे में जहाँ इस वक़्त नशस्त थी, ये दोनों जा पहुँचे। नौवारिद (नवागन्तुक) एक कुर्सी पर उँकड़ूँ बैठे उस वक़्त नीलोफ़र से मुखातिब थे :

"बेटी, यही खाने-खेलने के दिन है। मैं तो हैरान रह गया कि जैसा धान-पान पिछले साल छोड गया था बिल्कुल वैसी ही सीक-सलाई तुम अब भी हो। मालूम होता है जैसे बावा खाने ही को नही देते।"

डाक्टर साहब ने करीब जाकर कहा, "भाई साहब, इनसे मिलिए। यह है शिहाब साहब जिनकी मै आपसे तारीफ़ कर रहा था।"

नौवारिद ने सुनहरी कमानी की ऐनक का जाविया दुरुस्त करके शिहाब को ग़ौर से देखते हुए कहा,"माशा अल्लाह! माशा अल्लाह ! इस खाकसार को मिर्ज़ा खैरुद्दीन कहते हैं और जैसा कि आपको मालूम हो चुका होगा कि मै आपके इन डाक्टर साहब का अब वाहिद बड़ा भाई बाकी रह गया हूँ और खुदा इनकी उम्र में बरकत दे, मुझको इनसे ज्यादा कोई भी दुनिया में अजीज़ नही। रह गये आप तो प्यारे का प्यारा, आँख का तारा। तशरीफ रखिये। आपकी मैं काफ़ी तारीफ़ सुन चुका हूँ और यह वाक़्या है कि बड़ी मसर्रत हुई आपको देखकर। लखनऊ के किस खानदान से ताल्लुक है जनाब का ?"

शिहाब ने बैठते हुए कहा, "अब न वह ताल्लुक रहा, न वह खानदान। अब तो बस इसी खानदान का एक फ़र्द मुझको भी समझिये।"

मिर्ज़ा साहब ने मुशाइरे की क़िस्म की दाद दी, "ऐ सुभान अल्लाह ! क्या बात फ़र्माई है। क्या यगानगत है और क्या ऐतमादो-खुलूस है ! ताहम मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि उम्रे-अज़ीज़ का एक हिस्सा लखनऊ में भी गुज़रा है। ड्योढ़ी आग़ा मीर और वज़ीर गंज के मुकामे-इत्तेसाल (समीप) पर नवाब मंभू साहब की हवेली में मुसलसल छः साल क़याम रहा। सुभान अल्लाह क्या बावज़्अ लोग थे, क्या तहजीब थी और क्या सलीक़ा। तो मेरा मुद्दआ था कि···कि···मैंने कहा बेटी नीलोफ़र, तुमको भी तरस नहीं आता अपने बूढ़े

ताया पर। हुक्के के लिए तरस गया हूँ। कल इसी वक़्त चंद घूँट लिये थे। ज़रा अपने किसी बैरे-वैरे को बुलाओ, थैले में से हुक्का निकालकर ताज़ा कर दे और एक चिलम जमा दे।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह लीजिए भाई साहब सिगार।"

मिर्ज़ा साहब ने मुँह बनाकर कहा, "जी बख्शिये बन्दा नवाज यह सिगार-चुरट और वह क्या कहते है इसे पाइप अपने बस का रोग तो है नही। प्यासे की प्यास रेत फाँकने से नही बुझती। हाँ तो मै यह अर्ज़ कर रहा था शिहाब साक़िब साहब.....।"

सबको इस शिहाब साकिब पर बेसाख्ता हँसी आ गई। डाक्टर साहब ने कहा, "भाई साहब, यह नाम आपने शिहाब मियाँ का खूब रखा।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "लाहौल वला कूवत! वह शिहाब के साथ बेसाख्तगी मे साकिब कह गया। तो मैं अर्ज़ कर रहा था शिहाब साहब कि लखनऊ के इस तवील कयाम के बाद कोई क़ाबिले-ज़िक्र खानदान वहाँ का ऐसा न था जिससे थोड़ी बहुत शनासाई न हो गई हो। मसलन दौलतखाना किस मुहल्ले में था?"

शिहाब ने कहा, "ग़रीबखाना जौहरी मुहल्ले में था।"

मिर्जा साहब ने बड़ा-सा मुँह खोलकर खुश होते हुए कहा, "जौहरी मुहल्ला! क्या कहना है, लखनऊ के मुस्तनद शुरफ़ा का मुहल्ला है। मुज्तहिदीने-अज़्ज़ाम, शोअरा-ए-कराम और हुक्मए वजिबुल एहतराम का मुहल्ला। शाह मीना साहब रहमत उल्लाह अले की दरगाह से फ़ातेह पकड़कर नख्खास जाते हुए हर दूसरे तीसरे जौहरी मुहल्ले की तरफ़ ने गुज़रा करता था बल्कि एक मर्तबा तो आपके इसी जौहरी मुहल्ले के एक [illegible] मुशाइरे में भी शिरकत की है।"

शिहाब ने बड़े इश्तियाक़ से पूछा, "तो क्या कुछ शेरो-शाइरी से भी ज़ौक़ है?"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह पूछिये कि किस फ़न से ज़ौक़ नही है। पहलवानी से लेकर शाइरी तक और नुजूम से लेकर मूसीक़ी तक हर फ़न माला है हमारे भाई साहब।"

मिर्ज़ा साहब ने एक आहे-सर्द भरकर फ़र्माया, "मियाँ अब क्या रह गई है

शाइरी ? अपने हमनशी एक-एक करके सब उठ गये अब तो अपना यह हाल हैं कि :

इक शम्अ रह गई है सो वो भी ख़ामोश है

वर्ना एक ज़माना था कि कोई बड़ा मुशाइरा ऐसा न होता था जिसमें असातेज़ा (उस्तादों) की सफ़ में यह नाचीज नजर न आता हो। अब तो बरसों कुछ कहने का इत्तफाक ही नही होता और कहे भी किसके लिए ? न वह भाई सफी रहे, न वह भाई रियाज़। चैन न आता था उनको भी जब तक 'सोख्ता' शरीके-बज़्म न हो।"

शिहाब ने जान-बूझकर पूछा, "यह 'सोख्ता' कौन साहब थे ?"

मिर्ज़ा साहब ने बड़े ऐतमाद से फ़र्माया, "मियाँ—

यही 'सोख़्ता' है वो सोख़्ता जो कभी था सुफ़ले-नाज़ में

अपना ही ज़िक्र कर रहा हूँ। हैरत है कि आपने अब तक मेरा ज़िक्र ही कही नहीं पढा।"

डाक्टर साहब ने कहा, "भाई साहब, यह आजकल के नौजवान आप के ऐसे मुतकद्दिमीन (प्राचीन) को क्या जानें। ये तो फैज अहमद 'फ़ैज' आबिद अली 'आबिद', 'फ़िराक़', 'जोश', 'जिगर' या ज़्यादा-से-ज़्यादा 'सालिक' वगैरा को जानते है।"

मिर्जा साहब ने बड़े इबरत-अगेज अदाज से कहा, "जी हाँ हम तो अब मरहूमीन मे से है। अभी पिछले महीने मुल्तान के कुछ तालिबे-इल्म जबरदस्ती मुझको पकड ले गए थे कि मुशाइरे की सदारत कर दूँ। मुद्दत के बाद गज़ल कही थी, अर्ज करता हूँ···।"

बेगम साहबा ने घबराकर कहा, "सुनिए तो भाई साहब, जरा हाथ-मुँह धोकर ताजा हो जाइए। अपना सामान वगैरा कमरे मे ठीक से लगवा दीजिए; फिर सुनाते रहिएगा अपना कलाम।"

मिर्जा साहब ने खुश होकर कहा, "बस यही मुहब्बत तो तुम लोगों की याद आती रहती है कि ख्वाह मेरे कलाम से महरूम रह जायें, मगर मेरे आराम का बन्दोबस्त हो जाए। अरे भई, वह मेरा हुक्का कहाँ है ? क्या नाम है आप का साहबजादे, फ़रीद मियाँ ? जरा आप ही बैरे से कहिए कि हुक्का ले आए,

तलब बुरी तरह सता रही है। और भई, जरा बैरे से यह भी कहना कि मैं कोई तरकारी न खा सकूँगा अगर भुना हुआ गोश्त हो तो भी काम चल जाएगा, वर्ना बत।ए तो गए है परिन्द खाने के लिए।"

शिहाब ने बड़ी दिलसोज़ी से पूछा, "तो क्या दुश्मनों की तबियत कुछ नासाज़ है ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "हो जाती है नासाज अगर परहेज न करूँ। हाज़िरी का मक़्सद यही था कि मियाँ लतीफी से दो-च।र महीने इत्मिनान से रहकर इलाज करा लूँगा ; वर्ना किस्सा तो दरअसल यह है कि अब रह ही क्या गया है, चिरागे-सहरी (प्रभात के दीप) है हम।"

इस अर्से में बैरे ने आकर हुक्का वहीं रखना चाहा था मगर नीलोफर का इशारा पाकर वह हुक़्का वापस ले गया तो नीलोफर ने कहा :

"बड़े अब्बा, हुक़्का आपके कमरे मे लगा दिया गया है।"

मिर्ज़ा साहब ने उठते हुए कहा, "खुश रहो, सलामत रहो। अच्छा हज़्ज़त तो अब खाने पर मुलाकात होगी।"

उनके जाने के बाद डाक्टर साहब ने बेगम साहबा से कहा, "दो-चार महीने इत्मिनान से इलाज करायेंगे ताकि वह सेहतयाब हों और हम सब बीमार।" और यह सुनकर बेगम साहबा भी कुछ बुदबुदा कर गई।

१०

****

नीलोफ़र अपनी सहेली बिरजीस के घर गई हुई थी, डाक्टर साहब किसी मरीज़ को देखने गए थे और शिहाब को मिर्जा साहब घेरे हुए बेगम साहबा के

कमरे में बैठे अपनी बेगम साहबा मरहूम के कमालात व करामात सुना रहे थे कि एकदम से डाक्टर साहब ने दाखिल होकर कहा :

"अरे भई, मैंने कहा सुनती हो रुबी भी गई।"

मिर्जा साहब पट से बोल पड़े, "इन्ना लिल्लाहे व इन्नाइलैहे राजऊन*। मगर यह रुबी कौन ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "वही मेम साहब जिसे अफ़ज़ल विलायत से लाया था।"

बेगम साहबा ने सँभलकर बैठते हुए कहा, "तो क्या विलायत चली गई ?"

डाक्टर साहब ने जवाब दिया, "नहीं, फ़िलहाल तो एक होटल में कयाम है। चली ही जायगी नामुराद, और यहाँ क्या करेगी। मगर सुना है उसने उनका सारा गुण्डापन खत्म कर दिया और वह तिगनी का नाच नचाया है कि याद करते होंगे हिज्जे और मानी।"

बेगम साहबा ने कहा, "विलायत में तो माले-मुफ़्त दिले-बेरहम वाला किस्सा था ना कि हमको लूट-लूट कर उसको खूब ऐश कराए और बडे सब्ज़ बाग दिखाए। वह भी समझी होगी कि बड़ा रईसज़ादा मिल गया है। अब यहाँ सारी कलई खुल गई होगी उस रियासत की और नज़र आ गये होंगे उस को ढाक के तीन पात।"

डाक्टर साहब ने कहा, "वह तो जान को आगई है कि मुझसे बहुत से झूठ बोले गए, मुझको बड़े-बड़े फ़रेब दिए गए। मुझसे अपना शादी-शुदा होना छिपाया, मुझ को अपनी रियासत और अमारत का यक़ीन दिलाया और यहाँ आकर मालूम हुआ कि सिवाय दगाबाज़ के तुम लोग और कुछ हो ही नहीं।"

मिर्जा साहब ने कहा, "सच कहती है वह। ऐसे-वैसे दग़ाबाज़ भी नहीं, निहायत आला दर्जे के दग़ाबाज़, क़िस्मे-अव्वल के दग़ाबाज़।"

डाक्टर साहब ने कहा, "अब वह अपने कानूनी मुशीरों से मशविरा ले रही है और अन्करीब उनको अदालत में खेंचने वाली है।"

---

*'सब ईश्वर के हैं और उसी के यहाँ सबको जाना है।' मुसलमानों में किसी का मृत्यु-समाचार सुनकर यह वाक्य पढ़ते है।

बेगम साहबा ने कहा, "वैसे मैंने सुना है कि बेचारी बहुत नेक दिल, मिलनसार और खुश-अख़लाक है। मगर यह आपको कैसे मालूम हुआ ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "मैं इस वक़्त गया था चौधरी अमानुल्खा खाँ को देखने। उन्ही से तमाम हालात मालूम हुए। वह तो उन लोगो के रगो-रेशे से वाकिफ़ है, उनको एक-एक बात की खबर रहती है। चुनाचे उन्हे मालूम हुआ है कि अब उस बेचारी से तक़ाज़ा यह था कि अंग्रेजी नाच सिखाने का स्कूल खोलले या ट्यूशन पढाये ताकि कुछ आमदनी हो। वह जली-भुनी तो बैठी ही थी, इस मुतालबे ने उसको उबल पड़ने का मौका दिया और उसने पहले तो सबकी खूब तबियत साफ़ की, उसके बाद प्रेस मे अपना एक बयान दे दिया कि मुझको इस तरह से लाया गया है और ये धोखे दिये गये है। और यह अब मुझको अपनी आमदनी का ज़रिया बनाना चाहते है। लिहाजा मैं इनके घर से जा रही हूँ ताकि अलैहदा रहकर इस फ़रेबदेही के खिलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई करूँ। चुनांचे अब वह एक होटल में है।"

मिर्जा साहब ने कहा, "लाहौल वलाकूवत ! डूब मरे मरदूद ! खुदा के यहाँ देर है अंधेर हरगिज़ नही। मेरी बेजुबान बच्ची का जो सब्र उस कमबख्त ने समेटा था, वह उसको तबाह करके रहेगा।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह क्या फ़र्मा रहे हैं आप ? उसने सब्र-वब्र हरगिज़ नही समेटा, बल्कि यह तो उसने एहसान किया था। खुदा का हजार-हज़ार शुक्र है कि उसने हमको इस ज़िन्दगी भर के अजाब से निजात दे दी और हमको उस वक़्त बचा लिया जबकि हम उस दलदल में फँस चुके थे।"

शिहाब ने जो देर से खामोश बैठा था कहा, "मगर सवाल यह है कि आखिर यह हजरत कुछ-न-कुछ तो करते ही होगे।"

डाक्टर साहब ने कहा, "जी हाँ, करते क्यों नही हैं। गुण्डागर्दी कोई मामूली शुग्ल है। एक-से-एक मुजरिमाना सरगर्मी उनके खानदान के अफराद को मसरूफ़ रखती है। उनके एक चचा सज़ायाफ़्ता हैं जिनके घर से जाली नोट बनाने का सामान बरामद हुआ था। उनके एक मामू जुआ खिलवाते है और आये दिन उनके यहाँ पुलिस छापा मारती रहती है। शहर का कोई बदमाश ऐसा नही है जिससे उनके मरासिम न हों।"

शिहाब ने कहा, "जी नहीं, मेरा मतलब यह है कि आखिर इतने दिन यूरोप की खाक छानी है, कोई सनद न ला सके न सही, मगर इतनी शुदबूद (सुध-बुध) तो हो ही गई होगी कि किसी प्राइवेट कम्पनी ही में मुलाजमत कर लें। बहुत सी प्राइवेट कम्पनियों की मुलाजमतें सरकारी मुलाजमतों से भी ज्यादा शानदार होती है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "कमाल करते हैं आप भी शिहाब मियाँ! जब हराम मुँह को लग जाता है तो हलाल की तरफ तबियत ही नही जाती। अब चौधरी अमानुल्लाखाँ से मालूम हुआ है कि अफजल से सारा खानदान इस बात पर तो नाराज़ है कि उसने विलायत से मेम लाकर सोने की चिड़िया हाथ से खोई, मगर अब तक यह इस बात के ख्वाब देख रहे है कि यह तलाक अदालत ने दिलवाया है, शरई तलाक इसलिए नही हुआ कि अफज़ल ने तलाक नही दिया है।"

मिर्जा साहब ने कुर्सी पर उचक कर कहा, "घास खा गया है वह लफ़गा वाही हुआ है वह उल्लू का। अब मैं क्या अर्ज़ करूँ?"

शिहाब ने कहा, "आप इन बातो को गैरअहम और मामूली न समझें। इसका मतलब यह है कि जिस मुजरिमाना सरगर्मी का एक मुज़ाहिरा पिछले दिनों हो चुका है, ऐसी-ऐसी खुदा जाने कितनी तरकीबें उनके ज़हन में अब भी आती होगी, और वह अब तक सब्र करके नही बैठे है बल्कि अब जबकि रुबी भी उनके घर से चली गई है, कुछ अजब नही कि उनकी तमाम तवज्जो इसी तरफ मरकूज हो गई हो।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह खयाल खुद मेरे जहन मे भी है और चौधरी [illegible] ने भी इसी किस्म की बात कही थी। बल्कि उनकी तजवीज़ तो यह है कि हमारे यहाँ मुस्तकिलन एकाध मुसल्लह पहरेदार होना चाहिये।"

मिर्जा साहब ने अपनी ढाई पसलियों के साथ अकड कर कहा, "अजी उसकी ऐसी की तैसी। अब मैं यहाँ आ गया हूँ सौ मुसल्लह पहरेदारों का एक ग़ैरमुसल्लह पहरेदार। बखुदा इन बूढी हड्डियों में अब भी इतना कस-बल है कि छटी का दूध याद दिला दूँ।"

शिहाब ने इस बकवास के खत्म होने का इन्तेज़ार किये बग़ैर कहा,

"मेरी राय एक और थी, बशर्ते कि आपकी कोई मस्लेहत माने (बाधक) न हो।"

डाक्टर साहब ने बडी आमादगी से कहा, "भई, मै तुम्हारी सूझ-बूझ का बडा कायल हूँ, तुम जरूर कोई दूर की कौड़ी लाये होगे।"

शिहाब ने कहा, "अगर रुबी हम लोगों से मिल सके तो उससे बहुत कुछ मालूम हो सकता है कि उनके इरादे क्या है ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "ऊँ हुँ हुँ, बेकार की बात है।"

डाक्टर साहब ने उनको डाँटने के अन्दाज से कहा, "ठहरिये तो साहब, बेकार की बात कैसी। मेरे खयाल मे तो यह निहायत ही माकूल तजवीज है। उन लोगो के इरादों का अगर उसको इल्म न भी हुआ तो भी उससे यह तो मालूम हो ही जायेगा कि उनका अन्दाजे-फ़िक्र क्या है। उनके यहाँ किस किस्म के जिक्र होते है और पिछले दिनो जो मुजरिमाना कोशिश उनकी तरफ़ से हुई थी मुमकिन है उसका भी रुबी को कुछ इल्म हो।"

बेगम साहबा ने कहा, "वह तो खुदा से चाहती होगी कि हम लोगों से मिले। इसलिए कि हम से मिलकर खुद उसको अपने मामले मे बड़ी मदद मिल सकती है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "मगर सवाल यह है कि उसको बुलाया कैसे जाये ? यह तो मुझको मालूम है कि वह किसी होटल में है, मगर···।"

मिर्जा साहब ने बात काट कर कहा, "यह अगर-मगर की क्या बात मुझको बताइये। अब मै जाता हूँ और उसको घेर कर लाता हूँ।"

शिहाब के मुँह से निकल गया, "यह काम आपके बस का नही।"

मिर्जा साहब बुरा मान गये, "क्या मतलब साहबज़ादे ? यानी यह अदना सा काम मेरे बस का क्यों नही ?"

शिहाब ने बात बनाई, "इसलिए यह आपके बस का नही है कि यह अदना सा काम है। हम आपकी बेपनाह क़ूवत का यह असराफ़े-बेजा (अनुचित व्यय) समझते है कि आपसे यह छोटा-सा काम लिया जाये। आपकी जरूरत अहम मार्को मे पेश आयेगी।"

मिर्ज़ा साहब आ गये इस झाँसे में, "हाँ यह दूसरी बात है।"

शिहाब ने डाक्टर साहब से कहा, "आप मुझको बतायें, मैं खुद रुबी से मिलता हूँ और मुझको यकीन है कि वह तो इसको मुँह-माँगी मुराद समझेगी कि इस अजनबी मुल्क में उसको ऐसा कीमती ताव्वुन हासिल हो सका ।"

फ़रीद मियाँ का गालिबन चुप बैठे-बैठे जी घबराया और एक मर्तबा खँखार कर वह भी बोले, "मगर एक बात और भी है···।"

डाक्टर साहब ने इस वक़्त भी फ़रीद से उसी अन्दाज से बात की, जो अन्दाज उनके लिए मखसूस था, "वह बात इन्शा अल्लाह निहायत मोहमल निकलेगी ।"

बेगम साहबा ने सिफारिश की, "तौबा है, सुन तो लीजिए । मुमकिन है उसकी समझ में भी कोई बात आ गई हो ।"

शिहाब ने भी कहा, "हाँ बताइये, बताइये ना फ़रीद क्या बात है ?"

फ़रीद ने बड़े शर्मीले अन्दाज़ से रुक-रुक कर कहा, "हमारी इन सरगर्मियों का एक मतलब यह भी हो सकता है कि हम खुद ही इन भिड़ों के छत्ते को छेड़ रहे है ।"

मिर्ज़ा साहब ने बरजस्ता कहा, "हाय क्या याद दिलाया है शम्सू ज़नाने का गाना :

भिड़ का छत्ता न छेड़ो भिड काट खायेगी ।"

बावजूद इस संजीदा बहस के बुरा हाल हो गया सब का हँसी के मारे । आखिर डाक्टर साहब ने फरीद को समझाया कि यह भिड़ का छत्ता हम नहीं छेड़ रहे है बल्कि अपने को सिर्फ़ बाखबर रखना चाहते है कि दुश्मन के मन्सूबे हमारे लिए क्या है । और मैं शिहाब मियाँ की इस राय से पूरा इत्तफ़ाक करता हूँ कि रुबी से हमको बहुत कुछ मालूम हो सकेगा । और खुद रुबी हम से मिलना इसलिए गनीमत समझेगी कि हमारे ताव्वुन से खुद उसको बड़ी तकवियत पहुंच सकती है बहरहाल डाक्टर साहब और बेगम साहबा दोनो ने और उन दोनों के बाद मिर्ज़ा साहब ने यह तै कर दिया कि शिहाब को होटल जाकर रुबी से मिलना चाहिए ।

यह क़िस्सा यही तक पहुँचा था कि नीलोफ़र वापस पहुँच गई और डाक्टर साहब ने दानिस्ता मौज़ू बदल दिया ।

११

****

जिस वक़्त शिहाब रुबी को लेकर डाक्टर साहब के यहाँ पहुँचा है, डाक्टर साहब, बेगम साहबा और नीलफर को तो उसका इन्तेजार था ही मगर मिर्जा साहब और फ़रीद दोनों ने अपनी आराइश व जेबाइश में खास एहतमाम से काम लिया था। मिर्जा साहब चुनी हुई दुपल्ली टोपी बाँकी-तिरछी लगाये, कढा हुआ निहायत खूबसूरत कुर्त्ता पहने और खस का इत्र लगाये बैठे थे। फ़रीद साहब ने ऐसा बेशिकन सूट पहना था गोया सूट पहनने के बाद खुद अपने ऊपर स्तरी कराई है। खुसूसन कोट तो मालूम होता था मय हैगर के पहन लिया है, सबसे ज्यादा सादा लिबास मे नीलोफर थी जो सफेद गरारे और सफ़ेद ही कमीस और दुपट्टे में शोरे की पुतली मालूम होती थी। सर पर भी चौडा-सा सफ़ेद रिबिन बँधा हुआ था। शिहाब के साथ रुबी आस्मानी रंग के अंग्रेजी लिबास में लहराती हुई कमरे में दाखिल हुई मगर उस अंग्रेजी लिबास पर जब उसने कमरे में आते ही ठेठ मशरिकी अदाज़ से शरीफ बहू-बेटियों की तरह सबको तालीम दी है तो सच्ची बात यह है कि उसकी इस पहली ही अदा ने सब के दिल मोह लिये। वह मशरिकी इम्तेजाज के साथ मगरिबी हुस्न का जामे नमूना थी, उस पर तुर्रा यह कि जब शिहाब ने उसका तार्रुफ सबसे कराया तो और सबके सामने वह मुस्करा-मुस्करा कर गर्दन खम करती रही, मगर जब नीलोफ़र से तार्रुफ़ हुआ तो बड़ी यगानगत के साथ नीलोफ़र का हाथ पकड़ कर निहायत शुस्ता उर्दू मे कहा :

"इनसे मिलने को मेरा बहुत जी चाहता था मगर यह तो जितना मैंने सुना था उससे बहुत ज्यादा दिलकश है।"

मिर्ज़ा साहब ने हैरत से कहा, "लाहौल वला क़ूवत ! गोया सारी मेहनत अकारत गई। रात-भर बेचारे फ़रीद का मैंने दिमाग चाटा है और आप से मिलने के लिए चन्द जुमलों की मश्क की है—*How do you do ?* और वह क्या था दुसरा जुमला *Very good to see you* मुझे क्या मालूम था कि आप टकसाली उर्दू बोलती हुई निकलेंगी।"

रुबी ने हँसकर कहा, "मुझे अफसोस है कि आपकी मेहनत बेकार गई, मगर मैं इतने दिनों से आपके मुल्क में हूँ, क्या यहाँ की जुबान भी न सीखती ?"

डाक्टर साहब ने मूँछो की मिजाजपुर्सी के बाद रुबी से कहा, "बेहतर यह है कि मै आपको बेटी कहकर मुखातिब करूँ।"

रुबी ने बरजस्ता कहा, "सिर्फ कहकर नही बल्कि समझ कर भी।"

मिर्जा साहब ने वही मुशाइरे वाली दाद दी, "ऐ सुभान अल्लाह, क्या बात फर्माई है मुहतरमा मेम साहबा ने ! वाह, वाह, वाह !"

डाक्टर साहव ने जल्दी से कहा, "बेटी, हमारे यह भाई साहब आला दर्जे के *Idiot* है, बस इसका खयाल रखना।"

मिर्जा साहब ने जल्दी से कहा, "जनाब इसकी सनद नही है। जब वह उर्दू समझ सकती है तो अंग्रेजी की शर्त नही।"

डाक्टर साहब बोले, "भाई साहब, मै मुँह पर कहना खुशामद समझता हूँ, इसलिए आपकी तारीफ उस जुबान में की है जिसे आप नही समझते।"

मिर्जा साहब ने बड़े तजस्सुस (उत्सुकता) से पूछा, "मगर यह डीवट क्या कहा है ?"

नीलोफर ने बेसाख्ता कहा, "खूब समझे आप डीवट ही तो कहा है। मतलब यह था कि आप डीवट है जिस पर आपकी अक़्ल का चिराग रोशन है।"

मिर्जा साहब ने बडी खाकसारी के साथ रुबी से कहा, "यह दरअसल इन सबकी मुहब्बत है वरना 'मन आनम कि मन दानम'।"*

बेगम साहबा जो इन लताइफ-व-जराइफ़ से आजिज आ चुकी थी, उलझ कर बोलीं, "तौबा है, इस बेचारी से न कोई पानी को पूछ रहा है न कुछ, सब ख्वाहमख्वाह की बातों में लगे हुए हैं।"

---

*मैं जो कुछ हूँ, खुद ही जानता हूँ।

रुबी ने बड़ी यगानत से कहा, "मुझ से किसी को कुछ पूछने की ज़रूरत नही चची जान । मै यहाँ तकल्लुफ़ करने या मेहमान बनने नही आई हूँ । जिस चीज़ की ज़रूरत होगी खुद माँग लूंगी ।"

डाक्टर साहब ने खुश होकर कहा, "हाँ जब मै बेटी कह चुका तो मुझको तुमसे यही तवक़्क़ो होनी चाहिये । मगर एक सच्ची बात मुझसे जब्त नही हो रही है, पहले मै वह कहकर ज़रा अपने जी को हल्का कर लूं । वह बात यह है कि आज मैने पहली मर्तबा इस बच्ची को देखा है, मगर मालूम नहीं क्या बात हे कि मुझे कुछ ऐसा महसूस हो रहा है जैसे यह मुद्दत से हम में घुली-मिली हुई है । और हमारे लिए बिल्कुल अजनबी नही है ।"

रुबी ने कहा, "अब मै भी एक सच्ची बात कह दूँ जो मुझसे ज़ब्त नही हो रही है कि मै इतनी ही देर मे इस बात पर हैरान हो चुकी हूँ कि दुनिया में अफजल से ज़्यादा बद-किस्मत और कौन होगा जिसने ऐसी अच्छी बीवी और ऐसी अच्छी सुसराल की क़द्र न की ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "नही बेटी उसको तो यो कहो कि हम लोगों से ज़्यादा खुशक़िस्मत और कौन होगा जिनको अल्लाह ताला ने अफ़ज़ल और उनके खानदान की इस क़द्र-अफजाई से बाल-बाल बचा लिया ।"

रुबी ने कहा, "जी हाँ यह भी आप ठीक ही कह रहे है । खुदा महफूज रखे उन लोगों से । मगर वह तो अब तक यही समझ रहे है कि आप लोग उनके चुँगल से नहीं निकले है और वह किसी वक़्त भी इस फिक्र से गाफ़िल नही है कि यह सोने की चिडिया उनके जाल में फँस जाये ।"

शिहाब ने कहा, "चुनाचे अभी पिछले दिनों एक मुजरिमाना हमला हुआ भी था जिसमे महज इत्तफाक मे मै बीच में फाँद पड़ा था और ज़ख्मी हो गया था ।"

रुबी ने फटी-फटी आँखों से शिहाब को देखकर कहा, "अच्छा वह आप ही थे । यह तो मैने सुना था कि उनके एक किराये के बदमाश के अनाड़ीपन की वजह से बना-बनाया खेल बिगड कर रह गया और एक अजनबी न जाने कहाँ से आकर बीच में फाँद पड़ा वर्ना स्कीम यह थी कि नीलोफ़र को उसी रात यहाँ से कई मील दूर भेज दिया जाता और जब यह मामला ठण्डा पड़ जाता

तो अफजल वग़ैरा भी वहाँ पहुँच जाते और फिर नीलोफ़र को इस हद तक राम करने की कोशिश की जाती कि खुद यही बयान देती कि मेरे बाप ने ज़बरदस्ती तलाक हासिल किया है, वर्ना मैं तो अफ़जल ही को अपना शौहर समझती हूँ।"

मिर्जा साहब ने गुस्से से कहा, "उल्लू का···अब मै क्या अर्ज करूँ।"

रुबी ने सिलसिला जारी रखा, "और अगर यह खुशी से यह बयान दे देतीं तो उनको उस वक्त तक महबूस (बन्दी) और मजबूर रखा जाता जब तक खुदा न करे आपका इन्तेकाल न हो जाता। मक्सद तो सिर्फ़ यह था कि आपकी दौलत के वारिस को किसी-न-किसी तरह वह कब्जे में लाना चाहते है। इस सिलसिले की एक कोशिश कर चुके है और बाकी कोशिशों की फिक्र में है·· ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "तो गोया उनकी सरगर्मियाँ जारी है ?"

रुबी ने कहा, "हर वक़्त सब सर जोड़े यही खिचड़ी पकाया करते है। रह गई सरगर्मियाँ उनमें हिस्सा लेने वाले तो दूसरे है, उनका तो सिर्फ़ इशारा होता है। वहीदा नामी कोई गुण्डा है जो बजाहिर निहायत मुअज़्ज़िज शहरी बना हुआ है। आप तो जानते होगे उसे ? सुना है कि आपके वालिद से और उसके वालिद से बड़े मरासिम (सबंध) थे।"

डाक्टर साहब ने सँभलकर बैठते हुए कहा, "हाँ हाँ, बड़ा खतरनाक गुण्डा है, बल्कि गुण्डो की टोली का सरदार है। और उसके कारिन्दे दूर-दूर तक फैले हुए है। बर्दा-फ़रोशी वह करता है, स्मगलिग का निहायत मुनज़्ज़म (सगठित) व्यापार उसका है ; अग़वा की जितनी मुल्कगीर वारदाते होती है उनमे से बेशतर उसी के हाथो होती है। तो गोया उससे साज़बाज़ है। मगर उसको मुझसे क्या इख्तलाफ़ हो सकता है। मुझसे तो अब तक बहुत अच्छी तरह—मेरा मतलब यह है कि बिरादराना तरीके पर मिलता रहा है। बहरहाल तो गोया यह साजबाज है।"

रुबी ने कहा, "ऐसा-वैसा साज़बाज़ नही बल्कि वह तो उस खानदान का गुरू बना हुआ है। उनके घर मे जो इज़्ज़त वहीदा की है वह क्या किसी खुशएतक़ाद मुरीद के घर में पीर की होगी।"

शिहाब ने कहा, "मैं पहले ही कहता था कि हमारे चारों तरफ़ साजिशों के जाल बिछे हुए है और हमको फूंक-फूंक कर कदम रखना चाहिये, मगर रुबी बहन, आप भी तो इस बगावत के बाद इस खतरे मे मुब्तला है।"

रुबी ने कहा, "जी नही, मेरे लिए कोई खतरा नही है। मुझको तो वह खुदा से चाहते थे कि किसी तरह दफान हो जाऊँ। अफजल के घरवालों को सारा गुस्सा तो मुझ ही पर आता है कि मेरी ही वजह से घर आई लक्ष्मी उनके हाथ से निकल गई और अब भी उनका खयाल यह है कि मेरे वहाँ से चले आने के बाद शायद हालात इतने दुश्वार न रहेगे जितने मेरी मौजूदगी में थे। इसलिए कि मै तो यह कयामत अलग वर्पा किये हुए थी कि एक तो मुझको धोखा देकर और मुझसे झूठ बोलकर शादी की गई और मुझको यहाँ लाये; अब यह कोशिश हो रही है कि जाइज या नाजाइज जिस तरह भी हो एक सौत मेरे सर पर लाई जाये। रोज इस सिलसिले मे तू-तू मैं-मै होती थी। अब तो उन सबने खुदा का शुक्र अदा किया होगा कि यह काँटा किसी तरह खुद-ब-खुद निकल गया। अलबत्ता अगर आप लोग एहतियात नही बरत रहे है तो यह बडी खतरनाक बात है। आप उसको कोई मामूली साजिश न समझें। तलाक के मुकद्मे में शिकस्त खाकर वह लोग कसम खा चुके है कि वह दौलत अपना कर रहेगे और वहीदा ने उनको यकीन दिला दिया है कि अगर मेरे दम-में-दम है तो डाक्टर साहब की बेटी और पूँजी को दिलवाकर रहूंगा। आपको मालूम है कि आपके घर की जरा-जरा सी खबर उनके यहाँ पहुंचती है।"

शिहाब ने कहा, "जाहिर है कि जब इस कदर मुनज़्जम साजिश है तो रसानी का भी माकूल इन्तेज़ाम होगा।"

रुबी ने कहा, "जब तक मै वहाँ थी, उस वक़्त तक मि० शिहाब के मुताल्लिक मैने कोई बात न सुनी थी, मगर अब आप भी उनकी नज़रो मे होंगे।"

डाक्टर साहब ने चाय की ट्राली आती देखकर गुफ्तगू का मौजू बदलते हुए कहा, "रुबी बेटी, यह बताओ कि तुम इस कद्र साफ़, शुस्ता, बा-मुहावरा और बेतकल्लुफ़ उर्दू कैसे बोलने लगीं?"

रुबी ने हँसकर कहा, "चार साल तो विलायत ही में उर्दू से साबिक़ा रहा और बड़े शौक से मै उर्दू सीखती रही। फिर यहाँ भी कई बरस तो हो गये सिर्फ उर्दू बोलते और सुनते हुए। अब तो मुझे कुछ ऐसा महसूस होने लगा है कि शायद मिर्जा साहब की तरह मुझे भी अंग्रेजी बोलने की मश्क फ़रीद साहब से करना पडेगी।"

मिर्जा साहब ने कहा, "मगर वाकई फूल झड़ते है आपके लबों से जब आप उर्दू बोलती है। चाय बनाऊँ आपके लिए ?"

रुबी ने कहा, "लेडीज का यह हक भी आप छीन लेंगे।" और उसने ट्राली अपने सामने घसीट कर चाय बनाना शुरू कर दी।

१२

****

रुबी से इस मुलाकात के बाद डाक्टर साहब तो मालूम नही किस नतीजे पर पहुँचे मगर शिहाब अब इस नतीजे पर पहुँच गया था कि यह मुकाबिला इतना मामूली नही है कि उसको वेपरवाही से टाला जाये, बल्कि उसको यह खतरा करीब आ रहा था कि अगर डाक्टर साहब इस मामले में इसी तरह गैर संजीदा रहे तो सख्त नुक़्सान उठा जायेंगे और उनकी बेफिक्रियों की सजा गरीब नीलोफ़र को भुगतनी पड़ेगी। आखिर उसने बड़े गौर व फ़िक्र के बाद तै किया कि उसे फ़ौरन सियालकोट जाना चाहिए जहाँ उसके बचपन का साथी और हमजमाअत (सहपाठी) अर्जमन्द डी० एस० पी० होकर आया है। मगर इससे पहले कि वह अपने सफ़र का इरादा डाक्टर साहब वगैरा पर जाहिर करे, उसको खयाल आया कि इन हालात में उसका यहाँ से ग़ैरहाज़िर होना भी ठीक नहीं

है। लिहाज़ा उसने खुद अर्जमन्द को यहाँ बुलाना मुनासिब समझकर सिर्फ़ एक तार दे दिया कि मुझको तुम्हारी शदीद ज़रूरत है, एकाध दिन के लिए फौरन आजाओ। और जब उस तार का जवाब भी तार ही पर आगया कि मैं आरहा हूँ तो उसने डाक्टर साहब को सिर्फ़ यह बताया कि मेरे एक देरीना दोस्त दो-एक दिन के लिए मेहमान आ रहे है। डाक्टर साहब के लिए सिर्फ यह सुनना काफी था कि शिहाब का कोई दोस्त आ रहा है। वह निहायत इनहिमाक (संलग्नता) के साथ मेहमान की ख़ातिरख़्वाह (सतोषजनक) तवाजो (आतिथ्य) के एहतमाम में मसरूफ हो गये। मेहमान खाने की सफ़ाई और आराइश से लेकर दावतों के एहतमाम का एक हश्र-सा बर्पा करके रख दिया कि यह सोफा सेट निकालो और यह रखो, यह कालीन उठाओ और यह बिछाओ; यह बैरा नही बल्कि वह बैरा मेहमान के लिए मन्सूस होगा; इस वक़्त की चाय लान पर होगी और उस वक़्त का खाना ड्राइंग रू म म होगा; एक पिकनिक शाला-मार की होगी और एक डिनर उस होटल में होगा। शिहाब चाहता था डाक्टर साहब को बता दे कि अर्जमन्द को उसने क्यों बुलाया है। मगर अब वह इस कद्र मोहतात होगया था कि बग़ैर अर्जमन्द से मशविरा किये वह डाक्टर साहब से भी कुछ कहना न चाहता था लिहाजा उसने ये इन्तेजामात होने दिये कि अर्ज-मन्द के आने के बाद वह प्रोग्राम कुछ-का-कुछ हो जायगा और जब अर्जमन्द पहुँच गया तो डाक्टर साहब की मसरूफ़ियात और भी बढ़ गई मालूम होता था कि जैसे कोई शाही मेहमान यकायक उनके घर आ ठहरा है। शिहाब ने अब भी कोई मुदाखलत न की, अर्जमन्द की खूब आवभगत होने दी; मगर जब अर्जमन्द रात को सबसे रुख्सत होकर अपने कमरे में सोने के लिए आया और शिहाब को पकड़ कर साथ लाया तो उसने तन्हाई पाकर खुद ही शिहाब से पूछा :

"मानते तो हमेशा से तुमको मुर्शिद है, मगर यह क्या करामत है कि डाक्टर लतीफ़ी तो गोया तुम्हारा जाम पिए हुए है। मुझ को तो इस घर में खुद उनका इतना इक़्तेदार नज़र नहीं आया जितना उस्ताद तुम्हारा है और जाहिर है कि मेरी जो शाहाना आवभगत हो रही है वह सिर्फ़ इसीलिए है कि मैं तुम्हारा मेहमान हूँ।"

शिहाब ने कहा, "भई, मैं खुद तुमसे सब कुछ कहने वाला था। मगर जब

से तुम आये हो सभी तुम को घेरे हुए हैं और एक लम्हा भी तन्हाई का नहीं मिला।"

अर्जमन्द ने बेपरवाई से कहा, "कहने वाले आप सिर्फ़ अपनी दास्ताते-इश्क होगे कि किस तरह उन साहबजादी पर नजर पड़ी और किस तरह उन साहबजादी ने अपने जोफे-बसर (दृष्टि की क्षीणता) का सूबूत देकर आपको अपने लिए पसद कर लिया और अब आप इश्क की मौत मरने के बाद इस तरह जन्नत मकानी बने हुए हैं।"

शिहाब ने निहायत इत्मिनान से कहा, "यह महज बकवास है जनाब की। न मै यह कहने वाला हूँ, न यह वाक़या है। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि अगर तुम सोना चाहते हो तो सोजाओ, कल बात कर लूँगा और अगर इसी वक़्त सुनना चाहते हो तो अपनी आदत के खिलाफ थोड़ी देर के लिए संजीदा बन जाओ इसलिए कि मामला बड़ा नाजुक है और बडे गौरो-फ़िक्र की ज़रूरत है।"

अर्जमन्द ने अपना पाइप सुलगाकर मुस्कराते हुए कहा, "कुछ गौरो-फिक्र की जरूरत नही। लड़की फ़र्स्ट क़लास है तुम्हारी औक़ात से ज़्यादा। लड़की के वाल्दैन—मगर वाल्दैन तो सिर्फ़ वाल्दा ही है। यार जिन्दगी भर फ़ख्र करोगे कि ऐसी तन्दुरुस्त सास मिली है। हाँ तो मैं यह कह रहा था कि लड़की फर्स्ट क्लास, उसके वाल्दैन स्पेशल क्लास, आप मुसल्लम-उल-सुबूत (निश्चित रूप से) चुगद है अगर अब भी गौर करें।"

शिहाब ने तकरीबन चीख़ कर कहा, "खुदा के लिए यह बकवास बन्द करो यह क्या किस्सा ले बैठे? मैं कुछ और कह रहा हूँ और जब तक तुम संजीदा न होगे, मैं असल बात कह ही न सकूँगा। मैंने तुम्हें कोई बहुत बड़ा अक़्लमन्द समझकर नहीं बुलाया है बल्कि बहैसियत एक पुलिस आफ़िसर के तुमसे कुछ मशविरा चाहता हूँ।"

अर्जमन्द ने यकायक संजीदा हो कर कहा, "क्या वाक़ई? बात क्या है आख़िर?"

और यह मौक़ा ग़नीमत समझकर शिहाब ने उस रात से, जब कि वह ज़ख्मी हुआ था, इस रात तक की तमाम रूदाद निहायत तफसील से अर्जमन्द को सुना दी। अर्जमन्द निहायत गौर से यह पूरी दास्तान सुनता रहा और जब

शिहाब पूरी तफसील उसको सुना चुका तो उसने उठ कर टहलना शुरू कर दिया। एक मर्तबा फिर पाइप भरा और अपने कमरे की खिड़की खोलकर पाइप के कश ले-लेकर बाहर खला (शून्य) में कुछ घूरता रहा। आखिर एकदम से शिहाब की तरफ घूम कर कहा :

"यार वह चुगद कहाँ है इब्ने-अब्दुल गफूर ?"

शिहाब ने कहकहा लगाकर कहा, "अजुम ? मेरे साथ ही अबके इम्तहान दिया है। मगर वह क्यों याद आगया इस वक़्त ? यह जो मैंने इतनी देर बक-वास की है उसका जवाब यही था कि आप अजुम इब्ने-अब्दुल गफ़ूर को याद करना शुरू कर दें ?"

अर्जमन्द ने कहा, "वह जो कुछ तुमने कहा है उसे तो मैने सुन लिया बल्कि सुनकर गिरह में बाँध लिया मगर इब्ने-अब्दुल गफूर इसलिए याद आ गये कि तुम्हारी जगह वह होते तो रात-भर मुझको अपनी दास्ताने-इश्क सुना-सुनाकर मार डालते। आजकल भी कोई इश्क चल रहा है उनका ?"

शिहाब ने जल कर कहा, "जहन्नुम मे गये वह और उनका इश्क ! मैं इस वक़्त उनके मुताल्लिक तबादल-ए-गयाल करने के मूड में नही हूँ ?"

अर्जमन्द ने कहा, "जहाँ तक तुम्हारे इस किस्से का ताल्लुक है, मै इस वक़्त कोई रायजनी नही कर सकता। सुबह फारूकी से मिलकर और तबादल-ए-खयाल करके कुछ कह सकूंगा।"

शिहाब ने कहा, "यह फ़ारूकी क्या बेचते है ?"

अर्जमन्द ने कहा, "मेरे ट्रेनिग कालेज के साथियों में से है और यहाँ डी० एस० पी० लगे हुए है। अब तक वह सिर्फ मेरे दोस्त है, सुबह से तुम्हारे दोस्त भी बन जायेगे। अजीबो-गरीब इन्सान है वह शख्स भी। मगर सुबह जब वह मुझ पर इस जुर्म में गोली चलाये कि मै उसके साथ क्या न ठहरा तो तुमको सिपर के तौर पर इस्तेमाल करूँगा, वर्ना वह मेरी और अपनी जान एक कर देगा।"

शिहाब ने कहा, "तो फिर यह कहो ना कल लंच पर उनको यही बुला लो।"

अर्जमन्द ने बडी संजीदगी से कहा, "अच्छा हुआ कि तुम बेवकूफों की

तरह पढ़ने ही चले गये और मेरे इसरार पर पुलिस में नहीं आये वरना इस अक़्ल के साथ पुलिस की नौकरी ज़रा मुश्किल से ही चलती तुम से। अक़्लमन्द आदमी, यहाँ बुलऊँगा तो खाक तबादला-ए-खयाल हो सकेगा ? मैं तुमको लेकर उसी के पास चलूँगा ताकि यकसूई के साथ बात भी हो जाये और किसी नतीजे पर भी पहुँच जायें।"

शिहाब ने कहा, "दुरुस्त। मगर उसके बाद उनको लच पर पकड़ लाने में क्या मुज़ायका है ?"

अर्जमन्द ने आँखो-मे-आँखें डालकर कहा, "और जो खुद पकड़े गये लंच पर तो ?"

शिहाब ने कहा, "यह भी ठीक है। तारीखे-आलम (विश्व-इतिहास) में इस किस्म के वाक्यात भी मिलते है। मतलब यह कि इन उमूर (बातो) को आबो-दाने पर छोड दें।"

अर्जमन्द ने बडे जोर से गर्दन हिलाकर कहा, "आबो-दाने पर। खुदा आपको औलादे-नरीना दे ! हाँ भई वह औलादे-नरीना कहाँ है आजकल ?"

शिहाब ने हंसकर कहा. "असगर ? वह तो कुछ लीडर-वीडर बन रहा था।"

अर्जमन्द ने कहा, "मेरा भी यही खयाल था कि अगर वह शेरो-अदब वगैरा से महफ़ूज रह सका तो लीडर जरूर बन जायगा, मगर वह है कहाँ ?"

शिहाब ने कहा, "मुद्दत से नज़र नही आया। कल इब्ने-अब्दुल ग़फ़ूर से पूछेंगे।"

अर्जमन्द ने कहा, "अच्छा तुम्हे यह भी याद है कि अजुम को इब्ने-अब्दुल गफ़ूर क्यो कहा जाता था ?"

शिहाब ने बड़ी मुस्तैदी से कहा, "अब्दुल गफ़ूर चपरासी था ना कालेज मे।"

अर्जमन्द ने कहा, "वह तो था, मगर तमाशा यह हुआ कि डाक्टर असलम एक दिन बड़े तपाक से अंजुम की तरफ बढ़े कि तुमने मुझे बताया ही नही कि तुम खान बहादुर मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहब के साहबजादे हो। यह सुनते ही

रियाज़ ने बड़ा सूखा-सा मुँह बनाकर कहा, अब्दुल-ग़फ़ूर चपरासी की वजह से न बताया होगा और इस पर जो पड़ा क़हक़हा तो डाक्टर असलम भी मुस्कराते हुए वापस चले गये। उस दिन से उन हज़रत की चिड़ हो गई कि क्यों हज़रत आपके वालिद का क्या नामे-नामी इस्मे-गरामी (शुभनाम) है ? हद यह है कि एक दिन समझा-बुझाकर अब्दुल गफ़ूर चपरासी को उनके पास भेजा गया। उसने बड़े अदब से पूछा, 'साहब आप के वालिद का क्या नाम है ?' तो आप ग़ुस्से में बोले, 'अहमक ! चुग़द ! बदतमीज़ !' वह बेचारा तो अपना-सा मुँह लेकर रह गया मगर इनका नाम पड़ गया मुस्तकिलन इब्ने-अब्दुल गफ़ूर।"

शिहाब ने हंसते हुए कहा, "वह याद है मूंगफली उन्निसा ?"

अर्जमन्द कहकहा लगाकर बिस्तर पर गिरा, "हाँ, हाँ बद्रुन्निसा। तस्वीर आ गई निगाहों के सामने।"

शिहाब ने कहा, "वह कहा करती थी अंजुम से कि आपके वालिद का नाम अब्दुल गफ़ूर है तो आपका पूरा नाम अब्दुल अंजुम होगा।"

अर्जमन्द ने मारे हँसी के निकल आने वाले आँसू पोंछ कर कहा, "और यह वह संजीदगी से पूछती थी और हमारे भाई इब्ने-अब्दुल गफ़ूर पहले तो उस पर दाँत पीसते रहे। आखिर एक दिन कहने लगे कि 'देखिये मुहतरमा, ये पराये घर जाने के ढंग नहीं है।'"

अर्जमन्द ने और भी बहुत से दोस्तों को याद करने मे रात के ढाई बजा दिये। उसमें कुछ उन दोनों का क़ुसूर था कुछ उस मुस्तैद बैरे का जिसने अब तक दो मर्तबा उन दोनों को काफ़ी पिलाकर नीद को उचाट कर दिया था। आख़िर शिहाब ने यकायक घड़ी को देखकर कहा :

"ग़ज़ब खुदा का ढाई बज गये। सुबह होने से पहले सुना है कि सोना सेहत के लिए मुफ़ीद होता है।"

और आख़िर ढाई बजे के बाद ये दोनों अपने-अपने बिस्तर पर पहुँचे।

१३

****

जो अंदेशा था वह पूरा हुआ । अर्जमन्द को देखकर पहले तो फ़ारूकी तकरीबन फाँद पड़ा उस पर और देर तक दोनों गुथे रहे, मगर जब फारूकी को यह मालूम हुआ कि वह कल से आया हुआ है और शिहाब के पास ठहरा है तो फ़ारूकी ने अपने रिवालवर पर हाथ रखा ही था कि शिहाब ने आगे बढ़कर हाथ जोड़ते हुए कहा :

"जान की अमा पाऊँ तो अर्ज़ करूँ कि खतावार यह नहीं बल्कि मैं हूँ और मैं खतावार क्यों हूँ यह बात आप बग़ैर तफ़सील से सुने हुए न समझ सकेंगे ।"

फ़ारुकी ने कहा, "देखिये जनाब, आपकी सिफ़ारिश पर मैं सिर्फ़ इतनी रिआयत कर सकता हूँ कि जो कुछ हो चुका है उसको माफ़ कर दूँ बशर्ते कि मेरे जलाल के जोश में आने से पहले ही इनका सामान अब यहाँ आ जाये ।"

अर्जमंद ने कहा, "इन तमाम बातों से ज़्यादा ज़रूरी वह तफ़सील है जो तुमको सुनाने और तुमसे मशविरा लेने हम दोनो आये हैं । पहले इनसे मिलो शिहाब से : बचपन से बी० ए० तक मेरे साथ रहे । जब बी० ए० के बाद मैं पुलिस ट्रेनिंग में तुम्हारे साथ आ गया तो इन हज़रत ने मुख्तलिफ़ मज़ामीन में एम० ए० करने का ठेका ले लिया । चुनांचे दो मज़ामीन में एम० ए० कर चुके है और तीसरे में अब के एम० ए० होने वाले हैं ।"

फ़ारूकी ने शिहाब से हाथ मिलाकर कहा, "बख़्दा आपसे मिलकर बड़ी मसर्रत होती अगर आपने इस मुजरिम को पनाह न दी होती । बहरहाल मैं अपने फ़ैसले पर क़ायम हूँ कि जब तक अर्जमन्द तफ़सीली तौर पर मेरे पास न आ जायेंगे, उस वक़्त तक मैं कोई तफ़सीली बात नहीं करूँगा—न सुनूंगा और वाज़े (स्पष्ट) रहे कि अब इनके सामान में आप भी शामिल हैं ।"

शिहाब ने बर्जस्ता कहा, "माफ़ कीजियेगा, मै और सब कुछ कर सकता हूँ मगर अस्बाबे-जहालत नही बन सकता।"

फारूकी ने हँसकर कहा, "अच्छी चिपकाई, रसीद दो अर्जमन्द।"

अर्जमन्द ने सजीदगी से कहा, "अब चलकर ऐसे कमरे मे बैठो जहाँ हम तीनों के अलावा कोई न हो।"

फारूकी ने जिजबिज (खिन्न) होकर कहा, "यार यह क्या वहशत है ?"

अर्जमन्द ने फिर उसको संजीदगी का यक़ीन दिलाया। आखिर वह उन दोनों को लेकर अपने दफ़्तर के कमरे मे आ गया और अर्दली से कह दिया कि किसी को अन्दर न आने दे। जब उस कमरे में बैठकर संजीदगी का माहौल पैदा हो गया तो अर्जमन्द ने वह तमाम किस्सा मन-व-अन (हूबहू) फारूकी को सुना दिया जो रात शिहाब से सुना था और अब शिहाब को यकीन आया कि रात जो दास्तान उसने अर्जमन्द को सुनाई थी वह अर्जमन्द ने किस दिलचस्पी और तवज्जो से सुनी थी, यही तवज्जो उसको इस वक़्त फ़ारूकी मे नजर आ रही थी। यहाँ तक कि उस दौरान में एक मर्तबा टेलिफ़ोन भी आया मगर फ़ारूकी ने रिसीवर उतार कर नीचे रख दिया और कनेक्शन तोडकर बदस्तूर यह रूदाद सुनता रहा। जब अर्जमन्द उसको पूरी कहानी सुना चुका तो उसने घंटी बजाकर अर्दली को बुलाया और उससे काफ़ी लाने को कहकर अर्जमन्द से कहा :

"तो ये किस्से है, फिर क्या इरादे हैं ?"

अर्जमन्द ने कहा, "अब बताओ क्या सूरत इख्तियार करनी चाहिये ?"

फ़ारूकी ने कहा, "भई, किस्सा दर असल यह है कि हममें से हरेक इस राय से मुत्तफ़िक होगा कि अफ़जल या उसके भाई-बद जो कोई भी हो, वह तो है पसमंजर में—निहायत पुरअम्न शहरी बने अपने एजेन्टो के जरिये इन मुजरिमाना सरगर्मियों को जारी रख रहे है। लिहाज़ा तावक़्ते कि वह एजेण्ट पकड़े न जायें और पेट के इतने हल्के साबित न हो कि वह अफ़जल एण्ड कम्पनी का नाम न लें, उस वक़्त तक उन पर आँच नही आती। वह अंग्रेज मुसम्मात (महिला) रुबी मुफ़ीद साबित हो सकती थी मगर वह खुद फ़रीक बन चुकी हैं और उनके घर से निकल आई है। ताहम उनसे हमको बड़ी मदद मिलेगी। रह

गये वह एजेण्ट जिनका सरगना वहीदा है, उनके मुताल्लिक अर्ज यह है कि वहीदा के बारे में यह सब कुछ मालूम है कि वह छटा हुआ गुण्डा है, गुण्डों का सरदार है, बहुत से जराइम उसके जेरे-साया परवान चढ रहे है। मगर आज तक कभी वह गिरफ्त में न आ सका। वह मुअज्जिज शहरियों की तरह रहता है, उसकी मोटर-टैक्सियाँ चलती है और बज़ाहिर वह हक-हलाल की कमाई खाकर निहायत बाइज्जत ज़िन्दगी बसर कर रहा है। बडा बाअसर है, इलेक्शन के जमाने में उम्मीदवारों की टोपियाँ उसके कदमों पर नजर आती है। कोई सरकारी चंदा हो अब्दुल वहीद साहब का नाम सरे-फेहरिस्त नजर आता है। लाख-लाख कोशिश की गई कि किसी तरह उसकी नकाब-कुशाई हो सके और वह अपने असल रूप मे कानून के सामने आ जाये मगर अब तक तो कोई इस कोशिश में कामयाब हुआ नही। वैसे मुझे तुम्हारे इस बयान पर यकीन है कि अफजल को उसी का ताव्वुन (सहयोग) हासिल है और यह ताव्वुन यकीनन डाक्टर लतीफी के लिए खतरनाक है। बहरहाल मै इस मामले मे खासी दिल-चस्पी लूंगा। इसलिए नही कि तुम कह रहे हो या शिहाब भाई का यह मामला है बल्कि दर असल इसलिए कि शायद इसी बहाने वहीदा की कलई मेरे हाथों खुल जाये और मैं उस खतरनाक गिरोह पर कब्जा हासिल कर लूं जिसकी पुलिस को मुद्दत से तलाश है।"

अर्जमन्द ने कहा, "तो अब सूरते क्या होगी ?"

फ़ारूकी ने कहा, "सूरतें तो बहुत सी हो सकती है मगर तलाश तो है किसी खूबसूरत की···।"

अर्जमन्द ने कहा, "गालिबन कोई तरकीब जहन मे आ गई है, जभी यह शाइरी सूझ रही है कि सूरत की बजाय खूबसूरत की तलाश शुरू हो गई। मेरी राय यह है कि इन विलायती मुसम्मात रुबी साहबा से नियाज़ हासिल किया जाये। शायद उनसे हम लोग कुछ और हासिल कर सकें।"

शिहाब ने कहा, "उनसे मिलना तो बहुत आसान है, मै इसी वक्त उनको लंच पर बुलाये लेता हूँ।"

फ़ारूकी ने कहा, "जी नहीं, यह मुनासिब न होगा। मेरा डाक्टर साहब के यहाँ जाना हमारी तफ़तीश में रुकावट पैदा कर सकता है। जब डाक्टर

साहब के घर की एक-एक बात अफ़ज़ल के घर पहुँच जाती है तो यह बात भी पहुँच जायेगी कि मैं डाक्टर साहब के घर गया था। ज़ाहिर है कि अफ़ज़ल या वहीदा के कुछ आदमी या कोई आदमी डाक्टर साहब के घर में मौजूद है। अर्जमंद तक तो मुज़ायक़ा नहीं इसलिए कि इसको यहाँ कोई नही जानता। ज्यादा बेहतर तो यह होता कि इनके मुताल्लिक भी डाक्टर साहब के यहाँ किसी को यह न मालूम होता कि यह पुलिस के आदमी है।"

शिहाब ने कहा, "इतनी अक़्ल तो खैर पुलिस के अलावा और लोगों में भी होती है। चुनाचे अर्जमन्द के मुताल्लिक और तो सब कुछ मैने बताया मगर यह अब तक किसी को नही मालूम कि यह हजरत डी० एस० पी० भी है।"

फारूकी ने कहा, "आपकी तरफ से तो मुझे इत्मिनान था, मगर इनकी तरफ़ से मैं जरा मशकूक ही रहता हूँ कि न जाने यह कब हिमाक़त कर गुज़रें और अपना भाँडा खुद ही फोड़ दें।"

अर्जमन्द ने कहा, "वक्त पड गया है कि हम तुम्हारी हुकूमत में आ गये है। कह लो जो चाहो, न हुए इस वक़्त तुम स्यालकोट में।"

शिहाब ने कहा, "अच्छा तो एक सूरत यह हो सकती है कि रात को आप जिस होटल में पसन्द करें डिनर खायें। वहाँ डाक्टर साहब, बेगम साहबा, नीलोफर और रुबी को,बुला लिया जाएगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "यानी बेगम साहबा भी ? वह किस होटल मे समा सकेंगी ? फारूकी देखोगे तो बस देखते ही रह जाओगेः इस कदर मुफ़स्सल (विस्तृत) है वह बेगम साहबा कि भई मेरी बीवी ऐसी हो तो खुदकुशी कर लूं।"

फ़ारूकी ने कहा, "क्या बहुत मोटी हैं ? मुफ़स्सल का मतलब तो यही हुआ।"

अर्जमन्द ने कहा, "साहब, एक पहाड़ी है जिसमे जान पड़ गई है। यह मोटापा नही है आरिजा (रोग) है।"

शिहाब ने असल मौजू पर सबको वापिस किया, "बहरहाल तै कीजिये कि कौन सा होटल मुनासिब रहेगा ?"

फ़ारूक़ी ने कहा, "सवाल यह है कि आखिर होटल पर इतना ज़ोर क्यों

है ? क्या घर मौजूद नहीं ?"

शिहाब ने कहा, "मगर आप ही तो कहते हैं और मैं भी इस राय से मुत्तफ़िक हूँ कि आपका फिलहाल डाक्टर साहब के यहाँ जाना मुनासिब नहीं है।"

फ़ारूकी ने कहा, "डाक्टर साहब के अलावा और लोगों के भी घर हो सकते है, मसलन एक घर आपके इस नियाज़मन्द का भी है। रात को आप सब अगर डिनर के बजाय माहज़र'(भोजन) तनाउल फ़र्माएँ तो बन्दा रहीने-मिन्नत (आभारी) होगा।"

शिहाब ने कहा, "अच्छा तो गोया अल्मुकल्लिफ उलख्विदमत (सेवा के लिए कष्ट देने वाला) जनाब बनना चाहते है। मुझे कोई एतराज़ नहीं।"

फ़ारूकी ने कहा, "आपको क्या एतराज होता, एतराज तो मुझे होना चाहिए कि जिसके गाढ़े पसीने की कमाई सर्फ़ होगी इस दावत में। आ जाते है मुँह उठाये हुए स्यालकोट से और मुसीबत भुगतना पड़ती है दूसरे को।"

अर्जमन्द ने ठण्डी साँस भर कर कहा, "बहरहाल मशीयते-एज़दी (ईश्वरेच्छा) में क्या चारा ? अब तो यही हुआ है कि खुदा तुमको ज़रा शानदार दावत करने का तौफ़ीक अता फर्माये और उसके अखराजात पर सब्रे-जमील भी अता करे।"

फारूक़ी ने कहा, "हाँ साहब खुदा दुश्मन पर भी वह वक़्त न लाये जो आज दोस्त पर पडा है। तो फिर तै रहा कि रात को आठ बजे आप सब यहाँ पहुँच रहे है। कहिये तो मै डाक्टर साहब को रस्मी ख़त भी लिख दूँ।"

शिहाब ने कहा, "जी नही, उसकी कतन जरूरत नही, वह निहायत बेतकल्लुफ़ किस्म के बुजुर्ग है। अच्छा तो अब इजाजत दीजिये।"

फारूकी ने आँखे निकाली, "क्या मतलब ? और वह जो काफ़ी मँगाई है वह कौन पियेगा ? लीजिये आ गई। यह अर्दली भी मेरी जान का गाहक है, न जाने इससे सैण्डविच लाने को किसने कहा था।"

काफी देर के बाद रात को वक्त पर पहुँचने का वादा करके ये दोनों रुख्सत हो गये।

१४

****

डाक्टर साहब का बनाया हुआ प्रोग्राम आखिर गडबड हो गया ना। वह रात के खाने पर खास एहतमाम करना चाहते थे। कुछ लोगों को बाहर से भी बुलाने का इरादा था और यह भी तै था कि बिरजीस, सुरैया और कौकब को भी मदअू (निमत्रित) किया जाये ताकि खाने के बाद अर्जमन्द को भी कौकब का गाना सुनाया जाये, बल्कि यह प्रोग्राम तै हो जाने के बाद नीलोफर ने अपनी इन तीनों सहेलियों को टेलिफोन भी कर दिया था। मगर जब शिहाब से यह मालूम हुआ कि रात का खाना फारूकी के घर है तो डाक्टर साहब को सख्त शिकायत पैदा हुई और वह फारूकी को टेलिफ़ोन करने को उठे ही थे कि शिहाब भी उनके साथ हो लिया और अलैहदा ले जाकर अखिर उसे बताना ही पड़ा कि उसने खास तौर पर अर्जमन्द को स्यालकोट से क्यों बुलाया है और आज रात फारूकी के घर खाने पर जाने में क्या मस्लेहत है; मगर साथ-ही-साथ उसने बड़ी ताकीद से डाक्टर साहब से हर बात को मना कर दिया कि आप किसी पर यह बात जाहिर न करें कि अर्जमन्द का पुलिस से ताल्लुक है या आज रात फ़ारूकी के यहाँ खाने पर जा रहे है। डाक्टर साहब ने हर बात गिरह में बाँध ली, मगर चलते-चलते एक मर्तबा फिर लौट कर कहा, "मगर अजीजेमन, यह बात तो खुद आपने सबसे कह दी है कि आज रात फारूकी साहब के यहाँ खाना है।"

शिहाब ने कहा, "मैंने यह बात नीलोफ़र और बेगम साहबा ही के सामने तो कही है। मेरा मतलब यह है कि मुलाज़मीन को या मिर्ज़ा साहब और फ़रीद मियाँ में से किसी को यह खबर न होना चाहिये। इसलिए कि अभी हमने यह तै नहीं किया है कि हमको किस-किस से एहतियात रखना चाहिये।"

डाक्टर साहब ने अपनी मूँछों से मशविरा करने के बाद कहा, "बस तो फिर ठीक है। मै सबसे यही कह दूंगा कि रात अर्जमन्द के एक दोस्त के घर खाना है और यह बात नीली और बेगम को भी समझा दूंगा। अच्छा तो रुबी को टेलिफोन करना गोया आपके ज़िम्मे रहा।"

शिहाब ने कहा, "जी हाँ, उनको इत्तला मैं दिये देता हूँ।"

डाक्टर साहब वहाँ से मुतमइन होकर आ गये और नीलोफ़र से सिर्फ यह कहा कि अपनी सहेलियों से कह दो कि आज का खाना कल रात तक के लिए मुलतवी हो गया है इसलिए कि आज अर्जमन्द साहब के एक दोस्त के घर खाना है और वहाँ रात के खाने पर हम सबको चलना है सिवाय फरीद और मिर्जा साहब के।"

शाम को सात बजे जब तैयार होकर अपने-अपने कमरे से बरामद हुए तो डाक्टर साहब को डिनर जैकेट मे देखकर अर्जमन्द ने कहा :

"आपने तो डाक्टर साहब अपने मेजबान को गालिबन निहायत बाकायदा और मुहज्जब इंसान समझ लिया है कि इस बाकायदगी के साथ जा रहे है।"

डाक्टर साहब ने खास एहतमाम से मूँछों को तोलते हुए कहा, "यह बात नही है अर्जमन्द साहब बल्कि 'दारम चरा न पोशम' (जब है तो क्यो न पहना जाये) वाला मामला है। यह लिबास कमबख्त ऐसा है कि जब तक कोई दावत की रिश्वत पेश न करे यह अल्मारी से निकलता ही नही।"

बेगम साहबा ने कहा, "और इनको कुछ शौक भी है अपने को जकड-बाँध कर डिनर खाने का।"

डाक्टर साहब ने कहा, "शौक इसलिए है बेगम साहबा कि लोग आपको देखकर कम-से-कम यह तो कहें कि किस कदर मुहज्जब, जामाजेब (जिस पर वस्त्र सजते हों) शौहर पाया है इन खुशनसीब खातून ने।"

बेगम साहबा इस बात पर ख्वाहमख्वाह शर्मा-सी गई और बाकी सब हँसते हुए कार में सवार होकर पहले होटल पहुँचे जहाँ रुबी उनकी मुतजिर थी। उसके बाद उसको लेकर वक़्त की पूरी पाबन्दी के साथ फ़ारूकी की कोठी जा पहुँचे। फ़ारूकी ने उनका खैरमकदम (स्वागत) करते हुए शिहाब से कहा :

"अब मैं इन्तेजार शुरू करने का इरादा कर ही रहा था।"

अर्जमन्द ने कहा, "मगर देख लीजिये हमारी शराफ़त कि आपको इस ज़हमत में मुब्तला होने की जरूरत पेश नहीं आई।"

फ़ारूकी ने कहा, "आपकी शराफ़त, आपकी तहज़ीब और तमद्दुन का क़ायल होने के लिए तो यही काफ़ी है कि आप अपनी बकवास फ़रमा रहे हैं और किसी से तार्रुफ नहीं कराते।"

डाक्टर साहब ने आगे बढकर पहले अपनी मूछों का तार्रुफ़ कराया फिर बोले, "भई तकल्लुफ़ की क्या जरूरत है ? मेरा नाम है लतीफ़ी, यह मेरी बेगम है, यह मेरी बेटी नीलोफ़र और यह मेरी हाल ही में बेटी बनी है रुबी। खुद आपके तार्रुफ़ की कोई जरूरत नही। हममें से हरेक को मालूम है कि आज हम किसके नमक-ख्वार बन रहे है।"

फारूकी ने सबसे निहायत शगुफ्ता अदाज से मुतार्रिफ़ होने के बाद कहा, "डाक्टर साहब, बस मेरे नमक का नाम न लीजिये, आप तो खैर मेरे बुजुर्ग हैं, और ये सब मेरे अजीज है; मगर जरा इन शरीफ़जादे को देख लीजिये अर्जमन्द को। बखुदा ज़िन्दगी भर इस शख्स ने मेरा नमक खाया है, मगर हक्के-नमक यह अदा किया है कि साहबजादे कल से आये हुए है और आज मुझे जनाब के नुजूले-अजलाल (मृत्यु के प्रादुर्भाव) की खबर हुई है।"

शिहाब ने कहा, "है तो यह बात ऐसी ही कि नमक फूट-फूट कर निकलना चाहिये, मगर मै आपको बता चुका हूँ कि जिम्मेदारी मेरी है इनकी नही।"

फ़ारूकी ने कहा, "बेहतर है साहब, खुदा आपको भी खुश रखे कि आपने मुझसे मेरा यह हक छीना है।"

इसी क़िस्म की बाते करते हुए ये सब उस ड्राइंग रूम में आगये जो निहायत सलीके से आरास्ता था—बड़ी सादगी थी और बड़ी पुरकारी। बजाय तेज रोशनी के ख्वाबनाक-सी धीमी-धीमी रंगीन शुआओं (किरणों) से कमरे की फ़िज़ा को कुछ सपनों की वादी बनाने की कोशिश की गई थी। शिहाब भला कब चूकने वाला था, उसने कमरे में कदम रखते ही कहा :

"यह आपने अपने ड्राइंग रूम को अलिफ़लैला वाले बग़दाद की किसी महलसरा का एक गोशा बनाने की कोशिश की है ग़ालिबन।"

नीलोफ़र ने कहा, "इस कमरे का नाम रैन बसेरा रख दीजिये।"

रुबी ने जल्दी से आगे बढ़कर मेण्टलपीस की तरतीब में कुछ रद्दो-बदल करते हुए कहा, "नीली, अब ठीक है न ? बहुत ज़्यादा बाकायदगी भी अच्छी मालूम नहीं होती।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "बहुत बहुत शुक्रिया आपका। मगर पहले मेरी यह हैरत तो दूर कीजिये कि आप इतनी अच्छी उर्दू·····।"

शिहाब ने बात काटकर कहा, "यह हैरत अक्सर अवामुन्नास (जनसाधारण) को हो चुकी है।"

अर्जमन्द ने कहकहा लगाकर कहा, "अवामुन्नास की दाद नही दी जा सकती। यह फ़ारुकी है ही इस काबिल कि इसको अवामुन्नास कहा जाय।

जब सब सलीके से बैठ गये और स्क्वैश का दौर हो चुका तो फारुकी ने खुद ही बहस को छेड़ते हुए कहा, "भई शिहाब साहब, सुबह आप लोगों के जाने के बाद मैने सूरतेहाल पर काफ़ी गौर किया और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि फिलहाल हम लोग बादल को देखकर घडे तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। हमारा हाल यह है कि हम सिर्फ अंदेशों में मुब्तला हैं कि दुश्मन यह भी कर सकता है और वह भी कर सकता है।"

अर्जमन्द ने कहा, "सिर्फ अदेशे तो ये नही है, इसी किस्म का एक अंदेशा उस रात वाक़्या भी बन चुका है जब इत्तेफ़ाक से शिहाब की मुदाखलत की वजह से वह नीलोफ़र को ले जाने में कामयाब न हो सके। वर्ना नीलोफर को बेहोश किया जा चुका था, उठाया जा चुका था। सिर्फ अनाडीपन यह हो गया मुजरिम से कि उसको चाहिये था कि पहले डाक्टर साहब के खौफनाक अल्सेशन जोड़े (कुत्ते) को बेहोश करता। उन कुत्तों ने आखिर सबको जगा दिया और लोग दौड़ पड़े। रही-सही कमी इन हजरत ने पूरी कर दी।"

रुबी ने कहा, "मेरा भी यही खयाल है कि ये सिर्फ अंदेशे नहीं हैं बल्कि हमारा खौफ़नाक-से-खौफ़नाक वहम भी हर वक्त उन लोगों के हाथों वाक़्या बन सकता है। उसी दिन अगर यह कुत्तों वाली चूक उन लोगों से न हो जाती तो वह अपने मक़्सद में कामयाब हो गये थे।"

डाक्टर साहब ने कहा, "कुत्तों पर उनका ग़ालिब आना मेरे खयाल में

इतना आसान नहीं जितना आप लोग समझ रहे हैं। बड़े आदमखोर कुत्ते हैं मेरे और रात को जब खुल जाते हैं तो उन पर काबू पा लेना बच्चों का खेल नहीं है।"

शिहाब ने कहा, "खैर यह तो बडी आसान बात थी जो मालूम नही क्यों उनकी समझ में न आई। उनका वही मुखबिर जो हमारे घर में मौजूद है उन कुत्तों को बेहोश कर सकता था।"

फ़ारूकी ने कहा, "क्यों जनाब, यह आप पुलिस वाली सूझ-बूझ भी रखते है।"

अर्जमन्द ने कहा, "अजी यह बडा खुफ़िया पुलिस वाके हुआ है। वहरहाल फ़ारुकी, मेरा खयाल यह है कि अफजल एण्ड पार्टी का दुर्रे-मकसद (चरमोद्देश्य) तो नीलोफर या डाक्टर साहब की दौलत हो सकती है, मगर वहीदा की इस गहरी दिलचस्पी का कोई-न-कोई सबब जरूर होगा।"

फ़ारूकी ने ताईद की, "यकीनन और वह सब मुमकिन है कि इस दौलत से भी गरॉकद्र हो। वर्ना वहीदा इस किस्म की छोटी-मोटी बातो में दखल नही देता ; वह हमेशा लम्बे हाथ मारता है।"

रुबी ने एकदम उछल कर कहा, "ठहरिये, ठहरिये ! मुझे याद आ गया अंकल आपके पास कोई खानदानी नक़्शा है ?"

डाक्टर साहब ने हैरत से कहा, "खानदानी नक्शा कैसा ?"

बेगम साहबा ने कहा, "यह उस शजरे को तो नही कह रही है जो मोम-जामे पर बना हुआ टीन की चोगली मे रखा हुआ है ?"

डाक्टर साहब ने मुस्कराकर कहा, "हॉ ठीक है, मगर वह किसी के किस काम का ?"

बेगम साहबा ने कहा, "मेरे खयाल मे जरूर उसमें कोई राज है। आपके वालिद रोज उसे खुर्दबीन से बैठे देखा करते थे और कागजों पर न जाने क्या मुअम्मा हल किया करते थे फिर बडी एहतियात से उसको तिजोरी मे बन्द कर दिया करते थे।"

रुबी ने कहा, "बहरहाल मै यह सुन चुकी हूँ कि वहीदा ने अपनी तमाम कोशिशों के सिले में वही नक़्शा माँगा है।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "लीजिए साहब यह तो एक काम की बात मालूम हुई। इसी तरह बात-से-बात निकलेगी, मगर फ़िलहाल खाने की मेज पर चलिये।" चुनाँचे सब उठकर खाने की मेज़ पर आ गये।

१५

****

फारूक़ी के यहाँ से वापसी मे काफी देर हो गई और रात को साढे बारह के करीब जब ये लोग वापस आये तो शिहाब के मुलाज़िम कय्यूम ने, जो सख्त सरासीमा (घबराया) नजर आता था, फाटक ही पर उन सबको रोककर निहायत बदहवासी के साथ कहा :

"डाका ! खून···!"

शिहाब ने गाड़ी से बाहर निकलने की कोशिश की, मगर अर्जमन्द ने उसको अंदर खेंचकर कहा, "यह क्या हिमाकत है ? कोठी के अंदर चलो।"

और क़य्यूम को भी इशारा किया अदर आ जाओ। चुनांचे जिस वक़्त ये सब पोर्च में उतरे है कोठी के तमाम बैरे और खानसामाँ, धोबी और भगी मय अपने खानदान के वहाँ जमा थे। शिहाब ने उतरते ही कय्यूम से पूछना चाहा था कि सब ही ने अपनी-अपनी जुबान से पूरा किस्सा सुनाने की कोशिश मे एक हंगामा-सा बर्पा कर दिया। यहाँ तक कि डाक्टर साहब ने पूरी आवाज़ से डाँटा, "ख़ामोश !"

और जब एकदम सन्नाटा हो गया तो बूढ़े खानसामाँ और क़य्यूम को लेकर ये लोग ड्राइंग रूम में चले गये ताकि सुकून से असल वाक़या सुन सकें। क़य्यूम ने बताया कि अभी थोड़ी देर हुई उसने एक फ़ायर की आवाज़ डाक्टर

साहब के सोने के कमरे में सुनी। यह आवाज़ सुनते ही सब दौड़ पड़े। कमरे में पहुँचकर मैंने देखा कि महम्मद हुसैन बैरा खून में लतपत बेहोश पड़ा है। तिजोरी खुली हुई है और कमरे की पिछली खिड़की खुली है और उसका एक शीशा टूटा हुआ है। मैंने हर तरफ़ नज़र दौड़ाई मगर मुझे कोई न तो भागता हुआ नज़र आया, न मैंने किसी को देखा। फिर मैने कमरा जल्दी से बन्द कर दिया और किसी को कमरे में जाने न दिया।"

बूढे खानसामाँ ने कहा, "जिस वक़्त मै अपने क्वार्टर से निकलकर दौडा हूँ मैने किसी को पिछली दीवार फाँदते हुए देखा, मगर मैं बहुत दूर था। उसके बाद जब मैं करीब आया तो मैने ब्यूटी और डार्लिंग दोनों कुत्तों को बेहोश पड़ा हुआ देखा। फिर मैने फ़रीद साहब को अपने कमरे के फर्श पर गिरा हुआ पाया। फिर मिर्ज़ा साहब को देखा कि वह अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे रह गये है और जब मैं उस कमरे के करीब आया तो क़य्यूम ने मुझको अंदर जाने से रोककर कहा, "खून हो गया है !"

यह सुनते ही शिहाब और अर्जमंद तो कमरे की तरफ़ दौड़े जहाँ महम्मद हुसैन बैरा गोली खाये पड़ा था। डाक्टर साहब ने कुत्तों की तरफ जाना चाहा मगर नीलोफ़र ने उनको रोक लिया। आखिर डाक्टर साहब ने बूढ़े खानसामाँ से कहा, "मिर्जा साहब और फ़रीद दोनों ज़िन्दा है।"

क़य्यूम ने बड़े ख़ौफ़ज़दा अंदाज़ से कहा, "जी हाँ, अब तो ज़िन्दा ही है, शायद डर गये हैं।"

डाक्टर साहब ने बूढ़े खानसामाँ से कहा, "तुम ब्यूटी और डार्लिंग की ख़बर लो, मै भी अभी आता हूँ।"

और उसी वक़्त शिहाब ने आकर कहा, "डाक्टर साहब, आप फ़ौरन चलिये। महम्मद हुसैन बैरा मरा नही ज़िन्दा है। गोली उसके बाजू में लगी है, मगर खून बहुत निकल गया है।"

डाक्टर साहब ने शिहाब के साथ झपटते हुए नीलोफ़र से कहा, "यहाँ सब मौजूद है, तुम घबराना नहीं बेटी।"

नीलोफ़र ने कहा, "मैं अपने लिए नहीं, खुद आप ही के लिए आपको रोक रही थी।"

डाक्टर साहब ने जाते ही महम्मद हुसैन बैरे को देखा और फिर लपक कर अपने असिस्टैण्ट का नम्बर मिलाकर फ़ोन किया कि यह हादसा हो गया है, आपरेशन का सामान लेकर फ़ौरन पहुँचो। उनके टेलिफ़ोन पर से हटते ही अर्जमन्द ने फ़ारूक़ी को टेलिफ़ोन किया कि तुम्हारे यहाँ से वापस पहुँचे तो यहाँ यह तमाशा देखा। और फिर न जाने उधर से फारूकी ने क्या कहा कि इधर से जवाब में अर्जमंद ने यही कहा कि हाँ मेरी भी यही राय है कि अब यह एहतियात फ़िज़ूल है, तुमको आना ही चाहिये। यह टेलिफ़ोन करने के बाद अर्जमंद टहलता हुआ बाहर निकला और मुख्तलिफ़ कमरों में झाँकते हुए फ़रीद के कमरे में देखा कि हज़रत बुत बने ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे दोनों हाथों से मसहरी को पकड़े बैठे है। अर्जमंद ने उनको जाकर तसल्ली दी और उठाकर अपने साथ ले आया। फिर मिर्जा साहब को जाकर देखा तो वह कुर्सी पर उकड़ूँ बैठे अब तक काँप रहे थे। अर्जमंद ने उनको भी समझा-बुझा कर यकीन दिलाया कि वह अब किसी खतरे मे नही है और उनको भी साथ लाकर बेगम साहबा और नीलोफ़र के पास बिठा दिया। इतनी ही देर में डाक्टर साहब के असिस्टैण्ट आपरेशन का सामान लिये आ मौजूद हुए। चुनांचे डाक्टर साहब ने खुद ही महम्मद हुसैन का आपरेशन करके गोली निकाल ली और मरहम-पट्टी करके उसे लिटा ही रहे थे कि फ़ारूकी पुलिस की एक जमात के साथ आ मौजूद हुआ और शुरू कर दी उसने पूछ-गूछ। मगर डाक्टर साहब ने उससे इतनी इजाज़त ले ली कि मै सबसे पहले अपने कुत्तों की तरफ़ से इत्मिनान कर लूं, उसके बाद आपके सवालात का जवाब दे सकूँगा। चुनाँचे वह फ़ौरन अपने असिस्टैण्ट के साथ वहाँ पहुँच गये जहाँ ब्यूटी और डार्लिंग दोंनों बेहोश पड़े थे। डाक्टर साहब ने उन दोनो के लिए एक इजेक्शन तजवीज़ किया और अपने असिस्टैण्ट को हिदायत देकर जब वापस आये तो फ़ारूक़ी मिर्ज़ा साहब का बयान ले रहा था :

फ़ारूक़ी ने ताज्जुब से कहा, "यानी इतना शोर हुआ और आप कमरे से बाहर निकले ही नही···?"

मिर्ज़ा साहब ने जो अब सँभल चुके थे कहा, "बन्दा नवाज़, कई मर्तबा रद्दादा किया मगर मालूम होता है कि मुझको किसी अमल के ज़रिये बाँध दिया

गया था वर्ना बखुदा वह बदमाश जिन्दा तो न जा सकता।"

फ़ारूकी ने डॉटा, "जो मै पूछ रहा हूँ सिर्फ़ वही बताइये। आपने गोली की आवाज़ सुनी ?"

मिर्ज़ा साहब ने मरऊब (आतंकित) होकर कहा, "जी हाँ सुनी, बल्कि पहले मै यही समझा था कि यह गोली मुझे ही मारी गई है। चुनांचे मै अपनी कुर्सी पर गिर पड़ा और फिर कुर्सी से न उठ सका।"

फ़ारूकी ने कहा, "गोया आप इस कदर खौफ़जदा हो गये थे ?"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "खौफ़जदा तो खैर क्या, अलबत्ता कुछ करीने-मस्लेहत (समयोचित) न था उस आलम मे मेरा बाहर निकलना जबकि गोलियाँ सनासन चल रही थी।"

फारूकी ने ताज्जुब से कहा, "गोलियाँ सनासन चल रही थी ? आप तो कहते है सिर्फ एक फैर हुआ।"

मिर्ज़ा साहब ने घबराकर कहा, "जी दुरुस्त है, मगर बंदानवाज वही आवाज देर तक गूँजती रही ना।"

फारूकी ने आजिज आकर कहा, "लाहौल वला कूवत ! अजीब चीज हैं आप भी। और आपसे ज्यादा अजीब यह साहबजादे है जो अब तक बोलने के क़ाबिल ही नही हुए। डाक्टर साहब इन बरखुरदार को तकवियते-कल्ब (हृदय-शक्ति) के लिए कोई चीज़ दीजिए फ़ौरन।"

डाक्टर साहब ने बेपरवाही से कहा, "वह मेरा असिस्टैण्ट कुछ कर देगा। वह तो है ही ऐसे।"

फारूकी ने कहा, "अच्छा डाक्टर साहब, अब जरा आप मेरे साथ अपने कमरे मे तशरीफ ले चलिये और अपनी तिजोरी देखकर बताइए कि उसमे से क्या गायब हुआ है।"

उसी वक्त एक सब-इस्पैक्टर ने आकर बताया कि कोठी के तमाम मुलाज़िमों के बयान लिये जा चुके है। बूढ़े खानसामाँ की निशानदेही पर उस जगह पैरो के निशान भी देख लिए है जिस तरफ़ से मफ़रूर (भगोड़ा) भागा है।

फारूकी ने कहा, "उन निशानों की हिफाज़त कीजिये, मै भी देखूँगा।"

और यह कहकर वह डाक्टर साहब के कमरे में जा पहुँचा जहाँ डाक्टर साहब तिजोरी खोले हैरान खड़े थे। फ़ारूकी को देखते ही डाक्टर साहब ने कहा, "ताज्जुब है साहब कि एक चीज भी छुई नहीं गई। बेगम और बच्ची के तमाम जेवरात महफ़ूज़ है। इस खाने में जितने करन्सी नोट थे वह सब बर्जि-सही (जैसे-के-तैसे) मौजूद है। यह देखिये कुछ गोल्ड था वह भी मौजूद है। यह तो खैर कुछ तमगे वगैरा हैं जो खुद मेरे लिए अब बेकार है, किसी और के किस काम के ? मैं इरा खानबहादुरी को अब इसी मे बंद रखता हूँ। ये चँद पत्थर हैं, ये भी किसी ने न छुए। लीजिए यह घड़ी भी रखी है। मैं अगर चोर की जगह होता तो यह घड़ी हरगिज न छोड़ता। मालूम होता है कि चोर ने तिजोरी खोल तो ली मगर यकायक महम्मद हुसैन के आ जाने से वह जान बचाकर निकल भागा।"

अर्जमद ने आते हुए कहा, "क्यों भई फारूकी कुछ पता चला ?"

फ़ारूकी ने बजाय अर्जमंद के डाक्टर साहब से कहा, "डाक्टर साहब, वह शजरा आप कहाँ रखते थे ?"

डाक्टर साहब ने एकदम चौकते हुए कहा, "जी हाँ वह, वह नजर नहीं आया। इसी में था, इस बीच वाले खाने में। किधर गया वह, नीचे वाले खाने में भी नही।"

फारूकी ने कहा, "बस मालूम हो गया : ये सारे पापड़ उसी के लिए बेले गए है और आज इस मौक़े से फ़ायदा उठाया गया है कि आप सब यहां से ग़ायब थे।"

डाक्टर साहब ने कहा, "मगर मैं हैरान हूँ कि उसमे आखिर किसी और के काम की क्या चीज़ है।"

फ़ारूकी ने कहा, "उसको तो ले जाने वाला ही जानता है कि वह क्या चीज़ है। एक बात तो तै है कि वह है कोई निहायत क़ीमती चीज़। बहरहाल अब उसको जिस तरह भी हो बरामद करना है। बन्द कर दीजिए इस तिजोरी को, मैं ज़रा घूम-फिर कर और चीज़े भी देख लें—मसलन पैरों के निशान वग़ैरा। मगर डाक्टर साहब आपके घर के किसी मुलाजिम को, मिर्ज़ा साहब

को या उन साहबज़ादे फ़रीद को किसी को बाहर जाने की इजाज़त नहीं है। मेरे सिपाही उन सबकी तलाशी भी लेंगे और उनकी निगरानी भी करेंगे।"

फ़ारूक़ी और अर्जमंद ने कोठी के चप्पे-चप्पे को देखा। पैरों के निशान से अंदाज़ा हुआ कि ये कई आदमियों के निशान है। फ़ारूकी ने जाते-जाते अर्जमंद और शिहाब से कहा कि इन मिर्जा साहब की नक़्लो-हरकत (गतिविधि) पर खास नजर रखें और आखिर सुबह होते-होते वह कुछ सिपाहियों को छोड़कर चला गया।"

१६

****

अर्जमंद दो रोज और ठहरकर स्यालकोट वापस चला गया। फ़ारूक़ी ने अपनी तफ़्तीश निहायत सरगर्मी से शुरू कर दी। मिर्जा साहब की कई दिन तक निगरानी होती रही, मगर बाद में फ़ारूक़ी को भी अंदाजा हो गया कि यह हज़रत बक़ौल डाक्टर साहब के निहायत मरफ़ू-उल क़लम (अकथनीय) वाक़े हुए हैं। लिहाज़ा उनकी निगरानी भी ख़त्म कर दी गई। अलबत्ता अब नीलोफ़र की खास निगरानी हो रही थी। उसने बाहर जाना बिल्कुल छोड़ दिया था। अब उसको यह इजाजत भी न थी कि वह अपने कमरे मे रात को तन्हा रहे। डाक्टर साहब,बेगम साहबा और नीलोफ़र सब एक ही कमरे में सिमट आये थे। और डाक्टर साहब की कोठी पर फ़ारूक़ी ने पहरे का निहायत माकूल इन्तेज़ाम कर दिया था। डाक्टर साहब के मुलाज़िमों की निहायत कड़ी निगरानी अब तक हो रही थी। इसलिए कि यह तो बहरहाल तै था कि उन्हीं में से कोई मुख़बिर है। शिहाब का ज़्यादा वक़्त महम्मद हुसैन बैरे की तीमार-दारी में गुज़रता था इसलिए कि शिहाब के नज़दीक ज़िम्मेदारी का सबसे बड़ा

सुबूत उस बैरे ने ही दिया था। और अपनी ज़िन्दगी तक को ख़तरे में डाल दिया था। उसकी मरहम-पट्टी और देखभाल में शिहाब पेश-पेश था और खुद अपने हाथ से उसके लिए फलों का अर्क निकालता, नाश्ते और खाने के वक़्त खुद मौजूद होता, दवा अपने हाथ से पिलाता और घण्टों उसके पास बैठकर तसल्ली-तशफ़्फी की बातें करता और उसकी बहादुरी की दाद देता। एक दिन जब वह उसको सहारा देकर और खुद अपनी टेक लगाकर बिठाते हुए यखनी पिलाने वाला था, उसने कई मर्तबा कोशिश करने के बाद उसका हाथ मुहब्बत से अपने हाथ में लेकर कहा :

"सरकार मुझे आप से कुछ कहना है।"

शिहाब ने बड़ी मुहब्बत से कहा, "हाँ हाँ, कहो महम्मद हुसैन। तुम्हारे ऐसे बहादुर की बात न सुनूंगा तो किसकी सुनूंगा।"

महम्मद हुसैन ने रुकते-रुकते कहा, "सरकार, मै बहादुर नही, मैं बड़ा बुज़-दिल हूँ। मैं आपकी इन मेहरबानियों का मुस्तहक़ भी नहीं। अगर आपको यह मालूम हो जाये कि मै कौन हूँ तो आप मेरे मुँह पर थूकना भी पसन्द न करें। मगर मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपकी इन मेहरबानियों ने, इस शराफत और इन्सानियत ने मुझको बदल दिया है। मैं आपके सामने अपने गुनाहों से तौबा करना चाहता हूँ और उसके बाद जो सज़ा आप मेरे लिए मुनासिब समझें मै उसके लिए तैयार हो जाऊँगा।"

शिहाब की समझ में कुछ न आ रहा था। उसने ज़बरदस्ती अपने को बद-शाश बनाकर कहा, "मगर कुछ बताओ तो सही कि बात क्या है ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "सरकार, मैं असल में वहीदा बदमाश का आदमी हूँ और इस घर की खबरें वहीदा को पहुँचाने के लिए यहाँ बैरा बना हुआ हूँ।"

शिहाब ने ताज्जुब से कहा, "मगर यह कैसे हो सकता है ? अगर यह सच है तो वहीदा के आदमियों ने तुम पर गोली क्यों चलाई ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "धोखे में। जिस वक़्त वह तिजोरी से शजरा निकाल रहा था मैं उसको अपने ही गिरोह का आदमी समझकर कमरे में चला गया मगर उसने घबराहट में मुझको न पहचाना और गोली चला दी।"

शिहाब ने कहा, "मगर तुम तो बड़े कच्चे दिल के जराइम-पेशा निकले कि अपने को मेरे सामने खुद ही बेनक़ाब कर दिया।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ, आप मुझको कच्चे दिल का समझें या कुछ मगर मेरे वास्ते अब यह नामुमकिन है कि मैं आपके ऐसे शरीफ़, डाक्टर साहब के ऐसे नेकदिल और नीलोफ़र बीबी की-सी रहमदिल के साथ यह दगा-बाज़ी करूँ। मै बेशक बदमाशों के गिरोह में था और खुद भी बदमाश था मगर जिस तरह लोहा पारस को छूकर सोना बन जाता है, उसी तरह आप सब के इस सुलूक ने जो आपने मेरे साथ किया है, मुझको कुछ-का-कुछ बना दिया है मैं कल से कई बार आपसे यही बात कहने की हिम्मत पैदा कर रहा था। आखिर अब मैंने अपने दिल की बात कह दी और अब आपको इख्तियार है जो सुलूक चाहें मेरे साथ करें।"

शिहाब ने कहा,"अगर तुम वाकई शरीफ़ हो चुके हो और मेरा दिल गवाही देता है कि तुम सचमुच शरीफ़ हो तो अब तुमको इत्मिनान रखना चाहिए कि तुम्हारे साथ वही सुलूक होगा जो शुरफ़ा एक शरीफ़ के साथ कर सकते है मगर मुझको इतनी इजाज़त दो कि मैं फ़ारूक़ी साहब से ये तमाम बातें करलूं। इस-लिए कि तुमको मालूम होगा कि अब वही इस तमाम किस्से की तहक़ीकात कर रहे हैं।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ, मुझको मालूम है। मैं खुद भी यही चाहता हूँ कि आप उनको बुलाकर मुझे उनके सामने पेश कर दीजिये ताकि मैं यही बातें उनके सामने करके अपना फ़ैसला उन पर छोड़ दूं। अगर वह मुझ को अब भी सज़ा का मुस्तहक समझेंगे तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। इसलिए कि अगर तौबा से गुनाह न धुल सके तो सज़ा के बाद ज़रूर धुल जायेंगे।"

शिहाब ने महम्मद हुसैन को यकीन दिलाया कि तुम्हारे इस बयान के बाद फ़ारूक़ी साहब तुमको हरगिज़ सज़ा का मुस्तहक न समझेंगे बल्कि अब तुम हम ही में से एक बनकर हमारी तक़वियत का बाइस बन सकोगे और इसी किस्म की बहुत सी तसल्ली-तशफ़्फ़ी की बातें कर के वह टेलिफ़ोन करने चला गया उसने फ़ारूक़ी को फ़ोन पर सिर्फ़ यही बताया कि तुम्हारा फ़ौरन पहुँचना ज़रूरी है। एक ख़ास इन्कशाफ़ (रहस्योद्घाटन) हुआ है जिससे कामयाबी एक

दम हमारे करीब आ गई है। इस टेलिफ़ोन के बाद वह फ़ारूकी के इन्तेज़ार में सब्ज़ाज़ार ही पर टहलता रहा और जब तक फ़ारूकी पहुंचे उसने खुद ही एक ऐसी स्कीम बनाली कि गोया यह काम फ़ारूकी का नही बल्कि खुद उसी का है। वह इस क़द्र मुनहमिक और डूबा हुआ था कि फ़ारूकी जब उसके बिल-कुल करीब पहुँचकर बोला तो वह यकायक चौंक सा पड़ा। फ़ारूकी ने कहा, "क्या कोई वज़ीफ़ा पढ रहे थे रुज़्ने-आदन ?"

शिहाब ने कहा, "भाई साहब, अगर आप इसको अपना इकबाल न समझें तो मैं आपको यह खुशखबरी सुनाऊँ कि क़िस्मत कुछ हमारा साथ दे रही है और महज इत्तेफाक से एक ऐसी सूरत पैदा होगई है कि दुश्मन का जो आदमी यहाँ तैनात था वह अब हमारा आदमी बन गया है।"

फ़ारूकी ने कहा, "कही इस झाँसे में आभी न जाइयेगा। मुझे पूरा क़िस्सा सुनाइये कि यह गलतफ़हमी आपको किस तरह हुई ?"

शिहाब ने कहा, "मैं कुछ न सुनाऊँगा, आप खुद उसी से सुन लीजिये। मुझे तो पूरा इत्मिनान है कि यह झाँसा नहीं है।"

फारूकी ने कहा, "वह आदमी है कौन, मिर्ज़ा साहब तो नहीं ?"

शिहाब ने कहा, "लाहौल वला-कूवत ! मिर्ज़ा साहब बेचारे के तुम ख़्वाह-मख़्वाह पीछे पड गये हो। उनमें इतनी ही सलाहियत होती तो कार्टून बने क्यों पडे होते ? वह तो ऐसा आदमी निकला है जिस पर किसी को शुब्हा हो ही नही सकता--महम्मद हुसैन।"

फ़ारूकी ने चौंककर कहा, "कौन महम्मद हुसैन, वह जख़्मी बैरा तुम्हारा ? वह कैसे हो सकता है ?"

शिहाब ने कहा, "मैं तो पहले ही कह रहा था कि उसकी तरफ़ ज़हन मुंतकिल हो ही न सकता था। बहरहाल अब तुम खुद चल कर उसी से सुन लो।"

फ़ारूकी हैरत और इस्तेजाब में गर्क शिहाब के साथ महम्मद हुसैन के बिस्तरे-अलालत के करीब पहुँच गया जहाँ महम्मद हुसैन ने उसी तास्सुर के साथ वही बातें जो वह शिहाब से कह चुका था फ़ारूक़ी को भी सुना दी और आखिर में सिर्फ़ यह कहा कि, "अब मैं अपने को आपके सामने पेश करता हूँ

ताकि आप अपना फ़र्ज़ पूरा करें।"

फ़ारूक़ीने उसके दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा,"मैं अपना फ़र्ज़ सिर्फ़ यह पूरा कर सकता हूँ कि तुमको उठाकर गले से लगा लूं। मै तुमको सिर्फ़ इसी की हैसियत से बहादुर समझ रहा था कि तुमने अपनी जान की परवा न करते हुए दुश्मन का दिलेरी से मुकाबिला किया और जख्मी हो गये। मगर मालूम हुआ कि वह महज इत्तेफाक़ था अलबत्ता असल बहादुरी यह है कि तुमने अपने को इस तरह हमारे हवाले कर दिया है और बड़ी खुशी की बात यह है कि तुमको खुद अपनी मुजरिमाना जिन्दगी पर शर्म आई है और तुम शरीफ़ाना जिन्दगी की तरफ माइल हो।"

शिहाब ने कहा, "अच्छा बन्दानवाज, अब जरा मेरी तजवीज़ भी सुन लीजिये जो जहने-नाकिस मे आई है। और वह तजवीज़ यह है कि अज़ीज़े-मुकर्रम मुहब्बी (प्रिय) महम्मद हुसैन साहब को इस तौर्ग के साथ-ही-साथ कफ़्फारा (प्रायश्चित) भी अदा करना चाहिये।"

फारूकी ने कुछ न समझते हुए कहा, "मुद्दआ अंका हैं तेरे आलमे तकरीर का।* मैं नहीं समझा जनाब क्या इरशाद फरमा रहे हैं।"

शिहाब ने कहा, "जी हाँ, वह जरा है ऊँची बात। बहरहाल मैं आपको समझाये देता हूँ। मेरी तजवीज यह है कि महम्मद हुसैन अपने साथियों पर यह हरगिज जाहिर न करें कि यह ताइब हो चुके हैं। यह बदस्तूर उन्हीं के आदमी बने रहे और मफ़रूजा (काल्पनिक) किस्म की मुखबिरी भी करते रहें। अलबत्ता वहाँ के असल हालात से हम लोगों को मुत्तला करते रहें।"

फारुकी ने खुश होकर कहा, "उस्ताद, यह हमारा फैजे-सोहबत है कि तुम ऐसी सूझ-बूझ की बाते करने लगे हो। क्यों भई महम्मद हुसैन, क्या राय है तुम्हारी इस तजवीज के मुताल्लिक ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "लाजवाब है यह तजवीज़। मगर एक बात मै अर्ज करूं ताकि आपको बाद में किसी किस्म की गलतफ़हमी न हो। वहीदा के गिरोह मे भी हद बन्दियाँ है। उसके गिरोह के सभी राज़ सबको नही मालूम होते। वहीदा सबका सरदार है और पाँच उसके हमराज साथी हैं जिनसे वहीदा

* तेरा उद्देश्य समझ में नहीं आता।

मशविरा भी करता है और जिनको सब कुछ मालूम होता है। उसके बाद पच्चीस आदमी वह हैं जो वहीदा से बहुत कम मिलते है, अलबत्ता उसके पाँच नायबों से ज़रूर मिलते है। मगर उन तक असल राज़ का सिर्फ़ वही हिस्सा पहुँचता है जो उनसे मुताल्लिक होता है। फिर सौ आदमी वह हैं जिनको उससे सरोकार नहीं होता कि असल राज़ क्या है। उनको तो बस अपने काम-से-काम होता है; वह एहकामात (आज्ञा) की तामील करते हैं और उनको उनका हिस्सा मिलता रहता है।"

फारूकी ने कहा, "गोया उस बदमाश ने पूरी गवर्नमेण्ट अपनी बना रखी है। बहर हाल तुम्हारी पहुँच कहाँ तक है ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "मैं ठहरा मुखबिर, मेरी पेशी वहीदा के सामने भी हो जाती है और उसको मुझ पर बड़ा भरोसा है। मगर मैं यह दावा नही कर सकता कि मुझको उनके सारे भेद मालूम हो सकते हैं। बहरहाल मैं आपको बाखबर रख सकता हूँ कि अब आपके मुतालिक़ क्या तै हो रहा है। अब उनके क्या इरादे है और यह काम मैं सरोचश्म (शिरोधार्य) करूँगा।"

फ़ारुक़ी को इससे ज़्यादा और कुछ चाहिये भी न था। उसने महम्मद हुसैन को जल्द-अज-जल्द सेहतयाब होने की दावत दी और बड़ी गर्म-जोशी से हाथ मिलाकर रुख़्सत हो गया।

१७

****

महम्मद हुसैन जब सेहतयाब होकर अपने कैम्प में पहुँचा है तो उसको मालूम हुआ कि यहाँ उसकी तरफ से सख्त तशवीश थी कि आखिर हुआ क्या कि एकदम से तुम गायब हो गये। वहाँ किसी को भेजना मुमकिन न था इसलिए कि पुलिस का निहायत सख्त पहरा था। आखिर गिरोह के एक आदमी ने यह खतरा मोल लिया और ताँगे वाले के भेस में दो-तीन दिन की कोशिश के बाद आखिर उस कम्पाउण्डर को लेकर डाक्टर साहब की कोठी में पहुँचा जो तुम्हारी ड्रेसिंग के लिए जाया करता था। उससे मालूम हुआ कि जिसकी ड्रेसिंग के लिए कम्पाउण्डर आता है वह दरअसल तुम ही हो। अब यहाँ यह सवाल पैदा हुआ कि तुम ज़ख्मी कैसे हुए ? एकाध दिन के बाद जब फिर उसी कम्पाउण्डर की सवारी हमारे उस आदमी को मिली तो उसने बातों-ही-बातों में कम्पाउण्डर से सब उगलवा लिया कि तुमको किसी बदमाश ने गोली मारी है। मगर यह भी एक अजीब मुआमला था; बहरहाल यह इत्मिनान हो गया था कि तुम वहाँ मौजूद हो और जख्मी पड़े हो, वर्ना तरह-तरह के शक पैदा हो रहे थे कि कही तुम पकड़े तो नही गये या तुमने ग़द्दारी तो नही की। महम्मद हुसैन ने अब उन पाँचो नायबों को पूरा क़िस्सा सुनाया कि हमारे ही आदमी ने मुझ पर धोखे में गोली चला दी थी। आखिर उन पाँचों ने मशविरा करके तै किया कि मुहम्मद हुसैन को वहीदा के सामने पेश किया जाये। चुनांचे जब वह उसके सामने पेश हुआ तो वहीदा ने उससे मिलने पर बड़ी खुशी का इज़हार करते हुए कहा :

"तुम्हारी इस अचानक उफ़्ताद (विपदा) का नतीजा यह हुआ कि हम लोग बिल्कुल तारीकी में चले गये। कुछ पता ही न चलता था कि डाक्टर के यहाँ क्या हो रहा है ? कौन आता है, कौन जाता है, नक़्शे की चोरी को वह

लोग क्या समझ रहे हैं, किस पर उनको शुब्हा है ? सुना है कि आजकल डी० एस० पी० साहब से गाढ़ी छन रही है ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ, उनकी बड़ी आमदो-रफ़्त है, मगर है वह भी निरे लाल बुझक्कड़ । ज़्यादा-से-ज़्यादा उनका ख़याल अफ़ज़ल की तरफ़ जाता है ।"

वहीदा ने हँसकर कहा, "अहमक़ है वह ! ये कल के लौण्डे इससे ज़्यादा और सोच भी क्या सकते हैं । और रुबी की आमदो-रफ़्त भी तो शुरू हो गई है ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "वह तो बस इसी फ़िक्र में है कि अफ़ज़ल को किसी तरह धर लिया जाये ।"

वहीदा ने अकड़कर कहा, "अफ़ज़ल पर कौन हाथ डाल सकता है ? जब तक वह हमारी पनाह में है उस पर आँच नही आ सकती । मगर तुम्हारा यह ज़रूमी हो जाना बहुत ही अच्छा हुआ । अब तुम्हारी तरफ़ तो किसी की शक की नज़र उठ भी नही सकती ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "कुछ न पूछिये, जिस कद्र मेरी कद्र हो रही है। मुझको बडा नमक हलाल समझा जा रहा है और मुझ पर बड़ा भरोसा है सबको ।"

वहीदा ने खुश होकर कहा, "यही तो मैं कह रहा हूँ कि हमारी गलती का भी कितना मुफीद नतीजा निकला है । मगर तुमको मालूम है कि तुमने जो तकलीफ़ उठाई है उसका हमने मुआवजा भी ज़ूर कर दिया है । तुमको पाँच हजार की थैली आज ही पेश की जायेगी और अगर तुम खत्म हो जाते तो तुम्हारी बीवी-बच्चों की निगरानी के जिम्मेदार भी हम ही होते । बहरहाल तुम यह इनामी रकम हासिल कर लो और मुस्तैदी से अपना काम करते रहो । अगर वह काम बन गया जिसके लिए यह सब कुछ हो रहा है तो तुम खुद देख लेना कि हम घर भर देगे तुम्हारा । यह इनाम तो खैर तुम ही को देना था । मगर तुम्हारे हिस्से की रक़म तुम्हारे घर पहुंचा दी गई है ।"

महम्मद हुसैन ने सलाम करके रुख्सत होना चाहा तो वहीदा ने कहा, "तुमसे एक और बहुत ज़रूरी बात कहना है । उसको अच्छी तरह समझ लो

और उसकी ताक में रहो। जो नक़्शा उस दिन आया है उसको देखने और समझने से पता चला है कि यह नक़्शा उस वक़्त तक बेकार है जब तक डाक्टर साहब के वालिद की किताबों में से एक किताब हमको हासिल न हो जाये, जिसका नाम है 'दौलते-बेदार'। याद रखना यह नाम, क्या नाम है भला ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "दौलते-बेदार।"

वहीदा ने कहा, "शाबाश ! इस नाम की एक किताब डाक्टर साहब के वालिद की किताबों में है। मौक़ा पाकर उसको उड़ाओ, या अगर यह तुम न ला सको पहरा चौकी के बाइस तो कम-से-कम उसकी सही जगह से हमको मुत्तला करो ताकि किसी जाँबाज़ को भेजकर वह मँगाली जाये।" बग़ैर उस किताब के यह सारी मेहनत अकारथ जायगी जो यह नक़्शा हासिल करने के सिलसिले में की गई है। और एक बात खास तौर पर सुनलो कि डाक्टर साहब तो निहायत अहमक किस्म के आदमी हैं, अलबत्ता उस घर मे वह शख़्स जो अब आ गया है शिहाब, उससे ज़रा होशियार रहना। वह बड़ा चलता-पुर्ज़ा है और हमारे रास्ते की बहुत बड़ी रुकावट साबित हो रहा है। खैर उसका इलाज भी करेंगे मगर फ़िलहाल तुम जरा उससे होशियार ही रहो। जिस किताब का मैने जिक्र किया है उसकी तलाश के लिए मैं तुमको दो दिन देता हूँ। तीसरे दिन हाजिर होकर या वह किताब पेश करो या यह बताओ कि वह किस कमरे की किस अलमारी में कहाँ रखी है।"

महम्मद हुसैन ने ये तमाम हिदायतें सुन कर सलाम किया और सरदार के कमरे से निकल कर जैसे ही पाँचो नायबो के साथ उनके कमरे में आया है उसको इनामी रकम की थैली पेश कर दी गई और उसने उसी वक़्त उसमें से पाँच सौ रुपये निकाल कर अपने साथियों को जश्न मनाने के लिए देकर घर का रास्ता लिया। वह मुद्दत से घर भी न आया था, जाहिर है कि बीवी-बच्चे सख़्त उदास थे। शुक्र है कि उसके गोली खाने और ज़ख़्मी होने ही की इत्तला घर पर न हुई थी वर्ना सब सख़्त परेशान होते। महम्मद हुसैन ने घर पहुँच कर जब अपनी तवील गैरहाज़िरी की वजह बताई तो उसकी मा ने, जो हमेशा उसको उस मुजरिमाना ज़िन्दगी से ताइब होने की तिलक़ीन(सीख) किया करती थी, आज फिर उसको देर तक समझाया और वह मुस्करा-मुस्करा कर मा की

बातें सुनता रहा। आख़िर मा ने यहाँ तक कह दिया कि "देख बेटा, मैं तुझ को दूध न बख़्शूंगी अगर तूने वहीदा का साथ छोड़कर शरीफ़ाना जिन्दगी इख़्तियार न की। मुझको तेरी इस कमाई की ज़रूरत नहीं। ये हज़ारों रुपयों की थैलियाँ मैं नही चाहती। मै उन फ़ाक़ों में खुश रह सकती हूँ जो तेरी ईमानदारी की बदौलत मुझको करना पड़े। यह सिर्फ़ मैं ही नहीं कह रही हूँ बल्कि तेरी बीवी की भी यही राय है। वह ग़रीब भी तुझको बजाय एक बद-माश के अपना शरीफ़ शौहर देखना चाहती है। ख़्वाह वह दौलतमन्द न हो बल्कि इंतेहाई गरीब हो।"

महम्मद हुसैन ने फिर मुस्करा कर मा से कहा,"मा तुम मुझको जरा ग़ौर से देखो मै तुम्हारी बातें हमेशा हँस-हँसकर सुना करता हूँ मगर आज मेरी इस मुस्क-राहट में तुमको बेहयाई नज़र न आती होगी। देखो ना मुझे गौर से !"

मा ने बजाय गौर के उसे हैरत से देखकर कहा, "न जाने क्या कह रहा है, मैं तो यही देख रही हूँ बीमारी ने तुझे दुबला कर दिया है। चोरी ने सुर्ख़-रूई का निशान तक नही छोड़ा है चेहरे पर।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "सचमुच ? क्या अभी तक मेरे चेहरे पर सुर्ख़रूई का रंग नहीं आया है ?"

मा ने मुँह बना कर कहा, "आता कहाँ से ? बेईमानी की कमाई इस वक़्त भी लेकर आया है और ढूंढ रहा है चेहरे पर सुर्खरूई का नूर।"

महम्मद हुसैन ने मुहब्बत से मा के झुर्रियाँ पडे हुए हाथ अपने हाथ में ले कर कहा, "अफसोस है कि मा मैं तुमको या तुम्हारी बहू को सब कुछ तो नहीं बता सकता, इसलिए कि औरतें पेट की बड़ी हल्की होती है और राज़ उन तक पहुँचकर राज नहीं रह सकता। बस तुम्हारे इत्मिनान के लिए सिर्फ़ इतना ही सुनना काफ़ी है कि तुम्हारे बेटे पर खुदा का फ़ज्ल हो चुका है। उसकी जिन्दगी जैसी तुम चाहती हो वैसी ही बन चुकी है।"

मा ने खुश होकर कहा, "तो ये रुपये जो तू इस वक़्त लाया है हलाल की कमाई है ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "यह तो मुझको उस खून की क़ीमत मिली है जो गोली खाकर मैंने बहाया है। और मा, सच पूछो तो वही खून फ़ासिद (उपद्रवी)

था, अच्छा हुआ बह गया। बहरहाल अब मुझसे ज्यादा न पूछो। अगर मैं बता सकता तो बता देता। तुम्हारे इत्मिनान के लिए सिर्फ़ यही बता देना काफी है कि तुम्हारा बेटा अब बदमाश नज़र आता है, मगर बदमाश रहा नहीं है। और बहुत जल्द खुल्लम-खुल्ला शरीफ़ाना ज़िन्दगी बसर कर सकेगा।"

मा ने मशकूक नजर उस पर डालकर कहा, "देखा बेटा तूने, ख्वाह कैसी ही बदमाशी क्यों न हो मगर मुझसे कभी झूठ नहीं बोला है।"

महम्मद हुसैन ने मा की गोद में सर रख कर कहा, "मैं इस वक़्त भी झूठ नहीं बोल रहा हूँ मेरा एक-एक लफ़्ज सच्चा है। तुमको जो मुझ पर शक हो रहा है वह भी ठीक है क्यों कि अगर मैं भी होता तुम्हारी जगह और तुम होती मेरी जगह तो·· ।"

मा ने एकदम बिगड कर कहा, "खुदा न करे। दूर पार, मै नोज होती तेरी जगह।"

महम्मद हुसैन ने हँसकर कहा, "मिसाल दे रहा था मा मै तो।"

मा-बेटे का यह दुलार जारी ही था कि महम्मद हुसैन की बीवी ने दस्तर-ख्वान बिछा दिया और निहायत पुरतकल्लुफ खाना चुन दिया जो उमूमन घर वालों को तो नही अलबत्ता मेहमानों को खिलाया जाता है। महम्मद हुसैन ने यह ठाठ देखकर मा से कहा :

"मा देख रही हो, तुम्हारी बहू ने तो अच्छी-खासी दावत कर डाली। पुलाव भी है और शीरबर भी ; मुर्ग भी है और शामी कबाब भी ; पराठे भी है और तरतराता हुआ कोरमा भी।"

मा ने कहा, "क्या करे बेचारी ? मेहमान बनकर तो रह ही गये हो तुम। महीनों पीछे कही घर की रोटी नसीब होती है तुमको। मगर मेरी बहू का सुघड़ापा देखो कि इतनी चीज़ें पका कर तुम्हारे सामने ले तो आई। जरा उसकी हालत तो देखो कि पैसा भी है, हर तरह का आराम भी है, मगर सिर्फ़ तुम्हारी फिक्र मे सूखकर काँटा हो गई है। जानती है ना कि वारिस का हाल तो वह है कि हर वक़्त एक पैर जेल खाने में है और खुदा बुरे वक़्त से बचाये, फ़ाँसी का फंदा सर ही पर लटक रहा है।"

महम्मद हुसैन ने हाथ धोते हुए कहा, "अब इनको भी समझा देना मा

और खुद भी अब ये बातें न करो। आओ मेरे साथ-ही-साथ खाना खालो इस वक़्त तुम भी। बच्चों को भी बुला लो ताकि सब साथ मिल कर खाना खा लें।"

महम्मद हुसैन की मा ने सब बच्चो को बुला लिया और बहू को भी मजबूर किया कि वह भी साथ ही बैठ जाये। सब ने साथ मिलकर हँसी-खुशी खाना खाया। महम्मद हुसैन को डाक्टर लतीफी के बावर्चीखाने की एक-से-एक नेमत रोज़ मयस्सर आती थी, उसके लिए यह पुलाव और कोरमा, यह मुर्ग और पराठे, ये कबाब और शीरबर कोई गैर मामूली चीज़े न थी। मगर यह वाक़्या है कि जो मजा अपने घर के खाने में होता है वह कही और मुमकिन नहीं इसलिए कि खाने के साथ ही यह एहसास भी होता है कि अपने ही दस्तर-ख्वान पर अपनी ही रोज़ी खा रहे है। खाने के बाद कुछ देर इधर-उधर की बातें करके महम्मद हुसैन ने तीसरे दिन आने का वादा किया और रुख्सत हो गया।

१८

****

डाक्टर साहब के यहाँ अब इस राज़दारी की जरूरत तो बाक़ी नहीं रही थी जो महम्मद हुसैन की नक़ाब-कुशाई से पहले ज़रूरी थी। अलबत्ता इस राज़ से सिर्फ़ शिहाब, डाक्टर साहब, नीलोफ़र और बेगम साहबा ही इस घर में आगाह थे कि महम्मद हुसैन बैरा दरअसल क्या है। मिर्ज़ा साहब और फ़रीद को इस राज़ का अहल न समझा गया। वह महम्मद हुसैन के साथ सबके इम्तियाज़ी सुलूक को सिर्फ़ यही समझते थे कि उस वफ़ादार नौकर ने अपनी जान हथेली

पर रखकर डाकू से जो मुकाबिला किया था यह उसी का नतीजा है कि सब उसकी इतनी इज़्ज़त करने लगे हैं। आज भी दोपहर के खाने पर जब डाक्टर साहब ने यह कहा कि :

"महम्मद हुसैन का रैंक दरअसल अब इतना तो बढ़ जाना ही चाहिये कि वह हम लोगों को खाना खिलाने के बजाय कोई अहम काम अपने ज़िम्मे लेलें।"

तो मिर्ज़ा साहब भी बोले, "फारसी का एक मिस्रा है जो इस वक़्त ज़हन से निकल गया है। जिसका मफ़हूम (अर्थ) यह है कि खिदमत ही से इन्सान मख़दूम बनता है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "जी हाँ, उर्दू में भी कहते हैं कि खिदमत ही से अजमत है। बहरहाल मैं तो यह कह रहा था कि महम्मद हुसैन के सुपुर्द अब तमाम मुलाज़िमों की निगरानी कर दी जाये। गोया यह सबके हेड हो जायें।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "सरकार आप मुझको कुछ बना दें। रहूँगा आपका नमकख्वार ही।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "सौ बातों की एक बात यह कही है तुमने। तुमने जो कुछ किया है उसका तो खैर जवाब ही नही। मगर यह भी वाक़्या है कि ऐसे कद्रदान मालिक भी हरेक को नही मिलते।"

डाक्टर साहब ने कहा, "मगर भाई साहब, उस दिन जो कुछ आपने और इन बरखुरदार मियाँ फ़रीद ने किया है उसका भी जवाब नही।"

मिर्ज़ा साहब ने अजीब-सा मुँह बनाकर कहा, "क्या अर्ज़ किया जाय, इख़्तेलाजे-कल्ब का दौरा भी उसी दिन पड़ना था। दरअसल मैं पहले ही से इख़्तेलाज में मुब्तला था कि यह वाक्या पेश आ गया। मगर इन साहबज़ादे के ज़ोफ़े-कल्ब (हृदय की दुर्बलता) की वजह समझ में न आ सकी।"

नीलोफ़र ने कहा, "उन बेचारे का तो वह हाल हो गया है कि रात जब हम लोग ताश खेल रहे थे ब्यूटी और डार्लिंग ने न जाने क्यों भौंकना जो शुरू किया तो मुझे यह देखकर बड़ी हँसी आई कि वह पहले तो सहमी-सहमी नज़रों से हर दरवाज़े को देखते रहे, उसके बाद चुपके-चुपके मेरी तरफ़ खिसकना शुरू किया।"

बेगम साहबा ने हँसी के मारे बमुश्किल निवाला हलक़ से उतार कर कहा,

"मैं भी देख रही थी और बुरा हाल था मेरा हँसी के मारे।"

मिर्ज़ा साहब ने आँखें मटकाकर कहा, "ऐ मैं सदक़े रन में जाओगे इसी अंदाज से।"

फ़रीद ने खँखा : कर गला साफ़ करते हुए कहा, "आखिर हूँ तो आपका बच्चा।"

और फरीद की तरफ से बेसाख्ता और ग़ैर मुतवक्को (अप्रत्याशित तथा आकस्मिक) फ़िकरे पर एक कहकहा पड़ा तो शिहाब ने कहा :

"मिर्ज़ा साहब, अब मान लीजिये कि आज फ़रीद मियाँ भी फ़िक़रा चुस्त कर गये।"

मिर्ज़ा साहब भला कब मानने वाले थे, एकदम अकड़ कर बोले, "कान पकड़ कर अर्ज करता हूँ कि न होता उस वक़्त इख्तेलाज का दौरा तो बताता मैं उस बुज़दिल को जो एक निहत्थे पर फ़ैर करता हुआ दुम दबाकर भागा।"

शिहाब ने कहा, "गजब कर रहे है मिर्ज़ा साहब आप भी। यानी उसको भरे मजमे में बुज़दिल कह रहे है :

और उस तक अगर ये बात गई।"

डाक्टर साहब ने कहा, "तो भाई साहब कह देंगे कि हजत, इसमें बुरा मानने की क्या बात है ? पीठ पीछे तो लोग शाह को भी बुरा-भला कह लेते हैं। आप तो बहरहाल चोर ही थे।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "भई तुमको याद होगा कि मुझ अकेले ने तीन मुसल्लह (सशस्त्र) बदमाशों को गिरिफ़्तार किया था।"

डाक्टर साहब ने साफ़ इन्कार कर दिया, "अब आप झूठी गवाही भी मुझसे दिलवाना चाहते हैं। मुझे तो ऐसा कोई वाक़या याद नही।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "तुम भूल गये हो, यह दूसरी बात है वर्ना यह वाक़या है शिहाब साहब कि इत्तेफ़ाक से मैं महलसरा में तन्हा था, सब गये हुए थे शिकार पर। शिकार पर तमाम बन्दूकें भी शिकारियों ही के साथ जा चुकी थीं कि रात को मुझे कुछ खटका महसूस हुआ। न तो हज़त मैंने यह सोचा कि मैं खाली हाथ हूँ, न यह ग़ौर किया कि खुदा जाने वह कितने आदमी होगे। बस एकदम से जाकर फट पड़ा उन पर और ऐसा दबोचा है तीनों बदमाशों को

कि पसलियाँ तो करकरा ही गई होंगी उनकी ।"

फ़रीद ने कहा, "फिर आँख खुल गई ।"

और वहाँ पड़ा ऐसा कहकहा कि मिर्ज़ा साहब वाकई सटपटा कर रह गये। मगर बड़े लिये-दिये अंदाज से बोले, "क्यो साहब, यह हमारी बिल्ली और हम ही से म्याऊँ। रोज़ तो मुझ ही से आयतुलकुरसी दम करवा कर सोते हो और अब हमारे ही मुँह आ रहे हो ।"

डाक्टर साहब ने हँसते हुए कहा, "भाई साहब, आज इनको कुछ न कहिये। मैं तो कल मस्जिद की ताक भरवाऊँगा कि अल्लाह ने वह दिन भी दिखाया कि मेरा यह कम सुखन भी बोलने लगा ।"

नीलोफ़र ने बमुश्किल हँसी पर काबू पाकर कहा, "आज तो सचमुच फ़रीद मियाँ खूब-खूब चहक रहे है ।"

शिहाब ने उसको टोका, "भई खुदा के लिए नजर न लगा दीजियेगा आप लोग ।"

बेगम साहबा की हँसी की वजह से उनकी कुर्सी तक चरचरा रही थी। वह फूली हुई साँसों में बोलीं, "काना-वाना उतार देना चाहिये ।"

मिर्ज़ा साहब ने झेंप मिटाने के लिए कहा, "इसको कहते हैं, 'बाजी-बाजी बा रीश बाबा हम बाज़ी' मगर ये बेचारे भी सच्चे हैं। इन्होंने वह ज़माना ही न देखा जब बीस सेर दूध तो देगची में मुँह लगाकर पी जाया करता था ।"

नीलोफ़र ने संजीदगी से कहा, "देग होगी। देगची बीस सेर की हो जाये तो उसको देग कहते हैं ।"

मिर्ज़ा साहब ने सिलसिला जारी रखा, "बहरहाल चार मुर्गो की यखनी सुबह-चार की शाम को खाने के अलावा हुआ करती थी। आम खाने बैठे तो ढाई सौ चूसने वाले आम और सौ-सवा सौ क़लमी आमो का औसत रहता था एक नशिस्त (बैठक) में। मगर क़ूवत भी ऐसी थी कि 'अल अमानो अल हफ़ीज़†'। टम-टम पर जा रहे है कि रास्ते में नाला पड़ गया। टमटम से घोड़ा खोल एक मर्तबा घोड़ा कंधे पर उठाकर उस पार कर दिया और दूसरी मर्तबा टमटम दोनों हाथो से उठाकर सर से ऊँची कर ली और नाले के उस

† ईश्वर की शरण में हैं और वही रक्षक है ।

पार पहुँचा दी।"

फ़रीद ने फिर कहा, "मगर मुझसे तो आपने कहा था कि एक ही मर्तबा में घोड़ा और टमटम दोनों आपने नाले के पार पहुँचा दी थीं।"

और सब तो हँस दिये मगर मिर्जा साहब ने बड़ी सख्ती से तरदीद की, "यह तो मैंने कभी नही कहा। साहबजादे, आप इसको शायद मज़ाक़ समझ रहे हैं, मगर यह वाक़्या है कि एक मर्तबा गुस्से मे आकर भैंस के घूसा मार दिया था। उसकी रीढ की हड्डी चट से टूट गई थी।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह तो मैने भी सुना है कि एक मर्तबा आप मय सामान के स्टेशन पर पहुँचे तो ट्रेन छूट चुकी थी। आप गार्ड का डिब्बा पकड़कर खडे हो गये और उस वक्त तक गाडी को हिलने भी न दिया जब तक पूरा सामान कुलियों ने रख नहीं दिया।"

मिर्जा साहब ने डाक्टर साहब के इस नौतस्नीफ (नवरचित) वाक्ये की संजीदगी से तरदीद की, "वह ट्रेन नही थी, बस थी। हुआ यह कि मैने ड्रायवर से लाख कहा कि एक मिनट ठहर जाओ, मेरा सामान रख दिया जाये। मगर वह न माना और उसने बस स्टार्ट कर दी। फिर तो मुझे भी गुस्सा आ गया और बस को पकडकर खडा हो गया कि देखूँ तो अब कैसे चलाते हो। हैरत हो गई थी बखुदा सबको।"

शिहाव ने कहा, "हैरत तो इस वक्त भी हो रही है। वाक़्या यह सच्चा ज़रूर है इसलिए कि आसमान अपनी जगह पर कायम है।"

मिर्जा साहब ने कहा, "मगर भैया, अब वह जमाना कहाँ? न वह खिलाई-पिलाई है, न वह बेफिक्रियाँ है। कस-बल आये तो कहाँ से आये? यकीन जानियेगा कि हिरन का शिकार कभी बन्दूक से नही खेला। जब मारा हिरन गुलेल से मारा। वह जोर था कि पैवस्त हो जाता था गुल्ला जहाँ पड जाता था।"

नीलोफर ने कहा, "मगर यह फरीद मियाँ तो कह रहे थे कि चिडियो का शिकार आप हमेशा पिंजरे में बंद करके किया करते थे।"

फ़रीद ने घबराकर कहा, "क्यों आप मार खिलवायेंगी मुझे? बड़े मामू

जान मैने बखुदा कुछ नहीं कहा है ।"

उसी वक़्त बाहर से मोटर साइकिल की आवाज आई तो डाक्टर साहब ने महम्मद हुसैन से कहा, "देखना भई, शायद फ़ारूकी साहब आ गये । शिहाब मियाँ, उनको खाने में ज़बरदस्ती शरीक कर लीजियेगा, अभी जाहिर है कि खाना न खाया होगा ।"

फ़ारुक़ी ने दाखिल होते हुए कहा, "जी बिल्कुल नही खाया है । मै तो दुआ माँगता आ रहा था कि आप लोग मैदान साफ़ न कर चुके हो । वर्ना मुझे नीलोफ़र बीवी को जहमत देना पड़ती कि बनवाओ जल्दी-जल्दी कुछ आमलेट वगैरा । कहिये मिर्जा साहब किब्ला क्या हाल है आपके दिले-नादान का ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "शुक्र है परवरदिगार का, निस्वतन बेहतर हूँ कल से । नहार मुँह मुरब्ब-ए-सेव पर वर्के-नुकरा पेचीदा (चाँदी के वर्क मे) इस्ते-माल कर रहा हूँ ।"

फ़ारुकी ने फ़रीद से पूछा, "और आपका क्या हाल है फरीद साहब ?"

शिहाब ने कहा, "आज तबियत बडी हाजिर है । मिर्जा साहब कई मर्तबा इताब (प्रकोप) कर चुके हैं ।"

फ़ारुकी ने अपनी प्लेट खुद भरते हुए कहा, "नामुमकिन है । यह छोटा मुँह बड़ी बात है । मिर्जा साहब ने बच्चा समझकर बख्श दिया होगा । बहर-हाल ज़रा खाने से जल्द फ़राग़त करना है, उसके बाद मै तखलिया (एकांत) चाहूँगा । कुछ निहायत अहम मसाइल है ।"

चुनांचे खाने के बाद डाक्टर साहब फ़ारुकी को लेकर अपने कुतुबखाने में चले गये और एक-एक करके सिवाय मिर्जा साहब और फ़रीद के सभी वहाँ पहुँच गये ।

१९

****

'दौलते-बेदार' नाम का एक छोट-सा रिसाला डाक्टर साहब के वालिदे-मरहूम की किताबों में मिल चुका था और कई दिन से फ़ारुकी के मुतालिये में था। इस अर्से में महम्मद हुसैन वहीदा की पेशी में जाकर यह कह आया था कि अब तक इस नाम की कोई किताब नजर नहीं आई है, मगर मेरी जुस्तुजू जारी है। चुनांचे उसको एक हफ़्ते की मज़ीद मुहलत मिल चुकी थी। मगर यह मुहलत भी कम साबित हो रही थी इसलिए कि न तो फ़ारुकी के पल्ले कुछ पड़ रहा था कि आखिर यह रिसाला है क्या बला, न शिहाब कुछ समझ सका कि आखिर फ़ारुकी ने डाक्टर साहब से एकदम से एक अजीब सवाल किया :

"डाक्टर साहब, यह बताइए कि आपके वालिदे-मरहूम का क्या मशगला था ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "मशगला ही क्या होता—एक रईस बाप के रईस बेटे थे, हालाँकि वह रियासत गदर १८५७ में खत्म हो चुकी थी जब दादाजान को चंद हज़ार अशरफ़ियों और थोड़े से जवाहिरात के साथ देहली से भागना पड़ा था और फिर तो यह हाल हो गया था कि आज जालंधर में हैं तो कल लाहौर में।"

फ़ारुक़ी ने कहा, "आपके दादाजान ने देहली से हिजरत (प्रवास) के बाद अपना वतने-सानी किस शहर को बनाया था ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "देहली से जालंधर और जालंधर से लाहौर आने के बाद कुछ दिनों शेख़ूपुरा में क़याम किया ; फिर मुस्तकिलन लाहौर आगये। मगर शेख़ूपुरा बराबर जाते रहते थे।"

फ़ारुक़ी ने खुश होकर कहा, "एक गुत्थी तो सुलझती हुई नज़र आती है।

मगर दुआ माँग रहा था कि खुदा करे शेखूपुरा से कोई ताल्लुक़ पैदा हो जाये।"

शिहाब ने हैरत से पूछा, "क्या आपका वतन भी शेखूपुरा है ?"

फारुकी ने कहा, "मेरा वतन तो नही हैं, मगर मैं चाहता था कि आपका वतन वही निकले। यह रिसाला 'दौलते-बेदार बड़ी अहमियत रखता है, मगर जिस तरह वह मसरूका (चोरी किया हुआ) शजरा या नक़्शा बग़ैर इस रिसाले के बेकार है, उसी तरह यह रिसाला भी बग़ैर उस शजरे या नक़्शे के बेकार है। ये दोनो अगर आमने-सामने हो तो शायद कोई गुत्थी सुलझ जाये। अच्छा यह बताइये कि आपके दादाजान अपने खान्दान के साथ तन्हा थे या कोई और भी था ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "उनके साथ मेरी बीवी के दादा नवाब फ़साहत अली खाँ भी थे जो अपना बहुत बड़ा खज़ाना साथ लिये रवाँ-दवाँ फिरे और फिर किसी को पता न चला कि वह खज़ाना क्या हुआ ? कहाँ गया ? नवाब फ़साहत अली खाँ का इन्तेकाल हरकते-कल्ब बन्द होने से हुआ और उनको इतनी मुहलत भी न मिल सकी कि वह अपने बेटे यानी मेरे खुसरे-मुहतरिम को या मेरे दादा जान को उस खज़ाने के मुताल्लिक़ कुछ बताते।"

फारुकी ने कहा, "अब नवाब फ़साहत अली खाँ मरहूम की औलाद में सिर्फ़ बेगम साहबा है या कोई और भी ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "कोई और नहीं है, यही है नवाब फ़साहत अली खाँ के फ़र्जन्द नवाबजादा शुजाअत अली खाँ की इकलौती बेटी।"

फ़ारुकी ने कहा, "खुदा आपको कामयाब करे। मगर मुझे अब पूरा यक़ीन हो चुका है कि वह शजरा जिसे मैं नक्शा कहता हूँ और यह कलमी (हस्त-लिखित) किताब दोनों उसी खज़ाने से मुताल्लिक़ है।"

शिहाब ने कहा, "मगर आप शेखूपुरा को इतनी अहमियत क्यो दे रहे थे ?"

फारुकी ने कहा, "मै अब भी शेखूपुरा को अहमियत दे रहा हूँ। यह देखिये इस क़लमी नुस्खे के सरेवर्क़ पर जो क़लमी तसवीर बनाई गई है उसको समझने की कोशिश कीजिये। मसलन यह देखिये यह क्या है ?"

शिहाब ने कहा, "यह मामूली-सा खंभा बना हुआ है।"

फारुकी ने कहा, "और यह क्या है ?"

शिहाब ने कहा, "यह अगर कुत्ता नहीं तो बकरी हो।"

फारुकी ने कहा, "जी नहीं, यह न कुत्ता है न बकरी, बल्कि हिरन और वह खंभा नहीं बल्कि मीनार हैं। गोया इस कलमी रिसाले का ताल्लुक शेखूपुरा के करीब उस मुकाम से है जिसको हिरन मीनार कहते है।"

अब डाक्टर साहब ने भी जेब से ऐनक निकाल कर उस को गौर से देखकर कहा, "कमाल है साहब। बखुदा मेरा दिमाग तो कभी हिरन मीनार तक न पहुँचता। आप तो गोया पहुँच गये असल मुकाम तक।"

फारुकी ने कहा, "अभी कहाँ पहुँचे हैं डाक्टर साहब। हिरन मीनार कोई छोटी-सी जगह तो है नहीं कि हम खुश हो जायें। दूसरे यह भी मुमकिन है कि यह महज हमारा कयास हो और इस तसवीर का मतलब दरअसल कुछ न हो, मगर ताईद इस तरह होती है इस कयास-आराई (अनुमान लगाना) की कि इसी रिसाले के सफा छः पर ज़रा यह निकालिये तो सफ़ा छः। हाँ अब यह तसवीर देखिये यह क्या है ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "कुछ कंघी-सी मालूम होती है।"

शिहाब ने कहा, "जी नहीं कंघी तो यह है नहीं, यह तो कुछ कालीन-सा मालूम होता है।"

फारुकी ने खुश होकर कहा, "तुम भी कालीन समझे ना ? मैं भी इसे फ़र्श या शामियाने की छत समझा था। मगर गौर करने पर मालूम हुआ कि इस फ़र्श के ऊपर जो एक और दो का हिन्दसा बना हुआ है, इसके भी कुछ माने होंगे। चुनांचे मै इस नतीजे पर पहुँचा कि यह एक और दो का हिन्दसा नहीं बल्कि साफ बारह का हिन्दसा है। और यह नीचे कालीन नही बल्कि दरी है। गोया यह बारहदरी की निशानदेही की गई है। हिरन मीनार में वसी तालाब के ऐन वस्त (बीच) मे एक बारहदरी भी है।"

नीलोफर ने डाक्टर साहब से कहा, "डैडी, वही बारहदरी जिसमें हम लोग पिकनिक मनाने गये थे।"

फारुकी ने कहा, "मगर यह देखिये, यह तीर का निशान और आगे लिखा हुआ है चवालीस का हिन्दसा। अब यह कुछ पता नहीं चलता कि यह चवालीस

क्या है। और इस हिन्दसे की क्या शरह (व्याख्या) हो सकती है। ज़ाहिर है कि यह हिन्दसा उस शजरे या नक़्शे में होगा।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ यह बात तो खुद वहीदा ने मुझसे कही थी कि वह नक्शा बगैर इस किताब के बेकार है। इसका मतलब यह हुआ कि यह किताब भी बगैर उस नक्शे के बेकार है।"

शिहाब ने कहा, "बहरलाल यह तै है कि अगर यह किताब वहीदा को मिल जाये तो वह इस पूरी गुत्थी को सुलझा लेगा। इसलिए कि बहरहाल उसको यह तो मालूम ही है कि इन्ही दोनों चीजों में एक बहुत बड़े खजाने का राज है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "हैरत तो यही है कि खुद हम लोगो को उस खज़ाने का कोई इल्म नही जिनके खानदान की यह चीज़ है। और उस बदमाश को यह इत्तला है।"

फारुकी ने कहा, "जी हाँ यह तो मामूली-सी बात है। आप बता ही चुके है कि आपके वालिद साहब अक्सर इस नक़्शे को बैठे देखा करते थे और जैसे कोई किसी मुअम्मे को हल करता है इस तरह न जाने क्या-क्या लिखकर मिटाया करते थे। मुमकिन है उन्ही से किसी ने यह सुन लिया हो और वहीदा तक खबर पहुँच गई हो।"

शिहाब ने महम्मद हुसैन से कहा, "उस्ताद, यह किताब तो वहीदा को मिलने से रही, अलबत्ता कोशिश यह करो कि वह नक़्शा हमारे हाथ आ जाये।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "साहब वह नक़्शा हासिल करना अब इतना आसान नही है। कोशिश तो मै सब कुछ करूँगा और अगर कभी इतेफ़ाक से मौका मिल गया तो चूकने वाला भी नही हूँ। मगर मुझे खुद खबर नही है कि वहीदा ने वह नक़्शा कहाँ रखा होगा। गालिबन यह बात उसने पाँचो नायबों से भी पोशीदा रखी होगी।"

फारुकी ने कहा, "बहरहाल फिलहाल यही बहुत है कि हमको इस रिसाले की अहमियत का अदाजा हो गया। अब सबसे पहला काम मैं यह करता हूँ कि इस किताब की एक नकल तैयार करके और इसमे दानिस्ता कुछ गलतियाँ करके आपके कुतुबखाने मे रखे देता हूं और असल नुस्खा अपने पास रखता हूँ। अगर ज़रूरत पेश आई तो महम्मद हुसैन साहब भी बनास्पती नुस्खा ले जाकर

वहीदा को दे देंगे ताकि वह गलत रास्ते पर लग जाये और इस किताब को देखकर वह उस नक़्शे को भी बाहर निकाल ले ताकि महम्मद हुसैन साहब को उसके उड़ाने में आसानी हो सके ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "भई क्या दिमाग पाया है ! बदमाश तो ख़ैर हर्फ़ों के बने हुए होते ही है, मगर ये पुलिस वाले भी कुछ कम नहीं होते ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "आपकी यह तजवीज है बडी अच्छी और इस तरह वहीदा वाकई कुछ दिनों के लिए गलत रास्ते पर चल निकलेगा । मगर यह बात मुझको आसान नज़र नही आती कि वह उस नक़्शे को इस तरह रखेगा कि मैं उसे उडा लाऊँ ।"

शिहाब ने समझाया, "देखिये मौलाना इस नुस्खे की गलत रहनुमाई का नतीजा यह होगा कि एक तो वहीदा की तवज्जो कुछ दिनो के लिए उसी तरफ़ हो जाएगी । दूसरे जब कोई नतीजा न निकलेगा तो उसकी नजर में उस नक़्शे की भी मुमकिन है कोई अहमियत न रहे ।"

फ़ारुकी ने ताईद की, "यकीनन यही होगा । बहरहाल मै तो सिर्फ़ इतना वक्त चाहता हूँ कि अर्जमंद को बुला लूँ, उन हजरत का ऐसे मामलात में दिमाग खूब चलता है ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यानी आपसे भी ज्यादा ? नामुमकिन है । मैं तो आप ही की इस सूझ-बूझ पर हैरान हूँ ।"

फारुकी ने कहा, "जी नही, इस फन में उसका जवाब नहीं । मैं तो उसका महज शागिर्द हूँ । इसके अलावा वह अभी शेखूपुरे मे भी रह चुका है ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "बहरहाल आप इस रिसाले को ऐसा बदल दीजिए कि कोई एक निशान या कोई एक हिन्दसा भी सही न हो । वर्ना खुदा जाने वह किस सही हिन्दसे की वजह से सही मुकाम पर पहुँच जाये । दूसरे जरा पुराने कागज और पुरानी स्याही का भी खयाल रखियेगा ।"

फ़ारुकी ने बाहर जाते हुए कहा, "तुम इस तरफ़ से इत्मिनान रक्खो । वहीदा का बाप भी इस जाली किताब को जाली न समझ सकेगा ।"

इस कान्फ्रेंस के बाद सबने बाहर निकल कर चाय पी और फिर फ़ारुक़ी रुख़्सत हो गया ।

२०

****

डाक्टर साहब की कोठी मे आज फिर जश्न का एहतमाम था। परेशानियाँ एक तरफ मगर डाक्टर साहब की हँगामापरवर तबियत चहल-पहल के मौक़े पैदा कर ही लेती थी। खुसूसन आज की तकरीब तो वाकई अहमियत रखती थी और इस तक़रीब मे डाक्टर साहब ने तीन तक़रीबें मिला दी थी : दरअसल थी तो आज नोलोफर की सालगिरह, मगर आज ही डाक्टर साहब ने उस दवाखाने का इफ़्तेताह (उद्घाटन) भी कर दिया था जो शिहाब की तरफ़ से खोला गया था और शिहाब का नतीजा भी आ चुका था, लिहाज़ा इसी तक़रीब में यह मसर्रत भी शामिल थी। डाक्टर साहब चाहते तो यह थे कि ये तीनों तकरीबे अलैहदा-अलैहदा मनाई जाये, मगर शिहाब ने उनको जबरदस्ती मना किया और समझा-बुझाकर राजी कर लिया कि वह इस एक ही तकरीब मे सबको शामिल समझे। तमाम कोठी दुल्हन की तरह सजाई गई थी। सब्जाजार के हर दरख्त पर रगारग बर्की कुमकुमे चढाये गये थे। एक जगमगाती हुई मेहराब बनाई गई थी। फ़ौजी बैण्ड कोठी के वसी सब्जाज़ार पर नग़मे बरसा रहा था। पहले असराने (सांध्य जलपान) का एहतमाम था। ताकि दवाखाने का इफ्तेताह हो जाये, उसके बाद रात को डिनर का एहतमाम जिसका ताल्लुक नीलोफर की सालगिरह से था। पाँच बजते-बजते कारों की आमद शुरू हो गई। ट्रैफिक पुलिस के सिपाही उन कारों को बाकायदगी से एक दरवाजे से दाखिल कर रहे थे और दूसरे दरवाजे से बरामद करके कोठी के बाहर के मैदान में पार्क कर रहे थे। पहले दरवाजे पर शिहाब मेहमानों का इस्तकबाल कर रहा था और शामियाने के बाहर खुद डाक्टर साहब ख़ैरमक़दम के लिए मौजूद थे। शिहाब को किसी ख़ास मेहमान का शिद्दत से

इन्तेज़ार था जो अब तक न पहुँचा था। आखिर एक कार देखकर वह बेसब्री से झपटा और अर्जमंद को कार से बाहर घसीट कर लिपट गया उससे। अर्जमंद को देखकर फारुकी भी दौड़े और आखिर शिहाब को मेहमानों का खैरमकदम करने के लिए बाहर छोडकर फारुकी अर्जमंद को अपने साथ ले गया और उसको शिहाब के कमरे में पहुँचा दिया ताकि वह हाथ-मुँह धोकर मुहज्जब लोगों में बैठने के काबिल हो जाये।

यों तो यह असराना हाजिरीन व हाजिरात का मिला-जुला इज्तेमाअ था ही, मगर कुछ खवातीन ने अपनी डेढ ईंट की मस्जिद अलैहदा ही बनाई थी। ये थीं नीलोफर, कौकब, सुरैया, बिरजीस और रुबी और इन पाँचों ने एक मेज़ को इस तरह घेरा था कि किसी और के लिए दानिस्ता गुंजाइश न छोडी थी ताकि उनकी बेतकल्लुफ सोहबत में कोई नाजिन्स मुखिल न हो। चुनांचे हस्बे मामूल यहाँ इस वक़्त भी वही छेड-छाड जारी थी कि पचास-साला बेगम हुमायूँ बाल-बाल मोती पिरोये और खाल-खाल मेकअप से अपने को गुड़िया बनाये हाँपती-काँपती इधर आ निकलीं।

"ऐ मैंने कहा बेटी नीलोफ़र, सदरे रहमत न जाने कहाँ-कहाँ तुमको ढूंढ आई। मुझे क्या मालूम था कि तुम यहाँ बैठी हो। जरा एक कुर्सी मेरे लिए यहां खिसका लो।"

नीलोफर ने बडी मुस्तैदी से कहा, "जी हाँ खाला जान, यह लीजिये मेरी कुर्सी। मैं दूसरी उठा लाऊंगी।"

बेगम हुमायूँ ने बैठकर अपने पर्स से आईना निकाला और अपने को नोक-पलक से दुरुस्त करते हुए बोली, "जब तक अपने मतलब की सोहबत नही, मुझे तो लुत्फ आता नहीं।" मगर अब जो मेकअप दुरुस्त करके देखती है तो नीलोफर वहाँ से गायब थी। वह मिसेज जीलानी से कह रही थी :

"न जाने आपको कहाँ-कहाँ ढूंढा आण्टी ? आपको खाला जान बेगम हुमायूँ याद कर रही है। वह बैठी है वह उधर।"

और उन बड़ी बी को उस तरफ़ रवाना करके कौकब को आने का इशारा करके फिर पहुँची एक और खाला अम्मा के पास और उनको भी उसी तरफ़ रवाना करके बिरजीस को भी बुला लिया। फिर दो खवातीन को उसी तरफ़

भेजकर रुबी और सुरैया को भी बुला लिया और अब ये पांचों फिर एक ही मेज पर जमा हो गई। बिरजीस ने इत्मिनान से बैठते हुए कहा :

"मैं तो समझती थी कि गारत की इन बेगम हुमायूँ ने हमारी पार्टी। और अब इनसे बातें करना पड़ेंगी। बलगमी खाँसी और गठिया के किस्म के अमराज़ से मुतल्लिक।"

सुरैया ने कहा, "बड़ा बोल न बोलो। शायद कोई और खाला जान मुहब्बत छिड़कती न नाजिल हो जायें।"

कौकब ने बड़ी मतानत से कहा, "मगर एक बात है यह जगह ज़्यादा अच्छी है। यहाँ से नीलोफर को शिहाब साहब के लिए दूरबीन लगाना न पडेगी।"

नीलोफर ने चटख कर कहा, "मैं कहती हूँ खुदा खैर ही करे। शिहाब साहब का नाम बहुत जुबान पर रहने लगा है।"

कौकब ने बरजस्ता कहा, "तो क्या मेरा दिल चोर है कि दिल मे छुपाये रहूँ, नाम जुबान पर न आये ?"

रुबी ने भी नीलोफर को छेड़ा, "मगर शिहाब को पता नही कि हम सब इधर आगये है। वह अब तक बेगम हुमायूँ को नीलोफ़र समझकर बड़ी ललचाई हुई नजरों से देख रहे है।"

इस पर एक कहकहा पड़ा और नीलोफ़र ने हँसकर कहा, "नीलोफर समझ कर क्यों देखेंगे ? बेगम हुमायूँ पर भी ललचाई हुई नजर पड़ सकती है। देखा नही उनका मेकप ?"

बिरजीस ने बडी उम्दा बात कही, "इन बूढ़े गम्जे वालियों को यह कौन समझाये कि इस उम्र मे मेकअप के सामान मे सीमेण्ट का भी इजाफ़ा कर लेना चाहिए।"

सुरैया ने उसको टोका, "बहस शिहाब साहब से गैर मुताल्लिक न होना चाहिए।"

नीलोफर ने कहा, "हाँ वरना इनकी दिलशिकनी होगी।"

सुरैया ने मुँह बनाकर कहा, "जी बख़्शिए मुझे। अल्लाह रखे मेरा मँगेतर खुद हज़ार-दो हज़ार में एक है। शर्म की वजह से न कहूँ तो दूसरी

बात है ।"

नीलोफ़र को याद आ गया, "हाँ सचमुच अनीस भाई भी तो आये हुए हैं, मगर ज़रा शर्मीली को देखो तो सही ठीकरे बरस रहे है मुँह पर । दीदो का पानी ढल गया है ।"

रुबी ने कानों पर हाथ रख कर कहा, "कितनी बूढी बातें कर रही हो नीलोफ़र ? मालूम होता है बेगम हुमायूँ बोल रही है ।"

और उसी वक्त तालियाँ बजने से सब उस तरफ़ मुतवज्जे हो गये जहाँ वज़ीरे-सेहत दवाखाने का इफ़्तेताह करने के लिए खड़े थे । उहोने कुछ तक़रीर भी की मगर ग़ालिबन खुद ही सुनी होगी, यहाँ तो खाक भी किसी के पल्ले कुछ न पड़ा । आखिर उन्होने मेज़ पर एक बोर्ड का स्विच दबाया और डाक्टर साहब की कोठी के उस पार जहाँ उनका मतब था बलन्दी पर बर्की रोशनी के हरूफ़ में एक बोर्ड फ़िरोज़ाँ हो गया जिस पर लिखा हुआ था 'शिहाब मेडिकल हाल' । यह बोर्ड यहाँ से साफ़ नज़र आ रहा था उसके हरूफ़ के रोशन होते ही हाजिरीन ने पुरजोश तालियाँ बजाई और डाक्टर लतीफ़ी ने अपने हाथ से शिहाब के गले मे हार पहनाया । दवाखाने के इस इफ्तेताह के बाद ही अब यह सालगिरह का जल्सा बन गया । वस्त मे एक गोल मेज रखी गई और उस पर एक ते मज़िला अज़ीमुश्शान केक लाकर रखा गया जिस पर अठारह छोटी-छोटी मोमबत्तियाँ लगी हुई थी । एक दूसरी लम्बी-सी मेज पर सालगिरह के तहाइफ़ (उपहार) चुने हुए थे । अकल मुईन की बदहवासी से कौन वाकिफ नहीं है, इन हजरत ने गला फाड़-फाड कर नीलोफ़र को पुकारना शुरू किया कि आकर बत्तियाँ बुझाये और केक काटे । आखिर ये सब सहेलियाँ नीलोफर को लेकर वहाँ पहुंची और तमाम मजमा सिमट कर वही आ गया । ऐन उस वक़्त जब कि नीलोफर ने छुरी उठाई है एक आवाज आई :

तुम सलामत रहो हज़ार बरस, हर बरस के हों दिन पचास हज़ार ।"

और सबने देखा कि मिर्जा साहब बड़े खुलूस से यह शेर पढ़ रहे है और अपना तोहफ़ा अपने हाथ में लिये आगे बढ़ रहे है । करीब आकर जो तोहफ़ा पेश किया तो वह खुद उन्ही की तसवीर थी जो चाँदी के प्रेम में थी । इस अजीब तोहफ़े पर एक क़हकहा पड़ा । अर्जमन्द ने कहा :

"यह शादी में देने का तोहफ़ा है ताकि बच्चों को डराने के काम आये।" मिर्ज़ा साहब न जाने क्या कहते रहे। उनकी आवाज़ कहकहों में दब गई। आखिर नीलोफ़र ने बत्तियाँ बुझाकर केक काटा और पुरजोश तालियों से हाज़िरीन ने इजहारे-मुहब्बत किया। अब बिरजीस और कौकब मुसिर थी कि शिहाब का तोहफा देखेंगी। सुरैया और रुबी तोहफ़ों की मेज तक पहुँच चुकी थी। आखिर रुबी ने एक पैकेट उठाकर बिरजीस और कौकब को दिखाते हुए इशारे से बुलाया और उन सबने वह पैकेट खोलकर एक गुलदस्ता निकाला जिस में नीलोफर ही के फूल थे और एक चिट लगी हुई थी :

'शिहाब की तरफ़ से असल नीलोफ़र को नक़ली नीलोफ़र।'

रुबी ने बेसाख्ता दाद दी, "क्या कहना है, यह तो शाइरी है !"

कौकब ने कहा, "बडी मेहनत से हासिल किये होंगे ये नीलोफर के फूल।"

बिरजीस ने कहा, "बल्कि गुले-नीलोफर के फूल।"

मुईन अंकल फिर चीख-चीख कर जमीन-आसमान एक किये थे और अब तकाजा था म्यूजिक का। मतलब यह था कि कौकब गाना शुरू करे जिसके सभी मुश्ताक थे। कौकब बेचारी को तो मालूम ही था कि यह वक्त आने वाला है और उसका आना बरहक है, लिहाजा उसने तकल्लुफ को गैर जरूरी समझकर शिहाब से कहा, "मैं हाजिर हूँ, मगर जरा सब को कायदे से बिठा दीजिये।"

शिहाब ने कहा, "आज आपको अर्जमन्द का तबला भी सुनावायेंगे।"

नीलोफर ने कहा, "आप कोई एहसान नही करेंगे। यह पियानो यहाँ इस लिए रखा गया है कि रुबी कौकब के साथ संगत करेंगी।"

चुनाँचे सबके बैठने के बाद कौकब ने इन्तहाई खुश मजाकी से काम लेकर 'गालिब' की यह गजल शुरू की :

देखना क़िस्मत कि आप अपने पै रश्क आ जाये है
मैं उसे देखूं भला कब मुझ से देखा जाये है

और यह वाक्या है कि आज वह कुछ ऐसे मूड में गाई और वह फ़िजा उसने तारी करदी कि अर्जमन्द जिनको अपनी मूसीकी दानी पर बड़ा नाज था, तबला बजाने में अपने आर्ट का मुज़ाहरा करते-करते कौकब की सहर-तराज़

(जादू भरी) आवाज़ में गुम होकर रह गये और आख़िर उनको उस ग़ज़ल के इख़्तेमाम पर कहना पड़ा कि मेरे वहमो-गुमान मे भी न था कि यह शर्मीली सी लड़की संगत का एक तूफ़ानी समदर भी बन सकती है। उसके एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा गाना सुना गया और यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहा जब तक अकल मुईन को फिर खाने के लिए चीख़-चीख कर महफ़िल सर पर न उठाना पड़ी।

२१

****

अर्जमन्द अब की काफ़ी छुट्टी लेकर तफसील से रहने के लिए आया था। इसलिए कि फ़ारुकी ने उसको यही लिखा था कि 'मल्लाह दर चीन और किश्ती दर फ़रंग'* वाला मामला अब न चलेगा। क़दम-क़दम पर तुम्हारी ज़रूरत महसूस हो रही है, लिहाज़ा ज़्यादा-से-ज़्यादा जितनी छुट्टी ले सकते हो लेकर फ़ौरन आजाओ। इसी किस्म के खुतूत शिहाब के भी गये थे। मगर खुद डाक्टर साहब के खत ने उसको बिल्कुल ही बाँध कर घसीट लिया। बहरहाल अब वह तफ़सीली तौर पर आया हुआ था और बावजूद डाक्टर साहब के इसरार के वह उस कमरे में न ठहरा जो उसके लिए आरास्ता किया गया था, बल्कि शिहाब ही के कमरे में उसने भी डेरा डाल दिया था। फ़ारुकी का भी ज़्यादा वक़्त अब यहीं गुज़रता था और ये तीनों ज़्यादातर उसी रिसाले 'दौलते-बेदार' का मुअम्मा (पहेली) हल करने में लगे रहते थे। अर्जमन्द ने फ़ारुकी की इस तजवीज़ की पूरी हिमायत की कि 'दौलते-बेदार' का एक नक़्ली नुस्खा तैयार किया जाये और उसमें दानिस्ता तौर पर गलत निशानात और गलत

---

*मल्लाह चीन में है और नाव यूरोप में है।

हिन्दसे डालकर यह नुस्खा महम्मद हुसैन के ज़रिये वहीदा को भेज दिया जाये ताकि वह सर खपाता रहे और ग़लत रास्ते पर लगकर अपना वक़्त ज़ाया करता फिरे। और हम सब बैठकर इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करें। इस बात का वह भी कायल हो चुका था कि बेशक सरेवर्क की तसवीर और पिछले वाक़्यात की तफसील से यही नतीजा निकलता है कि रिसाला हिरन-मीनार की तरफ इशारा कर रहा है। महम्मद हुसैन का इसरार यह था कि इस रिसाले पर गौर बाद मे कीजियेगा, पहले उसकी नकल तैयार करके मेरे हवाले कीजिये ताकि मै वहीदा को देकर मुतमइन कर दूँ। वह सख्त मुजतरिब होगा और मेरी मुस्तैदी मे अगर शक पैदा हो गया तो मुमकिन है कि मेरे तबादले के एहकामात सादिर करदे और किसी और को यहाँ तैनात कर दिया जाये। फारुकी ने उससे वादा कर लिया कि मै खुद इस रिसाले की जाली नकल तैयार कराने की फिक्र मे हूँ ताकि वह जल्द-से-जल्द वहीदा के पास पहुँच जाये और उसकी तवज्जो को समेट ले। फिलहाल उसकी तवज्जो का मरकज यह कोठी ही है। अर्जमन्द ने कहा :

"इसके अलावा यह इसलिए भी जरूरी है कि यह जाली रिसाला जब उसको मिल जायगा तो हमारी अजीजा नीलोफर भी एक हद तक महफूज हो जायेंगी। इसलिए कि खुद अफजल तो कुछ कर नही सकता। उसकी वाहिद क़ूवत वहीदा है और हम वहीदा को इस मुअम्मे के हल करने मे उलझा देंगे।"

फ़ारुकी ने कहा, "निहायत ग़ैर ज़रूरी बातें आप कर रहे है और हम लोगो का कीमती वक़्त खराब कर रहे है। मैंने निहायत बलीग बात कही थी कि यह जाली रिसाला उसकी तवज्जो को समेट लेगा। तवज्जो समेटने का मतलब ही वह था जो आपने बयान फ़र्माया है। अजीज़मन, अक़्लमन्दों की बात समझने का अपने में शऊर पैदा करो।"

शिहाब ने कहा, "बल्कि तहतश्शऊर (उपचेतन) पैदा करो।"

फ़ारुकी ने कहा, "बहरहाल मुझको यह जाली नुस्खा तैयार कराने के लिए एक तो किर्मखुर्दा-से (कीड़ा खाये हुए) हिनाई काग़ज की तलाश है, दूसरे जरा पुरानी किस्म की रोशनाई कही से मिल जाये।"

शिहाब ने कहा, "ये दोनो चीज़ें मै फ़राहम किये देता हूँ। डाक्टर साहब

के कुतुबखाने में कई क़लमी नुस्खे ऐसे है जिनमें फ़ालतू काग़ज़ भी लगे हुए है और दीमक के छेद भी है ।"

फारुकी ने खुश होकर कहा, "अल्लाह आपको बेटा दे । कागज़ का तो हो गया बन्दोबस्त अब बताइये रोशनाई ।"

शिहाब ने कहा, "उसकी तरकीब यह है कि किताबत की रोशनाई में मामूली स्याह रोशनाई हल करके उससे लिखा जाये यह नुस्खा । हिनाई कागज़ पर उसका ऐसा रग आयेगा कि वहीदा का बाप भी तमीज़ न कर सके ।"

फ़ारुक़ी ने कहा, "देख लेंगे तजुर्बा करके । मगर वह जाली नुस्खा तो तैयार करो कि जो कुछ लिखवाना है उसका मसविदा तो होना चाहिए ।"

शिहाब ने कहा, "यह भी मुझ पर छोड़ दो । जब से यह तजवीज सामने आई है मेरा दिमाग इसी तरफ़ लगा हुआ है । मसलन जिस तरह असल नुस्खे में हिरन मीनार का इशारा सरेवर्क पर किया गया है उसी तरह इस जाली नुस्खे के सरेवर्क़ पर मै एक दूध वाला बनाऊँगा जो लुक़मा (ग्रास) खाता हुआ दिखाया जायेगा ।"

अर्जमन्द ने कहा, "दूधवाला ? लुक़मा खाता हुआ ? यह बकवास क्या है, कोई मफ़हूम भी तो पैदा हो । जैसे हिरन मीनार का मफ़हूम पैदा हुआ है ।"

फ़ारुकी ने भी कहा, "महज डिजाइन बनाना तो मक़सद नही है कोई बात भी तो पैदा करो ।"

शिहाब ने कहा, "बन्दा परवर बात ही तो पैदा की है । ज़रा-सा दिमाग़ लड़ाने के बाद वहीदा या उसकी जमाअत का कोई लाल-बुझक्कड़ समझ लेगा कि यह गूजर है जो निवाला खा रहा है ।"

अर्जमन्द ने उछल कर कहा, "और जहन मुतक़िल हो जायगा गुजरानवाला की तरफ । जिन्दाबाद ! मानते है उस्ताद !"

फ़ारुक़ी ने भी खुश होकर कहा, "मगर, यह शिहाब सूरत से तो इतना अक़्लमंद नज़र आता नहीं ।"

अर्जमन्द ने कहा, "मगर एक बात है गुजरानवाला इतनी आसानी से वह न बूझ सकेंगे जिस आसानी से तुम्हारे बताने के बाद हम समझ गये है ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "यह आप मुझ पर छोड़िये । अगर यह किसी ने

न बूझा तो इस सूझ-बूझ का सेहरा मैं अपने सर बँधवा लूँगा और इसका नतीजा यह होगा कि वह बजाय हिरन मीनार पहुँचने के गुजरानवाला में टापते फिरेंगे।"

अर्जमद ने कुछ गौर करते हुए कहा, "मगर वाजे रहे कि उनके पास असल नुस्खा न सही असल नक्शा तो है ही।"

शिहाब ने कहा, "जनाबे वाला, मै उस नक़्शे को देख चुका हूँ वह बगैर इस रिसाले के महज बेकार चीज है और अगर यह रिसाला हम गलत कर दें तो वह नक्शा समझ में आ ही नही सकता।"

अर्जमन्द ने कहा, "मेरा मतलब यह है कि मसलन यह देखो सफा तीन पर चहार दीवारी के ऊपर बारह का हिन्दसा बना है जिसका मतलब बकौल तुम लोगों के वाकई बारह दरी है। उसके नीचे ही यह देखो मछली भी बनी हुई है जिसका साफ मतलब यह है कि उस तालाब की तरफ़ इशारा है जिसमें हिरन मीनार की बारह दरी है। अब अगर इस क़िस्म की कोई बारहदरी या मछली वगैरा उस नक़्शे में भी हुई तो क्या होगा ?"

शिहाब ने कहा, "उस नक़्शे मे इस किस्म की कोई चीज़ नहीं है। सिर्फ इधर-उधर चद हिन्दसे पड़े हुए है। ज़ाहिर है कि वह हिन्दसे इस रिसाले में भी होंगे और उन्ही की मुताबिकत से कोई मफहूम पैदा होता होगा।"

फ़ारुकी ने कहा, "अच्छा फ़र्ज़ करो कि यही बात है तो उस जाली नुस्खे में क्या तुम हिन्दसे वही रखोगे जो असल नुस्खे में है ?"

शिहाब ने अल्फ़ाज की पूरी कूवत के साथ कहा, "बिल्कुल वही हिन्दसे ताकि उनको यकीन आ जाये कि यह मुअम्मा हल हो जायेगा। मै तो सिर्फ यह करूँगा कि जहाँ बारह का हिन्दसा है, उसको तो बदस्तूर बारह ही रहने दूँगा मगर दरी के बजाय दो सीग बना दूँगा ताकि व उसको बारहसिगा समझें।"

फ़ारुकी ने कहा, "अच्छा समझ लिया उन्होंने बारह सिगा फिर ?"

शिहाब ने कहा, "फिर क्या, फ़िर उनको उलझने दीजिये कि बारहसिगे से क्या मुराद है।"

अर्जमंद ने गौर करते हुए कहा, "यह ठीक कह रहा है शिहाब। एक तो हम उनका रुख गुजरानवाले की तरफ़ कर देंगे, दूसरे इस किस्म के गलत

निशानात से उनको ऐसा भटकायेंगे कि वह अपने दिमाग़ का अर्क़ निकालते रहें और पल्ले कुछ न पड़े। यह तो साँप के मुँह की वह छछूँदर होगी जो उगली जाये न निगली जाये।"

फ़ारुकी ने कहा, "मगर आख़िर कब तक ? एक-न-एक दिन तो वह इस सइए-लासिल (व्यर्थ प्रयास) से उक्ता ही जायेंगे।"

शिहाब ने कहा, "और उक्ताने के बाद उनको उस नक़्शे की इतनी परवाह न रहेगी जितनी अब है।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "आपका मतलब यह है कि फिर हम वह नक़्शा आसानी से हासिल कर लेंगे। आप ख्वाहमख्वाह इतना इन्तेज़ार करेंगे। मैं तो इससे बहुत पहले ही उस नक़्शे की नकल आपको ला दूंगा।"

फारुकी ने कहा, "इसका मैं कायल नही हूँ कि वहीदा आपको उस नक़्शे की नकल हासिल कर लेने का मौक़ा दे देगा। वह बडा घाघ है, उसको अपने ही आदमियों पर एतमाद नहीं है।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "देखिये फारुकी साहब, जब मैं सरेवर्क़ से गुजरान वाला बूझूँगा और इसी तरह कई और इशारे उसको समझाऊँगा तो वह उस गुत्थी को सुलझाने के लिए मुझको बेहद कारामद समझेगा और मुझे यकीन है कि वह मुझे इस कोठी से हटाकर इस मुहिम (अभियान) पर लगा देगा और फिर वह नक्शा और यह नुस्खा ये दोनो चीजें मुझसे राज़ में न रह सकेंगी।"

अर्जमंद ने ताली बजाकर कहा, "ठीक है, ठीक है। बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम। वह यकीनन तुमको इस मुहिम पर लगायेगा और तुम इस पोजीशन मे होगे कि इस नुस्खे की रोशनी में इस नक़्शे को समझाते रहो और नक़्शे की नकल उन हालात मे यकीनन तुम हासिल कर लोगे।"

शिहाब ने कहा, "अब सुनिये : उस नकल के आ जाने के बाद हम हिरन मीनार मे अपनी मुहिम शुरू कर देंगे जिसका इल्म वहीदा को इसलिए न हो सकेगा कि वह तो खुद ही गुजरानवाले में पड़ा यह झक मारने में मसरूफ़ होगा।"

फ़ारुक़ी ने कहा, "बस तो फिर तुम्हारे जिम्मे है शिहाब कि इस नुस्खे का

जाली मसविदा कल सुबह तक तैयार कर दो ताकि मैं उसे लिखवा लूं।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हां, जितनी जल्दी यह नुस्खा तैयार हो जाये उतना ही अच्छा है ताकि उसकी निगाहें जो इधर लगी हुई है जल्द-से-जल्द भटक जायें।"

उसी वक़्त डाक्टर-साहब अपनी मूंछों को वर्जिश कराते हुए शिहाब के कमरे में दाखिल होते हुए बोले :

"साहब, लाहौल वला क़ूवत ! भला यह भी कोई तुक है कि न खाने का होश न पीने का, बैठे मुसलसल दिमाग को पच्ची कर रहे है आप सब ! अब खत्म कीजिये अपनी यह कान्फ्रेंस और जरा बाहर निकल कर देखिये कि कितना दिलफरेब मौसम हो गया है ! इस मौसम की मुनासिबत से नीलोफर ने बाहर लॉन पर चाय का एहतमाम किया है और कुछ बेसन-पालक के पकौडे और बैंगनी वगैरा का भी एहतमाम है।

अर्जमंद ने कहा, "फिर तो ऐश हो गये। चलिये साहब, बाहर वाक़ई दिमाग पच्ची होकर रह गया है।"

और ये सब बाहर आ गये।

२२

****

रुबी को न जाने क्या सूझी कि अपने होटल में सब को रात के खाने पर मदऊ (निमंत्रित) कर लिया। डाक्टर साहब ने लाख समझाया कि आखिर यह कौन-सा फ़रीज़ा है कि खुद तो होटल की ज़िंदगी बसर कर रही हो : न घर है, न दर और उस पर तुर्रा यह कि तकल्लुफ़ात भी शुरू कर दिये। ऐसा

ही दावत करने का शौक़ है तो दावत बेशक करो, मगर इस कोठी ही में कर लो। मगर वह तो जैसे मचल ही गई और अंदाज़ से यह मालूम होता था कि अगर डाक्टर साहब ने उसकी दावत रद कर दी तो वह रो पड़ेगी। वह बार-बार यही कहती थी कि अर्जमंद साहब आये हुए हैं, मैं उनकी दावत करना चाहती हूँ। मैं किसी और को नही, खुद अपने को खुश करना चाहती हूँ। आखिर आप लोगों को मेरी इतनी-सी खुशी क्यों खल रही है ? नीलोफ़र ने उसको समझाते हुए कहा :

"अजीब बेवकूफ़ हो तुम ! दावत से किस काफ़िर को इन्कार है, मगर तुम ही बताओ कि होटल में वह बेतकल्लुफ़ी मुमकिन होगी जो दरअसल इस क़िस्म की दावत की रूह होती है ?"

रुबी ने कहा, "क्यों न मुमकिन होगी बेतकल्लुफ़ी ? मैं होटल की बालाई शहनशीन बुक करालूंगी। वह होटल के आम हंगामे से बिल्कुल अलैहदा है।"

नीलोफ़र ने कहा, "मैं तुम को एक बड़ी उम्दा तरकीब बताती हूँ। बजाये आज शाम के कल दोपहर को खाना रखो। जो मीनू तुम्हारे ज़हन में है वही सब कुछ पकवाओ मगर वह खाना यहाँ या होटल में खाने के बजाय हम सब कही दूर निकल जायें।"

फ़रीद ने बात काटकर कहा, "जहाँगीर के मकबिरे ?"

नीलोफ़र ने बुरा मान कर कहा, "फिर आपने मुजाविरों वाली बात कही? हज़ार मर्तबा आपको समझाया है कि पिकनिक के लिए जहाँगीर के मक़बिरे और शालामार बाग का मेरे सामने नाम न लिया कीजिये मगर आप तो मक़बिरे को अपना वतन समझते है और हुब्बे-वतन (देश-प्रेम) से मजबूर है।"

मिर्ज़ा साहब ने दाद दी, "ऐ सुभान अल्लाह, किस खूब सूरती से कोसा है? मक़बिरे को वतन समझते है, क्या कहने है !"

नीलोफ़र ने शोखी से कहा, "आदाब बजा लाती हूँ, मगर मेरा मक़्सद यह न था। हाँ तो रुबी, हम लोग यह खाना लेकर कहीं दूर निकल चलें, मसलन बिलूकी हैडवर्क्स का डाक बंगला निहायत खूबसूरत जगह है।"

अर्जमद ने कहा, "बस यह ठीक है रुबी बहन, तै करलो यही लुत्फ़ आ जायेगा। बोटिंग करेंगे, किश्ती में कौकब का गाना सुनेंगे।"

अब कोई मुझसे पूछे किसकी तलाश में हूं
तुझसे भी रफ़्ता-रफ़्ता बेगाना बन गया मैं।"

फिर दाद का तूफ़ान उठा, मगर उस तूफ़ान के थमने के बाद नीलोफ़र ने कहा, "हाय कितना अच्छा मिसरा था मगर कितना बद आमाल कि इन पर नाजिल हो गया।

तुझ से भी रफ़्ता-रफ़्ता बेगाना बन गया मैं।"

शिहाब ने कहा, "वाक़ई बड़ा अच्छा मिसरा है, काश मिसरा लग जाता।"

नीलोफर ने कहा, "न लगता कोई बहुत ऊँचा मिसरा कम-से-कम यही हो जाता यह शेर कि :

अपनी ख़बर तो शायद मुझको कभी नहीं थी
तुझसे भी रफ़्ता-रफ़्ता बेगाना बन गया मैं।"

शिहाब का चेहरा खुशी से चमक उठा और अर्जमंद ने वाकई चौक कर कहा, "क्या कहना है नीलोफ़र ! क्या बर्जस्ता मिसरा लगा है।"

फारुकी ने भी हैरत से कहा, "भई यह तो आज ही मालूम हुआ कि तुम शेर भी कह सकती हो।"

शिहाब ने कहा, "कितना मुकम्मल शेर हो गया :

अपनी ख़बर तो शायद मुझको कभी नहीं थी
तुझसे भी रफ़्ता-रफ़्ता बेगाना बन गया मैं।"

और अब डाक्टर साहब भी मुतवज्जे हुए, "जरा फिर पढना, अपनी खबर तो शायद·····क्या है ?"

शिहाब ने पूरा शेर सुना दिया तो डाक्टर साहब ने बेगम साहबा से कहा : "मुबारक हो ! साहबज़ादी शाइरा भी हो गई।"

नीलोफर ने कहा, "ख़ैर मैं शाइरा-वाइरा तो नही हूँ, अलबत्ता अच्छे-खासे मिसरे की तबाही न देखी गई। बहरहाल आप ग़ज़ल सुनाइये, बड़े अब्बा माफ़ कीजियेगा यह दखल दरमाकूलात।"

मिर्ज़ा साहब ने जैसे वाकई माफ कर दिया, "कोई बात नही। हाँ साहब साफ-सा शेर है :

दिल तोड़ जाने वाले मुझको भी देखता जा
टूटा हुआ-सा आख़िर पैमाना बन गया मैं।"

शिहाब ने कहा, "क्या कहना है ! यह है ख़ालिस आपका शेर क्यों अर्जमंद ?"

अर्जमंद ने कहा, "मैं अभी पिछले ही शेर के नशे में हूँ।"

मिर्ज़ा साहब ने सलाम करके कहा, "अर्ज़ करता हूँ, दादतलब हूँ :

ये ख़ूब मुझको सूझी क्या अक़्ल काम आई
उनकी गली में जा कर दीवाना बन गया मैं।"

जब सब दाद दे चुके तो फ़ारुकी ने कहा, "है वाकई आप बड़े बने हुए।"

नीलफर ने कहा, "किस कदर मायूस किया है इस क़ाफ़िये ने, हालांकि चमकने वाला काफ़िया यही था इस रदीफ़ के साथ।"

डाक्टर साहब ने हैरत से कहा, "बेटी, ख़ुदा के लिए मुझे यह बताओ कि यह रदीफ़ और काफ़िया वग़ैरा तुमने सीखा कहाँ से ? क़सम ले लो जो मुझको अब तक पता चला हो कि शेर में रदीफ़ कहाँ पर होती है और क़ाफ़िया कहाँ पर होता है। वाक़ई शिहाब मियाँ यह बताइए कि तख़ल्लुस और क़ाफ़िये में क्या फर्क है ?"

इस सवाल पर वह कहकहा पड़ा है कि ब्यूटी और डार्लिंग तक भौंकते हुए कमरे में आ गए और मिर्जा साहब के लिए नामुमकिन हो गया गज़ल सुनाना। इसलिए कि उन दोनों कुत्तों को देखकर उनको मौत नज़र आने लगती थी। और न जाने क्या कद थी उन कुत्तों को भी कि मिर्जा साहब को न बख़्शते थे। चुनांचे उस वक़्त भी डार्लिंग इस बुरी तरह झपटा है मिर्जा साहब पर कि अगर शिहाब पकड़ न ले तो मिर्जा साहब गए थे हाथ से। कुत्ते तो खैर पकड़ कर बँधवा दिए गए मगर मिर्जा साहब फिर न सँभल सके और जब बमुश्किल तमाम दिल ठहरा तो बडी बेकसी के साथ कहने लगे :

"हजरत, मैं तो जानता हूँ कि मौत आयेगी तो एक ही दिन, मगर जब आयेगी इन्हीं कुत्तों के हाथ आयेगी। क्या बदअखलाक़ कुत्ते हैं।

और इस बदअखलाक़ कुत्तों की, तरकीब को हासिले-सोहबत क़रार दिया गया और देर तक सब इसी पर हँसते रहे।"

२३

****

स्टेशन वैगन खाने का सामान, बर्फ़, बर्तन और मुलाजिमों को लेकर जब रवाना हो गई तो एक घण्टे के बाद चार कारों का काफ़िला डाक्टर साहब की कोठी से निकला और चंद ही मिनट मे मुल्तान रोड पर ये कारें फ़र्राटे भरती हुई नज़र आई। अगली कार में फ़ारुकी, अर्जमंद, शिहाब और महम्मद हुसैन थे। उसके पीछे वाली कार में डाक्टर साहब, बेगम साहबा और फ़रीद थे। बेगम साहबा की वजह से किसी और की गुंजाइश न थी। तीसरी कार में नीलोफ़र, रुबी, कौकब और बिरजीस थीं और आखिरी कार में मिर्ज़ा साहब, फ़ारुक़ी का एक अर्दली, और डाक्टर साहब का शोफ़र था। मौसम की खुश-गवारी का लुत्फ़ सब ही ले रहे थे। अगली कार में वहीदा का किस्सा छिड़ा हुआ था और उससे टक्कर लेने के लिए नक़्श-ए-जंग बन रहा था। डाक्टर साहब वाली कार मे बेचारा फ़रीद डाक्टर साहब का तख्त-ए-मश्क बना हुआ था। लड़कियों वाली कार में कौकब से जबरदस्ती गाना सुना जा रहा था और आखिरी कार में मिर्ज़ा साहब अपनी जिन्दगी के कारनामे बडी संजीदगी से फ़ारुकी के अर्दली और शोफ़र को सुना रहे थे। फ़ासला ही कितना था, बहुत जल्द तै हो गया और जब यह क़ाफ़ला बिलूकी रेस्ट हाउस मे पहुँचा है तो पहले से आ जाने वाले मुलाजिमों ने निहायत बाकायदा इन्तेजाम कर रखा था। मगर नीलोफ़र ने आते ही इस बाकायदगी के खिलाफ एहतजाज शुरू कर दिया कि पिकनिक का मक़सद बाक़ायदगी नही, बेक़ायदगी होता है। यहाँ छुरी-काँटे का क्या तुक है? जब तक रोटी पर बोटी रखकर न खाई जाये, पिकनिक का लुत्फ़ ही नहीं आता। बहरहाल यहाँ पहुँचते ही सब तितर-बितर हो गये।

मिर्ज़ा साहब अपनी डगन लेकर मछली के शिकार को चले गये। बेगम साहबा को एक आराम कुर्सी पर लिटाकर डाक्टर साहब ने अख़बार सुनाना शुरू कर दिया। अर्जमंद, फारुकी और शिहाब बन्द देखने चले गये और लड़कियों ने अपनी टोली सब अलग रखी। उनकी महफिल सब्जाजार के एक गोशे में गर्म थी जहाँ रुबी को यह एतराज़ था कि काफले की तरतीब गलत थी। औरतें अलग, मर्द अलग, यह क्या बेहूदगी हुई है ? उसने खासतौर पर कहा :

"शिहाब साहब को खाक लुत्फ़ आया होगा : नीलोफर एक अलग कार में हैं और वह अलग कार में।"

बिरजीस ने कहा, "खुद नीलोफ़र की तबियत भी उचाट थी।"

नीलोफर ने कहा, "अच्छा ख़ैर मुझको तो शिहाब साहब की कार में होना चाहिए था, मगर बिरजीस तुम किस कार में होना चाहती थी ?"

बिरजीस ने बडी संजीदगी से कहा, "काश इस सफर में मिर्जा साहब की रिफ़ाक़त हासिल होती।"

सुरैया ने कहा, "ख़ैर यह तो आप बन रही है। अर्जमंद साहब अलबत्ता···।"

रुबी ने भी आवाज़ मिलाकर कहा, "हाँ अलबत्ता···।"

बिरजीस ने कहा, "सुरैया, अपने दिल की वारदात दूसरे के सर न मँढो।"

सुरैया ने कहा, "हजार मर्तबा कह चुकी हूँ कि अल्लाह रखे मेरे मगेतर को, हजार-दो हजार मे एक है वह खुद।"

नीलोफ़र ने कहा, "इस भूल पर खुदा की मार। मैने फ़हरिस्त में अनीस भैया का नाम रखा था, मगर ऐन वक़्त पर भूल गई।"

सुरैया ने कहा, "अच्छा ही हुआ वर्ना मैं तो शर्म के मारे सिकुड़ ही रहती।"

कौकब ने जलकर कहा, "हाँ और क्या ऐसी ही तो बेचारी शर्मीली है ! ज़माने भर की हवाई दीदा !"

सुरैया ने बड़ी संजीदगी से कहा, "यह हवाई दीदा इस रिआयत से तो नहीं कहा है कि मेरा मँगेतर पायलट है ?"

रुबी ने दाद दी, "अपने मतलब की बात खूब निकाल लेती है, मगर सवाल है कि यह बी कौकब क्यों जल रही हैं सुरैया से ?"

सुरैया ने कहा, "एक यही क्या तुम सब जलती हो मेरे मँगेतर को देखकर।"

बिरजीस ने मुँह चिड़ाकर कहा, "जी हाँ और क्या, ऐसा ही तो गुलफ़ाम है इनका मँगेतर ! हबड़दत्ता कही का !"

यह बात रुबी की समझ में न आ सकी। वह लाख ज़ुबानदान सही मगर यह अहले-ज़ुबान वाली बात थी। लिहाज़ा उसने पूछा :

"क्या ? क्या ? हबड़दत्ता क्या होता है ?"

नीलोफ़र ने समझाया, "बड़े-बड़े ख़ौफ़नाक दाँतों वाला। मगर भई हमारे अनीस भैया के दाँत बड़े जरूर है, मगर हबड़दत्ता कहना फिर भी ज़्यादती है।'

सुरैया ने कहा, "जनाब के अर्जमंद साहब से फिर भी बेहतर है। मालूम होता है जैसे कोई ऊँट इन्सानियत के जामे में आ गया है।"

बिरजीस ने झलकर कहा, "वह ऊँट हों या लकड़बग्घे मेरी बला से। ख्वाहमख्वाह उनको भी मेरे सर पर मँढा जा रहा है।"

नीलोफ़र ने बीच बचाव किया, "भई ईमान की बात अगर पूछो तो अभी दोनो तरफ़ आग बराबर नही लगी है। फ़िलहाल तो सिर्फ़ अर्जमंद साहब ही कनअँखियो से इनको देखा करते है।

सुरैया ने चमककर कहा, "जी हाँ, अंदाज़ कुछ ऐसा होता है कि :

यूं नज़र तो मुझप डाली जाएगी
जब मैं देखूंगा हटाली जाएगी।"

नीलोफ़र ने तुर्की-ब-तुर्की कहा, "और कभी-कभी यह आलम भी होता है :

उस वक़्त निगाहों से निगाहें न मिलेंगी
जब देखने वाले को कोई देख रहा हो।"

बिरजीस ने चेहरे पर वहशत बरसाते हुए कहा, "सचमुच अगर कोई ये बातें सुने तो यही कहे कि वाकई कोई बात है जरूर।"

रुबी ने आँखों में आँखें डालकर कहा, "अच्छा तो गोया कोई बात है ही नहीं। हम गोया महज़ मज़ाक कर रहे है। बेहतर है आपको खुद ही मालूम

हो जायेगा बेगम साहबा कुछ दिनों में जब पुलिस की वर्दी का गरीबान चाक किये अपने आई० जी० को भी बिरजीस समझ कर लिपट जाया करेंगे।"

बिरजीस ने जलबलाकर कहा, "जरा इस विलायती छछूँदर को देखो, इसका दिमाग़ और भी ख़राब हुआ है।"

कौकब ने जो बड़ी देर से ख़ामोश थी, उलझ कर कहा, "भई ख़ुदा के लिए यह झगड़ा ख़त्म करो। तै सिर्फ़ यही हुआ था कि आज नीलोफ़र से शिहाब साहब के मुताल्लिक कसम देकर पूछा जायेगा।"

नीलोफ़र ने हमले का रुख अपनी तरफ़ देखकर सँभलते हुए कहा, "क्या पूछा जायेगा मुझसे ? बजाय इसके कि कोई और कसम दे, मैं ख़ुद कसम खाकर बताये देती हूँ कि मजाक तो बर तरफ़ वाक़या सिर्फ़ इतना है कि मैं उनकी इज़्ज़त करती हूँ। उनको एक शरीफ आदमी समझती हूँ। वह मेरे मोहसिन है। मगर जो कुछ तुम सब समझ रही हो उसके मुताल्लिक मैंने कभी ग़ौर भी नहीं किया है। अलबत्ता इसमें इतना शक जरूर है कि अब मैं ख़ुद उनके सामने पहुँचकर कुछ चोर-सी हो जाती हूँ।"

रुबी ने नीलोफ़र को गले लगाते हुए कहा, "भई मज़ाक छोड़ो। आज उस गरीब ने बड़ी सच्चाई और सफ़ाई से असल बात बता दी है। मै ख़ुद भी यही समझ रही थी कि बस यह किस्सा इसी हद तक पहुँचा है अलबत्ता यह जरूर है कि अगर शिहाब साहब की तरफ़ से पहल हो जाये तो नीलोफर उनको मायूस नही करेंगी। क्यों बहन है न यही बात ?"

नीलोफर ने हँसते हुए कहा, "बड़ी बनी हुई हो तुम भी फिरंगन।"

बिरजीस बोली, "गोया फ़िलहाल किस्सा सिर्फ़ यह है कि :

मुहब्बत है मगर इस कशमकश में
तक़ाज़ा हो इधर से या उधर से।"

मगर यह दिलचस्प बहस जारा न रह सकी। शिहाब, अर्जमंद और फारुकी तीनों ने जाने के रास्ते से वापस आकर एकदम सामने आ गये और फ़ारुकी ने आते ही कहा :

"फिर वही डेढ़ ईट की अलग मस्जिद ? चलिये, सब एक ही जगह बैठेंगे।"

शिहाब ने कहा, "बैठना क्या मानी अब तो आँतें एक दूसरे को खाने का इरादा कर रही हैं।"

नीलोफर ने कहा, "मगर बडे अब्बा तो अभी मछली के शिकार से वापस ही नहीं आये।"

शिहाब ने कहा,"आये कैसे नही? वह तो मछलियों के झोले भर लाये है। बैठे मछलियाँ तल रहे है। वह तो मछली के बडे माहिर शिकारी निकले।"

नीलोफ़र ने कहा, "या मछलियाँ बेवकूफ निकली कि उनके हाथों पड़ गईं ?" ये सब के सब उठकर वहाँ आ गये जहाँ फ़रीद साहब दस्तरख्वान बिछवाकर बर्तन लगवा रहे थे। आज उनको हक भी था इसलिए कि वाकई ढेरों मछलियाँ पकड लाये थे। चुनाँचे उन लड़कियो को देखकर निहायत फ़ख्र से बोले :

"लो भई खाओ जितनी जी चाहे मछलियाँ।"

डाक्टर साहब ने नीलोफर से कहा, "डार्लिङ्ग देखा अपने बड़े अब्बा को ? मछलियाँ पकड़ने जो गये तो ढेर लगा दिये मछलियों के।"

बेगम साहबा ने कहा, "मैं तो हैरान हूँ कि एक डगन से इतनी मछलियाँ पकड़ी कैसे गई ? जाल फेंकते तो एक बात भी थी।"

मिर्जा साहब ने बड़े फख्र से कहा, "यह बात नही है दुल्हन ! मैं दरअसल अफ़्यूनियों की तरह डगन डालकर बैठे रहने का कायल नही हूँ बल्कि बड़ी चाबुकदस्ती की जरूरत है। एक मर्तबा कराची मे तो कमाल यह हुआ कि इसी डगन से अपने कद की एक मछली मैने फाँसी।"

रुबी ने कहा, "वह दरअसल आप ही को चारा समझकर आगई होगी।"

डाक्टर साहब ने कहकहा लगाकर कहा, "भई यह बडी शरीर हो गई है रुबी। क्या बात कही है !"

उसी वक़्त बनियान पहने, तहबँद बाँधे एक शख्स करीब आया और मिर्ज़ा साहब को पहचान कर उनके पास आते हुए कहा:

"ये रुपये का नोट बदल दीजिये फटा हुआ है।"

और मिर्ज़ा साहब उसको देखकर सख्त बदहवास हुए और जल्दी से रुपया निकाल कर उसको दे ही रहे थे कि अर्जमन्द ने उस शख्स से पूछा, "कैसा

रुपया है ? यह किस बात का रुपया दिया था मिर्ज़ा साहब ने ?"

उस शख़्स ने सादगी से कहा, "मछलियाँ ख़रीदीं थीं मुझसे चार रुपये की, यह नोट फटा हुआ था।"

यह सुनकर यहाँ पड़ा क़हक़हा और मिर्ज़ा साहब ऐसा चुप हुए कि फिर वापसी तक सिवाय बार-बार पसीना ख़ुश्क करने के उनसे कुछ न हो सका।

२४

****

जिस दिन महम्मद हुसैन ने वहीदा को 'दौलते-बेदार' का क़लमी नुस्खा पहुँचाया है उस दिन महम्मद हुसैन की कैफ़ियत उस कैम्प में हीरो की-सी थी। वहीदा ने खुश होकर महम्मद हुसैन को गले से लगा लिया। यह पहला मौक़ा था कि वहीदा ने अपने गिरोह के किसी आदमी से इस यगानगत का इज़हार किया हो और सिर्फ़ यगानगत का इजहार ही नहीं बल्कि उसी वक़्त उसको पाँच हजार के नोटों की गड्डियाँ भी देकर वहीदा ने कहा :

"यह तुम्हारा इनाम है, बल्कि असल इनाम का एक हिस्सा है। जिस वक़्त हम अपने मक़्सद मे कामयाब हो जायेंगे, उस वक़्त तुमको अन्दाज़ा होगा कि तुमने यह कितना क़ीमती काम किया है। और क़ीमती काम का सिला देने मे तुम्हारा सरदार कभी बुख़्ल (कृपणता) से काम नहीं लेता।"

मुहम्मद हुसैन ने कहा, "मैने यह काम किसी इनाम के लालच में नही किया है बल्कि सिर्फ़ अपने सरदार के एक हुक्म की तामील की है।"

वहीदा ने कहा, "यह मुझे मालूम है। किसी लालच में जो काम किये जाते है, उनका अन्दाज़ ही दूसरा होता है। मुझको तुम्हारी इस रिफ़ाक़त पर

नाज़ है और आज से मैं तुम्हारा रुतबा बढ़ा कर तुमको उन मक़रिबीने-ख़ास में शामिल करता हूँ जो मेरे नदीम (मित्र) कहलाते हैं। ये अब तक पाँच थे जैसा कि तुमको मालूम है और तुमको मिलाकर मेरे छः नदीमे-खास हो जायेंगे।"

महम्मद हुसैन ने वहीदा के कदमों की तरफ़ झुकना चाहा तो उसने उसका शाना पकड़ कर उसको फिर गले से लगाते हुए कहा, "महम्मद हुसैन तुम्हारी जगह वह नही यह है। अच्छा जरा देखना तो चाहिये कि यह दस्तावेज़ है क्या।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "अपने तो कुछ पल्ले पड़ा नही सरदार, आपही का दिमाग इस गुत्थी को सुलझा सकता है। कुछ हिन्दसे है, कुछ नक़्श है, कुछ फ़िकरे है और कुछ अशआर।"

वहीदा ने कहा, "अच्छा तुम बाहर ठहरो। मै अभी अपने नदीमों का इजलास करूँगा, उसमें शिरकत करना। जब तक मैं ज़रा एक नज़र इस पर डाल लूँ।"

महम्मद हुसैन वहीदा की पेशी से जब बाहर आया तो यहाँ पाँचों नदीम उसके मुन्तज़िर थे। उनको यह तो मालूम था कि आज सरदार महम्मद हुसैन को नवाज़ेंगे। ज़रूर इनामो-इकराम से, हौसला-अफ़ज़ा अल्फ़ाज़ से उसकी इस अज़ीम खिदमत को सराहा जायेगा। मगर किसी को न मालूम था कि उसको एकदम से इतनी तरक़्क़ी भी मिल जायेगी कि वह नदीमे-ख़ास बना दिया जायेगा। चुनाँचे महम्मद हुसैन के बाहर आते ही उन पाँचों ने उसको घेर लिया। महम्मद-हुसैन ने इनाम की तफ़सील बताई; सरदार के इज़हारे-मसर्रत का जिक्र किया, मगर यह दानिस्ता न बताया कि उसको नदीमे-खास भी मुकर्रर कर दिया गया है। इसलिए कि उसको मालूम था कि अभी नदीमों का इजलास होगा उसमें सरदार यह बात सब को बता देगा। अलबत्ता उसने यह ज़रूर कह दिया कि सरदार अभी नदीमों का इजलास करने वाले हैं और मुझको हुक्म दिया है कि उस इजलास में शिरकत करूँ।"

उन नदीमों ने एक-दूसरे का मुँह देखकर ताज्जुब का इज़हार किया और उनमें से एक नदीम ने कहा, "यह अजीब बात है और गालिबन यह आज तक कभी नही हुआ है कि नदीमों के इजलासे-ख़ास में कोई छटा आदमी भी

शिरकत करे।"

दूसरे ने कहा, "मुमकिन है सरदार हमसे मशविरा करके इनको कोई खास हुक्म देने वाले हों। बहरहाल इनको इस इनाम की मुबारकबाद तो दो।"

तीसरे नदीम ने कहा, "सच्ची बात यह है कि यह कारनामा है भी गराँकद्र इनाम का मुस्तहक। यह कोई मामूली चीज़ हमारे हाथ नही आई है।"

चोथे नदीम ने कहा, "यह तो उस खज़ाने की कुंजी है जिसकी हमको तलाश है।"

पाँचवें नदीम ने चौथे नदीम को घूरकर कहा, "ताज्जुब है तुम्हारा ऐसा समझदार आदमी इस किस्म की गैर मोहतात बात कर गुज़रे। महम्मद हुसैन के अलावा अगर कोई और होता तो खजाने का नाम आप उसके सामने भी ले जाते।"

चौथे नदीम ने कहा, "जी नही, मैंने यह समझ कर ही बात कही है। महम्मद हुसैन इस राज़ से बहरहाल आगाह है और इनको सरदार का एतमाद हासिल हो।"

देर तक इसी किस्म की बातें उन सब में होती रहीं और उन नदीमों ने महम्मद हुसैन की निहायत आला दर्जे की काफी से तवाजो भी की। डाक्टर साहब की कोठी के हालात ये सब सुनते रहे और जब फ़ारुकी का नाम आया तो उनमें से एक नदीम ने तमस्खुर से हँसकर कहा :

"अहमक़ है यह शख्स ! इसको अभी तक यही नहीं मालूम कि सरदार का असर और रुसूख क्या है। वह कल ही इन फ़ारुकी साहब के आई० जी० के यहाँ चाय पर गये हुए थे।"

दूसरे ने लुक़्मा दिया, "यह कौन सी नई बात है। हुकूमत का कौनसा ऐसा आला अफ़सर है जिससे हमारे सरदार के दोस्ताना ताल्लुकात नहीं हैं। वह बहरहाल एक बारसूख, मुअज्ज़िज शहरी समझे जाते हैं। कई सरकारी कमेटियों के वह मेम्बर हैं। अभी अंजुमने-रिफा-ए-आम (सार्वजनिक कल्याण संस्था) की सदारत के लिए खुद कमिश्नर साहब ने उनका नाम पेश किया था और एक वज़ीर ने उनके हक में अपना नाम वापस लेकर इस तजवीज़ की ताईद की थी।"

एक और नदीम ने कहा, "हाँ साहब, बड़ी पहुँच है उनकी और बड़ी इज़्ज़त है ऐसे-ऐसे डी० एस० पी० उनका बाल भी बीका नहीं कर सकते।"

उसी वक़्त एक शख़्स ने कमरे में दाखिल होकर कहा, "सरदार आप सबको याद फ़रमाते है।"

और ये सब उठकर वहीदा के कमरे में पहुँच गये तो वहीदा ने उनको इशारा करते हुए कहा :

"महम्मद हुसैन से आप सबको यह तो मालूम हो चुका होगा कि अब यह भी आप में से एक है।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी नहीं, यह बात अभी मैंने किसी को नहीं बताई। यह ऐलान आप ही के मुँह से अच्छा मालूम होता है।"

चुनांचे वहीदा ने उन सबको बताया कि महम्मद हुसैन को तरक़्क़ी देकर छटा नदीमे-ख़ास बना दिया गया है ताकि इनकी सूझ-बूझ इनके ख़ुलूस और दियानत और इनकी सरगर्मियों से हमको और भी फ़ायदा उठाने का मौक़ा मिले। यह सुनते ही उन पाँचों ने महम्मद हुसैन से हाथ मिलाकर उनको मुबारकबाद दी कि तुमको इस गिरोह का इतना बड़ा ऐज़ाज़ (सम्मान) सरदार की एक निगाहे-करम से हासिल होगया। वहीदा ने कहा :

"मगर नदीमे-खास के दर्जे पर पहुँच जाने के बावजूद यह फ़िलहाल डाक्टर लतीफ़ी ही की कोठी में तैनात रहेंगे। इसलिए कि वहाँ यह जिस तरह घुलमिल गये है और उस कोठी के चप्पे-चप्पे का जो इल्म इनको है वह किसी नये आदमी को नहीं हो सकता।"

सब ने सरदार की ताईद की और खुद महम्मद हुसैन ने भी कहा कि मैं भी यही चाहता था कि मुझको वहाँ से फिलहाल न हटाया जाये। मैं शिहाब के बहुत करीब पहुँच चुका हूँ और डाक्टर लतीफी के यहाँ यही नौजवान इस मुहिम को अपने हाथ मे लिए हुए है। वहीदा ने इस बहस को ख़त्म करते हुए कहा, "यह दस्तावेज़ तो हमारे पास आ गई है और जब से आई है मै बराबर इसी पर गौर कर रहा हूँ, मगर अब तक मेरे पल्ले कुछ नही पड़ा है। मैं चाहता हूँ कि इस पर हम सब मिलकर ग़ौर करें। यह तो ज़ाहिर है कि इस दस्तावेज़ का कोई हिन्दसा और कोई नक़्श, कोई फ़िक़रा और कोई शेर बेमफ़हूम

नहीं हो सकता, और हमारा काम यही मफ़हूम समझना है। मगर मैं तो इसके पहले ही सफ़े में उलझ कर रह गया हूँ। यह देखिये यह एक शख्स बैठ हुआ कुछ खा रहा है। लाख गौर करता हूँ कि यह इशारा क्या है मगर कुछ समझ में नही आता।"

और अब यह रिसाला सब नदीमों ने बारी-बारी गौर से देखना शुरू किया। दो नदीम जब अपने इज्ज (विफलता) का इज़हार कर चुके तो तीसरे ने बड़े गौर से देर तक उस तसवीर को देखकर कहा, "यह जो कुछ खा रहा है ये टिण्डे तो नहीं हैं।"

वहीदा ने हैरत से कहा, "टिण्डे ? अजीब लग्व सवाल है यह भी। अच्छा फ़र्ज कर लीजिए कि ये टिण्डे है तो ?"

उस नदीम ने बड़े वसूक (विश्वास) से कहा, "अगर ये टिण्डे है तो यह शख्स आदम है और इस नक़्श का मतलब है टिण्डो-आदम।"

वहीदा ने कहा, "जी नही यह गलत है। इसलिए कि यह तो बहरहाल तै है कि वह जगह लाहौर से बहुत दूर नही है। मगर आपकी इस रायज़नी से एक फ़ायदा यह जरूर पहुंचा कि इस शख्स से कोई शहर या मुकाम ज़रूर ज़ाहिर किया गया है।"

आखिर दस्त-बदस्त जब यह रिसाला महम्मद हुसैन के पास पहुँचा तो महम्मद हुसैन इसमे मेह्व होकर रह गया और सब अपने तीर-तुक्के चलाते रहे, अटकल-पच्चू नजाने क्या-क्या कहते रहे। मगर महम्मद हुसैन मेह्व ही रहा। आखिर वह एकदम खड़ा हो गया और उसने सरदार के करीब जाकर कहा :

"सरदार, इस शख्स का हुलिया देखिये। यह गूजर बनाया गया है और इसके हाथ मे खाने के लिए निवाला है लिहाज़ा यह जगह हुई गुजरान वाला।"

सरदार ने खुशी से उछलकर कहा, "बेशक गुजरानवाला ! यकीनन गुजारानवाला ! शाबाश! महम्मद हुसैन खूब समझे तुम। यह सिवाय गुजरान-वाले के और कुछ है ही नही। कमाल कर दिया तुमने ! मुझे तो अफसोस है कि मैने अब तक तुमको नदीमे-खास क्यों न बनाया था। मुझे क्या मालूम

था कि तुमने ऐसा ज़हने-रसा (प्रखर बुद्धि) पाया है।"

बाक़ी सब भी इस बात के क़ायल हो चुके थे कि यह गुजरानवाला ही है। और उनको महसूस हो रहा था कि गोया उनकी मंज़िल का ताय्युन हो चुका, सरदार ने दूसरा सफ़ा खोला जिस पर बारह का हिन्दसा था। और नीचे एक बैल का सर था जिस पर बड़े-बड़े सींग थे। सरदार ने कहा :

"अब अल्लाह जाने क्या है ? बारह का हिन्दसा नक़्शे में भी है मगर बैल से क्या मतलब है ?"

एक नदीम ने कहा, "एक दर्जन बैल। मगर यह क्या बात हुई ?"

वहीदा ने कहा, "गौर कीजिये, दिमाग लडाइये। सिर्फ़ बकवास से कोई फ़ायदा नहीं। महम्मद हुसैन, तुम्हारा दिमाग खूब चलता है।"

महम्मद हुसैन ने इस सफ़े को भी गौर से देखकर कहा, "सरदार, अब यह मुअम्मा यहाँ हल नही होगा। ज़रूरत है कि हम गुजरानवाला में हों और वहाँ बैठकर इन चीज़ों को समझने की कोशिश करे। मेरी राय में तो ये बैल नहीं है। मक़्सद है सिर्फ़ सींग दिखाने से जो बैल से ज़्यादा नुमायाँ है। और इस तरह यह नक़्शा बनता है बारह सिगा।"

वहीदा ने कहा, "हो सकता है बारह सिंगा। मगर बारह सिंगा क्या ? इसका अन्दाज़ा वाक़ई गुजरानवाला पहुँच कर हो सकता है अच्छा फ़िलहाल मुझको ज़रा आज रात दिमाग़-सोज़ी कर लेने दीजिये। कल तै करेंगे कि अब प्रोग्राम क्या हो। महम्मद हुसैन कल भी किसी तरह खिसक आना किसी वक़्त।"

इसके बाद यह मजलिस ख़त्म कर दी गई।

२५

****

शिहाब, फ़ारुकी और अर्जमन्द के साथ शेखूपुरा जाने के लिए तैयार ही था कि शिहाब के खास मुलाजिम ने उसको एक पर्चा लाकर दिया। शिहाब ने कोट की दूसरी आस्तीन पहनने से पहले यह पर्चा जो देखा तो मालूम हुआ कि यह नीलोफ़र का है। न जाने क्यों उसके हाथ में एक खफ़ीफ़-सी लरजिश पैदा हो गई और उसने बड़े इज़्तेराब के साथ उस पर्चे पर लिखे हुए चन्द अल्फाज पढ़ें :

"सफ़र पर रवाना होने से पहले ज़रा मुझसे मिल लीजिये।"

वह हैरान था कि इतनी-सी बात के लिए पर्चे की क्या ज़रूरत थी। नीलोफ़र बहरहाल इतनी आज़ाद और इतनी बेबाक तो थी ही कि वह खुद आ जाती और उससे कहती कि शिहाब साहब, जरा बात सुन लीजियेगा। वह कई मर्तबा उसके कमरे में आ चुकी थी, कई मर्तबा आवाज़ देकर उसको बुला चुकी थी। फिर आज यह नई बात क्या ? यह पर्चा क्यों ? बहरहाल उसने क़य्यूम से पूछा :

"कहाँ है नीलोफ़र ?"

क़य्यूम ने कहा, "वह अपने कमरे से निकलीं, मुझको यह पर्चा दिया और चमन की तरफ़ चली गईं।"

शिहाब कोट पहन कर अपने कमरे से निकला और सीधा चमन में पहुँचा जहाँ नीलोफ़र गुलदस्ता बनाने के लिए फूल तोड़ती हुई उसको मिल गई। उसने जाते ही कहा :

"खैर तो है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "आपके घबराने की कोई बात नहीं। घबराना मेरे

हिस्से में आ चुका है।"

शिहाब ने ताज्जुब से कहा, "बात क्या है आखिर ?"

नीलोफर ने एक खामोश निगाह उस पर डाली और गोया बहुत कुछ कहना चाहा मगर सिर्फ़ इतना कह सकी, "मुझको खतरे से निकालने के लिए आप खुद खतरे की तरफ़ न बढ़िये।"

शिहाब की समझ में अब भी कुछ न आया। उसने कहा, "साफ़-साफ़ कहो तुम्हारा मतलब क्या है ?"

नीलोफर ने कहा, "आपने दुश्मन को बिल्कुल गाफ़िल समझ रखा है और खुद अपनी हिफाज़त की तरफ़ से गाफ़िल होते चले जा रहे है।" मैने सुना है इस वक़्त आप शेखूपुरा जा रहे है।"

शिहाब ने कहा, "जा तो रहा हूँ, मगर इसमें खतरे की क्या बात है ?"

नीलोफ़र ने कहा,"अगर खतरे की कोई बात नही है तो मैं भी चलती हूँ।"

शिहाब ने आज पहली मर्तबा बड़ी यगानगत से कहा, "पागल हुई तो तुम? वहाँ जाकर क्या करोगी ?"

नीलोफ़र ने कहा, "आप पर कोई खतरा आया तो उसमें अपना हिस्सा बटा दूंगी।"

शिहाब ने ताज्जुब से कहा, "मगर यह आज बैठे-बिठाये तुम को सूझी क्या है ?"

नीलोफ़र गोया कहना नही चाहती थी, मगर उसको कहना ही पड़ा, "मैं आपके लिए बड़े डरावने ख़्वाब देख रही हूँ। मुझे आपकी तरफ से सख्त अंदेशे हैं।"

शिहाब इस क़िस्म की बातों का आदी तो न था मगर उसने भी अपनी सतह से गिरकर कहा, "इससे तो मुझको और भी तकवियत हासिल हो गई कि मेरे ख्वाब देखने वाला भी इस दुनिया में कोई मौजूद है।"

नीलोफ़र ने अपने तोड़े हुए फूलों की पत्तियाँ नोच-नोचकर बिखेरते हुए कहा, "अगर कोई मौजूद है तो उसको इस तरह परेशान तो न कीजिये।"

इस खुले हुए एतराफ़ के बाद अब कुछ कहने-सुनने की गुजाइश न होना चाहिये थी। मगर मालूम नही क्यों आलीजर्फ-से-आलीजर्फ इन्सान इस क़िस्म

के मौकों पर इतना घटिया बन जाता है कि वह और भी खुले हुए अल्फ़ाज़ में सब कुछ सुनना चाहता है। वह चाहता है कि जो कुछ समझ गया है वह उस को मुख्तलिफ़ और निहायत नुमायाँ (स्पष्ट) अल्फाज़ से बार-बार समझाया जाये। वह अपने जज्बात की तिस्कीन के लिए महसूसात (अनुभूति) को सस्ते अल्फाज की शक्ल में देखना चाहता है। यह कैफ़ियत उस वक़्त शिहाब की भी थी। उसने अपने और नीलोफ़र दोनों के मेयार (स्तर) से गिरा हुआ सवाल किया :

"आप मेरे लिए परेशान होती है, आखिर क्यों ?"

नीलोफर का जी चाहता था कि शिहाब ने यह सवाल न किया होता और अगर उसने सवाल कर ही दिया है तो वह जवाब न दे। मगर शिहाब ने फिर कहा, "ज़ाहिर है कि आप कोई वजह नही बता सकतीं।"

नीलोफर ने कहा, "वजह सिर्फ़ यह है कि मैं नही चाहती कि आपको किसी किस्म का नुक़्सान पहुँचे।"

शिहाब ने कहा, "फिर वही सवाल पैदा होता है कि आखिर क्यों ?"

नीलोफर ने कहा, "मैं आपको इतना ग़बी नहीं समझती कि आपको अपने इस सवाल का जवाब खुद मालूम न हो। आप आखिर मुझसे यह बात क्यों कहलवाना चाहते हैं जो कहने की नहीं होती।"

शिहाब ने कहा, "बात के दो ही मसरफ़ मुझको मालूम है। कि वह कही जाये और सुनी जाये।"

नीलोफ़र ने कहा, "एक तीसरा मसरफ भी है कि महसूस की जाये।"

अब शिहाब से खुद भी अपनी घटिया शरारत न निभ सकी। उसने वाक़ई महसूस करते हुए कहा, "नीली, ये बातें वाक़ई कहने और सुनने की नही थीं, मगर महसूसात ही की तकवियत के लिए कान न जाने क्या-क्या सुनना चाहते हैं। और वह तकवियत मुझको हासिल हो गई। अब तक मैं तुम्हारा और तुम्हारे खानदान का एक बेलौस (निःस्वार्थ) खादिम था, मगर अब मुझको तुम्हारे लिए अपनी हिफाजत करनी पड़ेगी। बहरहाल मैं तुमको यक़ीन दिलाता हूँ कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ कोई खतरा नहीं है। दूसरे मेरे साथ फारुकी और अर्जमन्द भी हैं, मैं थोड़ी ही देर में वापस आ जाऊँगा।"

नीलोफ़र ने कहा, "अगर आज के बजाय आप कल जायें तो क्या मुज़ायक़ा (हानि) है ? मुझे न जाने क्यों आज आपका जाना खतरनाक मालूम होता है।"

शिहाब ने हँसकर कहा, "तुम अपने ख्वाबों से डरी हुई हो। बहरहाल अगर तुम नहीं चाहतीं तो मैं न जाऊँगा, मगर मुझे फ़ारुकी और अर्जमन्द से कोई बहाना करना पड़ेगा।"

नीलोफ़र ने कहा, "उनसे मेरा नाम लेकर कह दीजिये कि मैं पहले ही से कुछ प्रोग्राम बनाये हुए हूँ और इजाज़त नहीं देती। फिर मैं उनको समझा लूंगी।"

शिहाब ने मुस्कराकर कहा, "बहुत अच्छा सरकार नही जाते।"

और इससे क़ब्ल कि शिहाब लौटे, नीलोफर ने अपने तोड़े हुए फूलों में से एक फूल उसके कोट में लगा दिया और अपनी इस हरकत पर खुद ही शर्माकर भागी वहाँ से। शिहाब ने वहाँ से चलते हुए महसूस किया कि उसके क़दम कुछ डगमगा-से रहे है और अब उसे अंदाज़ा हुआ कि ये बाते किस क़दर नशीली होती है। आखिर बमुश्किल तमाम अपने क़दम संभालता हुआ वह कमरे में दाखिल हुआ और अर्जमन्द और फ़ारुक़ी से कहा :

"लीजिये जनाब सफ़र मुल्तवी और हम सब इसी कोठी में नज़रबन्द।"

अर्जमन्द ने हैरत से कहा, "या वहशत ! एक तो आप गायब हो गये यकायक और अब नमूदार हुए है तो यह फ़ैसला सुनाते। आखिर क़िस्सा क्या है ?

शिहाब ने कहा, "अल्लाह जाने मुझे खुद सिवाय इसके कुछ मालूम नहीं कि नीलोफर ने मुझको बुलाया था और इसलिए बुलाया था कि हम लोगो का आज का शेखूपुरा जाना मुल्तवी करा दे। उसने बस यही कहा है कि आज का प्रोग्राम मै पहले से बना चुकी हूँ। आज आप लोग नही जा सकते।"

फारुकी ने कहा, "मगर वह प्रोग्राम क्या है ?"

शिहाब ने कहा, "मुझे क्या मालूम ?"

नीलोफ़र ने कमरे में दाखिल होते हुए कहा, "इनको नही मालूम है, मैं बताती हूँ। मुझे दरअसल यह पता था कि आज आप लोगों को कही जाना है, लिहाज़ा आज मैंने एक निहायत दिलचस्प प्रोग्राम बनाया है। मगर शर्त यह है

कि अर्जमन्द साहब मेरे साथ पूरा ताव्वुन करें।"

अर्जमन्द ने सँभल कर बैठते हुए कहा, "क्या कुछ मेरी शामत आने वाली है ? बहरहाल जहाँ तक ताव्वुन का तालुक़ है, वह तो यहीं से शुरू हो जाता है कि हम तीनों का इस वक़्त शेखूपुरा जाना निहायत ज़रूरी था मगर अब हम तामीले-इरशाद (आज्ञा-पालन) के तौर पर नहीं जा रहे है।"

नीलोफर ने कहा, "इसका तो बेहद शुक्रिया, मगर अब मुजव्विज़ा (प्रस्तावित) प्रोग्राम को भी कामयाव बनवाइये। क़िस्सा दरअसल यह है कि हमारे यहाँ अज़ीज़ी सल्लमा रहते है जिनका नाम है फ़रीद, आज उनको इश्क़ में मुब्तला करना है।"

फ़ारुकी ने कहा, "यानी जबरदस्ती या वाक़ई ?"

नीलोफ़र ने कहा "कमाल करते हैं आप भी। वाकई की उन बेचारे में गुंजाइश ही कहाँ है ? अलबत्ता अंदाज़ा यह हुआ है कि उनकी बड़ी खतरनाक नजरें बिरजीस पर पड़ती हैं।"

अर्जमन्द ने चौककर कहा, "किस पर, बिरजीस पर ?"

नीलोफ़र ने कहा, "जी हाँ। मगर आप इस बुरी तरह क्यों चौंके ? अगर आपको कोई एतराज हो तो जाने दीजिये इस मज़ाक को।"

और यह सुनकर शिहाब और फ़ारुकी ने ऐसा कहकहा लगाया कि अर्जमन्द वाक़ई कुछ घबरा-सा गया। और उसने तक़रीबन हकला कर कहा, "नहीं यानी, गोया, बहरहाल मेरा मतलब यह था कि बिरजीस भी ताव्वुन करने को तैयार है ?',

नीलोफर ने कहा, "वह सब आने वाली हैं, मैं फोन कर चुकी हूँ। गाड़ी भेज दी है। मगर अर्जमन्द साहब, मजाक-ही-मज़ाक में एक संजीदा चोर भी पकडा गया।"

और नीलोफर के अलावा शिहाब और फारुकी ने भी अर्जमन्द को आज तो सचमुच रुला-रुला दिया।

२६

****

शेखूपुरा पहुँच कर ये तीनो सीधे अकरम के बंगले पर पहुँचे। अकरम और फ़ारुक़ी के मरासिम तो इस क़दर थे कि दोनों एक ही महक्मे के अफ़सर थे। मगर अर्जमन्द ट्रेनिग में उसके साथ रह चुका था और उसके मुताल्लिक़ रास्ते ही में शिहाब और फ़ारुक़ी को बता चुका था कि हम तीनों को देखकर इन हज़रत का दम ही निकल जायेगा कि यकमुश्त ये तीन मेहमान कहाँ से फट पड़े और उसकी कोशिश यही होगी कि किसी तरह खाने से हम लोग इन्कार कर दें या खाने के वक़्त से पहले ही टल जायें। मगर हम लोगो का हमेशा यह दस्तूर रहा है कि उस कंजूस को जरूर चूसते है। लिहाजा मै जो बेतकल्लुफ़ी बरतूँ या उसको परेशान करूँ तो उसमें आप दोनों दखल न दें। चुनांचे यही हुआ कि अकरम इन तीनों को देखकर बजाहिर तो बहुत खुश हुआ मगर उसकी घबराहट उसके चेहरे पर बरस रही थी यहाँ तक कि अल्फाज में भी आ गई और उसने अजीब शशो-पंज के साथ कहा :

"अजीब जानवर हैं आप भी अर्जमन्द साहब कि न कोई इत्तला और न कोई नोटिस आ धमके एकदम से।"

अर्जमन्द ने कहा, "भई, वह बात यह हुई कि इत्तला देते तो इसलिए डर मालूम हुआ कि जाहिर था कि तुम भाग जाते कोई ख़्वाहमख़्वाह का दौरा दौरा निकाल कर। दूसरे यह भी सोचा कि अपने घर कौन जाता है इत्तला देकर ? कोई तकल्लुफ़ थोड़ा ही है।"

अकरम ने कहा, "नहीं खैर तकल्लुफ़ का तो सवाल ही नहीं है। मगर मुसीबत यह है कि तुम्हारी भाभी पड़ी हुई हैं बीमार ; ख़ानसामाँ अपने बिरादरे-

निस्बती की शादी में गया हुआ है छुट्टी लेकर। अच्छा यह बताओ साफ़-साफ़ कि यहाँ का प्रोग्राम क्या है और कयाम का कब तक इरादा है ?"

अर्जमन्द ने कहा, "भई, अब हम तुम्हारे ऐसे दुश्मन तो हैं नहीं कि यह कहकर तुम्हारा हार्ट-फेल कर दें कि ज़रा तमाम हँगामों में बचकर सुकून के साथ एक हफ़्ता बसर करने के इरादे से आये हैं।"

और वाकई अकरम पर बिजली गिर पड़ी। उसने मरी हुई आवाज से कहा, "वैसे तो खैर कोई बात न थी, मगर सख्त तकलीफ़ उठाओगे तुम यहाँ। इसलिए कि मै तो सुबह ही जा रहा हूँ दौरे पर।"

अर्जमन्द ने बडे इत्मिनान से कहा, "तो जाओ ना तुम। तुमको कौन रोक रहा है ? खैर ये बातें तो होती रहेंगी मगर अजीबुल खलकत (सृष्टि में विचित्र) है आप भी कि अब तक चाय तक को न कहा किसी से। सुबह बगैर नाश्ता किये चल पडे थे। जरा तफसीली चाय मगाओ फौरन।"

और अकरम अपने को बमुश्किल सँभालता हुआ जब चला गया तो शिहाब ने कहा, "क्यों बेचारे को परेशान कर रहे हो ? अगर तुम्हारी इस हरकत से उसकी हरकते-क़ल्ब (हृदय-गति) ने जबाव दिया तो यह खून तुम्हारी गर्दन पर होगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "मुझे लुत्फ़ आता है इसे परेशान करने से और वाकई मेरा जी चाहता है कि एक हफ़्ता ठहर जाऊँ।"

फ़ारुकी ने कहा, "मैं समझ रहा था कि तुम मजाक कर रहे हो, मगर यह हज़रत तो वाकई वही निकले जो तुमने कहा था।"

अर्जमन्द ने कहा, "अभी तुमने देखा ही क्या है ? यह कमबख्त तो खाने पर तुमसे कहेगा कि जितना खाना हो उतना निकालिये वर्ना ज़ाया (नष्ट) होगा।"

शिहाब ने कानों पर हाथ रखकर कहा, "भाई साहब, हम बाज आये इनके घर खाना खाने से।"

अर्जमन्द ने कहा, "कमाल करते हो तुम भी। हम तो इसको सजा देते हैं। बहरहाल तुम देखते जाओ।"

अकरम चाय के लिए कहकर वापस आया तो कहने लगा, "तुम्हें इत्तला

२६

****

शेखूपुरा पहुँच कर ये तीनों सीधे अकरम के बंगले पर पहुँचे। अकरम और फ़ारुक़ी के मरासिम तो इस क़दर थे कि दोनों एक ही महक्मे के अफ़सर थे। मगर अर्जमन्द ट्रेनिग में उसके साथ रह चुका था और उसके मुताल्लिक रास्ते ही में शिहाब और फ़ारुक़ी को बता चुका था कि हम तीनों को देखकर इन हज़रत का दम ही निकल जायेगा कि यकमुश्त ये तीन मेहमान कहाँ से फट पड़े और उसकी कोशिश यही होगी कि किसी तरह खाने से हम लोग इन्कार कर दें या खाने के वक़्त से पहले ही टल जाये। मगर हम लोगो का हमेशा यह दस्तूर रहा है कि उस कंजूस को जरूर चूसते है। लिहाजा मै जो बेतकल्लुफ़ी बरतूँ या उसको परेशान करूँ तो उसमें आप दोनों दखल न दें। चुनांचे यही हुआ कि अकरम इन तीनों को देखकर बजाहिर तो बहुत खुश हुआ मगर उसकी घबराहट उसके चेहरे पर बरस रही थी यहाँ तक कि अल्फाज में भी आ गई और उसने अजीब शशो-पंज के साथ कहा :

"अजीब जानवर हैं आप भी अर्जमन्द साहब कि न कोई इत्तला और न कोई नोटिस आ धमके एकदम से।"

अर्जमन्द ने कहा, "भई, वह बात यह हुई कि इत्तला देते तो इसलिए डर मालूम हुआ कि जाहिर था कि तुम भाग जाते कोई ख़्वाहमख़्वाह का दौरा दौरा निकाल कर। दूसरे यह भी सोचा कि अपने घर कौन जाता है इत्तला देकर ? कोई तकल्लुफ़ थोड़ा ही है।"

अकरम ने कहा, "नहीं खैर तकल्लुफ़ का तो सवाल ही नहीं है। मगर मुसीबत यह है कि तुम्हारी भाभी पड़ी हुई है बीमार ; *ख़ानसामाँ अपने बिरादरे-*

निस्बती की शादी में गया हुआ है छुट्टी लेकर। अच्छा यह बताओ साफ़-साफ़ कि यहाँ का प्रोग्राम क्या है और कयाम का कब तक इरादा है ?"

अर्जमन्द ने कहा, "भई, अब हम तुम्हारे ऐसे दुश्मन तो हैं नहीं कि यह कहकर तुम्हारा हार्ट-फेल कर दें कि ज़रा तमाम हँगामों में बचकर सुकून के साथ एक हफ़्ता बसर करने के इरादे से आये है।"

और वाक़ई अकरम पर बिजली गिर पड़ी। उसने मरी हुई आवाज़ से कहा, "वैसे तो खैर कोई बात न थी, मगर सख्त तकलीफ उठाओगे तुम यहाँ। इसलिए कि मै तो सुबह ही जा रहा हूँ दौरे पर।"

अर्जमन्द ने बडे इत्मिनान से कहा, "तो जाओ ना तुम। तुमको कौन रोक रहा है ? खैर ये बातें तो होती रहेंगी मगर अजीबुल खलकत (सृष्टि में विचित्र) है आप भी कि अब तक चाय तक को न कहा किसी से। सुबह बगैर नाश्ता किये चल पडे थे। जरा तफ़सीली चाय मंगाओ फौरन।"

और अकरम अपने को बमुश्किल सँभालता हुआ जब चला गया तो शिहाब ने कहा, "क्यों बेचारे को परेशान कर रहे हो ? अगर तुम्हारी इस हरकत से उसकी हरकते-क़ल्ब (हृदय-गति) ने जबाव दिया तो यह खून तुम्हारी गर्दन पर होगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "मुझे लुत्फ़ आता है इसे परेशान करने से और वाकई मेरा जी चाहता है कि एक हफ़्ता ठहर जाऊँ।"

फ़ारुकी ने कहा, "मै समझ रहा था कि तुम मजाक कर रहे हो, मगर यह हज़रत तो वाकई वही निकले जो तुमने कहा था।"

अर्जमन्द ने कहा, "अभी तुमने देखा ही क्या है ? यह कमबख्त तो खाने पर तुमसे कहेगा कि जितना खाना हो उतना निकालिये वर्ना जाया (नष्ट) होगा।"

शिहाब ने कानों पर हाथ रखकर कहा, "भाई साहब, हम बाज आये इनके घर खाना खाने से।"

अर्जमन्द ने कहा, "कमाल करते हो तुम भी। हम तो इसको सजा देते है। बहरहाल तुम देखते जाओ।"

अकरम चाय के लिए कहकर वापस आया तो कहने लगा, "तुम्हे इत्तला

ज़रूर करनी चाहिये था। अब मैंने अर्दली दौड़ाये तो हैं इधर-उधर, खुदा करे कुछ मिल जाये नाश्ते के लिए।"

अर्जमन्द ने कहा, "मिल जायेगा इन्शाअल्लाह, नियत बखैर होना चाहिये वर्ना तकल्लुफ़ ही क्या है? हम खुद बावर्चीखाने पर हमला करके नाश्ता तैयार करना जानते हैं। और नाश्ता ही कौन-सा अज़ीमुश्शान होगा। बस चंद पराठे, कुछ अण्डे, थोड़ा-सा हलवा। रह गई मिठाई वह तो अर्दली ले ही आयेगा।"

'अकरम ने कहा, "हाँ यह ठीक है, ताकि इस वक़्त खाने का झगड़ा न हो।"

अर्जमन्द ने कहा, "जी, क्या मतलब? यानी आपकी राय है खाना बिल्कुल ही गोल कर दिया जाये और ये जो मुर्गियाँ फिर रही है कम्पाउण्ड में उनकी हक-तलफी न होगी और इनकी दिल-शिकनी न होगी कि इन मेहमानों ने हम को पूछा तक नही।" हमारा न सही इन बेज़बान जानवरों का तो खयाल करो।"

फ़ारुकी को आखिर हँसी आ गई और उसने मुआहिदे (इकरार) की खिलाफ़ वर्ज़ी करते हुए कहा, "अकरम साहब, यह आपको ख्वाहमख्वाह सता रहा है? हम लोग खाने से पहले ही लाहौर वापस हो जायेंगे।"

अकरम को अब इत्मिनान हुआ तो निहायत इत्मिनान से झूठ बोले, "खैर इसमें सताने की तो कोई बात ही नही, खाने का इन्तेजाम तो बहरहाल हो ही सकता है।"

अर्जमंद ने कहा, "देखो अकरम, ऐसी बातें करोगे तो हम इन्तेकामन एक हफ़्ते के लिए ठहर जायेंगे। तुमको मालूम है कि हम कैसे बला-ए-बेदरमाँ है।"

मगर अब अकरम को इत्मिनान हो चुका था और चेहरे पर जो हवाइयाँ उड़ रही थीं वह गायब थी, अलबत्ता छेड़छाड़ जारी थी और देर तक इसी किस्म की बातें होती रहीं। यहाँ तक कि चाय आ गई जो अकरम की उलुलअज़्मी (साहस) की आईनादार थी। एक प्लेट में चार क़तले कलाकन्द के थे बाक़ी अल्लाह का नाम था। अर्जमंद ने हज़ारों बातें सुनाकर रख दीं मगर अकरम के कान पर जूं तक न रेंगी, वह सबके लिए चाय बनाने में मसरूफ़ रहा। उस बेहूदा चाय के बाद अर्जमंद ने ज़रा संजीदगी के साथ अकरम से कहा कि हम

लोग एक खास मुहिम पर अन्क़रीब यहाँ आने वाले हैं और मुमकिन है कुछ दिन रहना भी पड़े, मगर तुम अपना तबादला कराने की कोशिश न करना । अपने क़यामो-तुआम (ठहरना तथा खाना) का बंदोबस्त हम खुद करेंगे । अकरम ने हैरत से पूछा, "क्या कोइ ज़मीन वग़ैरह यहाँ लेने का इरादा है ?"

अर्जमंद ने कहा, "ज़मीन नही, अलबत्ता यह एक ज़मींदोज़ राज़ है फ़िल-हाल और अभी मैं तुमको भी नहीं बता सकता कि हमको यहाँ करना क्या है । इसलिए कि अभी तो खुद हमको भी कुछ नही मालूम । सिर्फ़ इतना मालूम हुआ है कि क़िस्मत आज़माई हमको यहाँ करना है ।"

अकरम ने उलझ कर कहा, "अजीब चीज़ है आप भी ! मालूम कुछ नहीं और क़िस्मत आज़माई करने चले है । आखिर किस बात की क़िस्मत-आज़माई, किस सिलसिले की मुहिम, कुछ तो मालूम हो ।"

शिहाब ने कहा, "अकरम साहब, बात यह है कि अपने खानदानी हालात और चंद दस्तावेज़ों से पता चला है कि यही कहीं आस-पास हमारी कुछ दौलत मदफ़ून (गड़ी हुई) है ।"

अकरम ने पूरी बात सुने बग़ैर कहा, "अच्छा, अच्छा तो गोया आप हिन्दुस्तान से तशरीफ ला रहे है । यहाँ से गये हुए कई हिन्दू और सिख हज़-रात हिन्दुस्तानी सफारतखाने (दूतावास) के फ़ील्ड पर प्रॉपर्टी अफ़सर के साथ आकर अपने दफीने ले जा चुके है गालिबन ।"

अर्जमद ने जल्दी से कहा, "नही भाई नही, यह किस्सा वह नही है । इसका ताल्लुक निहायत कदीम दफीनों से है और सच्ची बात तो यह है कि अभी यह भी नहीं मालूम कि वह जो इशारा हम लोगो को मिला है वह दफीने (गडा हुआ धन) के मुताल्लिक है या कुछ और है । हम अभी तुमको इसलिए नहीं समझा सकते कि खुद अपने पल्ले कुछ नहीं पड़ा है ।"

अकरम ने कहा, "तो फिर मेरा दिमाग क्यो चाट रहे हैं जनाव : 'समझ लीजियेगा तो समझाइयेगा ।"

अर्जमद ने कहा, "तुम सच कहते हो, वाकई फिलहाल हम निहायत एह-मक़ाना तौर पर मुंह उठाये चले आये है । बहरहाल एक मक़सद तो पूरा हो ही गया कि तुमको थोड़ा-बहुत परेशान कर लिया । अब जिस वक़्त हम इस गुत्थी

को सुलझा सके । उस वक़्त अलबत्ता तुम्हारा दिमाग़, अगर उसका वाक़ई वजूद है भी, इंशाअल्लाह ज़रा तफसील से चाटेंगे ।"

यह जिक्र वही खत्म करके फिर इधर-उधर की बातें होती रहीं और थोड़ी देर बैठने के बाद ये तीनों वहाँ से रवाना होकर हिरन मीनार पहुँचे और बारह-दरी के दरो-दीवार पर निहायत गौर से नजर डालते रहे कि शायद यहाँ उनको ऐसा नक़्शा नजर आ जाये जैसा उस रिसाले में है जो उनके हाथ लग चुका है। मगर यह जुस्तुजू नाकाम ही रही और ये तीनों वहाँ से रवाना हो गये । रास्ते में फ़ारुकी ने कहा, "क्या यह बात मुनासिब हुई है कि हमने अकरम से ये बातें की और दफीने वगैरा का जिक्र किया ।"

अर्जमंद ने कहा, "नहीं, उस तरफ से बिल्कुल इत्मिनान रखो । सिवाय कंजूस होने के और हर एतबार से अकरम अपना ही आदमी है और साथ-ही-साथ निहायत गहरा भी । उससे वाकई हमको बहुत काम लेना है और उसको ऐतमाद में लेना ही पडेगा ।"

चूँकि अर्जमंद को इत्मिनान था, लिहाजा शिहाब और फारुकी भी मुतमइन हो गये और फिर उस सिलसिले में कोई बात न हुई । मगर न जाने फ़ारुकी को एकदम से क्या याद आ गया कि उसने ताली बजाकर कहा :

"हाँ भाई साहब, वह किस्सा तो रह ही गया था । देखो अर्जमद, यह तो तै है कि कल तुमको नीलोफर ने वाकई बुरा पकडा और तुम सचमुच बिरजीस के जिक्र पर इस बुरी तरह गिरफ्तार हुए कि ··।"

शिहाब ने कहा, "उसके मुताल्लिक शाइर ने सिर्फ यह कहा है :

धरे गये दिले-ख़ाना खराब के बदले ।"

बहरहाल अब हम नियाजमदों को झकाइयाँ देने की कोशिश न करो और साफ़-साफ बता दो कि किस्सा क्या है ?"

अर्जमंद ने कहा, "किस्सा-विस्सा कुछ भी नही है, अलबत्ता मैं कोई चोर तो हूँ नहीं कि मुकर जाऊँ । यह वाक्या है कि बिरजीस है निहायत काबिले-कद्र लड़की ।"

शिहाब ने कहा, "शाबाश ! बच्चों को चाहिये कि हमेशा सच बोलें । तो गोया जनाब ने क़द्रदानी शुरू कर दी है ।"

अर्जमंद ने साफ़-साफ़ कह दिया, "बहरहाल मुझको किसी की क़द्रदानी तो करना ही है, बिरजीस ही सही।"

इस एतराफ़ ने उस मज़ाक को संजीदा बना दिया और अब घर पहुँचने की इसलिए भी जल्दी हो गई कि जो इज्तेमाअ होने वाला था वह सुरैया और कौकब के न आने की वजह से मुल्तवी हो गया था।

२७

डाक्टर साहब गये हुए थे किसी मरीज को देखने शहर के बाहर। बेगम साहबा आराम करना चाहती थीं। अब बाकी बचे सिर्फ एक बुजुर्ग मिर्ज़ा साहब। मगर वह तो खुद ही जब चाहते थे सींग कटाकर बछड़ों में शामिल हो जाया करते थे। लिहाज़ा गोल कमरे में नीलोफर की सहेलियों के अलावा फ़रीद और मिर्जा साहब भी थे और इन्तेजार था उन तीनों का जो सुबह तड़के से न जाने कहाँ गये हुए थे। सिर्फ नीलोफर को मालूम था कि ये तीनों शेख़ूपुरा गये हुए है, मगर उसने किसी को बताया न था। इन तीनों के इन्तेज़ार में महफिल कुछ सूनी-सी हो रही थी कि मिर्ज़ा साहब ने लडकियों को मुखातिब करके कहा :

"मैं तो बखुदा यह समझा इन फ़रीद के ठाठ देखकर कि हो-न-हो इन्हीं नूर चश्म का कुछ अक़ीका वगैरा है आज।"

फ़रीद ने बर्जस्तगी से कहा, "मगर लड़कों के अकीके के लिए दो बकरे हुआ करते है, आप तो अकेले ही नज़र आ रहे है।"

और लड़कियाँ हँसते-हँसते लोट गई। सुरैया ने कहा, "भई, अब तो फ़रीद

मियाँ भी खूब-खूब चहकने लगे हैं।"

कौकब ने कहा, "इन्हीं बातों पर तो बिरजीस फ़ख्र करती हैं।"

और बिरजीस ने एक कुहनी कौकब की पसलियों में ऐसी रसीद की कि तबियत साफ़ हो गई होगी और फ़रीद साहब का चेहरा वाकई सुर्ख़ हो गया। गोया बिरजीस फ़ख्र करे या न करे मगर उनके फ़ख्र न करने के लिए एक फ़िकरा ही काफ़ी था। ऐन उसी वक़्त शिहाब ने कमरे में दाखिल होकर अस्सलाम अलैकुम का नारा बुलंद किया तो सब सँभलकर बैठ गये। मिर्ज़ा साहब ने फरमाया, **"बड़ी देर की मेहरबाँ आते-आते।"**

फारुकी ने कहा, "अच्छा मिर्जा साहब, यह तै रहा कि आप सिर्फ़ अशआर और मिसरों मे हर बात करेंगे, नस्र की सनद नही।"

नीलोफर ने कहा, "मै समझ गई, आप हमारे बड़े अब्बा के लिए यह चाहते है कि वह कम-से-कम बोलें। अभी हमारे बेचारे बड़े अब्बा पर इन मियाँ फ़रीद ने भरपूर वार किया है। बडे अब्बा ने उनके ठाठ देखकर कहा कि मैं तो समझा था कि इन्ही नूर चश्म का आज अकीका वगैरा है। इस पर फ़रीद साहब ने कहा कि लड़को के अक़ीके के लिए दो बकरे होते हैं मुझे तो आप तन्हा नज़र आ रहे है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, **"इनकी हर बात पे हम नामे-खुदा कहते हैं।"**

फ़ारुकी ने कहा, "बस ठीक है। किस कद्र बर्जस्ता बात कही है और मिसरे में ?"

सुरैया ने कहा, "वाकई आपने तो सचमुच फ़ारुक़ी साहब के इरशाद की तामील शुरू कर दी।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, **"मुझे तो खू है कि जो कुछ कहो बजा कहिये।"**

बिरजीस ने बर्जस्ता कहा, "हर एक बात यूँ ही शेर में चचा कहिये।"

और इस पर जो कहकहा पड़ा है तो वाकई मालूम हुआ कि छत उड़ जायेगी। नीलोफ़र ने दौड़कर बिरजीस को लिपटा लिया और शिहाब ने भी इस बर्जस्तगी और जहानत की दाद दी। अर्जमंद ने बजाय कुछ कहने के मिर्ज़ा साहब से कहा, "कहिये हुजूर वाला अब क्या फ़रमाते हैं आप ?"

मिर्ज़ा साहब ने कहा :

"बात पर वाँ ज़ुबान कटती है
वो कहें और सुना करे कोई ।"

फारुकी ने कहा, "जी नहीं बात नहीं बनी ।"

फ़रीद ने कहा, "अब वह इसके जवाब में कह देंगे, "क्या बने बात जहाँ बात बनाये न बने ।"

शिहाब ने बड़े ताज्जुब से कहा, "भई चश्मे-बद दूर फ़रीद मियाँ, जीने की बातें करो । मैं कहता हूँ कही नजर न लग जाये ।"

अब तक रुबी बिल्कुल ख़ामोश थी, इसकी वजह गालिबन यह होगी कि वह उर्दू लाख समझदारी के साथ बोल सकती थी और समझती भी खूब थी मगर उससे यह तवक़्को तो बहरहाल न हो सकती थी कि वह शेरो-शाइरी की हद तक किसी अजनबी जुबान पर कुदरत रख सकती है, मगर यह नज़र वाली बात सुनकर उसने भी कहा :

"और किसी की नजर तो शायद न लगे, मगर बिरजीस की नजर ज़रूर लगेगी ।"

शिहाब ने गोया अनजान बनकर पूछा, "बिरजीस की नजर ख़ास तौर पर क्यों लगेगी ? यह क्या क़िस्सा है ? जरा वज़ाहत फ़रमाइए आप मे से कोई ।"

बिरजीस ने जरा बन कर कहा, "मैं खुद बताये देती हूँ, यह सब दरअसल इस बात से जलती हैं कि फरीद साहब खास तौर पर मेरी तरफ़ मुतवज्जे क्यों हैं ।"

मिर्ज़ा साहब ने बड़ी अदाकारी के साथ फ़रीद से कहा :

"अल्ला आमीं से हम तो यूं पालें
आप आफ़त में जान को डालें ।"

मारे हँसी के सबका बुरा हाल हो गया, मगर फ़रीद का सब से बुरा हाल था । वह बेचारा हँसना चाहता था तो रोने का मुँह बनता था । चुप रहता था तो वह हिमाक़त जो उन पर यूं भी बरसा करती थी कुछ और भी शदीद हो जाती थी । आखिर उसने बमुश्किल तमाम गला साफ़ करके और कई मर्तबा खँखार कर कहा :

"मेरे वास्ते यह खुद एक मुअम्मा है।"

नीलोफ़र ने कहा, "मुअम्मा तो खैर आप खुद है, यह तो कोई मुअम्मा नही है।"

सुरैया ने कहा, "मगर बिरजीस तो कह रही थीं कि आप खास तौर पर उनकी तरफ़ मुतवज्जे है।"

फ़रीद ने कुछ जिज़-बिज़ होकर कहा, "मुमकिन है उनका अंदाज़ा यही हो।"

बिरजीस ने बराहेरास्त जवाब तलब किया, "तो क्या मेरा यह अन्दाज़ा गलत है ? जरा इधर देखिये।"

और मिर्ज़ा साहब ने अब एक फिल्मी गाना शुरू कर दिया, **"ज़रा सामने आ, ज़रा आँख मिला, तिरा शुक्रिया करदूँ अदा।"**

कहकहों का एक तूफान पूरी शिद्दत के साथ फिर आया, "हद यह है कि कौकब की ऐसी संजीदा लड़की का भी यह हाल हुआ कि वह हँसते-हँसते सोफ़े से कालीन पर गिर पडी। नीलोफ़र तो यों ही बेहद हँसने वाली लड़की है वह तो मारे हँसी के लोट ही रही थी। आखिर अर्जमन्द ने रूमाल से अपने आँसू पोंछते हुए कहा, " कोई जवाब नही है मिर्जा साहब का, हद कर दी बखुदा।"

नीलोफ़र ने अपने को सँभाल कर कहा, "खुसूसन आज तो बड़े फ़ार्म में है बड़े अब्बा। मगर यह आप क्यों इस कद्र शर्मिन्दा है फ़रीद साहब ?"

मिर्जा साहब ने कहा, **"महबूत हैं पैमाइशे-दामाँ में लगे हैं।"**

शिहाब भी अब सँभल चुका था, उसने फ़रीद से कहा, "मज़ाक बरतरफ फ़रीद साहब, आपको शर्म नही आती कि उस बेचारी ने लडकी होते हुए जो बात थी वह सच-सच कह दी और आप इतने बुजदिल है कि अब तक झूठ बोल रहे हैं।"

फ़ारुकी ने कहा, "नही साहब, वह गरीब शर्मीला है। अब अपने मुँह से खुद क्या कहेगा ? बहरहाल हमको अन्दाजा हो ही चुका है और अब हमारा फ़र्ज़ है कि हम इनकी मदद करें और संजीदगी से सिलसिल-ए-जुबानी की जाये। क्यों फ़रीद साहब, आप करते क्या है ?"

मिर्ज़ा साहब झट बोल उठे, **"बना है ऐश तजम्मुल हुसैन खाँ के लिए।"**

अर्जमन्द ने कहा, "गोया फ़िलहाल कुछ नहीं कर रहे हैं । बहरहाल तालीमी हालत क्या है ?"

मिर्जा साहब फिर बोले, "**लेते हैं मक्तबे-ग़मे-दिल में सबक़ हनोज ।**"

फ़ारुकी ने कान पकड़ कर कहा, "मिर्जा साहब यह देखिये मुझे मैं कान पकड़ कर तौबा करता हूँ । आपने तो वाकई मारे शाइरी के चुँधिया दिया है मुझको । अब मामला जरा संजीदा है, लिहाज़ा यह शर्त खत्म ।"

मिर्जा साहब ने कहा, "बन्दा नवाज़, हफ़्तों इसी तरह बात कर सकता है आपका यह गुलाम । बहरहाल अब यह शर्त उठ गई है तो जाने दीजिये । हाँ भई फ़रीद मियाँ, अब वहू-बेटियों की तरह शर्माए क्या बैठे हो ? जवाब दो ना ।"

फारुकी ने कहा, "मेरा मतलब यह है कि बिरजीस बेगम के बुजुर्गों से आपका क्या तार्रुफ कराया जाय ?"

बिरजीस ने कहा, "खुदा के लिए यह गजब न कीजियेगा । मेरे बुजुर्ग अगर इनको पहचान गए तो फिर इनका हुलिया किसी और से पहचाना न जायेगा ।"

शिहाब ने कहा, "तो फिर यह ऊँट किस कल बैठेगा ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "ऊँट यह हरगिज़ नही है इस किस्म के किसी पस्ता क़द जानवर का नाम लीजिए ।"

फरीद ने जलकर कहा, "मसलन मिर्ज़ा साहब कहिए मुझे ।"

अर्जमन्द ने नारा बुलद किया,"बाउण्डरी मिर्ज़ा साहब । हो गई बात और खूब हुई । बहरहाल फ़रीद साहब की इस इत्तेफ़ाक़ी जहानत के सिलसिले में हम यह चाहते है कि फ़रीद साहब और बिरजीस बेगम को सलाह-मशविरे का मौका दिया जाए, ताकि ये दोनों कोई मुत्तफ़िक़ा लाइन आफ ऐक्शन तजवीज़ करें ।"

बिरजीस ने फिर फरीद को मुखातिब किया, "क्यों साहब, क्या राय है ?

फ़रीद ने बडी बेचारगी से कहा, "जैसी आपकी राय हो ।"

इस पर बावजूद जब्त करने के किसी से हँसी न रुक सकी । हद यह है कि मिर्जा साहब हँसते-हँसते तनफ़्फ़ुस (साँस) के दौरे मे मुब्तला होकर कमरे

से बाहर चले गए। और बाकी सब इसी चहल-पहल के साथ खाने के कमरे में आ गए जहाँ लंच तैयार था।

२८

****

महम्मद हुसैन यह खबर तो अर्जमन्द, फ़ारुकी और शिहाब को सुना ही चुका था कि वहीदा ने उसको तरक़्क़ी देकर अपना नदीमे-खास बना लिया और अब उसके लिए यह मरहला निस्बतन आसान हो गया था कि उस शजरे की नक़ल हासिल कर ले, इसलिए कि वहीदा इस गुत्थी को सुलझाने में महम्मद हुसैन से काम लेना चाहता था और उसको यकीन हो चुका था कि जितना महम्मद हुसैन का दिमाग इस मामले में चलता है उतना न तो खुद उसका दिमाग चलता है और न उसके किसी और नदीम का। लिहाजा यह तै है कि यह जाली रिसाला और असल शजरा दोनों सामने रख कर वह इस गुत्थी को सुलझाएगा। और इस तरह खुद महम्मद हुसैन को भी इसका मौक़ा मिलेगा कि वह उस नक़्शे पर जो वजाहिर शजरा है ज़्यादा-से-ज़्यादा गौर करे। इसी सिलसिले में जिस दिन भी उसको मौक़ा मिलेगा वह इस शजरे की नक़ल तैयार करेगा। बहरहाल अब यह उम्मीद तो पैदा हो गई थी कि महम्मद हुसैन के क़ीमती ताव्वुन से आज नही तो कल यह नुस्खा ज़रूर हाथ आजायगा। मगर अर्जमन्द चाहता था कि उसकी रुख़्सत खत्म होने से पहले वह नक़्शा किसी तरह आ जाए ताकि असल काम जल्द-से-जल्द शुरू हो सके। इन सब को हर रोज़ यही इन्तेज़ार रहता था कि आज महम्मद हुसैन वह नक़्शा लाया और आज लाया। मगर अभी तक महम्मद हुसैन को इसका मौका न मिला

था। चुनाँचे आज भी जब वह वहीदा की पेशी में दोपहर से सेपहर तक रहने के बाद वापस आया तो शिहाब ने उसके साथ अपने दोनों दोस्तो को अपने कमरे में बन्द कर लिया। मम्मद हुसैन ने आज एक दूसरी दास्तान बनाई, कहने लगा :

"आज तो वहाँ वह जंग हुई है कि मजा ही आ गया। अफ़जल और तफ़ज्जुल, उसका बड़ा भाई, दोनों वहीदा से मिलने आये थे और कहना उन दोनों को सिर्फ़ इस क़द्र था कि यह किस्सा कुछ ठण्डा पड़ कर रह गया है। मगर जब वहीदा ने उनको बताया कि इस सिलसिले में जहाँ तक मुझको दिल-चस्पी थी उसमे तो मैं कामयाब हो चुका हूँ और अब जो कुछ करूँगा वह सिर्फ़ तुम्हारे लिए करूँगा। तो अफजल और तफ़ज्जुल दोनों ने बात बढ़ा दी कि हमको खुद यह अदेशा था कि जिस वक़्त तुम्हारा काम निकल गया तुम हमारे काम को खटाई मे डाल दोगे। इस बात पर वहीदा को सख्त गुस्सा आया और उसने कहा मै बदमाश हूँ, जराइम पेशा हूँ, लुटेरा हूँ मगर इतना कमीना नही कि अपनी बात से फिर जाऊँ। मैने तुमसे वादा किया है कि नीलोफ़र को तुम्हारे हवाले कर दूँगा, बशर्ते कि जैसा तुम कहते हो कि नीलोफर को भी तुमसे मुहब्बत है और डाक्टर लतीफ़ ने ज़बरदस्ती उसकी मुहब्बत का गला घोंट रखा है। उस मौके पर मैने कहा कि यह बिल्कुल गलत हे। मुझसे ज्यादा इस बात को कोई नही जान सकता कि नीलोफ़र को तुमसे शदीद नफ़रत है। अफ़जल ने गुस्से से बेकाबू होकर मुझसे कहा कि तुम झूठ बोलते हो। तो वहीदा ने उसको बड़ा आड़े हाथों लिया कि तुम्हारी जुरअत कैसे हुई कि तुमने मेरे एक नदीम को झूठा कहा। इस पर अफ़जल ने कहा कि हमारा-तुम्हारा समझौता अब खत्म हो रहा है, तो सरदार वहीदा ने कहा कि इस समझौते की अव्वल दिन से यही शर्त है कि नीलोफ़र अगर खुद तुम्हारे पास पहुँचने के लिए बेक़रार है तो उसको तुम्हारे पास पहुँचा दिया जायेगा। तफज़्जुल ने कहा कि नीलोफ़र को सिर्फ रुबी से इख्तेलाफ़ था वह रुबी को बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थी। लिहाजा हमने रुबी को उसी के लिए निकाल दिया है। इस पर मैंने कहा कि यह भी गलत है। आप लोगो ने रुबी को नही निकाला बल्कि वह खुद इसलिए निकल गई है कि आपने उसे धोखा देकर शादी की थी। आपने अपने

को ग़ैर शादीशुदा और निहायत दौलतमंद ज़ाहिर किया था, इसके बावजूद वह आपके घर में इसलिए रही कि नीलोफ़र को अदालत ने तलाक दिलवा दिया था। रह गई दौलत तो उसकी तरफ़ से उसने सब्र कर लिया था कि अब जो भी आपकी हैसियत है उसी में गुज़र-बसर करेगी। मगर जब उसको मालूम हुआ कि आप मुजरिमाना तरीके पर नीलोफ़र के अगवा की कोशिशें कर रहे है और साथ-ही-साथ यह भी चाहते है कि उससे छुटकारा हासिल करें तो वह खुद ही आपके वहाँ से चली गई। और अब वह डाक्टर लतीफी के यहाँ आती-जाती है और नीलोफर की बड़ी अज़ीज़ सहेली है। उन दोनों की मुहब्बत की वजह सिर्फ यह है कि दोनों को आपसे नफ़रत है। यह सुनकर वह दोनों भाई बड़े चिरागपा हुए और वहीदा से कहा कि अब वक़्त आ गया है कि मैं तुमको बेनकाब कर दूँ। और हुक्काम को बता दूँ कि तुम जो बड़ी-बड़ी सरकारी तक़रीबों में शिरकत करते हो, हुक्काम तुमको मुअज़्ज़िज शहरी और बारसूख रईस समझ कर मिलते है, दरअसल तुम्हारी हैसियत क्या है और तुम दर पर्दा क्या हो? यह सुनकर वहीदा ने एक कहकहा लगाया और उनसे कहा कि तुम यह जुरअत कर ही नही सकते, इसलिए कि उसके बाद तुम्हारा बूढ़ा बाप जिसने डाक्टर लतीफ़ी के बाप को क़त्ल किया है दूसरे ही दिन फाँसी के तख्ते पर नजर आयेगा और उस कत्ल मे तुम दोनों भाई जिस तरह शरीक थे उसके भी तमाम सुबूत बहरहाल मेरे ही पास हैं। मुझको बदमाश साबित करने से पहले ही तुम दोनों भी जेल में होगे।

शिहाब ने हैरत से कहा, "क्या डाक्टर साहब के वालिद को कत्ल किया गया है?

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ। मैं आपको सब कुछ सिलसिलेवार बताये देता हूँ, मुझे सब कुछ मालूम हो चुका है। बहरहाल वहीदा ने यह बात कही तो ये दोनों भाई नर्म पड़े और फिर अपने तेवर बदल कर कहा कि गुस्से की बात का बुरा न मानो वहीदा। किस्सा दरअसल यह है कि न मैं तुम्हारा भाण्डा फोड सकता हूँ न तुम मेरा। मगर किसी तरह नीलोफ़र को उडवाने में हमारी मदद करो। इसके जवाब में वहीदा ने फिर वही कहा कि अगर नीलोफ़र को तुमसे नफरत है तो मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। अफ़ज़ल

ने मजबूरन कहा कि अच्छा अब हम अपने तौर पर कोशिश करेंगे बशर्ते कि तुम नीलोफ़र की मदद न करो। वहीदा ने उससे कहा कि मुझको उससे कोई वास्ता न होगा। मैं तो सिर्फ़ यह अपने उसूल के खिलाफ़ समझता हूँ कि किसी बेजुबान बच्ची को ज़बरदस्ती अगवा करके वहाँ पहुँचाया जाये जहाँ वह जाना नहीं चाहती। अगर तुम अपने तौर पर यह कोशिश करना चाहते हो तो मुझसे कोई मतलब नहीं।"

इसके बाद ये दोनों भाई तो चले गये मगर उनके जाने के बाद मैंने सरदार वहीदा से पूछा :

"क्या डाक्टर लतीफी के वालिद को अफ़जल और तफ़ज्जुल के बाप ने क़त्ल किया है ?"

वहीदा ने कहा, "बहैसियत नदीमे-खास के यह बात मैं तुमको खुद बताना चाहता था। अच्छा हुआ कि मौका मिल गया। क़िस्सा दर असल यह है कि डाक्टर लतीफ़ी के वालिद को अपने उस खानदानी दफ़ीने की जुस्तुजू थी और वह दिन-रात उस नक़्शे में खोये हुए थे जो अब हमारे क़ब्ज़े में है। डाक्टर लतीफी के वालिद, अफजल, नफ़ज्जुल के वालिद अकमल और मेरे वालिद मरहूम ये तीन बडे जिगरी दोस्त थे। आखिर एक दिन डाक्टर लतीफ़ी के वालिद ने मेरे वालिद और अकमल साहब के सामने अपना यह खानदानी राज उगल दिया और उन दोनों दोस्तों को बता दिया कि अगर यह दफ़ीना मिल जाये तो इतनी बडी दौलत हाथ आ सकती है कि इस वक़्त हमसे बड़ा रईस और कोई नहीं हो सकता। चुनांचे उन तीनों ने मिलकर उस दफीने की जुस्तजू का अहद किया और तीनों बराबर के शरीक हो गये। ज़ाहिर है कि डाक्टर लतीफ़ी के वालिद के अलावा उन दोनों दोस्तों की नीयत खराब थी। मेरे वालिद-बिला शिरकते-गैरे उस दौलत के मालिक बनना चाहते थे। दूसरे यह भी अंदेशा था कि दफीना मिलने के बाद कहीं डाक्टर लतीफी के वालिद अपने अहद से फिर न जायें और अकमल ने उसकी दूसरी ही तरकीब निकाली थी कि वह अपने छोटे बेटे अफ़जल से डाक्टर लतीफ़ी की इकलौती बेटी की शादी करके उस तमाम दौलत को और डाक्टर लतीफ़ी की दौलत को अपने घर में समेटना चाहता था। मगर जब यह निस्बत दी गई तो डाक्टर लतीफ़ी के वालिद

को ग़ैर शादीशुदा और निहायत दौलतमंद ज़ाहिर किया था, इसके बावजूद वह आपके घर में इसलिए रही कि नीलोफर को अदालत ने तलाक दिलवा दिया था। रह गई दौलत तो उसकी तरफ़ से उसने सब्र कर लिया था कि अब जो भी आपकी हैसियत है उसी में गुज़र-बसर करेगी। मगर जब उसको मालूम हुआ कि आप मुजरिमाना तरीके पर नीलोफ़र के अग़वा की कोशिशें कर रहे है और साथ-ही-साथ यह भी चाहते है कि उससे छुटकारा हासिल करें तो वह खुद ही आपके वहाँ से चली गई। और अब वह डाक्टर लतीफ़ी के यहाँ आती-जाती है और नीलोफर की बड़ी अज़ीज़ सहेली है। उन दोनो की मुहब्बत की वजह सिर्फ यह है कि दोनों को आपसे नफ़रत है। यह सुनकर वह दोनों भाई बड़े चिरागपा हुए और वहीदा से कहा कि अब वक़्त आ गया है कि मैं तुमको बेनक़ाब कर दूँ। और हुक्काम को बता दूँ कि तुम जो बड़ी-बड़ी सरकारी तक़रीबों में शिरकत करते हो, हुक्काम तुमको मुअज़्ज़िज़ शहरी और बारसूख रईस समझ कर मिलते है, दरअसल तुम्हारी हैसियत क्या है और तुम दर पर्दा क्या हो? यह सुनकर वहीदा ने एक कहकहा लगाया और उनसे कहा कि तुम यह जुरअत कर ही नही सकते, इसलिए कि उसके बाद तुम्हारा बूढ़ा बाप जिसने डाक्टर लतीफ़ी के बाप को कत्ल किया है दूसरे ही दिन फाँसी के तख्ते पर नज़र आयेगा और उस कत्ल मे तुम दोनों भाई जिस तरह शरीक थे उसके भी तमाम सुबूत बहरहाल मेरे ही पास हैं। मुझको बदमाश साबित करने से पहले ही तुम दोनों भी जेल में होगे।

शिहाब ने हैरत से कहा, "क्या डाक्टर साहब के वालिद को कत्ल किया गया है?

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ। मैं आपको सब कुछ सिलसिलेवार बताये देता हूँ, मुझे सब कुछ मालूम हो चुका है। बहरहाल वहीदा ने यह बात कही तो ये दोनों भाई नर्म पड़े और फिर अपने तेवर बदल कर कहा कि गुस्से की बात का बुरा न मानो वहीदा। किस्सा दरअसल यह है कि न मै तुम्हारा भाण्डा फोड सकता हूँ न तुम मेरा। मगर किसी तरह नीलोफ़र को उडवाने में हमारी मदद करो। इसके जवाब में वहीदा ने फिर वही कहा कि अगर नीलोफ़र को तुमसे नफरत है तो मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। अफ़ज़ल

ने मजबूरन कहा कि अच्छा अब हम अपने तौर पर कोशिश करेंगे बशर्ते कि तुम नीलोफ़र की मदद न करो। वहीदा ने उससे कहा कि मुझको उससे कोई वास्ता न होगा। मैं तो सिर्फ़ यह अपने उसूल के ख़िलाफ़ समझता हूँ कि किसी बेजुबान बच्ची को जबरदस्ती अगवा करके वहाँ पहुँचाया जाये जहाँ वह जाना नहीं चाहती। अगर तुम अपने तौर पर यह कोशिश करना चाहते हो तो मुझसे कोई मतलब नहीं।"

इसके बाद ये दोनों भाई तो चले गये मगर उनके जाने के बाद मैंने सरदार वहीदा से पूछा :

"क्या डाक्टर लतीफी के वालिद को अफ़जल और तफ़ज्जुल के बाप ने क़त्ल किया है ?"

वहीदा ने कहा, "बहैसियत नदीमे-खास के यह बात मैं तुमको खुद बताना चाहता था। अच्छा हुआ कि मौका मिल गया। किस्सा दर असल यह है कि डाक्टर लतीफ़ी के वालिद को अपने उस खानदानी दफ़ीने की जुस्तुजू थी और वह दिन-रात उस नक़्शे में खोये हुए थे जो अब हमारे कब्ज़े में है। डाक्टर लतीफी के वालिद, अफ़ज़ल, नफ़ज्जुल के वालिद अकमल और मेरे वालिद मरहूम ये तीन बडे जिगरी दोस्त थे। आखिर एक दिन डाक्टर लतीफ़ी के वालिद ने मेरे वालिद और अकमल साहब के सामने अपना यह खानदानी राज़ उगल दिया और उन दोनों दोस्तों को बता दिया कि अगर यह दफ़ीना मिल जाये तो इतनी बडी दौलत हाथ आ सकती है कि इस वक़्त हमसे बड़ा रईस और कोई नहीं हो सकता। चुनांचे उन तीनों ने मिलकर उस दफ़ीने की जुस्तजू का अहद किया और तीनों बराबर के शरीक हो गये। ज़ाहिर है कि डाक्टर लतीफ़ी के वालिद के अलावा उन दोनों दोस्तों की नीयत खराब थी। मेरे वालिद-बिला शिरकते-ग़ैरे उस दौलत के मालिक बनना चाहते थे। दूसरे यह भी अंदेशा था कि दफीना मिलने के बाद कहीं डाक्टर लतीफ़ी के वालिद अपने अहद से फिर न जायें और अकमल ने उसकी दूसरी ही तरकीब निकाली थी कि वह अपने छोटे बेटे अफ़ज़ल से डाक्टर लतीफ़ी की इकलौती बेटी की शादी करके उस तमाम दौलत को और डाक्टर लतीफ़ी की दौलत को अपने घर में समेटना चाहता था। मगर जब यह निस्बत दी गई तो डाक्टर लतीफ़ी के वालिद

नेनिह ायत सख्ती से इन्कार कर दिया और सिर्फ इन्कार ही नहीं किया बल्कि यह भी कह दिया कि तुम यह तरकीब सिर्फ इसलिए कर रहे हो, मुझे तुम्हारी नीयत मे फ़ितूर (विकार) मालूम होता है। उस वक़्त तो यह बात टाल दी गई मगर बाद में मेरे वालिद और अकमल में मिली भगत हो गई और डाक्टर लतीफी के वालिद को भी अपने उन दोनो दोस्तों की तरफ से इत्मिनान न रहा और वह उनसे अलैहदा रहने लगे। चुनाचे मेरे वालिद के मशविरे से अकमल ने उनको जहर दिया और वही से मेरे वालिद को एक पर्चा लिखा कि मै जहर दे चुका हूं, वह आलमे-निजा (मृतप्राय) में है लिहाजा फ़ौरन पहुँचो और बाली (सिरहाने) पर मौजूद हो ताकि किसी को हम पर शक न हो सके। दूसरे मुमकिन है कि वह इसी आलम मे कोई पते की बात कह जाये। यह पर्चा आज तक मेरे पास महफ़ूज है। इसके अलावा उससे कब्ल (पहले) के पर्चे भी महफ़ूज है जिनमे से एक मे लिखा है कि शुक्र है कि मियाँ अफ़जल बड़ी तलाश से वह समे-कातिल (घातक विष) फराहम (उपलब्ध)करने में कामयाब हो गये हैं जो उस दफीने की पहली कुजी है। यह पर्चा भी मेरे पास है। तफ़ज्जुल के मुताल्लिक भी एक पर्चे में इसी किस्म का इशारा है, वह भी मेरे पास है। इन हजरत को पर्चा लिखने की ज़रूरत इसलिए हुई थी कि वालिद मरहूम एक जुर्म में मासूज (अपराधी) होकर रूपोश थे। बजाहिर वह सियासी क़िस्म का जुर्म था, मगर दरअसल था वह एक डकैती ही का किस्सा। बहरहाल उसको सियासी रंग इसलिए दे दिया गया था कि बावजूद डाकू होने के वह हीरो समझे जायें। बहरहाल डाक्टर लतीफी के वालिद बेचारे तो अल्लाह को प्यारे हुए और अकमल ने डाक्टर लतीफ़ी को ऐसा शीशे में उतारा कि आखिर अफ़ज़ल से नीलोफर का निकाह करा ही दिया। बहरहाल यह है वह पूरा क़िस्सा। अफ़जल और तफज्जुल जब मेरी मुखबिरी की धमकी मुझको दे रहे थे उस वक़्त मै इसीलिए हँसता था कि शीश महल में बैठकर यह पथराव करना चाहता है।"

महम्मद हुसैन इतनी ही बात कर पाया था कि डाक्टर लतीफ़ी मोटा-सा सिगार मुँह में लिए कमरे में मौजूद हुए। उन सबने खड़े होकर ताजीम दी तो डाक्टर साहब ने कहा, "भई, यह क्या हरकत है? जब मुझे एक मर्तबा

मालूम हो चुका कि आप सब मेरी इज़्ज़त करते हैं तो बार-बार इस याद दिहानी की क्या जरूरत है ? तशरीफ़ रखिए ।"

उनके बैठते ही अर्जमन्द ने अजीब हरकत की कि उनसे सवाल कर बैठा, "डाक्टर साहब, आपके वालिद का इन्तेक़ाल किस मर्ज़ में हुआ ?"

डाक्टर साहब ने कुछ नदामत के साथ कहा, "अब क्या अर्ज़ करूँ मैं ? वालिद मरहूम को कुछ अफ़्यून की लत पड़ गई थी आखिर उम्र में । बस एक दिन मिकदार (मात्रा) ज़्यादा हो गई और यही मौत का बहाना बन गई ।"

अर्जमन्द ने कहा, "मुझे भी यही इत्तला मिली थी मगर यक़ीन न आता था । अच्छा यह बताइए एक शख़्स है यहाँ वहीदा, उससे आप वाक़िफ़ हैं ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "गालिबन भाई अब्दुल वहीद को आप कह रहे हैं, वह इसी वहीदा के नाम से मशहूर हैं । वह खानदानी रईस हैं । उनके वालिद और वालिद मरहूम के बड़े मरासिम (सम्बन्ध) थे और अब भाई अब्दुल वहीद साहब मुझ से यही खानदानी वज़्अ निभा रहे हैं । लोग उनको कुछ और भी कहते है मगर मुझे उससे क्या मतलब कि वह दर पर्दा क्या हैं ?"

"और आपके वालिद मरहूम के अहबाब (मित्र) में कोई साहब अकमल नामी भी थे ?" अर्जमन्द ने वकीलों के खास अन्दाज से पूछा ।

डाक्टर साहब ने कहा, "हाँ, हाँ अकमल चाचा ! उस नालायक लफ़ंगे अफ़ज़ल के वालिद ही तो है । अब तो बेचारे बहुत बूढ़े हो चुके हैं ।"

अर्जमन्द ने कहा, "डाक्टर साहब, बस ये बातें आप अपने ही तक रखियेगा । अलबत्ता जरा अपने भाई अब्दुल वहीद और अपने अकमल चचा से होशियार रहियेगा । उनसे कोई बात न कीजियेगा और न उनको यह पता चलने दीजियेगा कि किसी को उन पर कोई शुब्हा है । इसमें बड़ी राजदारी की ज़रूरत है, हद यह है कि बेगम साहबा से भी यह बात न कीजियेगा । वर्ना हमारी मुहिम धरी रह जायेगी ।"

डाक्टर साहब मबहूत (स्तंभित) होकर रह गये । उनकी समझ में कुछ न आ सका कि यह बात क्या है और न दरअसल उनको समझने की ज़रूरत थी।

२९

****

जिस दिन से शिहाव को यह मालूम हुआ था कि अफ़जल और तजज्जुल दोनों वहीदा से यह कह आये है कि अब हम अपने तौर पर नीलोफ़र को हासिल करने की कोशिश करेंगे, उसको नीलोफ़र की तरफ़ से बडा अंदेशा था और अंदेशा इस कद्र बढ चुका था कि उसकी रातों की नीद हराम थी । रात-रात भर वह सिरहाने की बत्ती जलाये या तो 'दौलते-बेदार' को समझने और उसके नुकूश (चिन्ह) और हिन्दसों को मानी पहनाने की कोशिश करता रहता था या बिस्तर से उठकर दो-तीन गश्त कोठी के चारों तरफ़ करता था कि एक हाथ में पिस्तौल है और दूसरे हाथ मे टार्च और वह हर तरफ़ देखता फिर रहा है । इस मुहिम मे उसके दो शरीक और भी होते थे यानी डार्लिंग और ब्यूटी । बहरहाल इन शब-बेदारियो का नतीजा यह हुआ कि एक दिन जब सब नाश्ते की मेज पर पहुँच गये तो अर्जमन्द ने आकर कहा :

"शिहाब तो बुखार मे पड़े भुन रहे है, वह नाश्ता न करेंगे ।"

और यह सुनते ही बाकी सब तो सिर्फ़ चौक ही पड़े, मगर नीलोफ़र को शुक्र है किसी ने देखा नहीं कि एकदम से उसके चेहरे का रंग उड़ गया । जूँ-तूँ नाश्ता करके वह सीधी पहुंची शिहाब के पास और बजाय अयादत (हाल पूछना) करने के उसने बड़े गुस्से से कहा :

"मुझको मालूम था कि आप बीमार पड़ने वाले है और यह भी मालूम था कि किस तमन्ना से आप बीमारी को दावत दे रहे है ।"

शिहाब ने मुस्करा कर कहा, "बीमार को डांटा नही करते नीली । तो क्या वाक़ई तुम्हारा ख़याल यह है कि मैं बीमारी को दावत दे रहा था ?"

नीलोफ़र ने कहा, "जी हाँ, मुझे अच्छी तरह मालूम है। जो शख्स एक हफ़्ते से मुसलसल जाग रहा हो, सारी-सारी रात टहल-टहल कर गुज़ारे वह बीमार न पड़ेगा तो कौन पड़ेगा ?"

शिहाब ने कहा, "तो गोया जनाब भी जाग-जाग कर मेरे जागने का तमाशा देखा करती थीं।"

नीलोफर ने कहा, "जब एक शख्स जाग रहा हो और यह भी मालूम हो कि वह क्यों जाग रहा है तो ख्वाहमख्वाह भी नीद उचाट हो जाती है।"

शिहाब ने फिर मुस्कराकर कहा, "अच्छा तो गोया आपको यह भी मालूम है कि मैं क्यों जागा करता था। भला क्या मालूम था आपको ?"

नीलोफर ने कहा, "यही कि आपको मेरी तरफ़ से अंदेशा था कि अफ़जल या उसके गुर्गे मेरी ताक में है।"

शिहाब ने बैठने की कोशिश करते हुए कहा, "यह तुमको किसी ने बताया है। यह तुमको खुद हरगिज़ नहीं मालूम हो सकता। सच बताओ तुमको कैसे मालूम हुआ ?"

नीलोफर ने कहा, "मुझे बाबा महम्मद हुसैन सब कुछ बता चुके है ताकि मैं खुद अपनी हिफाजत कर सकूँ। वह कह रहे थे कि मुझको बताना तो न चाहिए, मगर बता देना इसलिए ज़रूरी है कि मैं गाफ़िल न रहूँ। चुनांचे मैं खुद गाफिल हूँ। हर वक़्त मेरे पास रिवाल्वर रहता है और मैं जानती हूँ कि तन्हा मैं उन बुज़दिलों के लिए काफी हूँ।"

शिहाब ने हँसकर कहा, क्या कहना है आपका ! मगर आपने यह बात किसी और को तो नहीं बताई ?"

नीलोफर ने कहा, "मेरा दिमाग इतना खराब नहीं है, जितना आप समझते है। बहरहाल ज़हमत तो होगी, मगर मैं जरा टेम्प्रेचर लेना चाहती हूँ।

शिहाब ने कहा, "आप डाक्टर साहब की साहबज़ादी ज़रूर है, मगर डाक्टर नही है। फर्ज़ कर लीजिये कि मैं आपके ज़ेरे-इलाज न आना चाहूँ तो ?"

नीलोफ़र ने थर्मामीटर, जो वह अपने साथ लाई थी, झटकते हुए कहा, "थर्मामीटर लगाने से एक फ़ायदा यह भी होगा : कम-से-कम एक ही मिनट आप चुप तो रहेंगे।"

और यह कहकर उसने थर्मामीटर शिहाब की जुबान के नीचे लगा कर उसकी कलाई हाथ में लेते हुए कहा, "उफ्फोह ! काफी मालूम होता है बुखार। आँखे भी तो सुर्ख हो रही है। अपनी जान के पीछे ही पड गये है।"

और उसी वक़्त डाक्टर लतीफी भी कमरे मे दाखिल होते हुए बोले, "अरे भई यह बुखार कैसा ? यानी चिराग तले अँधेरा। डाक्टर के घर मे एक दवा-खाने का मालिक बीमार पडा हुआ है। अच्छा-अच्छा थर्मामीटर लगा हुआ है, ज़रा देना नब्ज मुझे डार्लिंग।"

और यह कहकर नीलोफर के हाथ से शिहाब की कलाई डाक्टर लतीफी ने अपने हाथ में ले ली। इस अर्से मे अर्जमन्द और फ़ारुकी के अलावा फ़रीद और मिर्जा साहब भी कमरे में आ चुके थे। मिर्जा साहब ने ज़ेरे लब कुछ पढ़ कर शिहाब पर फूंकते हुए कहा, "कैसा ही बुखार हो अब अगर बाकी रह जाये तो नाम बदल दीजियेगा मेरा। निहायत आजमूदा (परीक्षित) अमल है यह।"

नीलोफर ने थर्मामीटर निकाल कर देखते हुए कहा, "एक सौ तीन पाइण्ट चार।"

डाक्टर लतीफ़ी ने कहा, "मेरा अंदाज़ा भी यही था। शिहाब मियाँ किस्सा क्या है आखिर ?"

मगर कब्ल इसके कि वह डाक्टर लतीफ़ी को जवाब दे, बेगम साहबा को कमरे में दाखिल होते हुए देखकर कहा, "यह आपने क्यों जहमत फ़रमाई ख्वाहमख्वाह ?"

बेगम साहबा ने अपने को एक सोफे पर गिराते हुए कहा, "क्या यह कोई तमाशा है और मै बे टिकट आ गई हूँ ? कितना है बुखार बेटी !"

नीलोफ़र ने कमजोर आवाज मे कहा, "एक सौ तीन पाइण्ट चार।"

बेगम साहबा ने कहा, "इनके सर पर बर्फ़ और सिर्का रखवाओ और किसी से कहो कि लसूढ़े के पत्ते लाकर नमक के साथ इनके तलुए सहलाइये।"

डाक्टर लतीफ़ी ने कहा, "इससे पहले किसी से कहो कि मेरी डाक्टरी की जितनी सनदें हैं वह सब लाकर, मेरा नाम काट कर इनका नाम लिख दे। कमाल है साहब यानी डाक्टर मौजूद है और इलाज इन लेडी डाक्टर साहबा ने शुरू कर दिया।"

बेगम साहबा ने कहा, "मैं बड़ी ग्राजमूदा चीज बता रही हूँ । डाक्टर मैं बेशक़ नही हूँ मगर···।"

डाक्टर साहब ने बात काट कर कहा, "मगर टाँग ग्रड़ाना तो बहरहाल जानती ही हूँ।"

बेगम साहबा ने बुरा मान कर कहा, "तौबा है ग्राप से भी ! मैंने तो डाक्टरी दवाग्रो से ज्यादा इन घरेलू इलाजों से हमेशा फ़ायदा होते हुए देखा।"

डाक्टर साहब ने कहा, "तो बाबा कौन मना करता है, तुम ग्रपना मतब ग्रलैहदा खोल दो, मगर इस बेचारे को बख्श दो । शिहाब मियाँ मैं ज़रा ग्राप का सीना ग्रौर हलक भी देखना चाहता हूँ। हलक तो गालिबन ठीक होगा, मगर मेरा खयाल यह कि ग्राप कही से हवा लगा लाये हैं।"

नीलोफ़र ने कहा, "ग्रापका खयाल ठीक है डैडी । ग्राज कल रोज़ाना रात में दो-तीन मर्तबा हवाखोरी को निकलते है।"

डाक्टर साहब ने ताज्जुब से कहा, "क्या मतलब ? यानी रात में कई मर्तबा गोया बिस्तर से उठ-उठकर ?"

नीलोफर ने कहा, "जी हाँ। ग्रौर तकरीबन एक हफ़्ते से मुसलसल जाग भी रहे है, मुतलक (सर्वथा) नही सोये।"

डाक्टर साहब ने कहा, "फिर तो यह बुखार कह सकता है :

मै खुद ग्राया नहीं लाया गया हूँ"

मिर्ज़ा साहब ने दाद दी, "क्या कहना है ! क्या बर्जस्ता ग्रौर बरमहल मिसरा पढ़ा है ! सुभान ग्रल्लाह, सुभान ग्रल्लाह !"

डाक्टर साहब ने हलक देखने के बाद सीना ठोक-बजाकर ग्रौर ग्राला लगाकर देखा ग्रौर देखने के बाद कहा, "जी हाँ, मेरा खयाल दुरुस्त है। यह इनको इन्फ़्लुएंज़ा है जो खुद इन्ही का परवर्दा (पाला हुग्रा) है। बहरहाल मेरा बैग मँगाइये मैं इनको एक इन्जेक्शन तो दे ही दूँ। उसके बाद तफ़सीली नुस्खा लिखूँगा ग्रौर यह मजमा (भीड़) यहाँ से छट जाये तो ग्रच्छा हो।"

यह सुनकर सबसे पहले मिर्ज़ा साहब ग्रौर फ़रीद कमरे से निकल गये। उनके बाहर निकलते ही शिहाब ने नीलोफ़र से कहा :

"मुझे तो डर था कि ग्राप उन दोनों के सामने ही सब कुछ उगल देंगी।"

नीलोफ़र ने कहा, "खैर मेरे मुताल्लिक तो आपने यह राय कायम कर ही ली है कि मैं इन्तेहाई बेवकूफ़ हूँ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "आखिर बात क्या है ? मैंने खुद एहतियातन न पूछा था कि शबदारियों (रात को जागना) की आखिर ज़रूरत क्या पेश आ गई।"

फ़ारुक़ी ने कहा, "महज़ हिमाक़त और कुछ नही। हालाँकि इन हजरत को मालूम है कि मुसल्लह पुलिस कोठी की बाकायदा हिफ़ाजत कर रही है और अगर यह न भी जागें तो कोई मुजायका नहीं है। किस्सा असल मे यह है डाक्टर साहब कि अफजल ने फिर यह इरादा किया है कि वह किसी-न-किसी तरह खुदा-न-ख्वास्ता नीलोफ़र को उठा ले जायेगा। जब से इन हजरत ने यह सुना है रात को सोना ही छोड़ दिया है।"

डाक्टर साहब और उनसे ज्यादा बेगम साहबा के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं मगर डाक्टर साहब ने सँभल कर कहा, "इतला परेशानकुन ज़रूर है मगर इसके लिए आप सिर्फ अपनी ही जान पर क्यों खेल रहे है ! बारी-बारी सब ही को जागना चाहिए।"

फ़ारुकी ने कहा, "नही साहब किसी की जरूरत नही। इस वक़्त भी किसी को बुलाकर पूछ लीजिये कि रात कितने मुसल्लह जवान यहाँ ड्यूटी पर थे। अफ़जल तो क्या उस पहरे में परिन्दा भी पर नही मार सकता। मैने निहायत मुकम्मल इन्तेजाम कर दिया है।"

महम्मद हुसैन इस अर्से में डाक्टर साहब का बैग लेकर आ गया और डाक्टर साहब ने इन्जेक्शन देने की तैयारी करते हुए कहा, "शिहाब मियाँ आपको नही मालूम कि आपकी सेहत मेरे लिए किस कद्र जरूरी है। अपनी इस सेहत को आप हम लोगों की अमानत समझें और खुदा के लिए अपनी ज़िन्दगी से इस तरह न खेलें।"

बेगम साहबा ने कहा, "मुसीबत तो यही है कि हम लोगों को मुतमइन और बेफ़िक्र रखने के लिए ये हम लोगों को कुछ बताते भी तो नही, खुद ही तमाम परेशानियाँ अपनी अकेली जान पर झेल जाते है और इनका एक खयाल यह भी है कि अगर इनको कोई नुक़सान हो जायेगा तो जैसे हमको कोई परवा

ही न होगी ।"

डाक्टर साहब ने इन्जेक्शन देकर कहा, "मैं जाकर खुद दवा बनवाता हूँ अपनी निगरानी में । आप फिलहाल सोने की कोशिश कीजिए । अगर थोड़ी सी नींद आप लेलेंगे तो तबियत बहाल हो जायेगी मगर आपको बिस्तर से उठने की फिलहाल कतअन मुमानियत है ।"

अर्जमन्द ने कहा, "मैं रिवाल्वर भर कर बैठता हूँ, यह उठा बिस्तर से और मैने मारी गोली ।"

डाक्टर साहब के साथ बेगम साहबा भी चली आई और जब बाहर से नीलोफ़र को पुकारा तो वह भी जाते-जाते कई मर्तबा शिहाब को घूम-घूम कर देखती हुई बाहर निकल गई । शिहाब ने वाकई सोने की कोशिश करने के लिए आँखें बन्द कर ली ।

३०

*****

वहीदा की अजीबो-गरीब और मरअसरार शख्सियत का महम्मद हुसैन को अदाजा तो खैर पहले से था मगर आज यह तमाशा उसने खुद अपनी आँखों से देख लिया कि वहीदा की कोठी के अहाते में मोटरों की क़तारें खड़ी हैं । मालूम हुआ कि कोई निहायत अहम जल्सा हो रहा है जिसकी सदारत वहीदा ही कर रहा है । उस जल्से में अलावा शहर के मुअज़्ज़िजीन के कई आला हुक्काम भी मौजूद थे, मसलन आई० जी० साहब की गाड़ी उसने देखते ही पहचान ली । ग़ालिबन यह कोई नीम सरकारी किस्म का जल्सा था । इस जल्से के खत्म होने का इन्तेज़ार वहीदा के नदीमे-ख़ास उसी कमरे में कर रहे थे जिसमें नदीमों का

इजलास हुआ करता था। महम्मद हुसैन भी सीधा उसी कमरे में पहुंचा और सबके साथ वह भी इन्तेज़ार करने लगा। आखिर एक घण्टे के बाद यह जल्सा बर्खास्त हुआ तो वहीदा उस कमरे में आ सका। उसने आते ही थके हुए अंदाज़ से कहा, "ये नुमाइशी काम हमारे असल काम को भी खटाई में डाल देते हैं। सुबह से दिमाग़ चाट रहे थे ये लोग, मैं तो आजिज़ आ गया हूँ इन मुल्की और क़ौमी ख्वाहमख्वाह की ख़िदमतों से। मेरे असर से काम लेते है, मेरे रुसूख़ से काम लेते है, फिर यह कि मेरा रुपया भी चाहते है। इतना दिमाग खपाया और पाँच हज़ार का चेक भी देना पड़ा। बहरहाल खत्म तो हुई यह लग़्वियत (बकवास)।"

महम्मद हुसैन ने पूछा, "कुछ ग़ौर फ़र्माया आपने उस रिसाले पर ?"

वहीदा ने कहा, "यही तो रोना है कि ग़ौर करने का वक़्त ही नही मिलता। परसों से सर उठाने की मुहलत नहीं मिली है। कल था क्लब का सालाना डिनर जिसमें गवर्नर वगैरह सभी आ रहे थे, लिहाज़ा परसों से उसके इन्तेजामात मे मसरूफ़ रहा। रात डिनर भी था और सेपहर को छावनी में ऐट-होम भी था। रात का थका-हारा सो गया, सुबह से यह झगड़ा लिये बैठा हूँ और इस वक़्त मैं बिल्कुल इस मूड में नहीं हूँ कि इस नक़्शे और इस रिसाले पर ग़ौर करके दिमाग का रहा-सहा अर्क भी निचोड़ने बैठ जाऊँ। आज तो और इसको टालो, मगर कल से इन्शा अल्लाह बस यही एक काम होगा।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "क्या यह नही हो सकता कि इस नक़्शे की छः नकलें तैयार हो जायें ताकि हम अपनी-अपनी जगह इस पर गौर भी कर सकें और इस मीटिंग में तैयार होकर आया करें।"

वहीदा ने कहा, "अगर आप लोग यह न समझें कि मुझे आप लोगों पर भरोसा नहीं है तो मैं सिर्फ़ यह कहना चाहता हूँ कि मेरे मिजाज में जो एहति-यात है वह शायद इसकी इजाजत न दे कि मैं इस नक़्शे या इस रिसाले की नक़लें तैयार कराऊँ। जाहिर है कि मुझे आपकी तरफ़ से कोई अंदेशा नही हो सकता, मगर इस मामले में मुझे ख़ुद अपने ऊपर भी ऐतमाद नहीं है चुनांचे न तो वह रिसाला मेरे घर पर है और न वह नक़्शा। मैने ये दोनों चीजें ऐसी जगह रख दी है कि ख़ुद मेरे घर के किसी फ़र्द को उनकी हवा भी न लगे।

आपको मालूम है कि डाक्टर लतीफ़ी के वालिद मरहूम की एक गलती ने यह राज हम तक पहुँचा दिया है और इंशा अल्लाह यह दफ़ीना डाक्टर लतीफ़ी के खानदान को महरूम करके हमारे हिस्से में आ जायेगा। जिस ग़लती की तरफ़ मैने इशारा किया है वह यह थी कि अपने इस राज़ को वह मेरे वालिद मरहूम और अकमल साहब पर अफ्शा कर बैठे। नतीजा यह हुआ कि अपनी जान से भी हाथ धोये और यह राज भी उनके खानदान से बाहर निकल गया।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी नहीं, मैं अब खुद भी नही चाहता कि उस रिसाले या उस नक्शे की नकलें हम लोगों को मिलें। इसलिए कि अब तक हमको आपका ऐतमाद हासिल है, मगर इसके बाद मुमकिन है कि आपको हमारे ऐतमाद पर शक गुजरने लगे।"

वहीदा ने कहा, "कतई मुमकिन है। मुझे रस्मी तौर पर यही कहना चाहिये था कि अपने नदीमो पर मैं शक नही कर सकता। मगर वाक़या यह है कि मैं कोई सूरत चाहता ही नही कि पैदा हो जिससे हमारे इस बाहमी ऐतमाद को किसी किस्म का सदमा पहुँचे। मुमकिन है कि आप में से किसी की नियत में फ़ितूर पैदा न हो, मगर इसका इमकान तो बहरहाल मौजूद है कि मेरी नियत मे यह फितूर पैदा हो जाये कि मुझे आपका ऐतमाद ऐतमाद नज़र न आये और मै आपकी तरफ से मशकूक हो जाऊँ। लिहाजा फिलहाल तो आप सिर्फ यही एक शिकायत कर सकते है कि हमारे सरदार ने हम पर भरोसा नही किया। मै आपकी इस शिकायत को हक-बजानिब (उचित) समझकर न सिर्फ जवाब दूँगा कि वह एक अदम-ऐतमादी इसलिए है कि मैं आप पर ऐतमाद करना चाहता हूँ और ऐसी कोई सूरत मुनासिब नहीं समझता जो उस ऐतमाद को मुतज़लजल (कंपित) कर दे।"

वहीदा की इस साफगोई पर किसी को क्या एतराज हो सकता था। उसने अपने दिल की बात नदीमों से कह दी। महम्मद हुसैन ने भी उसकी इस पालिसी को निहायत मुनासिब समझ कर कहा, "आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। और हममें से किसी को इस पर बुरा न मानना चाहिए। मगर सवाल यह है कि फिर यह गुत्थी क्योंकर सुलझेगी ?"

वहीदा ने कहा, "इसका मतलब यह नहीं है कि मैं वह रिसाला या नक़्शा

अपने नदीमों से छिपाये रखूंगा। वह नक़्शा भी आपके सामने पेश होगा और वह रिसाला भी और सब सर जोडकर बैठेंगे और इस मुअम्मे को हल करेंगे। अलबत्ता यह नही हो सकता कि मैं इन कीमती दस्तावेज़ों की नकल आपके सुपुर्द कर दूं कि आप उसे घर ले जायें। ज़रा सी भूल-चूक से अगर उनमें से कोई एक चीज़ भी किसी और के हाथ लग गई तो हमारी सारी मेहनत पर पानी फिर जायेगा। कल जब हम सब जमा होंगे तो ये दोनों चीज़ें यहाँ मौजूद होंगी और जिस वक़्त हमारा जल्सा बर्खास्त होगा उसी वक़्त ये दोनों चीजें फिर उसी निहाँखाने में पहुँचा दी जायेंगी जिसका इल्म सिवाय मेरे किसी और को नही है। बात दरअसल यह है कि यह रिसाला और यह नक़्शा जिस क़द्र क़ीमती है उसका दरअसल आपको अदाज़ा ही नही है। इन दोनो चीजों की नक़्लें तैयार कराना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे इस ख़जाने की मैं छः-सात कुँजियाँ बनाकर आपको तक़्सीम कर दूं। जाहिर है कि यह बात कोई समझदार और मोहतात आदमी, जाइज और क़रीने-अक़्ल (बुद्धिमानी) नही कह सकता लिहाजा इस राज को कभी इस कमरे से बाहर ले जाने का इरादा न कीजिए।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "जी हाँ, मैं बिल्कुल समझ गया और आपकी इस एहतियात से मुझे यह दर्स भी मिल गया कि बाज़ राज ऐसे होते हैं जिनका इन्केशाफ़ (प्रागट्य) किसी पर भी ख्वाह वह कोई हो किसी कीमत पर न होना चाहिए। हद यह है कि आप अपने ख़ास नदीमों से भी मोहतात रहे।"

वहीदा ने कहा, "मैं अपने नदीमों से यह राज़ छिपा नही रहा हूँ। यह तो मुझे मालूम है कि मेरे नदीम इतने आलीज़र्फ़ हैं कि वह यह राज़ या यहाँ का कोई राज़ कभी किसी पर ज़ाहिर नही कर सकते मगर उस नक़्शे या उस रिसाले की नक़्लें आपको देने की सूरत मे हालात ये पैदा हो जाते है कि अभी मै सिर्फ एक ही नक़्शे और एक ही रिसाले की हिफ़ाजत कर रहा हूं। लेकिन उस सूरत में गोया छः नक़्शों और छः रिसालों की हिफ़ाजत का बोझ अपने सर ले लूँ और मुझे एतराज़ है कि यह मेरे लिए मुमकिन नहीं। लिहाज़ा इस किस्से ही को जाने दीजिए।"

महम्मद हुसैन ने पर तोलते हुए कहा, "तो फिर कल रही बात, अब मैं इज़ाज़त चाहता हूँ।"

वहीदा ने कहा, "नहीं, मुझे तुमसे अफ़जल और तफ़ज्जुल के मुताल्लिक़ बातें करना है। यह तो तुमको और मेरे तमाम नदीमों को मालूम हो ही गया होगा कि मै अफ़जल और तफज्जुल पर बिल्कुल ऐतमाद नहीं करता और खुद वह भी मुझसे इत्तेहादे-अमल (व्यवहार-ऐक्य) के लिए मजबूर है वर्ना उनका बस चले तो आज मुझको बेनकाब कर दे। मगर अब हालात कुछ और भी नज़ाकत इख्तियार कर गये है इसलिए कि मैने अफ़जल और तफ़ज्जुल से इन्कार कर दिया है कि मै नीलोफर को उसकी मर्ज़ी के खिलाफ अगवा कराने में उनकी कोई मदद न करूँगा और वह यह भी कह गये है कि अब वह ज़ाती तौर पर नीलोफ़र को उडा ले जाने की कोशिश करेगे।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "मेरी समझ में तो आता नही कि वह बगैर हमारी मदद के इस मुहिम मे क्योंकर कामयाब हो सकते है।"

वहीदा ने कहा, "खैर कामयाब हो जाने के तो सौ तरीकें है, मगर मैं दर-असल चाहता नही कि वह कामयाब हो। उनके कामयाब हो जाने मे हमारे लिए बहुत से खतरे पैदा हो जायेगे।"

एक नदीम ने कहा, "सरदार, हमारे लिए क्या खतरा हो सकता है? ज़ाहिर है कि हम तो उसमें दखल ही न देंगे।"

वहीदा ने मुस्कराकर कहा, "शायद आप कभी शतरंज नही खेले या खेले है तो अनाड़ियों की तरह खेले है जिनकी नजर ज्यादा-से-ज्यादा उसी चाल पर होती है जो वह चल रहा हो। मगर एक माहिर शातिर उस एक चाल से पैदा होने वाली अगली दस-पाँच चालो को भी जहन मे रखता है। चुनांचे यही हाल मेरा है और मै अफ़जल की इस मुहिम मे कामयाबी के बाद हालात पर भी गौर कर चुका हूँ जो सरासर हमारे खिलाफ जाते है।"

महम्मद हुसैन ने वहीदा की ताईद की, "मुझे सरदार की राय से पूरा इत्तेफाक है। अगर अफ़जल नीलोफर को ले जाने मे कामयाब हो गया तो डाक्टर लतीफ़ी के यहाँ की पूरी मशिनरी चल पडेगी और अफ़ज़ल की गिरफ़्तारी में ज़्यादा देर न लगेगी। गिरफ़्तार हो जाने के बाद अफ़ज़ल या तफ़ज्जुल पर कोई ऐतमाद नही किया जा सकता कि वह कब सारा राज़ उगल दे।"

वहीदा ने खुश होकर कहा, "शाबाश ! मुझे अपने इस फ़ैसले पर बड़ी मसर्रत है कि मैने तुमको अपने खास नदीमों में शामिल कर लिया । मिन जुमला कई पहलुओं के एक पहलू तुम बिल्कुल सही समझे हो । अफ़ज़ल की कामयाबी का दूसरा पहलू यह है कि इस तरफ़ से इत्मिनान कर लेने के बाद उनकी तवज्जो असल मुहिम यानी उस दफ़ीने की तरफ़ भी मबजूल (हटाना) हो सकती है और वह ख्वाहमख्वाह हिस्सा बटाने के लिए हमारे शरीक होना चाहेंगे । तीसरा पहलू यह है कि मै उनको किसी कीमत पर इस राज़ में इसलिए शरीक नहीं कर सकता कि वह न सिर्फ़ बेवकूफ़ हैं बल्कि निहायत सतही भी वाके हुए है । यह राज़ अगर उन तक पहुँच गया तो मैं उसको अफशा (प्रगट) हो जाने के बराबर ही समझता हूँ । बहरहाल फ़िलहाल हमारी हिक्मते-अमली सिर्फ़ यह होना चाहिये कि डाक्टर लतीफ़ी अपना फ़रीक़ सिर्फ अफ़जल और तफ़ज्ज़ुल को समझते रहें और हमारी तरफ़ उनका खयाल भी न जाये । दूसरी तरफ़ अफज़ल अपनी इसी कोशिश में इस तरह उलझा रहे कि उसे किसी और तरफ मुतवज्जे होने का मौक़ा ही न मिले ताकि उन दोनो को इसी एक क़िस्से में उलझाकर हम अपनी मंजिल का रास्ता हमवार करते रहें । मगर शर्त यह है कि अफजल या तफज्ज़ुल को यह शुब्हा भी न होने पाये कि हमारी जमाअत किसी सूरत से भी उसकी राह में हाइल (बाधक) हो रही है ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "यह काम आप मुझ पर छोड़ दें और उस तरफ़ से बिल्कुल इत्मिनान रखें ।"

वहीदा ने कहा, "यकीनन मुझको मुतमइन हो जाना चाहिये, इसलिए कि तुम्हारा ऐसा ज़िम्मेदार नदीम जिम्मेदारी अपने सर ले रहा है । लेकिन बात मेरे उसूल के खिलाफ़ है कि कोई काम बगैर उसकी तफ़सीलात सुने हुए मैं किसी पर छोड कर मुतमइन हो जाऊँ । लिहाज़ा अपने प्रोग्राम की तफ़सील मुझे पहले समझा दो कि तुम करना क्या चाहते हो ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "मुझे सिवाय इसके और कुछ नहीं करना है कि मैं शिहाब को सिर्फ़ यह बता दूं कि रात मैंने नीलोफ़र के कमरे के क़रीब कुछ परछाइयाँ सी देखी है । लिहाजा ज़रूरत इसकी है कि अपने दोस्त फ़ारुकी से कहकर पहरे का खास इन्तेज़ाम कराइये ताकि दुश्मन अपने मन्सूबे में कामयाब

न हो।"

वहीदा ने चन्द तरमीमों के साथ इस तजवीज़ को मंजूर कर लिया और नदीमों का यह जल्सा खत्म हो गया।

३१

****

शिहाब की बीमारी सिवाय इसके और थी ही क्या कि उसको दरअसल आराम की जरूरत थी और जो बेएहतियाती हो चुकी थी उसकी जरा एहतियात के साथ देखभाल जो हुई तो दूसरे ही दिन तबियत बहाल हो गई। मगर उन हजरत को कुछ जरूरत से ज्यादा बीमार बनाकर नीलोफ़र ने अपनी तीमारदारी के हौसले पूरे किये। डाक्टर लतीफ़ी ने यहाँ तक कहा कि नर्स रख दी जाये, वह निहायत बाकायदगी के साथ तीमारदारी करती रहेगी। मगर नीलोफर ने उसको भी न माना। इसलिए कि वह जानती थी कि यह हजरत नर्स को झाँसा देकर अपनी मनमानी करेंगे। दूसरे जिस रौब और दबदबे के साथ वह खुद उनको काबू में रख सकती है यह सूरत किसी नर्स या किसी तीमारदार से मुमकिन न होगी। चुनांचे आलम यह था कि शिहाब हलफ़ उठा-उठा कर कहता था कि मै अब बिल्कुल तन्दुरुस्त हूँ। मगर नीलोफर ने जहाँ आँख दिखाकर दवा पेश की उसको पीते ही बन पड़ती थी। क्या मजाल कि यह हज़रत बिस्तर से उठ तो जायें या मुकर्ररा वक़्त पर खाने या नाश्ते से इन्कार तो कर दें। उनके लिए तो नीलोफ़र का हुक्म यही था कि बस हुक्म की तामील करते रहिये। आख़िर उसने तक़रीबन रो देने के अंदाज़ से डाक्टर लतीफ़ी से कहा :

"डाक्टर साहब, इन्फ़्लुएंजा आया और रुख़्सत हो गया। मगर यह तीमारदारी ऐसी सख़्त है कि शायद ही मैं जाँबर हो सकूँ। ख़ुदा के लिये मुझे इससे निजात दिलाइये।"

डाक्टर लतीफी ने सिफारिश की, "नीली डार्लिंग, वाक़ई अब इतनी एहतियात की जरूरत नही है। इनको बिस्तर से उठने की इजाजत होनी चाहिये।"

नीलोफ़र ने आँखें गोल करके कहा, "नही डैडी, ऐसा गजब भी न कीजियेगा। यह अगर बिस्तर से उठे तो फिर इनका हाथ आना मुश्किल है। आप जिस दिन इनको दौड़ने की इजाज़त देगे उस दिन मैं इनको चंद कदम टहलने की इजाज़त दूँगी।"

डाक्टर साहब ने हँसकर मूँछें संभाली, "तुम बड़े जाबिर (निष्ठुर) तीमारदार हो। मेरा मतलब यह है कि अब इनको किसी परहेज की जरूरत नही।"

नीलोफर ने कहा, "मै जानती हूँ कि परहेज़ की ज़रूरत नही है, मगर परहेज की जरूरत का न होना और बदपरेहजी की इजाजत होना यह एक ही बात समझते है। ऐसे सरकश मरीजो के साथ यह रिआयत मुफीद नहीं होती।"

शिहाब ने कहा, "मैं सिर्फ यह चाहता हूँ कि मुझको अब यह यकीन दिलाया जाये कि मैं बीमार नही हूँ और अपनी सेहत की तरफ़ से जो बदऐतमादी मुझ में जबरदस्ती पैदा की जा रही है, वह अब खत्म कर दी जाये।"

नीलोफर ने कहा, "अच्छी बात है। आज से आपको इजाजत दी जाती है कि आप टहलते हुए खाने के कमरे मे चलिये और सब के साथ लंच खाइये।"

और यह कहकर उसने शिहाब को बैठने का इशारा ही किया था कि वह हज़रत एकदम खड़े हो गये और सबके साथ खाने के कमरे की तरफ़ रवाना हो गये जहाँ उस वक़्त सब ही मौजूद थे। चुनाचे मिर्ज़ा साहब ने उनको देखते ही कहा:

"माशा अल्लाह! माशा अल्लाह! 'यूसुफे-गुमगश्ता बाज़ आयद बकनआँ गम मख़ोर'।"*

---

* खोया हुआ यूसुफ़ कनआ (नगर विशेष) वापस आ गया है, चिन्ता न करो।

डाक्टर साहब ने कहा, "साहब बड़ी कोशिश से नीली को राज़ी किया है कि इस बेचारे को अब उठने भी दो.बिस्तरे-अलालत से।"

अर्जमन्द ने कहा, "डाक्टर साहब, यह जो हमारी हमशीरा-अज़ीज़ा है बी नीलोफर, खुदा इनको तीमारदारी से महफूज ही रखे तो अच्छा है। इनकी तीमारदारी तो बजाए खुद एक निहायत मुहलिक (अत्यन्त घातक) मर्ज़ है। मगर शिहाब को अपनी बेएहतियातियों की यह सजा मिलनी भी चाहिए थी।"

नीलोफर ने कहा, "शिहाब साहब पर मुनहसिर नही है, अगर खुदा-न-ख्वास्ता आपने यह इरादा किया तो आपके साथ भी यही सुलूक होगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "अजी मेरे बाप-दादा की तौबा जो मैं बीमार हूँ। मेरी शामत थोड़ी आई है कि आपकी मौजूदगी में बीमारी का इरादा करूँ।"

बेगम साहबा ने जो अब तक बड़ी मुहब्बत से शिहाब को देख रही थीं, फ़रमाया :

"जरा मुँह तो देखो इनका कितना सा निकल आया है दो ही दिन के बुखार में।"

शिहाब ने बैठते हुए कहा, "बुखार बेचारे पर तो ख्वाहमख्वाह का इल्ज़ाम है। मेरी यह गत बनाई है इस तीमारदारी ने। बुखार ने तो गालिबन तौबा कर ही ली होगी मगर मै भी कान पकड़ता हूँ कि आन्इदा कभी बीमार होने की जुरअत न करूँगा।"

नीलोफर ने कहा, "यह भी तीमारदारी का एक मुफीद पहलू निकला ? न आप अपनी सेहत को इस तरह नीलाम पर चढ़ाते न यह सजा भुगतना पड़ती।"

शिहाब ने एक तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए कहा, "अच्छा अब तो मैं यह आम का अचार रख सकता हूँ।"

नीलोफ़र ने अचार की प्लेट और भी दूर करते हुए कहा, "हरगिज़ नहीं, आप पहले यह सूप पियेंगे, उसके बाद मछली, फिर यह अचार वगैरा छोड़कर और जो चाहें आप खायें।"

अर्जमन्द ने अचार की प्लेट अपने सामने खिसकाकर कहा, "शुक्र है इस

वक़्त अचार का दुश्मन फ़ारुक़ी नही है । वह कमबख्त तो छोड़ता ही नहीं है अचार किसी और के लिए । मगर ताज्जुब यह है कि मिर्ज़ा साहब क़िब्ला को अचार से कुछ शौक़ नही ।"

मिर्जा साहब ने मुर्ग़ की टाँग भँभोड़ते हुए कहा, "बहुत शौक़ था बंदानवाज़ मुझे अचारो और चटनियो का बाँस तक का अचार खा चुका हूँ ।"

फ़रीद ने बड़ी मिस्कीनी से कहा, "आपका क्या है, क़ुतुब मीनार का अचार भी खा लेते तो कोई क्या कर लेता ।"

फ़रीद की तरफ़ से इस क़िस्म के ग़ैरमुतवक़्क़ो (अप्रत्याशित) फिक़रों पर उमूमन (साधारणतया) सब चौक पड़ते है । चुनाँचे इस वक़्त भी पहले तो सब मुतहैयर हो गये, उसके बाद पड़ा एक क़हक़हा । फिर डाक्टर साहब ने कहा, "मेरी समझ में यह नही आता कि फ़रीद मियाँ सिर्फ़ भाई साहब के मामले मे अपना ज़हानत क्यों सर्फ़ करते है ।"

नीलोफ़र ने कहा, "जी हाँ बड़े अब्बा पर इनको फ़िकरे चुस्त करना आते है ।"

मिर्जा साहब ने खिसियानी हँसी हँस कर फ़र्माया, "जी हाँ हम ही से सीखते है, हम ही को निशाना बनाते है । हमारी बिल्ली हम ही से म्याऊँ ।"

और एकदम नीलोफ़र ने झपट कर शिहाब के हाथ से एक प्लेट छीनते हुए कहा, "अच्छा यानी आपने चोरी भी शुरू कर दी है । सब को बातो में मसरूफ़ देखकर झट से फिर अचार उठा लिया ।"

डाक्टर साहब ने सिफारिश की, "अरे भई दे दो थोडा सा अचार मुँह का मजा बदलने के लिए । मैं बहैसियत डाक्टर के जिम्मेदारी लेना चाहता हूँ ।"

नीलोफ़र ने फिर भी अचार हटाते हुए कहा, "तो कौन सा फ़राइज़ में दाखिल है अचार खाना । मैं उसको मेज पर से हटाये ही देती हूँ ।"

शिहाब ने बड़ी आजिज़ी से पूछा, "अच्छा कम-से-कम यही बता दीजिये कि अचार की इजाज़त आखिर कब तक मिल जायेगी । मैं अपने को उस वक़्त तक सेहतयाब समझ ही नहीं सकता जब तक अचार का परहेज़ जारी है ।"

नीलोफ़र ने कहा, "तो न समझिये आप । मगर अभी चंद दिन इस क़िस्म की चीज़ें आपको हरगिज़ न मिलेंगी ।"

बेगम साहबा ने कहा, "शिहाब मियाँ, मैं तुम्हारे लिए निहायत नफ़ीस अचार खुद अपने हाथ से डालूँगी, तुम इत्मिनान रखो।"

शिहाब ने कहा, "मगर आप देख रही है कि यह परहेज़ से ज़्यादा फ़िरकावाराना तास्सुब मालूम होता है कि बस वही एक चीज़ न खाओ जो असल खाने की होती है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "क़िस्सा दरअसल यह है कि चूँकि यह कह दिया गया है कि यह चीज़ खाने की इजाजत नही है लिहाज़ा रह-रहकर उसी के खाने को जी चाहता होगा। बेहतर है शिहाब मियाँ अब आपके लिए यह तकलीफ़ भी मुझ ही को उठाना पड़ेगी कि मै डालूँगा आपके लिए अचार अगर आप भूल न जायें तमाम अचार तो मेरा ज़िम्मा है।"

अर्जमन्द ने बड़ी सजीदगी से पूछा, "यानी आपके डाले हुए अचार का असर हाफ़िज़े पर होता है ?"

डाक्टर साहब के हाथ से काँटा छूट गया,"क्या बात कही है अर्जमन्द मियाँ भूल न जायें के बाद कितना वरमहल सवाल है !"

इसी वक़्त बैरे ने तश्तरी में एक लिफाफ़ा लाकर नीलोफ़र के सामने पेश कर दिया। नीलोफ़र ने नेपकिन से हाथ साफ करके लिफ़ाफ़ा लेकर खोला पहले खुद पढा फिर मुस्करा कर कहा, "सुरैया का खत है, लिखती है: 'प्यारी नीली, शायद तुमको याद न हो कि कल है पन्द्रह दिसम्बर यानी बिरजीस की सालगिरह का दिन जिसे वह उमूमन छिपाया करती है। चुनाँचे इस मर्तबा भी उसने छिपाया है यह दिन। मगर मैंने और कौकब ने यह प्रोग्राम बनाया है कि कल हम सब यानी तुम, शिहाब, फारुकी साहब, अर्जमन्द साहब, डाक्टर चचा, चची, मिर्जा साहब और फरीद मियाँ सब मिलकर चार बजे उसके घर पर हमलावर हों और ज़बरदस्ती अपनी पार्टी करके उसको तोहफ़े दें। लिहाज़ा प्रोग्राम यह है कि कौकब को लेकर मैं तीन बजे के करीब तुम्हारे पास आजाऊँगी, फिर सब साथ चलेंगे। अब तो शिहाब साहब भी अच्छे हैं, वह जरूर चलें।"

डाक्टर साहब ने कहा, "ज़रूर जाना चाहिये। यह क्या वाहियात है कि वह अपनी सालगिरह छिपाती है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "वह कहती है कि सालगिरह की पार्टी में किसी को बुलाने के मानी यह होते हैं कि तोहफ़ा लेकर आओ और एक प्याली चाय की पीजाओ।"

बेगम साहबा ने कहा, "यह भी अजीब बात है हालाँकि वह खुद नीली की सालगिरह में निहायत कीमती तोहफे हमेशा दिया करती है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "खैर यह बदला देने का सवाल नहीं है, मगर जाना जरूर चाहिए सब को। लिख दो उसको कि प्रोग्राम बिल्कुल ठीक है हम सब चलेंगे।"

नीलोफर ने कहा, "देखो बैरा, उस आदमी को रोको मै अभी जवाब देती हूँ।"

शिहाब ने मानीखेज नजरों से अर्जमन्द की तरफ देखा और कुछ कहना ही चाहता था कि अर्जमन्द ने उसको घूर कर मना किया और आँखें निकालना नीलोफ़र ने देख लिया और वह जेरेलब मुस्करा कर रह गई तो शिहाब ने कहा, "मुझको तो गालिबन अभी इजाजत मिलेगी नही वहाँ जाने की।"

डाक्टर साहब ने कहा, "नहीं नहीं अब कोई मुजायक़ा नहीं है। तुम शौक से जा सकते हो और हाँ वह रुबी को लिखना भूल गई है शायद। बहर-हाल वह भी जायेगी।"

नीलोफर ने अर्जमन्द से कहा, "आपको तो कोई उज्र नही है ? मै आप की तरफ से भी लिख दूँ ना कि तशरीफ ले जायेंगे।"

डाक्टर साहब ने बगैर समझे हुए कहा, "यह भी कोई पूछने की बात है जायेंगे कैसे नहीं यह ?"

मगर अर्जमन्द नीलोफ़र की इस चोट को समझ चुका था और सिवाय मुस्कराकर चुप हो रहने के बेचारा कर भी क्या सकता था। नीलोफर ने मेज़ से उठकर उस खत का जवाब लिखा और सुरैया के मुलाजिम को देकर फिर महफ़िल में आते हुए कहा :

"आज हम सबको मिलकर चलना चाहिए तोहफ़े खरीदने के लिए। अब डैडी कह देंगे कि मुझे तो फ़ुर्सत नही।"

डाक्टर साहब ने यह न कहा बल्कि यही तै हो गया कि सेपहर को सब

मिलकर तोहफे खरीदने जायेंगे। शिहाब खुश था कि इसी बहाने आज उसको बाहर जाने मौका का तो मिलेगा।

३२

****

ऐन उस वक़्त जब कि बिरजीस अपने अज़ीज़ों की एक मुख्तसर-सी महफिल में सजी-बनी केक काटने के लिए बढ़ रही थी, एकदम से उसकी कोठी के कम्पाउण्ड में तीन कारें सनसनाती हुई आ मौजूद हुईं और सबकी तवज्जो उन कारों की तरफ हो गई। सबसे ज़्यादा हैरान खुद बिरजीस थी मगर जब उसने डाक्टर साहब की कार पहचानी तो पाँव तले की ज़मीन निकल गई और उसे कुछ ऐसा महसूस हुआ जैसे वाकई वह चोरी करती हुई अचानक पकडी गई हो। वह अभी हेरान खडी हुई थी कि नीलोफर, सुरैया, कौकब और रुबी कहकहे मारती हुई उसकी तरफ़ झपटीं और नीलोफर ने आगे बढकर कहा :

"कहो गुइयाँ, कैसा छापा मारा है ऐन वक़्त पर ?"

सुरैया ने कहा, "यह केक काटने जा रही थी, देखलो छुरी हाथ ही में है।"

कौकब ने कहा, "**चे दिलावरस्त दुज़्दे-बकफ़ चिराग़ दारद**।"

बिरजीस ने ज़रा बनकर कहा, "मगर तुम सबको बुलाया किसने था ? यह तो अच्छी ज़बरदस्ती है कि मान-न-मान-मै-तेरा-मेहमान।"

और उसी वक़्त उसने बेगम साहबा को मोटर से उतरते हुए और डाक्टर

***कितना साहसी चोर है कि हाथ में दिया लेकर आया है।**

साहब को उनको उतारते हुए देखकर कहा, "लो भला गज़ब खुदा का, मुझे ज़लील करने के लिए सब ही को लेकर आई हो।"

नीलोफ़र ने उसके कान में कहा, "सब ही को नहीं उनको भी।"

बिरजीस ने उसको धक्का देते हुए कहा, "'उन' होगे वह तेरे। मगर सूझी क्या तुम सबको ?"

इतनी देर मे डाक्टर साहब मय बेगम साहिबा के क़रीब आ चुके थे। शिहाब फारूकी और अर्जमद के पीछे थे। मिर्ज़ा साहब और फ़रीद सबके पीछे थे। डाक्टर साहब ने आगे बढ़कर मूँछो का ताव दुरुस्त करते हुए कहा, "क्यों साहबज़ादी, यह छिप-छिपकर साल गिरहे मनाई जा रही है।"

उन सबको देखकर बिरजीस के वालिद और वाल्दा भी खैरमक़दम के लिए दौड़कर आ चुके थे। बिरजीस की वाल्दा ने कहा :

"आप सबने बहुत ही अच्छा किया। इन साहबज़ादी को यही सज़ा देनी चाहिये थी जो आपने दी है। तीन-चार दिन से इसकी खुशामद कर रही थी कि कम-से-कम आप सबको तो बुला ले, मगर एक जो सुनी हो इसने मेरी। कहती है कि मुझे शर्म आती है।"

शिहाब ने कहा, "है भी वाकई शर्म की बात कि उम्र बढ़ती जा रही है और अक़्ल घटती जा रही है।"

बिरजीस की वाल्दा ने कहा, "शिहाब मियाँ सबसे ज़्यादा खुशी तुम्हारे आने की हुई है मुझे। खुदा का शुक्र है अब तो तबियत अच्छी मालूम होती है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "बहन, इनको आज ही बिस्तरे-अलालत छोड़कर घर से बाहर निकलने की इजाजत मिली है। अरे भई लाहौलवला-कूवत ! पहले अपने मेहमानों से तार्रुफ़ तो हासिल कीजिये। यह हैं फ़ारूकी साहब आपके शहर मे पुलिस के आला ओहदेदार। और आप हैं अर्जमंद साहब स्याल-कोट में डी० एस० पी० लगे हुए है। शिहाब मियाँ के दोनों दोस्त हैं और मेरे अज़ीज़। भाई साहब और फ़रीद मियाँ से आप वाक़िफ़ ही हैं।"

बिरजीस के वालिद ने सबसे हाथ मिलाया और सबको महफ़िल में ले जाकर बिठाया, मगर बिरजीस को ये लड़कियाँ अपने साथ घसींट ले गईं और

अलैहदा ले जाकर नीलोफ़र ने कहा, "तुम सिर्फ़ इसी को सजा समझ रही हो कि हम सबने अचानक छापा मारा है, हालाँकि सज़ा दरअसल दूसरी है, जो निहायत बामशक़्क़त सज़ा होगी। हम सब दरअसल आये हैं अर्जमंद साहब की निस्बत लेकर।"

बिरजीस ने सचमुच परेशान होकर कहा, "खुदा के लिए यह गजब भी न करना।"

रुबी ने कहा, "क्यों इसमें गजब की क्या बात है ?"

सुरैया बोली, "जिस घर मे बेरी होती है ढेले आते ही है।"

कौकब ने कहा, "इसको कहते है मन चाहे मुँडिया हिलाये। दिल में लड्डू फूट रहे है और जाहिर कर रही है यह घबराहट।"

बिरजीस ने इस मजाक से आजिज आकर कहा, "भई खुदा के लिए अब रहम करो। मुझको काफ़ी सजा मिल चुकी है और आइन्दा के लिए मैं कान पकड़ती हूँ। मगर लिल्लाह (खुदा के लिए) यह कयामत न कर बैठना।"

नीलोफ़र ने कहा, "आखिर एक-न-एक दिन तो यह करना पडेगा, फिर आज ही क्यो न निस्बत दे दी जाये।"

बिरजीस ने सजीदगी से कहा, "तुमको नही मालूम नीली। वह जो सूखी-सहमी-सी एक बडी बी खानदान नुमा पानदान लिये बैठी है यह मेरी फूफी हैं और अपने लाडले के लिए मेरी जान की गाहक बनी हुई है। उनके सामने अगर यह जिक्र छिड गया तो बात न जाने कहाँ-से-कहाँ पहुँच जायेगी।"

नीलोफर ने कहा, "दम निकले तुम्हारा ! हम इस वक्त इस इरादे से नहीं आये है मगर यह तै है कि आना जरूर पड़ेगा इस इरादे से जरूर। अर्जमद साहब बुरी तरह फ़रेफ़्ता (रीझे हुए) है। तुम इसका अदाजा उस तोहफे से कर लेना जो वह तुम्हारे लिए लाये है।"

बिरजीस ने कहा, "बस मैं इसलिए सालगिरह की तकरीब की मुखालिफ़ हूँ कि ये तोहफ़े जो आने लगते है।"

उसी वक़्त बिरजीस की वाल्दा ने कमरे में आकर कहा, "माशा अल्लाह कितना अच्छा वक़्त निकाला है अपनी महफ़िल अलग जमाने का ! वहाँ सब इन्तेज़ार कर रहे हैं। चलकर केक तो काट दो, देर हो रही है।"

और ये लड़कियाँ बिरजीस को लेकर महफिल में आ गईं जहाँ बिरजीस ने उन्नीस मोमबत्तियाँ बुझाकर केक काट दिया। सारी महफ़िल तालियों से गूंज उठी और डाक्टर साहब ने उठकर अपना तोहफा यानी नेकलेस बिरजीस के गले में डाल दिया। उसके बाद यके-बाद-दीगरे सबके तोहफे देखे गये। फारूकी के कटलरी के बक्स और अर्जमद के लाये हुए काफ़ी-सेट को सबने बहुत पमन्द किया। मगर बिरजीस की वाल्दा ने कहा :

"सच तो कहती है बिरजीस कि सालगिरह की किसी को इत्तला ही न होनी चाहिये वर्ना ऐसे-ऐसे कीमती तोहफे लोग लेकर आ जाते है।"

बिरजीस के वालिद ने कहा, "मेरे खयाल में सालगिरह के तोहफे का मतलब गलत समझ लिया गया है। यह तोहफा इतना कीमती तो किसी सूरत से न होना चाहिये कि देने वाला जेरबार (भार सहे) हो और वसूल करने वाला ज़ेर बारे-एहसान।"

डाक्टर साहब ने डाँटा, "अपने नज़दीक आपने गोया बहुत ऊँची बात कही है। शर्म भी नहीं आती ऐसी बात करते हुए।"

बेगम साहबा ने कहा, "तोहफे की क्या हैसियत है, देखने की चीज तो मुहब्बत है।"

बिरजीस की वाल्दा ने कहा, "मुहब्बत से किसको इन्कार है, मगर तोहफ़ा दस-पाँच रुपये से ज़्यादा का होना ही नही चाहिये।"

डाक्टर साहब ने फिर डाँटा, "भई यह क्या मोहमल जिक्र छिड़ गया है। खत्म करो इस किस्से को और चाय मँगवाओ हम सब के लिए। उसके बाद कौकब से गाना सुना जायगा।"

और जब चाय आ गई तो बिरजीस के वालिद ने मौका निकाल कर डाक्टर साहब के करीब जगह हासिल कर ली और सरगोशी में उनसे कहा, "भाई साहब, आप समझे नहीं मेरी बात। आपने जो नेकलेस दिया है उस पर तो मैने कुछ नहीं कहा, मगर चाँदी के तीन बर्तनों के साथ काफ़ी-सेट जो दिया गया है ज़ाहिर है डेढ सौ से कम का न होगा। आखिर इतने क़ीमती तोहफे की क्या ज़रूरत थी ? फिर यह कि अर्जमंद साहब से हमारे कौन से ऐसे ताल्लुकात हैं।"

डाक्टर साहब ने कहा, "हैं आप भी अजीबुल खलक़त। अगर इस बात को

मैं नामुनामिब समझता तो खुद ही न होने देता। बस अब आप खामोश बैठिये।"

इसी वक़्त बिरजीस मिर्जा साहब से कह रही थी, "मुझे सब से ज़्यादा आपका तोहफ़ा पसन्द है, मगर आपकी इत्तला के लिए अर्ज़ कर दूँ कि ज़नाना और मर्दाना रूमालों में जरा फ़र्क होता है। बहरहाल अब आप फरीद मियाँ की सालगिरह पर जनाना रूमाल तोहफ़े मे देने का वादा कर लीजिये वर्ना मैं कहती हूँ सबसे कि मुझे मर्दाना रूमाल दे गये है।"

मिर्जा साहब ने जल्दी से कहा, "रहा वादा मगर इस वक़्त मुझको नक्कू न बनाओ।"

चाय का दौर अभी चल ही रहा था कि इधर-उधर से सिमट कर ये सब लड़कियाँ एक मेज़ पर सबसे अलैहदा यकजा हो गई तो नीलोफ़र ने कहा :

"तौबा है अर्जमन्द साहब से भी, किसी तरह बिरजीस पर से नजरें हट ही नही रही है।"

कौकब ने कहा, "नही तो, वह बेचारे तो बड़ी मुश्किल से सबकी नज़रें बचा कर देख लेते है ?"

सुरैया ने कहा, "तुम लोग उनको कह रही हो और असल ताबे-मोहमल फ़रीद को देखती ही नही हो किस कदर गारतगर (लुटेरे)बन कर आये है। हाय यह कमख्वाब की शेरवानी !"

बिरजीस ने कहा, "अच्छा ठहरो मै उनके पास जाती हूँ ?"

यह कहकर वह उठी और केक की तश्तरी लिए हुए फ़रीद के पास जा पहुंची, "आपको तकल्लुफ़ करने के लिए मेरा ही घर रह गया था ?"

फ़रीद ने शर्मा कर कहा, "अब भी पूछा तो मेहरबानी की।"

बिरजीस ने कहा, "खुदा के लिए शेर-वेर न पढिये, लोग न जाने क्या समझेंगे। अच्छा यह लीजिये इस केक पर जो गुलाब का फूल है यह आप ही के लिए है।"

फरीद ने शर्माकर वह गुलाब का फूल उठाकर अपनी प्लेट में रखा ही था कि मिर्ज़ा साहब ने बुलन्द आवाज़ से कहा:

"नोश फर्माइये ना ताकि हम कह सकें :

लिये फिरती है बुलबुल चोंच में गुल।"

और सबकी तवज्जो फ़रीद की तरफ़ हो गई। मिर्ज़ा साहब बदस्तूर फ़िकरे चुस्त कर रहे थे। "बखुदा गुलदान मालूम होंगे साहबज़ादे ज़रा चख कर तो देखो यह फूल।"

और इस पर वह फ़र्माइशी क़हकहा पड़ा है कि फरीद बेचारा वाकई झेंप कर रह गया। डाक्टर साहब ने कहा :

"भाई साहब, आप भी बच्चों के मुँह लगते है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "ज़रा मुलाहिजा फ़र्माइये कि सारे केक में वरखुरदार को पसंद क्या आया शकर का फूल। अजीब गुलदस्ता वाके हुए है यह बरखुरदार भी।"

अब जो फ़रीद ने बेकसी के साथ शिहाब की तरफ़ देखा तो शिहाब ने मिर्ज़ा साहब को मना किया कि क्यों गरीब को आप सता रहे है। यह सिलसिला खुदा जाने कब तक तूल खेंचता मगर कौकब गाने के लिए बैठ चुकी थी लिहाजा सब खामोश हो गये।

३३

****

वहीदा के यहाँ क्या हो रहा है, अफ़ज़ल और तफ़ज्जुल के क्या रग है और महम्मद हुसैन क्या कर रहे हैं इन तमाम हालात पर शिहाब की बीमारी ने एक किस्म का पर्दा-सा डाल रखा था। बावजूद बीमारी के शिहाब ने कई मर्तबा यह ज़िक्र छेड़ा मगर कभी तो उसको फ़ारूक़ी ने डाँट दिया, कभी अर्ज-

मन्द ने इस ज़िक्र को टाल दिया। हद यह है कि महम्मद हुसैन से भी जब उसने पूछना चाहा तो उसने भी कुछ इसी क़िस्म के जवाब दिये कि इन मामलात में उलझने के लिए आप हम तन्दुरुस्तों को छोड़िये। आप फ़िलहाल अपने को तन्दुरुस्त करने की कोशिश कीजिये। मगर अब जबकि शिहाब तन्दुस्त हो चुका था उसने महम्मद हुसैन को ऐसे मौक़े पर घेरा जब फ़ारूक़ी और अर्जमन्द भी मौजूद थे कि अब वह कम-से-कम यह तो बता दे कि हम सब कितने पानी मे है और ग़नीम (शत्रु) के कैंप मे हमारे ख़िलाफ़ क्या हो रहा है। महम्मद हुसैन ने इत्मिनान से बैठ कर जवाब दिया :

"वहाँ होना क्या है एक तो वह नक़्शा था ही एक उक़्दा, उस पर तुर्रा यह कि उस रिसाले ने सब को चकरा रखा है। बहरहाल अभी तक मुझको मौका नहीं मिला है कि मैं वह नक़्शा या उसकी नक़ल उड़ा सकूँ।"

फ़ारूकी ने बात काटकर कहा, "देखिए महम्मद हुसैन साहब, कही यह गलती भी न कर बैठियेगा कि बह नक़्शा ही आप उड़ा लायें। अगर वह नक़्शा आपने गायब किया तो वहीदा एण्ड पार्टी मुतमइन न रह सकेगी। मस्लेहत (समयोचित्य) यही है कि असल नक़्शा उसी के कब्जे मे रहे और आप सिर्फ़ उसकी नकल उडा लायें।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "क्या यह मुनासिब न होगा कि वह नक़्शा उडाकर उसकी जगह रिसाले की तरह एक जाली नक़्शा भी वहाँ रख दिया जाये ?"

शिहाब ने कहा, "इसकी क्या जरूरत है। उनको गुमराह करने के लिए वह रिसाला ही काफी है। अगर उस रिसाले की मदद के बगैर उस नक़्शे को समझना मुमकिन नही है तो असल नक़्शा अगर उनके क़ब्ज़े में रहे तो भी कोई मुज़ाइक़ा (हानि) नही है।"

अर्जमन्द ने कहा, "सिर्फ यही नही बल्कि जाली नक़्शा वहीदा और उसके गुर्गों को चौकन्ना भी कर सकता है। अब जब कि वह असल नक़्शे को देख चुके हैं उस नक़्शे को वहाँ से गायब करना या उसकी जगह दूसरा नक़्शा रखना किसी तरह क़रीने-अक़्ल (बुद्धिमत्तापूर्ण) नहीं।"

महम्मद हुसैन ने एतराफ़ किया, "वाकई मै अजीब बेवकूफ़ी की बात कह गया। उस रिसाले की रोशनी में वह उस नक़्शे से कोई काम ही नहीं ले

सकते तो ख्वाहमख्वाह हम यह जाली नक़्शा रखने की कोशिश ही क्यों करें।"

फ़ारूकी ने कहा, "कुछ अफ़जल और तफ़ज्जुल के मुताल्लिक भी मालूम हुआ कि वह किस चक्कर मे है ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "उनकी तरफ़ से मुझको इत्मिनान है। अगर आप की पुलिस इसी तरह मुस्तैदी से इस कोठी की निगरानी करती रही तो उनकी दाल गलना मुश्किल है। ये दोनो भाई दरअसल खुद कुछ भी नहीं है। उनकी असल ताकत तो वहीदा था और उसने साफ़ इन्कार कर दिया है कि वह इस अगवा मे कोई मदद न करेगा अलबत्ता उनसे यह जरूर कह दिया है कि अगर वह खुद यह कोशिश करेंगे तो उसकी तरफ़ से कोई रुकावट पैदा न की जाएगी। मगर उसने मुझ से खास तौर पर यह भी कह दिया है कि जिस तरह भी हो अफ़ज़ल और तफज्जुल को अपनी इस कोशिश मे कामयाब न होना चाहिए।

अर्जमन्द ने कहा, "मानना पडता है कि यह शख्स जिसका नाम वहीदा है निहायत जहीन आदमी है।"

फारूकी ने कहा, "मै अब तक नही समझा कि वह यह क्यों चाहता है और आपने उसकी ज़हानत की जो तारीफ़ की है वह क्यो की है।"

शिहाब ने कहा, "ताज्जुब है कि यह मोटी-सी बात तुम्हारी समझ में न आ सकी। दरअसल वहीदा यह चाहता होगा कि अफ़जल और तफ़ज्जुल अपने इस मक़्सद मे कामयाब होकर वहीदा की इस मुहिम मे मुखिल (बाधक) न हों।"

महम्मद हुसैन ने खुश होकर कहा, "आप बड़ी जल्दी बात की तह को पहुंचते है। वाकई उसकी मस्लेहत यही है वह चाहता है कि ये दोनों भाई इसी बखेड़े मे उलझे रहे और उनको इस मुहिम की तरफ मुतवज्जे होकर अपना हिस्सा बटाने का होश ही न आये। दूसरी बात यह है कि वहीदा को उन दोनों भाइयों पर भरोसा भी नही हे। वह दोनों को निहायत सतही और खामकार समझता है और उसका खयाल यह है कि अगर अफ़जल और तफ़ज्जुल नीलोफ़र बीबी को ले जाने में कामयाब हो गये तो आप लोगों की तरफ़ से पुलिस की मदद के साथ बराहेरास्त सरगर्मियाँ शुरू हो जायेंगी जिनका नतीजा यह होगा कि अफ़ज़ल और तफ़ज्जुल बहुत जल्द गिरफ़्तार हो जायेंगे और गिरफ़्तारी

के बाद पुलिस को इसमें जरा भी दिक्कत महसूस न होगी कि वह उन दोनों से सारा राज उगलवाले। वह दरअसल यह चाहता है कि आप लोग अपना दुश्मन अफ़जल और उसके भाई को समझते रहें और आप में से किसी का ज़हन खुद उसकी पार्टी की तरफ़ न जाये। अफ़ज़ल और तफ़ज्जुल को भी वह चाहता है कि वह सिर्फ़ इसी कोशिश में उलझे रहे ताकि उनको असल मुहिम की तरफ़ मुतवज्जे होने और दख़ल दरमाकूलात (अनुचित हस्क्षेप) करने का मौक़ा ही न मिले। मगर साथ-ही-साथ वह यह भी नही चाहता कि वे दोनों भाई गिरफ़्तार हो जायें।"

शिहाब ने कहा, "वाक़्या तो यह है कि ये दोनो भाई वहीदा बेचारे के लिए साँप के मुँह की छछूंदर बन के रह गये है कि न उगला जाये न निगला जाये।"

अर्जमन्द ने हँसकर कहा, "मै इस 'वहीदा बेचारे' की दाद दिये बगैर नहीं रह सकता। किस दिलसोजी से जनाब ने उसको बेचारा कहा है।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "शिहाब मियाँ ने समझा बिल्कुल ठीक है कि वहीदा अजीब उलझन मे मुब्तिला है इन दोनों की वजह से। छोड़ इनको नहीं सकता और भरोसा इन पर नही कर सकता। अगर ये दोनों भाई चाहे तो आज वहीदा का सारा भाँड़ा फोड़ सकते है मगर खुद उनका ज़बरदस्त राज़ वहीदा के पास है कि ये वहीदा से बिगाड़ भी नही सकते। वर्ना जिस वक़्त वहीदा ने इस अगवा मे मदद देने से इन्कार किया है, उनका बस चलता तो वह वहीदा की सारी कलई खोलकर रख देते मगर वह भी मजबूर है।"

शिहाब ने कहा, "वह मजबूरी तो तुम बता चुके हो कि अगर वहीदा चाहे तो इन तीनों पर कत्ल का मुकद्दमा चला सकता है और ये अपने को उस इल्लज़ाम से किसी तरह बचा भी नहीं सकते मगर खुद वहीदा के लिए सिवाय इसके और क्या मजबूरी है कि ये दोनों भाई उसकी चन्द मुजरिमाना सरगर्मियों से वाकिफ़ हैं।"

अर्जमन्द कहा, "फ़र्ज कर लीजिये कि यही सही तो भी यह कोई मामूली बात तो नहीं है। वहीदा का सारा कारख़ाना इस राज़ के अफ़शा होते ही तितर-

बितर हो सकता है।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "इन दोनों भाइयों को वहीदा दरअसल अपना ही आदमी समझता था और उसके बहुत से राज़ उन दोनों को भी मालूम हैं बल्कि मुझे तो हैरत है कि वहीदा के ऐसे मोहतात और खतरनाक हद तक समझदार आदमी ने उन दोनों भाइयों को अपने से करीब ही क्यों किया।"

शिहाब ने कहा, "इसके लिए वह मजबूर था। इसलिए कि यह राज़ दर-असल उन दोनों भाइयों को और खुद वहीदा को विरसे में मिला है। डाक्टर साहब के वालिद मरहूम ने अफ़ज़ल और तफ़ज्जुल के बाप को अपना राजदार बना लिया था। अगर यह राज़ सिर्फ़ वहीदा पर आश्कार (प्रकट) होता तो वह ऐसा नासमझ न था कि उन दोनों को अपना हमराज़ बनाता बल्कि मैं तो इसीको वहीदा का कमाल समझता हूँ कि उसने अब तक इन दोनों भाइयों से इस राज़ को बचाया है और यह वाक़्या है कि अगर ये दोनों भाई इस राज़ से आगाह हो जायें तो बक़ौल वहीदा के इस राज़ के अफ़्शा होने में ज़रा भी देर न लगे।"

अर्जमन्द ने मौज़ू (विषय) बदल कर कहा, "मगर जनाब महम्मद हुसैन साहब किब्ला, यह वाज़े रहे कि मेरी रुख्सत शैतान की आँत नही बन सकती। मैं चाहता था कि अपनी इस रुख्सत से पूरा फ़ायदा उठाऊँ, मगर अभी तक आप नक़्शे की नक़ल ही हासिल नही कर सके।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "क्या आपका खयाल है कि मुझको खुद इसकी फिक्र न होगी। मगर अब तक मुझको मौका नहीं मिला है। परसों से वह नक़्शा सबके सामने पेश हो रहा है और ग़ालिबन सबसे ज्यादा ग़ौर से उसको मैं ही देख रहा हूँ। बहरहाल अब यह सिलसिला शुरू हुआ है तो इन्शा अल्लाह बहुत जल्द इसका मौका भी मिल जायेगा कि मैं उसकी नकल हासिल करलूं। थोड़ा-बहुत तो अब भी मेरे ज़हन में है मगर मैं महज़ हाफ़िज़े (स्मरण-शक्ति) और याददाश्त पर भरोसा करना नहीं चाहता।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "जी नहीं, याददाश्त और हाफ़िज़े पर भरोसा करना भी नहीं चाहिये। मुमकिन है कि इस तरह हम किसी ग़लत रास्ते पर लग जायें। मैं तो इसका क़ायल हूँ कि 'देर आयद दुरुस्त आयद'। (विलंब का कार्य

ही ठीक होता है ।)"

इसी वक़्त नीलोफ़र एक भूचाल की तरह कुछ कुर्सियों से टकराती, कुछ मेज़ों से उलझती कमरे में नाजिल हो गई :

"शिहाब साहब, मैने डैडी और ममी को राज़ी कर लिया है कि वह बाक़ायदा अर्जमन्द साहब की निस्बत लेकर कल ही बिरजीस के घर जायेंगे ।"

अर्जमन्द ने सँभलकर बैठते हुए कहा, "यानी ख्वाहमख्वाह भी और सवाल यह है कि आपने अपने डैडी और ममी से कहा क्या है ।"

नीलोफर ने बड़ी मासूमियत से कहा, "मैंने सच-सच सब कुछ कह दिया है कि अर्जमन्द साहब मेरे पीछे पड़े हुए है कि बिरजीस से मेरी निस्बत तै करा दो वर्ना मैं न जाने क्या कर गुजरूँगा ।"

अर्जमन्द ने घबरा कर कहा, "लाहौल वला-कूव्वत, अजीब चीज़ है जनाब भी ! क्या कहते होंगे भला वह अपने दिल में ?"

नीलोफर ने कहा, "दिल में क्यों कहते, उन्होंने तो मुझसे कहा है कि यह तो बहुत ही अच्छी बात है और यह वाक़या है कि अर्जमन्द मियाँ को बिरजीस जैसी दुल्हन और बिरजीस को अर्जमन्द जैसा दूल्हा नही मिल सकता ।"

अर्जमन्द ने शशो-पंज के आलम में कहा, "अब मैं क्या मुँह लेकर उनके सामने जाऊँगा ?"

नीलोफर ने कहा, "मुँह का इन्तजाम भी मैं कर दूंगी ।"

फ़ारूकी ने कहकहा बुलन्द करते हुए कहा, "क्यों हजरत ? 'घरे गये दिले-ख़ाना खराब के बदले ।"

शिहाब ने कहा, "मगर मेरी राय मे हुआ बहुत अच्छा । दो टूक बात हो जाना अच्छा है । बजाये इसके कि ख्वाहमख्वाह का नख़रा होता रहे कि निगाहें बच-बच के मिल रही है, मिल-मिल के बच रही है ।"

नीलोफ़र ने कहा, "यह बात भी ठीक है । दूसरे मुझे डर था कि कहीं बिरजीस ग़रीब को उसकी फूफी अपने लाडले के लिए न ले उड़ें । बहरहाल अब कल तक आप इन्तेज़ार कीजिये और कल इंशा अल्लाह ममी और डैडी बात पक्की करके ही आयेंगे, बल्कि मैं भी साथ जाऊँगी । कल मिठाई तैयार रखियेगा ।"

अर्जमन्द को तो वाक़ई शर्म के पसीने आ रहे थे और शिहाब और फ़ारूक़ी ने नीलोफर की इस तरकीब को बिल्कुल जाइज़ समझा था। बहरहाल सबसे ज़्यादा खुश नीलोफ़र थी।

३४

****

जिस वक़्त डाक्टर लतीफी बिरजीस के वालिद आफ़ाक साहब की कोठी पर मय बेगम साहबा और नीलोफ़र के पहुँचे है सबसे पहले बिरजीस ने लपक कर इस्तक़्वाल किया और दौड़ कर वह नीलोफर से लिपट गई। डाक्टर साहब ने उसको गौर से देखकर अपनी मूंछों का ज़ाविया (कोण) दुरुस्त किया और फिर अपनी मुस्कराहट को जबरदस्ती संजीदगी में तब्दील करते हुए कहा :

"क्यों साहबजादी, न सलाम न दुआ। माना कि नीली को देखकर तुम बमुश्किल हवास में रहती हो मगर बुजुर्गदाश्त (वयोवृद्धों का समादर आदि) भी कोई चीज़ है।"

बिरजीस ने हँसकर कहा, "मैं शर्मिदा हूँ डैडी।"

बेगम साहबा ने हँसकर कहा, "वाक़ई हवास बजा नही है, अन्कल क़ो भी डैडी ही कह रही है।"

डाक्टर साहबा ने गोया बड़े दबदबे से कहा, "कहाँ हैं बाबा तुम्हारे, मैं उन्हीं से तुमको सजा दिलवाना चाहता हूँ।"

बेगम साहबा ने कहा, "और सज़ा भी उम्र क़ैद की।"

उन सबकी आवाज़ें सुनकर बिरजीस की वालदा बिल्क़ीस बेगम भी बरामदे में आ गईं और उन सबको देखकर चौंकते हुए बोली :

"आदाब भाई साहब, आपा तस्लीम। अख्वाह, हमारी नीली बेटी भी तो जीती रहो, तो आइये ना अन्दर वहाँ क्यों पड़ाव डाल रखा है ?"

डाक्टर साहब ने बनकर कहा, "बात यह है बहन कि फ़कीर दरवाजे तक तो आ सकता है। उसको घर के अन्दर आने की इजाजत नही होती।"

बिल्कीस बेगम ने हसकर कहा, "यह फकीरी आपने कब से ले ली ! हम तो यों भी आपके दाते-हक परस्त* पर बैत (वचन देना) किये हुए थे। आखिर फ़कीरी लेने की क्या जरूरत पेश आ गई ?"

डाक्टर साहब ने मय सबके कमरे के अन्दर जाते हुए कहा, "जनाब के शौहरे-नामदार (प्रतिष्ठित पति) कहाँ है ?"

बिल्कीस ने कहा, "कुछ न पूछिये भाई साहब, यह इतवार हम सबके लिए यौमे-अजाब (दुःख दिवस) होता है, इसलिए कि यह उनका यौमे-खिज़ाब है। हजार मर्तबा कह चुकी कि अब तुमको कौन-से बरदिखौवे में जाना है जो सफ़ेद बाल इस एहतियात से छुपाते हो।"

बेगम साहबा ने कहा, "जिस दिन तुम्हारे बाल भी सफ़ेद हो जायेंगे उसी दिन से वह खिजाब छोड़ देंगे।"

बिल्कीस ने अपने सर के बाल दिखाते हुए कहा, "तो क्या आपा आपके खयाल में बाल अभी सफेद नहीं हुए ? यह देखिये—सारा सर सफेद हो चुका है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "कमाल है साहब, ये कल की बच्चियाँ भी अपने सफेद बाल दिखा रही है।"

बिल्कीस ने एक दरवाज़े का पर्दा उठा कर बुलन्द आवाज से कहा, "ऐ मैंने कहा सुनते है आप ? यह रुखे-रोशन लिये ज़रा यों ही तशरीफ़ ले आइये, डाक्टर भाई, आपा और नीली आई है।"

बिरजीस ने कहा, "वह तो आ ही रहे हैं, मेरे खयाल में तो ग़ुस्ल भी कर चुके।"

डाक्टर साहब ने कहा, "सुनिये साहबज़ादी, जब आपके बाबा जान तशरीफ़ ले आयें तो आप ज़रा यहाँ से रफ़ूचक्कर हो जाइयेगा। इसलिए कि

---

*न्यायपूर्ण हाथ।

मुझे आप ही के मुताल्लिक़ बातें करना हैं। यह मैंने इसलिए अर्ज़ कर दिया कि अचानक आपको भागना न पड़े और जूती यही रह जाये।"

बेगम साहबा ने मुस्कराकर कहा, "तौबा है आप से भी। बच्चियों से भी मजाक से बाज नहीं आते।"

इसी वक़्त आफ़ाक साहब ने अस्सलाम अलैकुम का नारा जो बुलंद किया तो सब उनकी तरफ मुतवज्जे हो गये और किसी को खबर न हुई कि बिरजीस कब कमरे से खिसक गई। डाक्टर साहब और आफाक साहब मे देर तक सफ़ेद बालो और खिजाब वगैरा के मौजू पर बात होती रही। उसके बाद खुद बेगम साहबा ने गुफ्तगू का मौजू बदल कर कहा, "छोड़िये भी इन बातो को मतलब की बात शुरू कीजिये।"

और आफाक साहब मय बिल्कीस बेगम के निहायत संजीदा बन कर बैठ गये तो डाक्टर साहब ने बात शुरू की : "भई आफ़ाक मियाँ, किस्सा दर-असल यह है कि मैने एक लड़का अपनी बेटी बिरजीस के लिए पसंद किया है।"

आफ़ाक़ ने यही पर बात काट दी, "बस तो बिस्मिल्लाह। तारीख़ से इत्तला दे दीजिये ताकि हम मियाँ-बीवी भी उसमे शिरकत कर सकें।"

डाक्टर साहब ने कहा, "फ़िर वही शरारत, कभी तो संजीदा हो जाया करो।"

बिल्कीस ने कहा, "भाई साहब, वह बड़ी संजीदगी से कह रहे है, इसमें शरारत की क्या बात है ? जब आपको लड़का पसन्द आ चुका है तो बस ठीक है। हम लोगों के इख़्तेलाफ़ का कोई सवाल ही पैदा नही होता।"

आफ़ाक़ ने कहा, "भाई साहब, बात यह है कि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आपके लिए बिरजीस और नीली दोनों की हैसियत यक्साँ है। और आप बिरजीस के लिए जो कुछ करेंगे वह किसी एतबार से नामुनासिब नहीं हो सकता। हालाँकि बिरजीस के लिए खुद मेरी हमशीरा मुद्दत से पीछे पड़ी है, वह लड़का भी बुरा नहीं है मगर जब मैने खुद अपनी शादी के मौक़े पर अपने वाल्दैन से यह मुतालबा किया था कि मेरी राय ज़रूर ली जाये और उस राय को वक़्त भी दी जाये तो कोई वजह नही कि खुद अपनी औलाद को यह इख़्तियार न दूं। बहरहाल बिरजीस को यह इख़्तियार देने के बाद मैंने यह

अंदाजा किया है कि वह अपने फूफीज़ाद भाई को अपने लिए क़ाबिले-क़ुबूल नही समझती ।"

बिल्कीस ने कहा, "भाई साहब, जिसको निबाह करना है, जब उसी की मर्जी नही तो हम क्या कर सकते हैं ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "मै समझ गया । तुम दोनो के इस तरीक़-ए-कार (कार्य-पद्धति) से मुझे पूरा इत्तेफाक़ है । तुमको मालूम है कि नीली को यह आज़ादी न देकर मुझको कितना बड़ा जुर्माना अदा करना पड़ा ।"

बिल्कीस ने कहा, "खैर यह जिक्र तो छेड़िये नही । आपने तो सचमुच हद कर दी थी कि न जाने कब का दक़ियानूसी तरीक़ा इख्तियार करके एक हीरे को पत्थर से तोड़ने की कोशिश की । वह तो कहिये अल्लाह ने उस बेज़ुबान बच्ची को बचा लिया ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "बहरहाल मैं अब इससे सोलह आने मुत्तफ़िक़ हूँ कि लड़की से जरूर पूछा जाये और उसकी राय को क़ौले-फ़ैसल (निर्णयात्मक) समझा जाये मगर मुझे उम्मीद है कि जिस लड़के का मैं ज़िक्र करने वाला हूँ उसको बिरजीस भी नापसद न करेगी, बल्कि अगर यह कहूँ तो ज़्यादा सही होगा कि मैने उस लडके का इन्तेखाब ही इसलिए किया है कि मेरे नज़दीक बिरजीस और उसके मिजाज मे बड़ी मुताबिकत है ।"

बेगम साहबा ने उलझ कर कहा, "तौबा है आपसे भी । पहेलियाँ बुझा रहे है बैठे हुए । हजार मर्तबा वह खुद देख चुके है लड़के को । बिल्क़ीस बहन, यह दरअसल अर्जमन्द का जिक्र कर रहे हैं ।

आफ़ाक ने चौक कर कहा, "कौन यह अपना अर्जमन्द ? शिहाब मियाँ का दोस्त ? वही न जो स्यालकोट मे डी० एस० पी० लगा हुआ है ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "जी हाँ वही । निहायत आली खान्दान, समझा-बूझा बच्चा है और इस क़द्र मुहज्जब और शरीफ़ है जाती तौर पर कि मैं क्या कहूँ ? भई क़िस्सा दरअसल यह है कि अगर नीली ने मुझ से यह न कहा होता कि अर्जमन्द की निस्बत बिरजीस से तै करा दो बल्कि बिरजीस ने यह कहा होता कि नीली की निस्बत उससे करा दो तो मुझे कोई इंकार न होता । कहाँ मिलते हैं आजकल ढंग के लड़के ?"

बिल्क़ीस ने कहा, "भाई साहब, सौ-बातों-की-एक-बात यह है कि अव्वल तो उस लड़के को आपने पसन्द किया है दूसरे हमारी बेटी नीली की यह तजवीज है, तीसरे नीली की इस तजवीज के मानी ये है कि बिरजीस को भी कोई इख़्तेलाफ न होगा।"

डाक्टर साहब ने खुश होकर कहा, "अरे भाई आफाक़, तुम तो प्रोपेगण्डा करते रहते हो कि बिल्कीस सख्त बेवकूफ किस्म की बीवी है, मगर यह तो मुझको तुमसे अक्लमन्द नजर आ रही है।"

आफाक ने कहा, "भाई साहब, यह तो मै इनकी तारीफ के तौर पर कहता हूँ कि चूँकि बेवकूफ है लिहाजा बेहतरीन बीवी है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "हाँ भाई अक़्लमद बीवी से खुदा ही महफूज रखे। इस मामले मे अल्लाहताला का हजार-हजार शुक्रो-एहसान है कि मै भी बड़ा खुशकिस्मत हूँ।"

बेगम साहबा ने तुनक कर कहा, "खैर किसी सूरत से सही खुश किस्मत तो है आप। बहरहाल मुझ बेवकूफ का यह मशविरा भी सुन लीजिए कि नीलो को बुलाकर बिरजीस की राय मालूम करने की कोशिश कीजिए, अभी सब कुछ मालूम हो जायगा।"

आफ़ाक ने कहा, "आपा इसकी क्या जरूरत है, नीली की राय को मैं बिरजीस ही की राय समझता हूँ।"

डाक्टर साहब ने बर्जस्ता कहा, "खुदा आपको बेटा दे। यही मै भी कहने वाला था। बहरहाल इस किस्म के मामलात होते है एहतियात के। लिहाजा नीली से पूछ ही लेना चाहिये कि उसने बिरजीस से भी बात की है या नही।"

आफ़ाक ने उठते हुए कहा, "मै अभी बुलाता हूँ उसे।"

बिल्कीस ने आफाक के जाने के बाद कहा, "अगर यह निस्बत हो जाये तो मैं खुदा का शुक्र करूँगी कि उसने मेरी बच्ची को उनके भाँजे से महफूज रखा, उनकी बहन तो उधार खाये बैठी है। वह लडका ऐसा बेहूदा है कि मैं क्या कहूँ और खराबी हो या न हो मगर हिमाकत झमाझम चेहरे पर बरसती है। निरा गावदी है।"

इसी वक़्त नीलोफ़र आफ़ाक़ साहब के साथ कमरे में जो आई तो डाक्टर

साहब ने कहा, "डार्लिंग, तुमने बिरजीस बेचारी से भी पूछ लिया है ना ?"

नीलोफर ने मुँह बनाकर कहा, "डैडी, सचमुच आप मुझको बहुत ही अहमक़ समझते हैं। मैं उससे बात किये बगैर यह जिक्र जुबान पर ला सकती थी भला ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "बाबा खफा क्यों होती हो, मै इन लोगों को सुनवाना चाहता था। मुझे तो बगैर तुमसे पूछे मालूम था।"

आफाक ने कहा, "बस तो भाई साहब आपको पूरा इख्तियार हासिल है जब चाहे कर दीजिये। हमारी सारी तैयारियाँ मुकम्मल है।"

नीलोफर यह सुनते ही दौडकर बिल्कीस के साथ लिपट गई। मालूम होता था कि जैसे इसे मुँह-माँगी मुराद मिल गई हो। और फिर दौड़ी गालिबन बिरजीस को लिपटाने।

३५

****

डाक्टर लतीफी के घर में बेगम साहबा का कमरा इस वक़्त किसी मज्लिसे-कानून साज (विधान सभा) का मन्ज़र पेश कर रहा था जिसमे बेगम साहबा अपने भारी-भरकम अदाज में ख्वाहमख्वाह स्पीकर नजर आ रही थी। लीडर आफ़ दि हाउस का शुब्हा खुद डाक्टर साहब पर हो रहा था। हिज्बे-मुखालिफ़ (विरोधी दल) में सिर्फ़ अर्जमंद थे। बाज रुक्न (सदस्य) ऐसे भी थे जो थाली के बैगन बने हुये थे मसलन मिर्जा साहब किब्ला। मगर उनकी राय को वक्त ही कौन सी हासिल थी ? अलबत्ता बेचारा फ़रीद इस तरह बैठा था जैसे 'दागे-फ़िराक़े-सोहबते-शब के जले हुए' बैठे हों। वह अपना ही रोमान बघार रहे

थे कि गुहरे-मुराद (इच्छा का मोती) को अर्जमंद ले उड़े। बहरहाल इस वक़्त डाक्टर साहब की धुंआधार तकरार जारी थी :

"मेरी समझ में अर्जमन्द मियाँ की यह बात नहीं आई कि निस्बत का सिर्फ तै हो जाना ही काफी है, तारीख वगैरा का ताय्युन (निश्चित) फिलहाल बेमहल है। आखिर किस एतबार से बेमहल है। अगर आपकी तरफ से अभी कोई तैयारी नहीं है तो यह जिम्मेदारी आपकी नहीं बल्कि हमारी है। जनाब तो ज्यादा-से-ज्यादा सिर्फ़ नौशा होंगे। इन्तेजाम करने वाले तो हम खुद्दामे-दौलत (धन के सेवक) है और हम इसको बेमहल नही समझते।"

शिहाब ने कहा, "इन हजरत ने बेमहल गालिबन इसलिए कहा है कि हम सबके पेशे-नजर जो मुहिम है जब तक वह न सर कर ली जाये, उस वक़्त तक इस किस्म की यक्सूई (एकाग्रता) की बातें बेमहल ही नज़र आती है।

नीलोफ़र ने कहा, "इसका मतलब यह हुआ कि आप भी उसकी ताईद में है और इसको बेमहल समझते है।"

शिहाब ने कहा, "यह आपको मेरे किस लफ्ज से शुब्हा हुआ। मैं तो यह अर्ज कर रहा था कि इन हजरत ने गालिबन बेमहल इसीलिए कहा है।"

नीलोफर ने कहा, "मतलब यह कि आप इसको बेमहल नही समझते ?"

शिहाब के जवाब देने से पहले खुद अर्जमन्द ने कहा, "साफ़ बात यह है कि इस वक़्त हम अपनी तवज्जो का कोई हिस्सा किसी और तरफ़ मब्जूल नहीं कर सकते और इस अहम मसले को खटाई में नहीं डाल सकते जो दर-पेश है।"

बेगम साहबा ने कहा, "बात वह बेचारा भी ठीक ही कह रहा है। दिमाग़ तो उलझा हुआ है उस गुत्थी के सुलझाने में।"

मिर्ज़ा साहब ने बात काटी, "साहब वह आखिर कौन-सी गुत्थी है जिसको सुलझाने के लिए मेरे नाखुने-तदबीर (उपाय का नाखून) की अब तक किसी को जरूरत ही महसूस न हुई ?"

डाक्टर साहब ने सुनी-अनसुनी करते हुए कहा, "भाई साहब वह मसला आपसे मुताल्लिक़ नहीं हैं। हाँ साहब तो गोया बेगम साहबा के ख़याल में भी अर्जमन्द मियाँ का यह पसो-पेश दुरुस्त है।"

नीलोफ़र ने कहा, "मैं इस पसो-पेश (संकोच) को तस्लीम करते हुए एक तरमीम (संशोधन) यह पेश करती हूँ कि न हो फ़िलहाल शादी बल्कि हम लोग निहायत सादगी के साथ जाकर सिर्फ़ निकाह पढ़वा दें। उसके बाद जब इत्मिनान होगा रुख़्सती होती रहेगी एहतमाम के साथ।"

फ़ारूकी जो अब तक खामोश थे एकदम बोले, "मुझे इस तरमीम से पूरा इत्तेफ़ाक़ है। दरअसल इस वक़्त इस शादी के बखेड़े का मैं भी क़ायल न था।"

शिहाब ने भी नीलोफ़र की ताईद की, "बहरहाल यह निकाह वाली तरमीम बेहतरीन समझौता है, जिस पर सभी मुतफ़िक़ हो सकते है।"

डाक्टर साहब ने मूँछों के ज़रिये गौर करते हुए कहा, "गोया फ़िलहाल महज निकाह ? निहायत सादगी और खामोशी के साथ ताकि बिरजीस के लिए उसकी फूफी ज़ोर आजमाई न कर सकें ?"

नीलोफ़र ने कहा, "डैडी यही तो किस्सा है। मुझे सारी घबराहट इसी की है। निकाह हो जाने के बाद कम से कम वह तो हाथ झाड़ कर इत्मिनान से बैठ सकेंगी अपने घर।"

बेगम साहबा ने कहा, "अरे भई तुम तो कुछ कहो अर्जमन्द मियाँ।"

अर्जमन्द ने कहा, "मै अब क्या अर्ज कर सकता हूँ :

मै इक ग़रीब इधर हू उधर इक जमाना है।"

मिर्जा साहब ने उछल कर दाद दी, "ऐ सुभान अल्लाह ! क्या बर्जस्ता मिसरा हुआ है ! गज़ल कहूँगा इस पर।"

डाक्टर साहब ने जलकर कहा, "आप जब तक जाकर गजल कहिये, हम लोग यह ज़रूरी बात तै कर लें। बहरहाल तै यह हुआ कि मै आफ़ाक मियाँ को लिखे देता हूँ कि फ़िलहाल सिर्फ़ निकाह होगा जिसमे घर के लोगो के अलावा और कोई न होगा।"

नीलोफ़र ने कहा, "डैडी, घर के लोगों से मुराद यह है कि हम सबके अलावा जो इस वक़्त मौजूद है रुबी, सुरैया, अनीस भाई और कौकब भी होंगी।"

डाक्टर साहब ने कहा, "हाँ-हाँ। वह तो घर ही के अफ़राद में शामिल हैं। लिहाज़ा मैं लिखे देता हूँ कि इस घरेलू तक़रीब के लिए किसी एहतमाम

की ज़रूरत हरगिज़ नही है। कल जुमा है, निहायत मुबारिक दिन यानी सैयदुल अय्याम। कल ही सेपहर को निकाह हो जाये।"

अर्जमंद ने चौक कर कहा, "इननी जल्दी यानी कल ही ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "हाँ भई यह भी ठीक है। शायद यह अपने किसी अजीज को बुलाना चाहते है।"

अर्जमन्द ने कहा, "जी नही मेरे अजीज़ सिर्फ आप ही लोग है। वालिद की कायम मुकामी (स्थानापन्ना) के लिए आप मौजूद है, मा भी खुदा ने मुझको दे दी है। नीली से अच्छी बहन और कौन हो सकती है ?"

शिहाब ने कहा, "रह गये हम, तो आपसे रिश्ता जोडने में हमारी कौन-सी इज़्जत-अफ़जाई है जो हम इस हक से अपनी महरूमी पर आजुर्दा (दुखी) हों। बहरहाल सवाल यह है कि जब यह बात भी नही तो कल पर आपको क्या एतराज है ?"

अर्जमंद ने गोया लाजवाब होकर कहा, "बेहतर है जो आपकी मर्जी हो वह कीजिये।"

फारूकी ने कहा, "और नहीं तो क्या हम तुम्हारी मर्जी पर चलेंगे ? मैं तो यही देखकर हैरान हूँ कि क्या ज़माना आ लगा है कि अपनी शादी का मसला है और दूल्हा ऐसा बेगैरत कि पटापट बोलता चला जा रहा है। न बुजुर्गो की शर्म, न आये गये का लिहाज। ठीकरे बरस रहे है मुँह पर।"

डाक्टर साहब ने खुश होकर कहा, " हाय-हाय कहां है वह बड़ी बूढ़ियाँ जो जल-जलकर ये बातें कहा करती थी। बहुत दिनों के बाद ये अल्फ़ाज़ सुनने में आये। क्या जमाना था वह भी जब इन बातो से दीदों का पानी मर जाया करता था। बकौल तुम्हारे मुँह पर ठीकरे बरसने लगते थे। भोलानप रोढपन में तब्दील हो जाया करता था और बडी-बूढ़ियों की उई वाली उँगली वर्ज़िश में मुब्तिला हो जाती थी।"

बेगम साहबा ने कहा, "खैर अब आप आफ़ाक मियाँ को लिख भेजिये। वर्ना वक़्त बहुत कम है। शायद उनको भी अपने कुछ खास अज़ीजों को बुलाना हो।"

डाक्टर साहब ने उठते हुए कहा, "हाँ मैं उनको अभी लिखता हूँ।"

डाक्टर साहब के जाने के बाद नीलोफ़र ने फ़रीद को गौर से देखकर फ़ारूकी की तरफ़ मुस्कराकर देखा, इसलिए कि वह भी फ़रीद को गौर से देख रहे थे जो मुँह लटकाये अजीब वीरानी के आलम में बैठे हुए थे। फ़ारूक़ी ने नीलोफ़र की शै पाकर कहा, "फ़रीद भाई, आप बहुत चुप हैं। क्या अर्जमंद की शादी से आप खुश नही है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "अर्जमंद भाई तो इस मिसाल पर अमल कर रहे हैं कि किसी का घर जले और कोई आग तापे।"

मिर्जा साहब ने मुँह खोलकर कहा, "आयें ? यह क्या मामला है ?"

बेगम साहबा ने कहा, "यह क्या नया मजाक़ शुरू हुआ फ़रीद के साथ ?"

नीलोफ़र ने बड़ी सजीदगी से कहा, "ममी, यह मजाक नही है बल्कि वाक़्या है मगर इन बेचारे की किस्मत में सिर्फ एक मिसरा लिखा हुआ है :

मेरे हिस्से की छलक जाती है पैमाने से।"

फरीद ने खिसियानी हँसी हँसकर कहा, "अजी लाहौल वला क़ूवत ! मुझे क्या परवाह है ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "हाँ और क्या : **'तुम नहीं और सही और नहीं और सही।'**"

अर्जमंद ने गोया बड़ी नदामत से कहा, "फ़रीद भाई, मुझको अगर यह इल्म होता तो उधर का रुख भी न करता। बहरहाल अब तो अल्लाह ताला आपको सब्रे-जमील अता फ़र्माये।"

शिहाब ने कहा, "सिर्फ़ सब्रे-जमील से क्या होता है ? अल्लाह ताला नेमुल-बदल (सुफल) भी अता फ़र्माये।"

नीलोफ़र ने कहा, "मगर मैं तो यह कहती हूँ कि आखिर कौकब मे क्या बुराई है ?"

बेगम साहबा ने गोया बुरा मान कर कहा, "हाँ, और क्या, यह मुँह और मसूर की दाल। कौकब के लिए एक यही तो रह गये है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "तो साहब, हम भी अपने लड़के की तरफ़ से कह सकते है कि क्या उसके लिए कौकब ही रह गई है ? मैं तो इनके लिए रुबी को ताके बैठा हूँ।"

फ़रीद ने कहा, "जी नहीं बख़्शिये मुझे।"

मिर्ज़ा साहब ने बर्जस्ता कहा, "वह अंग्रेज़ औरत है बख़्शिश भी देगी, इत्मिनान रखो।"

फ़ारूकी ने गोया बड़ी संजीदगी से कहा, "नहीं साहब, यह मजाक गलत है। दिल के मामलात में इस क़िस्म की बज़लासंजियाँ (रसिकता) निहायत घटिया क़िस्म का जुल्म है, मगर मुझे तो इनसे ज्यादा बिरजीस की फ़िक्र है कि वह रोते-रोते खुदा जाने अपना क्या हाल कर लेगी।"

बेगम साहबा ने कहा, "खुदा के लिए क्यों उस गरीब पर बोहतान बाँध रहे हो। उसकी जूती को क्या पड़ी है कि रोये, रोयें उसके दुश्मन।"

और फरीद जो वाकई संजीदगी से सोग मना रहे थे, वहाँ से उठ कर चले गये तो बेगम साहबा ने फिर कहा, "लो वह तो सचमुच रो दिये, चलते बने यहाँ से।"

नीलोफर ने कहा, "ममी आपको क्या मालूम कि यह हजरत किस क़दर संजीदगी से बिरजीस के लिए मचले हुए थे।"

बेगम साहबा ने मुँह बनाकर कहा, "ऐ खुदा की सुनवार इन पर ! मै अब तक मज़ाक ही समझ रही थी। सचमुच पागल ही है यह लौण्डा।"

इस वक़्त डाक्टर साहब ने आकर बताया कि ख़त भेज दिया है और वह हमातन (पूर्णतया) कल की तक़रीब के इन्तेज़ामात में मसरूफ हो गये।"

३६

****

डाक्टर साहब वगैरह तो निकाह के इन्तेजामात में मसरूफ़ थे मगर शिहाब के कमरे मे फ़ारुकी, अर्जमन्द और महम्मद हुसैन के साथ शिहाब उसी गुत्थी को सुलझाने में मसरूफ़ था और उसकी पूरी तवज्जो उसी नक़्शे की तरफ़ थी जो महम्मद हुसैन ने लाकर दिया था। यह असल नक़्शे की निहायत सही नकल थी और महम्मद हुसैन को पूरा इत्मिनान था कि यह नकल ऐन मुताबिके-असल है और उसने अलावा नकल करने के बार-बार असल नक़्शे से उसको मिलाकर देख लिया है कि कोई निशान, कोई हिन्दसा और कोई फ़िकरा या शेर रह तो नही गया। और जब उसको पूरा इत्मिनान हो गया तो वह उसे लेकर आया है। शिहाब के इस इस्तगराक़ (तल्लीनता) को देखकर फ़ारूकी ने कहा, "बन्दानवाज, अगर आप यह चाहते है कि इसी वक़्त आप इस मुअम्मे को हल कर ले तो यह जनाब की ज़्यादती है इस को रखिये इत्मिनान से और इस पर ग़ौर करने के लिए कोई निहायत सुकून का वक़्त तजवीज़ कीजिये जब कि हम सबके अलावा अर्जमन्द साहब का भी दिमाग हाज़िर हो।"

अर्जमन्द ने चौंक कर कहा, "तो मेरा दिमाग़ गायब कहाँ हुआ है जिसकी हाज़िरी का आपको इन्तेज़ार है ?"

फ़ारुक़ी ने बड़ी संजीदगी से कहा, "आपकी जगह अगर मैं होता तो मेरा दिमाग़ यक़ीनन ग़ायब होता आज। ज़िन्दगी का एक अहम बाब शुरू हो रहा है और आज का दिन आपके लिए अज़ रू-ए-क़ायदा (नियमानुसार) निहायत अहम होना चाहिये। मगर आपका दिमाग़ ग़ायब नहीं है तो हमको आपके दिमाग़ ही की तरफ़ से शुब्हा होना चाहिये कि कहीं वह यक्सर ग़ायब ही तो नहीं है।"

शिहाब ने निहायत एहतियात से नक्शा लपेटते हुए कहा, "वाकई आज का दिन इस काम के लिए न होना चाहिए। महम्मद हुसैन साहब बहुत हैरान बैठे है उनको भी बता ही दिया जाये ताकि वह भी बरात में चलने के लिए तैयार हो जायें।"

महम्मद हुसैन ने और भी मुब्तहैयर (चकित) होकर पूछा, "बरात कैसी ? किसकी बरात का ज़िक्र है ?"

शिहाब ने कहा, "भई आज हमारे अर्जमंद भाई का निकाह है। इस झमेले की वजह से फ़िलहाल सिर्फ निकाह हो रहा है, शादी बाद में इत्मिनान से होगी। दरअसल यह बात इस वक़्त से बहुत पहले मालूम हो जानी चाहिये थी। इसलिए कि जाहिर है कि आप भी हम ही में से एक हैं, मगर चूँकि आप ड्यूटी पर थे इसलिए आपको अब तक इल्म न हो सका। आपने नीलोफर की सहेली बिरजीस को तो देखा होगा।"

महम्मद हुसैन ने सँभलकर बैठते हुए कहा, "जी हाँ, जी हाँ। आफाक साहब की साहबजादी ना ?"

शिहाब ने कहा, "जी हाँ वही। आज सेपहर को वह हम सबकी भाभी बन जायेगी, अर्जमंद साहब के रिश्ते से।"

महम्मद हुसैन ने अर्जमद की तरफ मुसाफे के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, "कमाल है कि इस नाजुक मौक़े पर आप इस इत्मिनान से बैठे यह गुत्थी सुलझा रहे है। मगर आप सबने मेरे साथ यह बड़ा जुल्म किया कि मुझे इत्तला न दी, मैं कोई छोटा-मोटा तोहफ़ा भी न ला सका।"

फ़ारूकी ने भी चौंककर कहा, "शुक्रिया महम्मद हुसैन साहब ! वाकई तोहफा तो हम सबके जहन से निकला हुआ था मगर अभी इतना वक़्त है कि हम अपने को इस शर्मिन्दगी से बचालें।"

शिहाब ने कहा, "जी नहीं, यह पहले ही तै हो चुका है और इस पर डाक्टर साहब किब्ला से काफ़ी बहस हो चुकी है कि इस मौके पर किसी को तोहफ़ा पेश करने की या किसी रस्म की इजाज़त न होगी। ये तमाम बातें शादी के वक़्त के लिए उठा रखी जायेंगी, इस वक़्त तो निहायत सादगी के साथ सिर्फ़ निकाह होगा और वह भी महज़ इसलिए कि बिरजीस को अपनी फूफी की

बहू बनाने से महफ़ूज़ किया जा सके।"

शिहाब की बात मिर्ज़ा साहब ने घबराये हुए तशरीफ़ लाकर काट दी। उस वक़्त ऐनक उनकी नाक की फुंगी पर टिकी हुई थी और बारी-बारी दोनों नथने फड़फड़ा रहे थे। मिर्ज़ा साहब ने आते ही कहा, "ऐ सुभान अल्लाह! क्या फ़रागत है और कुरबान जाऊँ क्या इत्मिनान है! यहाँ दौडेते-दौड़ते बुरा हाल हो गया और आप लोग हैं कि गोया निस्बत की खबर ही नहीं।"

शिहाब ने कहा, "मिर्ज़ा साहब किब्ला, आपके होते हुए भी अगर हमको यह इत्मिनान न हो तो क्या फायदा आपकी जाते-बा बरकात (बावरकत शख्सियत) से? जाहिर है कि आपने सारा इन्तेज़ाम तो कर ही लिया होगा!"

"छुवारे मैं ले आया, हार, फूल, दुल्हन के लिए फूलों का गहना, मिठाई-मेवा, फल मुख़्तसर यह कि मेरी अकेली जान देखिये और ये इन्तेज़ामात मुलाहिजा फर्माइये। इस पर तुर्रा यह कि इसी दौड-धूप में सेहरा भी नज़्म करके खुशनवीस से लिखवाया, फ्रेम कराया····· ।"

फ़ारूकी ने बात काटकर कहा, "मिर्ज़ा साहब, अगर जहमत न हो तो सेहरे का एकाध शेर मरहमत (प्रदान) फर्माइये ताकि हम पर भी उस तकरीब की कुछ कैफियत तो तारी हो।"

मिर्ज़ा साहब ने जेब से पर्चा निकालकर कहा, "सुनना तो चाहिये था आपको महफ़िल ही में मगर अब आपसे क्या एहतियात? अर्ज़ किया है :

बांधे हुए है सर पर जो अर्जमंद सेहरा
बिरजीस के लिए है वह दिलपसन्द सेहरा।

और कमरे में दाद का शोर बुलन्द होगया। उस शोर से शिहाब की आवाज़ रफ़्ता-रफ़्ता नुमायाँ हुई : "मिर्ज़ा साहब, मतले (गज़ल का प्रथम शेर) ही में दूल्हा और दुल्हन दोनों को भुगता देना यह आपही का काम है।"

मिर्ज़ा साहब ने मुस्करा-मुस्करा कर कई सलाम करने के बाद निहायत तरन्नुम से दूसरा शेर शुरु किया :

सच पूछिये तो बेशक है गर्जमन्द सेहरा।

शिहाब ने फ़ौरन टोका, "माफ़ कीजियेगा किब्ला गरज की 'रे' मुतहर्रिक

(गतिशील) है । इस हरकत को आप नज़रअंदाज़ कर गये ।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "अगर हरकत है तो मिर्ज़ा साहब इस बेहूदा हरकत के ज़िम्मेदार नहीं हो सकते । आप फ़र्माइये मिर्ज़ा साहब । आप पर शाइरी के सात खून माफ़ है ।"

अफ़सोस कि उसी वक़्त डाक्टर साहब ने तशरीफ़ लाकर मिर्ज़ा साहब के सेहरे को उनकी जेब में पहुंचा दिया । डाक्टर साहब ने आते ही सबको यह कह कर घबरा दिया: "हज़रात आप सबको मय नौशा के दस मिनट दिये जाते है कि तैयार होकर बाहर लॉन पर आ जायें । चार बज रहे है और हमको पॉच बजे से पहले आफ़ाक़ मज़िल पहुँच जाना है ताकि चाय के वक़्त से पहले ही निकाह हो जाये, लिहाजा जल्दी कीजिये ।"

यह सुनते ही सब उठ खड़े हुए और जल्दी-जल्दी तैयार होने लगे । दस मिनट में तो खैर कोई क्या तैयार होता जबकि बेचारे महम्मद हुसैन ने शेव तक न किया था, मगर आध घण्टे के अंदर-अदर सब लॉन पर पहुँच गये जहाँ अर्ज-मंद को नीलोफर और उसके साथ ही रूबी, सुरैया और कौकब ने अपने नर्गे में लेकर तलाई और फूलों के हारो से दूल्हा बना दिया और डाक्टर साहब ने साफा अपने सर पर बॉध कर उसके सर पर रख दिया । हरचंद कि उस साफ़े से वह बेचारा अच्छा-खासा धोबी नजर आने लगा मगर किसकी मजाल थी कि डाक्टर साहब के बाँधे हुए साफे पर कोई एतराज़ करता या हँसता ? मुख़्तसर यह कि एक मोटर में ये लड़कियाँ दूल्हा को लेकर बैठ गई । दूसरे में शिहाब, फ़ारूक़ी, महम्मद हुसैन और अनीस बैठे । तीसरे मे डाक्टर साहब, बेगम साहबा, मिर्ज़ा साहब और वह पैकरे-हिज़्नो-मलाल (शोकाकृति) जो इस एतबार से वाकई फ़र्दे-फ़रीद (विशिष्ट) नजर आ रहे थे, बैठी और इस तरह यह छोटी-सी बरात आफ़ाक़ मजिल की तरफ़ रवाना हो गई ।

आफ़ाक़ मंज़िल मे भी कोई खास एहतमाम सिवाय इसके न था कि कोठी के सब्जाज़ार पर एक छोटे-से शामियाने के नीचे कुछ सोफ़े क़रीने से लगे हुए थे और बीच में जा-बजा चंद मेजें थी जिन में किसी पर गुलदस्ते थे, किसी पर सिगरेट और सिगार । किसी पर खासदान नज़र आ रहे थे । जिस यक़्त मोटर पहुँचे हैं आफ़ाक़ साहब ने बढ़कर डाक्टर साहब और बेग़म साहबा का खैर-

मक़दम किया और जब वह नौशा की गाड़ी की तरफ़ बढ़े तो वहाँ नीलोफ़र और उसकी सहेलियों ने खालिस मशरिकी अंदाज़ यह पेश किया कि ये सब अपने जरनिगार दुपट्टों के आँचल दूल्हा के सर पर डाले हुए उसको ला रही थीं। इस मन्जर को देखकर फ़ारूकी ने कहा :

"हाँ साहब यह हुई है एक शादी वाली बात ! काश मेरे पास कैमरा होता और मैं इस मंजर को महफ़ूज कर लेता ।"

दूल्हा को वस्त (बीच) के सौफे पर बिठाकर लडकियाँ तो अन्दर चली गई और यहाँ डाक्टर साहब ने दूल्हा के एक तरफ़ शिहाब को और दूसरी तरफ फ़ारूकी को बिठा दिया। बेचारा फ़रीद एक तरफ अपना डूबता हुआ दिल लेकर बैठ गया। अभी लोग बैठे ही थे कि आफ़ाक साहब ने डाक्टर साहब से कुछ सरगोशी करने के बाद शिहाब को आवाज़ दी और एक मोलाना को जो फ़रीद के करीब ही एक कुर्सी पर बैठे तस्बीह पढ़ रहे थे, अपनी तरफ मुतवज्जे करके कहा, "मौलाना, हम लोग अन्दर जा रहे है और जो कुछ आपने फ़रमाया है वही दरियाफ़त करके आते हैं।"

मौलाना ने गर्दन की जुबिश से इजाज़त देदी, मगर तस्बीह की गर्दिश में कोई खलल वाके न होने दिया। मिर्जा साहब अपनी बगल में वह फ्रेम दबाये दिल-ही-दिल मे गुनगुनाते रहे ताकि सेहरा पढने की जो धुन वह बैठा चुके थे वह भूल न जायें। और फ़रीद बेचारा दिले-नादाँ को समझाता रहा। थोड़ी ही देर में डाक्टर साहब की आवाज ने सबको चौका दिया, 'अस्लाम अलेकुम'। इसका मतलब यह था कि वह दुल्हन से पूछ कर आगये थे। अब मौलाना ने अपनी जगह से उठ कर अर्जमन्द के पहलू में अपनी जगह हासिल की और डाक्टर साहब से कुछ सरगोशी करने के बाद अर्जमन्द से भी निकाह कबूल कराया और जोर इस बात पर दिया कि 'कबूल करता हूँ' न कहो बल्कि माजी का सीगा (भूत काल) इस्तेमाल करो कि 'कबूल किया मैने'। हालाँकि बाज लोग फ़ारूकी और मिर्जा साहब का खयाल यह था कि 'क़बूल किया मैंने' भी माज़ी का सीगा नही है। बहरहाल मौलाना ने खुतबा पढ़ने के बाद छुवारे उछालकर उस बहस को खत्म कर दिया और जल्द ही चाय का दौर शुरू हो गया। चाय के दौर में जैसे ही नीलोफ़र, रूबी, सुरैया और कौकब ने आकर शिकायत की, काज़ी साहब

तो ज़ेरेलब लाहौल पढ़ते हुए रवाना हो गये, मगर दूसरी मुसीबत यह आई कि मिर्ज़ा साहब ने सेहरा पढ़ना शुरू कर दिया जिस पर और सब तो बढ़-बढ़ कर दाद देते रहे मगर डाक्टर साहब मूछों की ओट में नॉनसेंन्स और बकवास, वग़ैरा कहते रहे। सेहरा पढ़ने के बाद मिर्ज़ा साहब ने यह फ्रेम अर्जमन्द के सामने पेश किया ही था कि फ़ारूक़ी ने अर्जमन्द की तरफ़ मे उसको क़ुबूल कर लिया। अब चूँकि यह घरेलू क़िस्म की महफ़िल रह गई थी लिहाज़ा डाक्टर साहब ने आफ़ाक़ साहब से निहायत ग़ैरमामूली के साथ पूछा, "अरे भई आफ़ाक़ तुम ने तो हद ही कर दी सादगी की ! यानी अपने किसी अज़ीज़ तक को शरीक न किया।

आफ़ाक साहब ने कहा, "भाईजान, मेरे अज़ीज आप सब जो है। रह गये वह इस्तेलाही (शाब्दिक) अज़ीज़ उन सब से तो इस निस्बत के बाद रिश्तेदारी के बजाय इख्तलाफ़, बल्कि दुश्मनी पैदा हो चुकी है।"

डाक्टर साहब और आफ़ाक साहब में यह घरेलू सियासत मौज़ू-ए-बहस (वाद विवाद का विषय) बन गई उधर मिर्ज़ा साहब फ़रीद को छुहारे खिलाने की कोशिश में मसरूफ़ हो गये कि अब तो जो कुछ होना था हो ही चुका है। अब सिर्फ़ यह शगुन कर लो कि छुहारा खालो ताकि तुम्हारे लिए भी यह दिन आये। मगर फ़रीद ने किसी क़ीमत पर भी उस निकाह का छुहारा खाना गवारा न किया। नीलोफ़र ज़्यादा देर तक महफ़िल में न रही। वह फ़ौरन ही बिरजीस के पास चली गई जो आज बहैसियत दुल्हन के बाँधकर बिठा दी गई थी और आख़िर उस वक़्त बाहर आई जब यह बरात वापिस जा रही थी।

३७

****

यह खयाल वाकई ठीक था कि उस मौके पर जबकि तवज्जो का असल मरकज वह मुहिम बनी हुई है जो इस वक़्त दरपेश है, शादी-ब्याह का होश ही किसे है। चुनाँचे इसका सबूत यह है कि अर्जमन्द और बिरजीस के निकाह के बाद ही शिहाब ने सारी रात आँखों-ही-आँखों में काट दी। उसके सामने वह नक़्शा था जो महम्मद हुसैन लेकर आया था और वह रिसाला था। उसके अलावा कागजों का एक ढेर था जो उसने मुख्तलिफ़ हिन्दसे लिख-लिख कर और मुख्तलिफ़ नक्शे बना-बनाकर स्याह किया था। अर्जमन्द या फ़ारुकी को बल्कि हद यह है महम्मद हुसैन को भी खबर न थी कि शिहाब क्या कर रहा है। वह सब तो लम्बी तानकर सोये हुए थे और यह हज़रत उस नक़्शे और उस रिसाले में इस तरह गुम थे कि गोया आज ही सारा उक़्दा हल करके रख देंगे। आखिर सुबह जब करीब की मस्जिद के मुअज़्ज़िन (अजान देने वाला) ने सलाह व फ़लाह (प्रार्थना) के लिये बुलाया और याद दिलाया कि नमाज़ नींद से मुकद्दम और बाइसे खैरो-बरकत है तो शिहाब ने भी रद्दी कागजों का एक ढेर दिया-सिलाई से जलाकर राख किया, चंद कागजात एहतियात से मय उस नक़्शे और और रिसाले के एक फ़ाइल में रख कर सेफ में मुकफ़्फल (बद) किये और वज़ू करके नमाज़े फ़ज्र (सुबह की नमाज़) के बाद जब सुबह की सफ़ेदी धूप में तब्दील होने के करीब आई यह हज़रत कमर सीधी करने के लिए बिस्तर पर आते ही गायब हुए कि जब बिस्तर की चाय पड़े-पड़े यख़ (ठंडी) हो गई और नाश्ते के लिए सब जाने लगे तो अर्जमन्द ने इन हज़रत को भी झिंझोड़ा कि यह क्या नहूसत है कि दोपहर होने को आई और जनाब घोड़े बेचकर सोये हुए हैं। शिहाब ने अपनी सुर्ख-सुर्ख भारी आँखें खोलकर कहा :

"आप लोग नाश्ता करें, मेरी तबियत सुस्त है। मुझको फ़िलहाल मेरे हाल पर छोड़ दें।"

मगर जैसे ही यह बात नाश्ते की मेज पर पहुँची, डाक्टर साहब और उन के पीछे-पीछे नीलोफ़र वहीं आ मौजूद हुए और शुरु होने ही वाली थी बाकायदा उसकी तीमारदारी कि उसने इन दोनों को असल वाक़या बता दिया कि साहब मैं बखुदा बीमार नहीं हूँ अलबत्ता रात सोया नहीं हूँ। न सोने की वजह यह हुई है कि लेटने के वक्त मैंने महम्मद हुसैन के लाये हुए नक़्शे पर गौर करना जो शुरु किया तो सिलसिले-से-सिलसिला ऐसा मिलता चला गया कि अगर मैं सोजाता तो जहन की रसाई के बेहतरीन लम्हे (क्षण) जाया कर देता। चुनाँचे मैं दिन निकलने के बाद लेटा हूँ और अब चाहता हूँ कि थोड़ी देर सो लूँ ताकि शब बेदारी का यह असर बाकी न रहे।

डाक्टर साहब तो मुतमइन हो गये मगर नीलोफर को शिहाब की इस हरकत पर सख्त गुस्सा आया और उसने चलते-चलते डाक्टर साहब को मुखातिब करके यह कह ही दिया, "डैडी, यह बगैर अपने को बीमार किये न मानेंगे। मगर जो शख्स खुद अपना दुश्मन हो उसका कौन दोस्त हो सकता है और किसी की दोस्ती उसको क्या फ़ायदा पहुँचा सकती है ?"

मगर जब खाने की मेज पर सबके साथ शिहाब भी नहा-धोकर आदमी की शक्ल में शरीक हुआ तो नीलोफ़र के तेवरों में वह खफगी दरअसल न थी जो अब वह जबरदस्ती पैदा करना चाहती थी। शिहाब ने उसको देखकर मुस्कराते हुए कहा, "जिसको ख्वाहमख्वाह मुतफ़क्किर (चिंतित) होने की आदत पड जाये उसको कौन मुतमइन कर सकता है ?"

बेगम साहबा ने कहा, "मगर शिहाब मियाँ, यह वाकई तुम्हारी ज़्यादती थी कि सारी रात तुम जागते रहे।"

मिर्जा साहब ने गौर से शिहाब को देखकर कहा, "तो गोया यह महज़ जागने का असर है चेहरे पर, मैं तो समझा था कि ख़ुदा न करे जाने क्या हुआ है। जागे तो हमारे फ़रीद मियाँ भी होंगे, मगर देख लीजिये उन पर कोई असर नही है।"

फ़रीद ने जलकर कहा, "पतली गर्दन वाला एक मैं ही मिल गया हूँ आप

को तब्ब्र-आजमाई के लिए ।"

डाक्टर साहब ने मुँह में निवाला ले जाना मुल्तवी करते हुए कहा, "यह क्या बात हो गई ? ये तो कुछ बदमज़गी के आसार हैं ।"

बेगम साहबा ने कहा, "बदमजगी नही है, न जाने इन हजरत को सब से क्या हो गया है कि आदम-बेजार होकर रह गये हैं, चलती हवा से लड़ रहे हैं और भाई साहब भी नही मानते । जब एक आदमी बुरा मानता है तो क्यों छेडा जाये उसे ?"

डाक्टर साहब ने फरीद की तरफ दुज़्दीदा (चोरों की-सी) निगाहों से देखकर कहा, "मैं भी फरीद साहब की तबियत कुछ खराब महसूस कर रहा हूँ । यह या तो बीमार हैं या होने वाले है बीमार ।

नीलोफर ने दबी जुबान से कहा, "अब और क्या होगे बेचारे बीमार ?"

फरीद ने कहा, "जी नही मै बिल्कुल तन्दुरुस्त हूँ, बीमार हों मेरे दुश्मन ।"

मिर्जा साहब ने कहा, "अच्छा भई अगर तुम इसी में खुश हो तो हो लेंगे हम बीमार ।"

और इस पर जो कहकहा पडा है तो फरीद गालिबन भूखे ही मेज से उठ गये । यहाँ उनके जाने के बाद डाक्टर साहब को भी फ़रीद के इस एहमकाना सोग की तफ़सील बताकर डाक्टर साहब से यह फ़ैसला करा दिया कि यह बरखुरदार अनकरीब किसी दिमागी अमराज (रोग) के अस्पताल में दाखिल होकर रहेगे ।

खाने से फारिग होकर जब मिर्जा साहब तशरीफ ले गये तो डाक्टर साहब ने शिहाब को मुखातिब किया, "हाँ साहब अब बताइये कि रात भर आपने जो सिलसिले मिलाये हैं वह आपकी कीमती नीद का मुआवज़ा (पारिश्रमिक) भी साबित हुए या सिर्फ़ खूने-नाहक़ ही हुआ नीद का ?"

शिहाब ने बड़ी सुर्खरूई (सफलता) से कहा, "मैं फ़िलहाल इसी कद्र अर्ज़ कर सकता हूँ कि जितना काम इस एक रात में हो गया है वह शायद हफ़्तों के गौरो-फ़िक्र से भी न हो सकता । और मुझको अपनी नीद का इतना बड़ा मुआवजा मिल गया है कि मैं उन दामों कई रातों की नीद बेच सकता हूँ ।"

अर्जमंद ने कहा, "अगर यह वाक़ई सच है तो मैं नीली बहन से कहूँगा कि

इनको माफ़ करदें।"

फ़ारूकी ने कहा, "अभी यह सिफारिश कब्ल अज वक़्त (समय से पूर्व) है पहले यह मालूम करलें कि यह हजरत वाक़ई किसी सही नतीजे पर पहुँचे हैं या अपनी हिमाकत ही को अक़्लमंदी समझे बैठे है।"

शिहाब ने कहा, "मै यहाँ से चल रहा हूँ अभी आप को अपनी दरियाफ्त (खोज) की तफ़सील सुनाने।"

डाक्टर साहब बोले, "मुझ को भी इस कान्फ्रेंस मे शिरकत की इजाजत मिल सकती है ?"

शिहाब ने कहा, "है तो अभी क़ब्ल अज़ वक्त, मगर मुझे कोई एतराज नहीं। आप तशरीफ लाइये।"

और जब ये सब शिहाब के कमरे मे जमा हो गये और शिहाब ने कमरा अंदर से बन्द करके सेफ से वह कागजात निकाल लिये तो सब हमा तन (पूर्णतः) शिहाब की तरफ मुतवज्जे हो गये। शिहाब ने नक़्शा खोलकर सामने रखते हुए और रिसाला अपने हाथ मे लेकर कहा :

"अर्जमंद साहब, हम लोग सही नतीजे पर पहुंचे थे कि 'दौलते-बेदार' नामी इस रिसाले पर जो नक़्श है उससे मुराद हिरन मीनार है। उस रिसाले के सफ़ा छः पर दरी की तसवीर और उस पर जो बारह का हिन्दसा है उससे भी मुराद बारहदरी है। यह ठीक है और यह वही बारहदरी है जो हिरन मीनार के तालाब के अन्दर है। चुनांचे बारह के हिन्दसे और दरी की तसवीर के नीचे ही मछली जो बनी है उससे मुराद वाकई वही तलाब है। मछली के आगे जो तीर का निशान है उसके आगे जो हिन्दसा है उसको हम ४४ समझ रहे थे मगर अब मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह ४४ नही बल्कि २४ है। ज़रा गौर से देखिये इसे।"

अर्जमंद, फारूकी और महम्मद हुसैन ने बयक वक्त उसको गौर से देखना शुरू किया। आखिर अर्जमंद ने कहा, "वाकई ४४ से ज्यादा यह २४ ही मालूम होता है। अच्छा फर्ज़ कर लीजिये कि यह २४ ही है तो क्या नतीजा निकलता है ?"

शिहाब ने वसूक़ (निश्चय) से कहा, "फर्ज़ करने की बात नहीं, यह तै है

कि यह २४ है ४४ नहीं। इसलिए कि इस चौबीस के हिन्दसे के बाद फिर तीर का निशान है और आगे लिखा हुआ यह मिसरा **'मेरे अंजाम से आगाज़ मिरा याद करो।'** और इस नक़्शे में भी यह देखिये लिखा है अंजाम और यह लिखा है आगाज और इन दोनों के दरम्यान एक लकीर है जिस पर लिखा है १½ — २४।"

फ़ारूकी ने उलझ कर कहा, "जो कुछ लिखा है वह तो हम भी देख रहे हैं, मगर यह सब है क्या सवाल तो यह है।"

शिहाब ने कहा, "बन्दा नवाज, जरा सब्र से सुनिये वही तो अर्ज कर रहा हूँ। अब जरा गौर से सुनिये और इन हिन्दसों पर नजर रखिये। मैं जो इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यह चवालीस नही बल्कि चौबीस है उसकी वजह यह है कि हिरन मीनार से लाहौर चौबीस मील के फासले पर है। अंजाम से मुराद है जहाँगीर का मकबिरा यानी जहाँगीर का अजाम और इशारा कहता है कि 'मेरे अजाम से आगाज़ मिरा याद करो' यानी जहाँगीर का वह बचपन जब वह शेखू बाबा के नाम से इस किले में तालीमो-तरबियत हासिल कर रहा था जो आज भी शेखूपुरा मे एक आसेबज़दा (भूतप्रेत के आतक में) खण्डहर की सूरत मे मौजूद है। इसका मजीद सुबूत यह है कि नक्शे में आगाज और अजाम के अल्फाज के दरम्यान जो सतर है उस पर लिखा है १½ — २४। इसका मतलब यह है कि हिरन मीनार लाहौर से २४ मील है और शेखूपुरा के किले से हिरन मीनार १½ मील के फासले पर है। लिहाज़ा यह फ़ासला घटा दिया है और असल मरकज उस किले को बनाया है जहाँ वाकई जहाँगीर का बचपन यानी उसकी जिन्दगी का आगाज था।"

अर्जमद ने दौड़कर शिहाब की पेशानी पर बोसा लेते हुए कहा, "भई, खुदा नजरे-बद से बचाये। वाक़ई तुमने हफ़्तों का काम एक रात में अजाम दे दिया और हमको मंजिले-मक़्सद तक पहुँचा दिया।"

फ़ारूकी ने कहा, "वाक़ई हम मुश्किल ही से इस भूल-भुलैयाँ को इस आसानी के साथ हल कर सकते थे। असल किस्सा यह है कि इन एहमकाना बातों को इन्हीं का-सा अहमक़ समझ सकता था।"

डाक्टर साहब ने आखें निकाल कर कहा, "भाई मेरे, इस हिमाक़त के लिए

भी जितनी अक़्ल की ज़रूरत है ज़रा उसका तो अंदाज़ा कीजिये। मैं तो शिहाब को समझने से कासिर हूँ कि यह किस बला का दिमाग अपने इस महदूद सर में लिए हुए है। जिन्दा बाश !"

शिहाब ने कहा, "अर्जमंद साहब, आप समझ रहे हैं कि आप मंजिले-मक़सद तक पहुँच गये, मगर आपको भूलना न चाहिये कि अभी आपने नक़्शे के सिर्फ़ चन्द खुतूत (चिन्ह) का ही हल तलाश किया है और इस रिसाले के चंद ही इशारे जहन में आये है। मेरा खयाल यह भी है कि अब यह गुत्थी सिर्फ़ इस नक़्शे और इस रिसाले से न सुलझेगी बल्कि अब हमको इकराम भाई की मदद से शेखूपुरा के किले को भी छानना पडेगा।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "यह तो है ही मगर जरा गौर तो कीजिये कि इतनी-सी देर में हमारा शेख्पुरे के किले तक पहुँच जाना ही क्या कम है।"

शिहाब ने कहा, "नही साहब, मैं इससे भी बहुत आगे पहुँच गया हूँ मगर जब तक मुझे खुद यकीन न हो जाये, मैं अपने नताइज किसी को बताना नहीं चाहता।"

डाक्टर साहब ने उठते हुए कहा, "मगर इसका मतलब यह नही कि आप आज फिर जाये। रखिये इन कागज़ात को और कीजिये फ़िलहाल मुकम्मल आराम।"

और अर्जमन्द ने डाक्टर साहब के इस हुक्म की शिहाब से ज़बरदस्ती तामील कराई कि उसको पकड़ कर बिस्तर पर दराज़ कर दिया।

३८

****

महम्मद हुसैन की गैरहाजिरी वहीदा के कैम्प में नामुनासिब थी, लिहाज़ा उसको उधर रवाना कर दिया गया था। शिहाब, अर्जमन्द और फारूकी तीनों गये हुए थे शेखूपुरा इकराम से मिलने और अपने नताइज के सिलसिले मे उससे तबादल-ए-खयाल करने। यहाँ डाक्टर साहब की कोठी पर नीलोफ़र ने रुबी, कौकब, सुरैया और बडी जिद्दो-जहद (सघर्ष) के बाद बिरजीस को भी यकजा कर रखा था। बिरजीस को यहाँ आने मे बजाते-खुद पसो-पेश था, मगर जब इस पसो-पेश की इत्तला आफ़ाक साहब को हुई तो सख्त नाराज हुए कि यह क्या वाहियात इज्तेनाब (परहेज) है। भाई साहब के घर में और इस घर में फ़र्क ही क्या है ? अगर इत्तेफाक से अर्जमन्द मियाँ वहाँ ठहरे हुए है तो इसका मतलब यह नही कि उनकी वजह से अपना घर ही छोड दिया जाये। और फिर हँसकर कहने लगे कि बाबा ऐसी भी क्या दुश्मनी ? बेचारे से तुम्हारा निकाह ही तो हुआ है कोई बाप मारे का बैर तो नही कि साहब जहाँ वह होगे हम वहाँ न जायेगे। मुख्तसर यह कि नीलोफर का टेलिफोन जो उसने आफ़ाक साहब को किया था, कामयाब रहा और खुद आफ़ाक साहब उसे पहुँचाने डाक्टर साहब के घर आ गये। यहाँ डाक्टर साहब ने उनको देखते ही गिरफ़्तार कर लिया कि अब तो बगैर चाय पिये तुम जा ही नही सकते। आफ़ाक साहब ने कहा, "सुनिये भाई साहब, मेरे शजरे में ऐसे बुज़ुर्ग गुजरे है जो उस गाँव का पानी तक नही पीते थे जिसमें बेटी ब्याह दी हो।"

डाक्टर साहब ने कहा, "और मेरे खानदान में ऐसे बुज़ुर्ग गुजरे हैं जो इस क़िस्म के लोगों को ज़बरदस्ती गाँव भर के कुँओं का पानी पिला कर रहते

थे। दूसरे जनाब को यह ग़लतफ़हमी कब से पैदा हो गई है कि बिरजीस का मैका सिर्फ़ आपका घर है, यह घर नहीं ?"

आफ़ाक साहब ने गर्दन झुकाकर कहा, "यहाँ हम भी कायल है।"

डाक्टर साहब ने मूंछों पर हाथ फेरते हुए कहा, "भई, सच पूछो तो मुझे ये ढकोसले अच्छे नही मालूम होते कि चूंकि निकाह हो गया है लिहाजा लड़की को लडके से छुपाया जाये, यानी बीवी का मियाँ से पर्दा कराया जाये।"

मिर्जा साहब बोल उठे, "नही, खैर यह तो रुख्सती तक होना ही चाहिये।"

डाक्टर साहब ने बडे तन्ज (व्यंग) से कहा, "वर्ना लडकी के दीदो का पानी मर जायगा। लडके का चेहरा ठीकरे बरसाने लगेगा। आप भी किन लग्व बातों में पड़ गये। जो शख्स नामहरम से मरहम बन गया हो उससे पर्दा आखिर क्यों हो ? बल्कि होना तो यह चाहिये कि निकाह और रुख्सती के दरम्यानी वक्फे में लड़का और लडकी एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें।"

मिर्जा साहब ने कहा, "आप जाने साहब, मगर अपने नजदीक तो यह अंग्रेजियत है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यही आप गलत कह रहे है। अंग्रेजियत तो यह होती है कि लडका और लडकी एक-दूसरे को समझने और परखने के बाद शादी करते है, मगर यहाँ तो अक़्द हो चुका है और अब रुख्सती तक यह मौका मिला है कि बीवी मियाँ की उफ़्तादे-तब्अ (स्वभावादि) का अदाजा करले और मियाँ बीवी की जहनियत और बीवी के मिजाज से बाखबर होने की कोशिश करे। मैं पूछता हूँ आफ़ाक साहब इसमे मुजाइका क्या है ?"

आफाक साहब ने कहा, "हुजूरेवाला, आप जो कुछ मुनासिब समझे वह करें। आपके फ़ैसले से इकार करके मुझको जहन्नुम तो खरीदना नही है कि मैं यह जुरअत करूँ। बहरहाल मुझको यह अदाजा तो हो ही गया है कि आप बिरजीस को अर्जमंद के सामने करके रहेगे।"

डाक्टर साहब ने कहा, "किसी खास एहतमाम के साथ नही। मैं तो बस यह चाहता हूँ कि मसलन अर्जमंद आ जायें तो बिरजीस ख्वाहमख्वाह सर पर पैर रखकर न भागे। बस उसी तरह रहे जिस तरह रहा करती थी।"

मिर्जा साहब ने कहा, "यह नामुमकिन है। वह बेचारी खुद ही शर्मा

जायेगी और मेरा तो खयाल यह है कि अर्जमंद मियाँ भी कतरायेंगे।"

डाक्टर साहब ने कहा, "आपने अपना ऐसा हरेक को समझ रखा है कि ज़िन्दगी भर बीवी से कतराते ही रहे। वह लाहौर आ गई तो आपने रावलपिण्डी का टिकट कटा लिया। वह रावलपिण्डी पहुँची तो आप मुजफ़्फराबाद रवाना हो गये।"

मिर्जा साहब ने मुस्कराकर कहा, "वह तो बात ही दूसरी थी, मैं तो उनसे बचाता फिरता था अपनी जान और पीछा छुड़ाता रहता था।"

इसी वक्त चाय की एक ट्रे इस महफिल में आ गई और दूसरी वहाँ पहुँच गई जहाँ बिरजीस को आज बजाये बिरजीस के भाभी-भाभी कहकर छेड़ा जा रहा था। मगर यह भी शर्माने और झेंपने के बजाये सबको तुर्की-ब-तुर्की जवाब दे रही थी। नीलोफ़र ने कहा :

"अच्छा यह बता बड़ी भाभी की बच्ची बनी बैठी है कि तूने यहाँ आने से क्यों इन्कार किया था ?"

रुबी ने कहा, "यह सुन लिया था ना कि अर्जमंद भाई आज मौजूद ही नहीं है। तो भला उनकी अदम मौजूदगी (अनुपस्थिति) में आने से फ़ायदा ही क्या था ?"

कौकब ने कहा, "अब वह बेचारे शेखूपुरे में बैठे क़व्वाली गा रहे होंगे कि—'**हम बयाबाँ में हैं और घर में बहार आई है।**'"

सुरैया ने क़व्वालों की तरह ताली बजाकर वाकई गाना शुरू कर दिया : "**अरे घर में बहार आई है, अरे हाँ घर में बहार आई है।**"

नीलोफ़र ने मिसरे लगाना शुरू कर दिये :

एक दिन क़ैस को सहरा में जो जाकर देखा,
सूखकर इश्क़ में लैला के हुआ था काँटा।
दश्ते-ग़ुरबत में अजब हाल बना रखा था,
लब जो हिलते थे तो आती थी यही मुँह से सदा
हम बयाबाँ में हैं और घर में बहार आई है।"

और तो और खुद बिरजीस ने भी मिसरा लगया, "किसी पहाड़ ने इक दिन कहा गिलहरी से, क्या कहा ? **कि हम बयाबाँ में हैं और घर में बहार**

आई है।"

और फिर कहकहों की गूंज में यह कव्वाली एकदम खत्म भी हो गई। इसलिए कि चाय की ट्रे लाने वाली मुलाजिमा मुँह पर दुपट्टा रखे हँस रही थी। उसे देखकर रुबी ने कहा, "देख रही हो बुआ नसीबन ! यह जमाना आ लगा है कि कल की ब्याही हुई दुल्हन आज तालियाँ ठोक ठोक कर गा रही है। न जाने इस निगोडी मारी दुनिया को क्या होता जाता है।"

नीलोफर ने बड़ी सजीदगी से कहा, "अल्लाह जाने इस रुबी को यह खालिस महलसराई जुबान कहाँ से आ गई है ? यह 'तालियाँ ठोकना' और यह 'जमाने का आ लगना' और यह 'निगोडी मारी दुनिया' तो अब हम लोग भी भूलते जाते है जो इस फिरगन ने याद कर लिया है।"

चाय के दौर के साथ इसी किस्म की दिलचस्प बाते हो रही थी कि सुरैया को फरीद याद आ गये, "अरे हाँ नीली, यह तो बता कि उस सितम कशे-रोजगार, आशिक वरखुरदार का क्या हाल है ?"

नीलोफर ने छलक पडने के करीब चाय की प्याली को तिपाई पर रखकर कहा, "कौन फ़रीद ? हाय, क्या पूछती हो उस हिज्र के मारे का हाल ? न दिन चैन है, न रात आराम। मुँह सुजाये, आँखे डबडबाये, आहो की बर्फ़ जमाये फिरते है।"

विरजीस ने कहा, "उल्लू की दुम फाख्ता।"

कौकब ने कहा, "फाख्ता अब कहाँ वह तो उड गई, अब तो सिर्फ उल्लू दुम रह गये होगे।"

नीलोफ़र ने कहा, "और नाक मे दम कर रखा है उनका मिर्जा साहब ने। इस कद्र बेचारे को सताते और बनाते है कि अब तो मुझे उस पर तरस आने लगा है।"

सुरैया ने कहा, "अच्छा उस स्कीम का क्या हुआ कि अब उनका रुख रुबी की तरफ़ कर दिया जाये ?"

रुबी ने चीख कर कहा, "ओह खुदा ! मैंने क्या गुनाह किया है कि अजाब का फ़रिश्ता मेरे सर मँढा जा रहा है। अच्छा ठीक है, उनको वाकई मेरे सुपुर्द कर दो। वह इश्क़ करूँ उनसे कि ज़िन्दगी भर याद रखें। मै उनसे ज़रा

विलायती किस्म का इश्क़ करूँगी।"

बिरजीस ने कहा, "सचमुच रहेगा तो मज़ा। आखिर इन्तेज़ार किस बात का है ? आज ही से क्यों न यह नया खेल ज़र्क-बर्क़ (भड़कीले) सीन-सीनरी के साथ हदिय-ए-नाजिरीन (दर्शकों को भेंट) करना शुरू कर दिया जाय ?"

रुबी ने कहा, "वह है कहाँ आखिर ?"

नीलोफ़र ने कहा, "वह अपने ही कमरे मे मुँह लपेटे पड़े होंगे। मगर इरादा क्या है तुम्हारा ?"

रुबी ने कहा, "इरादा मेरा यह है कि मै उनके पास जाऊँगी ताजियते-दिले-मरहूम (स्वर्गीय दिल की सात्वना) के लिए।"

बिरजीस ने कहा, "नही यह ठीक नही है। उनके पास जाना नही चाहिये, यह तो ज्यादती हो जायेगी। तुम उनको चाय बनाकर भेज दो अपने नाम से, बस आज इतना ही काफ़ी है।"

नीलोफर ने कहा, "आप इसको इतना ही कहती है ? यह तो उनकी नीद उड़ाने के लिए बहुत कुछ है। गलतफ़हमी के इस सगे-बुनियाद पर वह रात भर मे एक कस्र (भवन) तामीर कर लेगे कि रुबी को क्यो मेरा खयाल आया, किसी और को यह खयाल क्यो न आया ? मेरी ही तरह वह भी एक घायल दिल रखती है, वगैरा-वगैरा।

रुबी ने कहा, "हाँ हाँ, मै समझ गई इस किस्म के दो हजार 'वगैरा' उनके ज़हन मे आ जायेगे ! अच्छा तो लाओ चाय भेजूँ मै अल्लाह का नाम लेकर।"

चुनाचे एक ट्रे लाई गई। उसमें कुछ नाश्ते का सामान सलीके से चुना गया। चाय की प्याली बना कर रखी गई और बुआ नसीबन को यह ट्रे दे दी गई कि जाकर फ़रीद साहब को दे आओ कि रुबी ने भेजी है। चुनाचे आगे-आगे चाय गई और पीछे-पीछे दबे पांव ये लड़कियाँ उन खिड़कियों तक पहुँच गई जो फ़रीद के कमरे में थी। जिस वक़्त नसीबन बुआ चाय लेकर पहुंची हैं फ़रीद अपने बिस्तर पर दराज़ छत की तरफ़ घूर रहे थे। बुआ नसीबन ने चाय मेज पर रखते हुए कहा, "साहबज़ादे, चाय पीजिये रुबी बिटिया ने भेजी है।"

फ़रीद ने ताज्जुब से उस तरफ़ देखते हुए कहा, "रुबी ने ? उनको क्या

ज़रूरत पेश आ गई मुझे चाय भेजने की ?"

नसीबन बुआ एक ही रकम ठहरीं, कहने लगीं, "अब यह तो मुझे पता नहीं मियाँ। पहले सबसे आपको पूछा, जब पता चला कि आपने चाय नही पी है तो खुद बावर्चीखाने में आई, यह चाय बनाई, किश्ती में लगाई और मुझसे कहा कि आपको पहुँचा दूँ।"

फ़रीद ने कुछ ग़ौर किया, फिर चाय की प्याली उठाकर नसीबन से कहा, "मेरा जी नही चाह रहा है। उन्होंने भेजी है तो सिर्फ़ चाय पिये लेता हूँ, बाकी ये चीज़ें ले जाओ।"

नसीबन ने कहा, "आप तो सिर्फ़ नाश्ता न करेंगे, वह खाना भी न खायेंगी।"

फ़रीद ने ताज्जुब से कहा, "क्या मतलब ?"

नसीबन ने मुँह फेरकर कहा, "जान-बूझ कर मतलब मुझसे पूछ रहे है।"

और यह आग लगाकर वह कमरे के बाहर आ गई। उधर ये लड़कियाँ भी दबे पाँव वहाँ से चल दी। नसीबन की इस कामयाब अदाकारी ने उन लड़कियों को भी क़ायल कर दिया कि अब मरे बे-मौत फ़रीद मियाँ।

३९

****

शिहाब, अर्जमंद और फ़ारूक़ी का अब यह मुस्तक़िल प्रोग्राम बन गया था कि सुबह का नाश्ता किया, मोटर लिया और रवाना हो गये शेखूपुरा। अगर फ़ारूकी को किसी किस्म की खास मसरूफ़ियत हुई तो सिर्फ अर्जमंद और शिहाब चले गये वर्ना फारूकी ने सरकारी तौर पर भी अपने को उस मुहिम से वाबस्ता कर लिया था और उमूमन तीनों साथ ही जाते थे और शेखूपुरा

पहुँच कर इकराम को भी साथ लेते थे। डाक्टर साहब के यहाँ किसी को पता न था कि ये लोग उस मुहिम में किस हद तक कामयाब हो चुके हैं और अब सूरते-हाल क्या है। मगर इस मसरूफ़ियत में एक नागहानी रुकावट यह पैदा हो गई कि सुरैया के [illegible] ने यकायक हजे-बैतुल्लाह (खुदा के घर का हज) का इरादा करके यह तै कर दिया कि सुरैया की शादी जल्द-से-जल्द कर दी जाये। चुनाँचे आज जो रात को सब खाने की मेज़ पर यकजा हुए तो नीलोफर ने डाक्टर साहब से पूछा, "डैडी, आपने इन हजरात को नोटिस दे दिया है ?"

डाक्टर साहब ने चौकते हुए कहा, "नही, अभी तो नौबत नहीं आई मगर मैं अभी कहे देता हूँ। भई आप हज़रात तो ऐसे हाथ-से-बेहाथ हुए है कि बस इसी वक़्त थोड़ी देर के लिए मुलाक़ात होती है। बहरहाल इसकी सज़ा यह है कि अब दो दिन आप इस कारे-खैर पर न जायेगे। कल हे इनकी सहेली और आप लोगों के दोस्त यानी सुरैया और अनीस का निकाह और परसों है दावते-वलीमा।"

शिहाब ने ताज्जुब से कहा, "यह एक दम से कैसे तारीख़ तै पा गई ?"

नीलोफ़र ने कहा, "यह कुसूर हमारा नहीं है और न आप लोगों की इजाज़त की उसमें ज़रूरत थी। आपको तो सिर्फ़ यह सुनाना था कि कल और परसों आप सिर्फ इस शादी मे शरीक होगे।"

शिहाब ने कहा, "यह तो इत्तला मिल गई, मगर सवाल तो यह है कि हम तो इस अचानक तरीके पर यह शादी की खबर सुनने को भी तैयार न थे।"

मिर्जा साहब ने कहा, "भई घबराने दीजिये उनको जिनकी शादी हो रही है। आप क्यों ख्वाहमख्वाह परेशान हो रहे है ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "किस्सा दरअसल यह है कि सुरैया के वालिदे-मोहतरिम जा रहे है हजे-बैतुल्लाह के लिए, लिहाजा एकदम तारीख ठहर गई है और तारीख का ठहरना ही क्या, घर ही का लड़का है मुद्दत से शादी ठहरी हुई है। तैयारियाँ उनके यहाँ सब मुकम्मल है, कोई खास धूम-धड़क्का भी नहीं करना है। सादगी से हो जायेगी शादी।"

नीलोफ़र ने कहा, "डैडी, सुबह हम सबको तोहफे तो ख़रीद ही लेना है।"

शिहाब ने कहा, "इससे ज़्यादा ज़रूरी यह है कि कम-से-कम इकराम को यह इत्तला तो हो ही जाये कि हम लोग नहीं आ रहे हैं। वह हम लोगों के लिए खासा एहतमाम करता है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "इस किस्म के मवाके के लिए अल्लाह ताला ने ज़हने-इन्सानी को इस बुलन्दी पर पहुँचा दिया कि उसने टेलिफ़ोन ईजाद कर लिया है जिस पर आप यह इत्तला इसी वक़्त दे सकते हैं, बल्कि टेलिफोन यह कर दीजिये कि वह भी कल यहाँ आ जायें और इस तकरीब में शिरकत करें।"

बेगम साहबा ने कहा, "कमाल करते है आप भी! इस तरह उनको मदऊ (निमंत्रित) कर रहे है जैसे आप ही के घर में तो तकरीब है।"

नीलोफ़र ने कहा, "जी नही, ममी, सुरैया के डैडी ने खुद मुझसे कहा है कि मेरी तरफ़ से यह काम तुम कर दो कि शिहाब साहब के एहबाब (मित्र) को तुम मदऊ कर दो।"

डाक्टर साहब ने कहा, "हाँ-हाँ, हम सबको हक है। ऐसी ही गैरियत होती तो यह बात कहता ही क्यों?"

मिर्जा साहब ने कहा, "मुझे तो सुबह से बुलाया है कि पखत (पकाने) के काम मे उनका हाथ बटाऊँ और बावर्चियों की निगरानी करता रहूँ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "बस तो फिर यह तै रहा कि खाना वहाँ न मिल सकेगा।"

मिर्जा साहब ने बुरा मान कर कहा, "यह क्या कह रहे है आप? हकीम सिराजुलहक की लड़की की शादी याद है?"

डाक्टर साहब ने बर्जस्ता कहा, "जिसमें सात बराती खाना खाने के बजाये ग़श खा गये थे और रात को बारह बजे वह तारीखी, वाहियात खाना नसीब हुआ था।"

बेगम साहबा ने कहा, "तौबा है! इस बहस को छोड़कर पहले यह तै कर लीजिये कि किसको क्या तोहफ़ा देना चाहिए।"

नीलोफ़र ने कहा, "ममी, मै तो अपना तोहफ़ा तै कर चुकी हूँ। मुझे बाज़ार से कुछ नही लाना है। कॉफी का वह सेट जो मैंने खुद पेण्ट किया था

सुरैया को बहुत पसंद है, वही दिये देती हूँ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "क्यों साहबज़ादी, मेरी सालगिरह पर पहले वह मुझे दिया गया था, अब सुरैया को दिया जा रहा है।"

नीलोफर ने बुरा मानकर कहा, "जी हाँ आपको वह तोहफ़ा पेश करके मैं आपसे यह भी सुन चुकी हूँ कि बकलम खुद तोहफा भी खूब रहा। जब अपनी गुलकारियो से सेट का नास मार चुकी तो अब मेरे सर थोपा जा रहा है। मैं तो जभी यह समझ चुकी थी कि आपने मेरे उस तोहफे की क्या क़द्र की है।

डाक्टर साहब ने कहा, "क़द्र की हो या न की हो, मगर वह मुझे इतना अजीज है कि तुम्हारे जहेज़ में भी उसे न दूँगा। सुरैया के लिए तुम कोई और चीज़ खरीद लो।"

बेगम साहबा ने कहा, "भई अगर मेरी बात मानो तो सुरैया को है गाने का शौक, कोई अच्छा-सा सितार या वाइलिन उसके लिए ले आओ।"

नीलोफ़र ने कहा, "जी नही, सितार और वाइलिन खुद उसके पास है। अच्छा एक बात हो सकती है कि अगर आप लोग भी मेरी कुछ माली मन्द करें तो मैं उसके लिए बिल्ली का वह घडी वाला सैट ले आऊँ जिसमे अलार्म लगाकर रख दिया जाता है और अलार्म बजने से दस मिनट पहले ही वह केतली में पानी उबाल कर फिर अलार्म उस वक़्त बजाता है जब चाय तैयार हो चुकती है।"

डाक्टर ने कहा, "हाँ-हाँ, मैं उसको खुद तुम्हारे लिए पसंद कर चुका हूँ। बहरहाल अगर तुम वही देना चाहती हो तो माली मदद कर दी जायेगी।"

शिहाब ने कहा, "मेरी भी कुछ ज़हनी मदद कर दीजिये कि मुझे क्या तोहफा देना चाहिये?"

अर्जमद ने कहा, "उसका तरीका यह नहीं है, बल्कि आसान सूरत यह है कि बाजार चलते है, सब वहाँ पसद कर लेगे कुछ-न-कुछ।"

नीलोफर ने बड़ी संजीदगी से कहा, "और इस वक़्त बाज़ार जाने में एक फ़ायदा यह भी है कि चीजों की क़ीमत भी न देनी पड़ेगी। बस जरा बन्द दूकानों को एहतियात से खोलना पड़ेगा कि खटके से आँख न खुल जाये किसी की।"

मिर्ज़ा साहब ने ताली बजा कर कहा, "बखुदा मेरे मुँह की बात छीन ली। मैं भी यही कहने वाला था कि इस वक़्त आपके लिए कौन-सा बाजार खुला होगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "मेरा मतलब इस वक़्त से न था। जाहिर है कि अब तो सुबह ही खरीदे जायेंगे तोहफे। इस वक़्त तो इकराम को फोन करना है सबसे पहले।"

शिहाब ने उठते हुए कहा, "वह मैं किये देता हूँ, आप तशरीफ़ रखें।"

शिहाब के जाने के बाद डाक्टर साहब को अब फ़रीद याद आये, "अरे भई, यह फ़रीद की कुर्सी आज खाली ही रही। उसने खाना भी नहीं खाया।"

नीलोफर ने कहा, "जी हाँ, आजकल वह ज़रा डाइटिग कर रहे है।"

डाक्टर साहब ने मूँछो को दुरुस्त करते हुए ताज्जुब से फर्माया, "डाइटिग ? वह किस सिलसिले में ?"

मिर्जा साहब ने दखल दिया, "भई कत्अ कलाम आपका, यह होती क्या चीज है मै समझा नही, वर्ना मैं वजह अर्ज कर देता।"

नीलोफर ने कहा, "फ़ाका कशी की मश्क·····।"

मिर्जा साहब ने उचक कर फ़र्माया, "अच्छा-अच्छा, हाँ वह तो वह कर रहे है ताकि महरूमि-ए-किस्मत सेहत में इजाफ़ा न कर दे।"

बेगम साहबा ने जलकर कहा, "घास चर गया है वह तो। उसने तो सच-मुच ऐसा ढोंग रचाया है कि जैसे बिरजीस उसको मिल ही तो जाती।"

डाक्टर साहब ने मुँह बनाकर और मूँछें सँवारकर फ़र्माया, "ईडियट ! उसके दिमाग में वाकई कोई खराबी है। मै उसका तिब्बी-मुआयना (डाक्टरी जाँच) करना चाहता हूँ।"

मिर्जा साहब ने बडे शाइराना अंदाज़ से फ़र्माया, "जी हाँ—'कहते है जिसको इश्क खलल है दिमाग का।'"

अर्जमन्द ने नीलोफ़र की तरफ़ इशारा करके कहा, "यह सारी शरारत हमारी इन हमशीरा अजीजा की है। एक तो वह बेचारा जहनी तौर पर है ही कुछ वाजबी सा इंसान, उस पर तुर्रा यह कि इन सबने मिल कर उसको और भी दीवाना बना दिया है।"

मिर्जा साहब ने फर्माया, "जी हाँ,

कुछ तो होते हैं मुहब्बत में जुनूं के आसार
और कुछ लोग भी दीवाना बना देते हैं।"

नीलोफर ने कहा, "सच्ची बात यह है कि सबसे ज्यादा आपने उस बेचारे का नातिका (बोलती) बन्द कर रखा है।"

मिर्जा साहब ने कहा, "किसने ? यानी मैंने ? हालाँकि मुझसे ज्यादा उसका हमदर्द शायद ही कोई हो। बखुदा दिन-रात समझाया करता हूं कि साहबजादे न तो अब तुम इतने बच्चे हो कि चाँद के लिए एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर रोना शुरू करो, न अभी अक्ल तुम्हारी इतनी बालिग हुई है कि जाल फेकते वक़्त कम-से-कम यही अंदाजा कर लिया करो कि अंका (पक्षी विशेष जिसका अस्तित्व ही नही) का आशियाना (घोंसला) कितना बुलद होता है। लिहाजा तुम यह कारोबारे-इश्क फिलहाल छोड दो। मगर तौबा कीजिये :

मरीजे-इश्क़ पर रहमत खुदा की
मर्ज बढ़ता गया जूं जूं दवा की

ये बातें हो ही रही थी कि दरवाज़ा खोलकर एकदम से 'अस्सलाम अलेकुम' कहते हुए फारूकी भी दाखिल होगये। चुनाँचे उनको देखते ही नीलोफर ने सुरैया और अनीस की अचानक शादी का अजमाली (सक्षिप्त) जिक्र करते हुए उनको भी नोटिस दे दिया कि कल और परसों आप सब सिवाय इस शादी और दावते-वलीमा में शिरकत करने के और कुछ न करेंगे। डाक्टर साहब ने भी नीलोफर की ताईद की मगर बेगम साहबा ने बात का रुख बदल दिया :

"पहले उस बेचारे से खाने के लिए तो पूछलो।"

फारूकी ने कहा, "जी नहीं, शुक्रिया। मै तो कहकर गया था कि एक महक्मा जाती (विभागीय) डिनर में शिरकत करना है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "और हमारी बेगम साहबा यह समझीं कि यह डिनर-सूट तुम इन्ही के यहाँ खाना खाने के लिए पहनकर आये हो।"

नीलोफर ने कहा, "हम लोगों ने भी खाना अभी खत्म किया है, मगर काफी का दौर अभी बाकी है। उसमें आप बहरहाल शिरकत करेंगे।"

फ़ारूकी ने रिफ़-ए-शर (शरारत दूर करने के लिए) के लिए कह दिया,

"चलिए यह समझौता ठीक है, मगर बहुत से लोग आज ग़ैरहाज़िर है। मसलन शिहाब कहाँ है ? और वह हमारे ममदोह क्या नाम मियाँ फ़रीद ?"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "शिहाब मियाँ तो टेलिफ़ोन कर रहे है इकराम साहब को कल और परसों की गैरहाजिरी के सिलसिले में। रह गये फरीद साहब, आजकल उनका शीराज-ए-खयाल ज़रा फ़र्द-फ़र्द हो रहा है (मानसिक एकाग्रता भंग हो रही है)।"

फ़ारूकी ने कहा, "हाँ साहब, उस बेचारे पर अर्जमद ने डाका ही ऐसा डाला है। तो क्या वाकई वह किसी अस्पताल में दाखिल हो गये है ?"

डाक्टर साहब ने कहा, "अब नहीं हुए तो हो जायेंगे।"

और उसी वक़्त शिहाब टेलिफोन करके वापस आ गया। उसके साथ ही काफ़ी भी आ गई और काफ़ी के दौर के साथ मौज़ू-ए-सुखन (बात का विषय) बदस्तूर फ़रीद ही बने रहे : उसके बाद शबबखैर (शुभ रात्रि) कह कर जब वह महफिल बरहम हुई तो शिहाब के कमरे में अर्जमंद और फ़ारूक़ी की मज्लिस आराई शुरू हो गई।

४०

****

आज का तक़रीबन सारा दिन सुरैया के लिए तोहफ़े ख़रीदने में गुज़ारकर जब सेपहर को सब चाय की मेज पर जमा हुए तो मिर्ज़ा साहब फ़रीद को भी समझा-बुझाकर ले आये थे और प्रोग्राम यह था कि चाय के बाद ही सुरैया के घर जाने की तैयारियाँ होंगी। मगर अर्जमंद, फ़ारूकी और शिहाब को बजाये सुरैया के अनीस के घर जाना था इसलिए उसका इसरार यह था कि तुम लोग

बरात के साथ चलो। उस वक़्त नीलोफ़र को इन्तेजार था बिरजीस, कौकब और रुबी का। इसलिए उनसे यही तै था कि वह सब यहाँ जमा होकर सुरैया के घर जायेंगी। चुनांचे अभी ये लोग चाय पी ही रहे थे कि बाहर से कौकब और रुबी के क़हक़हों की आवाज़ आने लगी और नीलोफ़र चाय छोड़कर भागी बाहर। वहाँ मालूम हुआ कि बिरजीस यहाँ तक तो ख़ैर आ गई थी मगर उस कमरे मे जाने से भाग रही थी जिसमें अर्जमन्द भी मौजूद थे। नीलोफ़र ने बाहर आकर यह मुश्किल हल कर दी और सबको लिए हुए अपने कमरे में चली गई तो बिरजीस की जान-मे-जान आई और उसने बैठते ही रुबी से कहा, "पहले वह पर्चा नीली को दिखा दो।"

रुबी ने बन कर कहा, "यानी ख्वाहमख्वाह भी। कोई भी ये मुहब्बतनामे इस तरह दिखाता फिरता है ?"

कौकब ने उसको डराया, "खुदा के लिए ऐसी बात ज़ुबान से न निकालो, क्या मालूम किस वक़्त की बात पूरी हो जाये।"

नीलोफर ने हैरत से कहा, "आखिर क़िस्सा क्या है, मेरे तो कुछ पल्ले पड़ा नहीं।"

रुबी ने कहा, "वही जो उस दिन चाय भेजी थी ना उस आशिके-नाशाद को ? बस उसी चाय का उच्छू हो गया है उन बेचारे को। चुनांचे एक ख़त लिख मारा है मुझे। जरा सुनो तो सही उन साहबज़ादे का यह खत।"

यह कहकर उसने पर्स से एक रंगीन लिफ़ाफ़े में से एक फूलदार काग़ज़ निकाल कर पढ़ना शुरू किया :

शुरू-ए-राहे-मुहब्बत अरे मआज अल्ला*
यह हाल है कि क़दम डगमगाये जाते हैं।"

नीलोफर ने कहा, "यानी इब्तेदा ही शेर से हुई है ?"

रुबी ने कहा, "जी हाँ, इन्तेहा मर्सिए पर होने वाली है ना। ख़ैर तुम सुनो तो सही :

'शुरू-ए-राहे-मुहब्बत अरे मआज अल्लाह,
यह हाल है कि क़दम डगमगाये जाते हैं।

---

* खुदा की पनाह।

'समझ में नहीं आता कि आपको किस तरह मुखातिब करूँ और आपने मुझको कितना हक दिया है। बहरहाल इस वक्त तो मुझको सिर्फ उस चाय की प्याली का शुक्रिया अदा करना था जो मुझ डूबते के लिए तिनके का सहारा बन गई। मुझको जहर की तलाश थी और मिल गया आबेहयात। अब मैं सिर्फ इतना पूछना चाहता हूँ कि इस तवज्जो की तफसीर (व्याख्या) क्या है ? काश यह मेरा वाहिमा (भ्रम) न हो बल्कि वाक़या हो। मगर यकीन नही आता कि मै ऐसा खुश नसीब भी हो सकता हूँ कि आपकी निगहे-इल्तिफ़ात (प्रेम-दृष्टि) अपना मरकज मुझे बनाये। दिल अब भी डर रहा है कि :

साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में।

'मेरे दिल से यह डर निकालना अब आपका काम है। यह ख़्वाब दिखाया है तो ताबीर भी सुना दीजिये।

फरीद।'

नीलोफ़र ने पूरा खत सुनकर कहा, "भई मुझसे कसम ले लो कि यह खत उसका लिखा हुआ नही है।"

कौकब ने कहा, "यही मै भी रुबी से कह रही हूं कि इस खत मे बहुत सी बातें ऐसी हैं जो फरीद बेचारे के इमकान ही मे नही।"

नीलोफर ने कहा, "यह खत मिर्जा साहब ने लिखवाया है या उसने किसी और से लिखवाया है। वह अगर लिखता तो कुछ इस किस्म का होता यह खत कि—

तुमने भेजी चाय मुझको शुक्र है
दिल के खौलाने को सूरत हो गई।

खुदा करे यही चाय हम दोनों की चाह बन जाये। चाय तो खैर मैंने पीली मगर यह कहना है :

चखादे चाश्नी-ए-शर्बते-दीदार थोड़ी सी
दमे-आखिर तो कर ले खातिरे-बीमार थोड़ी सी।"

रुबी ने कहा, "खुदा की मार उस पर ! अगर वह लिखता तो मै भी जवाब देती कि :

हो तुझ पर चाहने वाले खुदा की मार थोड़ी सी
तिरी सूरत पे बरसे काश अब फिटकार थोड़ी सी।"

नीलोफर ने हँसकर कहा, "लो भई मुबारक हो। इस फिरगंन के मुताल्लिक अभी तक यही ताज्जुब था कि यह बेगमाती जुबान कैसे बोल लेती है। अब तो खैर से उसने शेर कहना भी शुरू कर दिये।"

कौकब ने कहा, "यह तो वाकई जहानत और मौजूनियत की हद है।"

बिरजीस ने कहा, "खैर यह तो है ही, मगर सवाल तो यह है कि अब गोया इश्क बाकायदा शुरू हो गया ना ?"

रुबी ने बिरजीस को घूरकर कहा, "देखो जी तुम तो बोलना नहीं। यह सब तुम्हारा ही किया-धरा है। खुद तो बेचारे को बेवारिसा छोड गई, अर्जमद की हो रही और तबेले की बला बन्दर के सर पडी।"

कौकब ने कहा, "भई कह तो रही है ठीक हमारी बदिरया। अच्छा तो यह बताओ कि अब इस खत का जवाब क्या दोगी ?"

रुबी ने कानों पर हाथ रख कर कहा, "जी नही, मै बाज आई। अब कोई जवाब-ववाब नही जायेगा। उसने तो वही मसल पूरी कर दी कि मुह लगाई डोमनी गाये ताल बेताल। कोई देखले यह खत तो बैठे-बिठाये बात का बतगड बन जाये।"

नीलोफर ने कहा,"पागल है आप। मजाक मे डरते हुए आप ही को देखा। इसका जवाब जायेगा और जरूर जायेगा। अच्छा यह बताओ यह खत भेजा कैसे था उन हजरत ने ?"

रुबी ने कहा, "मुझे तो दरवाजे के पास पडा हुआ मिला है। न जाने खुद जाकर दरवाजे को किसी झिलमिली से उछाल आये लिफाफा या किसी और के हाथ भेजा।"

नीलोफर ने कहा, "अच्छा खैर अब तुम यह करो कि वह हजरत तो बैठे है सबके साथ चाय के कमरे मे। तुम जल्दी से एक खत लिख डालो, मै उनके कमरे में रखवाये देती हूँ।"

रुबी ने कसमसाते हुए कहा, "भई अल्लाह यह मजाक है जरा भोण्डा।"

नीलोफर ने कहा, "तुम लिखो तो सही खत जो मै लिखवाती हूँ। यह लो क़लम और वह रहा मेज पर काग़ज़ और लिफ़ाफ़ा। जल्दी करो, वक़्त कम है। शाबाश।"

रुबी बादिले-नाख्वास्ता (अनेच्छापूर्वक) उठकर मेज पर गई और बेदिली से बोली, "बोलो क्या लिखूं ?"

नीलोफर ने लिखवाते हुए कहा, "मेरी निगाहों का पयाम तो आप इसलिए न समझ सके कि उस वक़्त आपकी निगाहें किसी और के लिए वक्फ थीं। और अब जबकि यह खामोश पयाम अल्फाज की शक़्ल में आ गया है, आप इसको ख्वाब समझ रहे हैं। जी हाँ ख्वाब वही देख सकता है जिसकी क़िस्मत में नीद भी हो। फिर सितम यह कि जिसकी आँखों की नीद तक़ लुट चुकी है, उससे आप अपने ख्वाब की ताबीर माँगते है। इस तजाहुले-आरिफाना (जान-बूझ कर भूलना) की दाद दिये बगैर नही रह सकती।"

कौकब ने कहा, "मैने कहा वह कयामत तक न समझ सकेगा कि 'तजाहुले-आरिफाना' क्या बला होती है, किसी दवा का नाम है या कोई मज़हबी किताब है।"

नीलोफ़र ने कहा, "तुम रहने तो दो। बस इतना ही काफ़ी है। नाम न लिखना अपना। देखूँ ज़रा।"

और उसने रुबी से कागज़ लेकर पढने के बाद कहा, "मैने कहा रुबी की बच्ची, तेरा तो उर्दू ख़त भी इतना पाकीजा है कि मैं क्या कहूँ। और कमाल देखो इमला की एक गलती भी नहीं। मैं समझती थी कि ताबीर अलिफ़ से लिखी होगी और तजाहुले-आरिफ़ाना को तो न जाने क्या लिखा होगा। मगर कमाल है।"

चुनांचे रुबी के खत को बारी-बारी कौकब और बिरजीस ने भी देख कर दाद दी और उसके बाद नीलोफर ने यह खत सादे लिफाफे में रख कर बुआ नसीबन को बुला कर न जाने क्या समझाया कि वह खत लेकर दुपट्टे के आँचल में छुपाये वहाँ से चल दी। अभी बुआ नसीबन बाहर निकली ही थीं कि डाक्टर साहब की आवाज़ सुनाई दी, "अरे भाई कहाँ है हमारी ये बेटियाँ? यह तर्के-मवालात (सम्बन्ध-विच्छेद) कैसा कि डेढ़ ईट की मस्जिद अलग बनाये बैठी हैं ?"

यहाँ सबने अपने दुपट्टे सरों पर लिये, चुनाँचे डाक्टर साहब के दाखिल होते ही नीलोफ़र ने कहा, "डैडी इन बेगम साहबा की वजह से हम यहाँ

कैद हैं।"

डाक्टर साहब ने बिरजीस को घूर कर देखते हुए कहा, "क्यों बिरजीस बेटी यह क्या हरकत ? यानी तुम मेरी तरबियत पर दुनिया को हँसवाओगी ? तुमको खुद-ऐतमादी (आत्म-विश्वास) के अलावा अर्जमन्द की शराफ़त पर भी ऐतमाद करके बाहर आ जाना चाहिये। मुझे ये ढसोकले बहुत ही बुरे मालूम होते है कि उस शख्स से पर्दा करो जिसको खुदा और रसूल के हुक्म से तुम्हारा महरम बना दिया गया है और बे-पर्दा रहो उनके सामने जो दरअसल नामहरम है। उठो यहाँ से।"

और उस नादरी हुक्म की तामील में सबके साथ बिरजीस बेचारी भी सिमटी-सिमटाई उस महफिल में आ गई जहाँ सब ही मौजूद थे सिवाय फरीद के। बिरजीस को देखकर बेगम साहबा ने कहा, "बिरजीस बेटी, तुम इधर आ जाओ मेरे पास।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "मैंने तो बिरजीस बीबी का नाम लाहौल रख दिया है।"

शिहाब ने कहा, "क्या मतलब लाहौल से ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "मुलाहिजा फ़र्माइये कि जब फ़रीद मियाँ यहाँ थे तो यह न थीं, अब यह है तो वह गायब।"

मगर इसी वक़्त फ़रीद साहब अपना सुर्ख-सुर्ख चेहरा लिये दुज्दीदा (चोरों की-सी) नजरो से रुबी को देखते हुए दाखिल होकर मिर्जा साहब के पास जा बैठे। अर्जमन्द और बिरजीस की निगाहे एक-दूसरे के लिए चोर बनी हुई थी। लड़कियाँ आपस मे खुसर-पुसर कर रही थी कि इतने में मिर्जा साहब की आवाज गूंजी :

"तजाहुले-आरिफाना कहते है बनावटी लाइल्मी ओर मसनूई जेहल को।"

फरीद ने शर्मिन्दा होकर कहा, "लाहौल वला कूवत।"

मिर्जा साहब की तकरीर जारी थी, "मसलन आप में तो सिर्फ तजाहुल-ही-तजाहुल है अलबत्ता अगर मै तजाहुल से काम लूं तो उसको तजाहुले-आरिफाना कहेंगे।"

और शिहाब के पूछने पर उन्होंने सबको बता दिया कि न जाने क्यों मुझसे

नजाकते आरिफाना के मानी पूछ रहे थे। डाक्टर साहब ने उसी वक्त मोटरों पर सवार होने का हुक्म देकर इस लतीफ़े को तश्ना ही छोड़ दिया।

४१

****

डाक्टर साहब की कोठी ही से यह काफिला दो हिस्सों मे तक़्सीम हो गया था यानी शिहाब और उसके एहबाब तो अनीस के घर चले गये थे और डाक्टर साहब बाकी सबको लेकर सुरैया के घर रवाना हो गये थे। चुनाचे जिस वक्त यह काफिला जिसके सालार डाक्टर साहब थे, सुरैया के घर पहुँचा है नीलोफर, कौकब, बिरजीस और रुबी तीर की तरह पहुँची उस कमरे में जहाँ सुरैया को दुल्हन बनाने के काम हो रहे थे। चुनाचे सुरैया की वाल्दा ने उन लड़कियों को देखते ही कहा, "लो भई यह काम तो अब ये सब सभाल लेंगी, हम सबको अब दूसरे कामों की तरफ मुतवज्जे होना चाहिये।"

नीलोफ़र ने कहा, "चच्ची जान हम खुद यही चाहते है कि सुरैया का चार्ज आप हमको दे दें और इस बेचारी को परेशान करने के लिए अब और कोई यहाँ न आये। अभी उस गरीब को सुसराल जाकर भी गठरी बनकर बैठना है। लिहाजा यहाँ तो ज़रा इसको बेतकल्लुफी से तैयार होने का मौका मिल जाये।"

सुरैया की वाल्दा ने हँसकर कहा, "हाँ-हाँ तो तुम यह कमरा अंदर से बन्द ही कर लो और किसी को यहाँ फटकने न दो तावक़्ते कि मै खुद कमरा न खुलवाऊँ।"

और यह कह कर वह तो बाक़ी बीबियों को लेकर वहाँ से चली गईं और

नीलोफ़र ने वाक़ई कमरा अंदर से बन्द करके सुरैया से कहा :

"लो भई, अब बजाय दुल्हन के तुम आदमी बन जाओ तो तुमको एक ताजा लतीफा सुनाया जाये जिसकी हीरोइन यह बैठी है बी रुबी।"

सुरैया ने गौर से रुबी को देखकर कहा, "इनको तो मैंने देख लिया, मगर हीरो कौन है ?"

विरजीस ने कहा, 'जिसकी हीरोइन पहले मैं बदनसीब थी।"

सुरैया ने हँसकर कहा, "अच्छा-अच्छा, यानी अजीजुल कद्र मियाँ फरीद सल्लमा। हाँ सच तो है, यह किस्सा तो उस दिन शुरू हो चुका था जब इनसे चाय भिजवाई गई है उस मरीजे-दर्दे-मुहब्बत को।"

नीलोफर ने रुबी के पर्स से वह फ़रीद वाला खत निकालकर सुरैया को देते हुए कहा, "यह है उस की रसीद ज़रा पढ़ लो।"

सुरैया ने फरीद का खत पढकर कहा, "कमाल है, मगर यह खत बड़े ढंग से लिखा है।"

विरजीस ने कहा, "मुझे भी नीली की इस राय से इत्तेफ़ाक है कि यह खत उसने खुद नही लिखा है किसी से लिखवाया है।"

नीलोफर ने कहा, "अब यह देख, यह है उस खत की नकल जो उस खत के जवाब में आज ही उनको भेजा गया है।"

सुरैया ने यह खत भी पढ़कर कहा, "हद कर दी तुम लोगों ने भी। मगर यह तो बताओ वह गरीब समझ भी लेगा इस खत को ?"

कौकब ने कहा, "यही तो लतीफ़ा हुआ है कि अभी हम लोगों के चलने से पहले उसने चुपके से मिर्जा साहब से पूछा कि तजाहुले-आरिफ़ाना किसको कहते है। वह ठहरे एक ही ढिढोरा, उन्होने सबके सामने तजाहुले-आरिफ़ाना के मानी बताना शुरू कर दिये और हम लोगों को जो शुब्हा था वह पूरा हो गया कि उस बेचारे को खत लिखवाने के अलावा शायद किसी और से पढ़वाना भी पड़े।"

नीलोफ़र ने कहा, "मगर मेरा खयाल है कि यह भी मिर्ज़ा साहब का तज़ाहुले-आरिफ़ाना था कि वह यह ज़ाहिर कर रहे थे कि गोया इत्तेफ़ाक़न एक लफ़्ज का मफ़हूम (अर्थ) फ़रीद ने उनसे पूछ लिया है, हालांकि मेरा खयाल

यह है कि वह चाय की रसीद में उसने जो ख़त रुबी को भेजा है उसका मज़मून मिर्ज़ा साहब ही का है। लिहाज़ा उनको समझ जाना चाहिये कि उसी खत के जवाब में कोई तहरीर आई होगी जिसमें यह लफ़्ज होगा।"

बिरजीस ने कहा, "खैर माफ़ कीजियेगा, इतने समझदार तो आपके मिर्जा साहब भी नही है। हाँ यह दूसरी बात है कि अब फ़रीद उनको अपना हमराज समझकर यह खत दिखादे।"

कौकब ने एकदम चौककर कहा, "तौबा है भई, हम सब तो इन बातो मे लग गये और दुल्हन बनाने वाला किस्सा यों ही रह गया। मेरे खयाल मे अब बरात आती ही होगी।"

रुबी ने, जिसे बाल बनाने मे कमाल हासिल था, कंघा लेकर सुरैया का सर थाम लिया और बिरजीस ने मेकअप का सामान लेकर सूरत-गरी शुरू कर दी। नीलोफर लिबास की तरफ मुतवज्जे हो गई और कौकब ने जेवर पहनाना शुरू कर दिये। नतीजा यह कि थोडी ही देर मे सुरैया को सबने मिलकर दुल्हन बना दिया तो नीलोफर ने उसको करीब से देखने के बाद जरा दूर हट-कर गौर से देखा और उसकी इस हरकत पर बिरजीस ने हँसकर कहा :

"दूर जाकर देखते नज़दीक आकर देखते
हमसे हो सकता तो हम उन को बराबर देखते।"

नीलोफर ने कहा, "मैं तो यह देख रही हूँ कि कैसी नाजुक दुल्हन बनी है मेरी सुरैया जैसे एक नाज़ुक-सा पचरगा हबाब (बुलबुला)।"

कौकब ने कहा, "अब तो अनीस भाई से कहना पडेगा कि :

अनीस ठेस न लगजाये आबगीनों को।"

और उसी वक्त पुलिस-बैण्ड की आवाज सुनकर सब लड़कियाँ भर्रा मार कर उन खिडकियों में आ गई जहाँ से मर्दाना नशस्त का हर मज़र देख सकती थी। मगर वहाँ पहुँचते ही नीलोफ़र फिर लौटी और सुरैया को पकड़ कर उठाते हुए कहा :

"तू भी देखले ना अपनी बरात फ़िलहाल कमरा बन्द है।"

और यह कह कर उसको वाकई खिड़की के पास घसीट लाई। रुबी ने खुशी की एक कोक भर कर कहा :

"ओह, कैसे अच्छे मालूम हो रहे है आज अनीस भाई। मैंने उनको कभी शेरवानी और चूड़ीदार पाजामे में नहीं देखा था। सफ़ेद कमख्वाब की शेरवानी फूटी निकलती है उन पर।"

बिरजीस ने कहा, "मगर तुम्हारा मिट्ठू बेटा भी सावन की पैदावार नजर आ रहा है। इस्काई रंग के सूट पर सुर्ख टाई बाँधे हुए।"

नीलोफ़र ने कहा, "अच्छा अच्छा, वह भी पहुँच गये इकराम साहब।"

कौकब ने कहा, "कौन से है वह ? जिनके मुँह में सिगार है वह तो नही ?"

नीलोफर ने कहा, "हाँ हाँ वही। सिगार ही की वजह से तो मैंने भी पहचाना है इसलिए कि उनके लिए सिगार बराबर यहाँ से जाते है।"

बिरजीस ने कहा, "तसवीर भी तो देख चुकी हो शिहाब भाई के कमरे में।"

और उसी वक़्त कमरे का दरवाजा धड़ धड़ाया जाने लगा। साथ ही सुरैया की वाल्दा की आवाज़ आई, "खोलो लड़कियो मैं हूँ। अब दरवाज़ा खोल दो बरात आ गई है।"

चुनाचे सबने सुरैया को दुल्हन बना कर बिठाने के बाद जैसे ही दरवाजा खोला है, बेगमात का एक सैलाब इस तरह कमरे में उमँड आया कि नीलोफ़र बिरजीस और उनके बाद कौकब और रुबी सभी सुरैया को उन बेगमात के रहमो-करम पर छोड़ कर कमरे के बाहर चली गई। चुनाचे थोडी ही देर में बाहर से वकील और गवाहो के आने का शोर बुलन्द हुआ लिहाजा ये लडकियाँ मर्दाना नशस्त मे इसलिए पहुँच गई कि निकाह के वक़्त करीब से छुहारे और नुकुल लूट सकें।

बाहर उनके पहुँचते ही मसनद के करीब वाले सोफे से अर्जमंद, शिहाब, इकराम और फारूकी उठ कर दूल्हा के इर्द-गिर्द बैठ गये ताकि ये लड़कियाँ सोफे पर बैठ जायें। चुनाँचे उस सोफे पर बैठते हुए अब जो नजर उठाकर देखती है तो मुकाबिल वाले सोफे पर फ़रीद साहब विराजमान थे, और रुबी को देख-देखकर एक अजीब गम्माज़ (चुगलखोर) मगर शर्मगी मुस्कराहट उनके लबो पर खेल रही थी। शिहाब ने उन लड़कियों को मुख़ातिब करके इकराम की तरफ़ इशारा करते हुए कहा :

"यही हैं इकराम साहब जिनकी हिमाक़त के डंके इस वक़्त उस होटल में बज रहे है जिसमें जनाब का सामान रखा हुआ है ।"

नीलोफ़र ने कहा, "तो चलिये हम लोग भी चल कर उसी होटल मे ठहर जायें ।"

इकराम ने सलाम करके कहा, "साहब, एहमक है यह । अभी पहुँचा था जल्दी में, सामान होटल में रख दिया वर्ना मेरी शामत तो आई नही है कि होटल मे ठहरूँ ।"

'अस्सलाम अलैकुम' का नारा उन वकील साहब ने बुलन्द किया जो दुल्हन से पूछ कर मय गवाहों के अब दूल्हा की तरफ बढ रहे थे । चुनांचे दूल्हा की मसनद के क़रीब आकर पहले तो उन लोगो ने क़ाजी साहब से कुछ साज़िश की, फिर उसके बाद काजी साहब ने दूल्हा मियाँ से सरगोशियाँ करने के बाद ख़ुत्बा-ए-निकाह पढा और दुआ के बाद छुहारे जो लुटाये गये तो लूटने वालों में सबसे पेश-पेश मिर्ज़ा साहब थे । चुनांचे अपनी दोनों जेबें भरने के बाद दामन में बहुत से छुहारे लेकर जब वह अपनी जगह पर बैठे तो फ़रीद ने कुछ सरगोशी में उनसे कहा जिसका जवाब उन्होने बआवाज़े-बुलन्द दिया कि "सुभान अल्लाह ! किसकी बकरी और कौन डाले घास ।"

शिहाब ने पूछा "खैरियत तो है किब्ला ?"

मिर्ज़ा साहब ने फरीद की तरफ इशारा करके कहा, "जनाब फ़र्मा रहे है कि—अच्छा फिर अर्ज़ करूँगा ।"

और यह कह कर रुबी की तरफ़ देख कर इस तरह मुस्कराये कि बग़ैर उनके कहे भी राज़-शनास (मर्मज्ञ) तो समझ ही गये कि क्या मामलात है चुनाचे रुबी तिलमिला कर उठी और उसके साथ ही सब लड़कियाँ महफ़िल से उठकर अंदर चली गई और जब ये सब दुल्हन के कमरे में पहुंच गई तो रुबी ने बड़े गुस्से से कहा :

"यह ग़लत है, अब मै इस मज़ाक में हिस्सा न लूँगी । वह तो एहमक़ है ही, मगर यह मिर्ज़ा साहब भी अजीब चीज़ है ।"

नीलोफर ने कहा, "भई देखो, मज़ाक किया है तो अपने में बर्दाश्त भी पैदा करो । मज़ाक़ में तो सब कुछ यही होता है ।"

रुबी ने बड़े तेवरों से कहा, "जी हाँ, आपकी तफ़रीहे-तब्अ (मनोविनोद) के लिए मैं अपने को सारे में बदनाम करालूँ। क्या कहते होंगे शिहाब भाई और उनके दोस्त ?"

बिरजीस ने कहा, "खैर शिहाब भाई और उनके दोस्त अब ऐसे गये गुजरे भी नही है कि इस बेहूदगी को वाक़्या समझलें।"

नीलोफ़र ने कहा, "असल में गलती यह हुई है कि हमने उन लोगों को इस मजाक में अपना शरीक नही किया है। बहरहाल तुम इत्मिनान रखो, उसका भी इन्तेजाम हो जायेगा। मगर बहन चाहे बुरा मानो, मगर तुम्हारे इस क़द्र संजीदा हो जाने से यह दिल्लगी वाकई दिल्लगी समझ ली जायेगी।"

बमुश्किल तमाम रुबी को सबने मिलकर काइल किया और आखिर ये सब भी उस वक़्त फ़िर मर्दाना महफिल में आगई जब दुल्हन को जनाना महफ़िल से निकाल कर बाहर लाया गया ताकि दूल्हा-दुल्हन की तसावीर खिंच सके। वह नीलोफ़र और रुबी का सहारा लिये महफिल में आगई और अनीस के बराबर ही उसको बिठाकर सबसे पहली तसवीर अर्जमंद ने ली। उसके बाद कई तसावीर ली गई और जब लोग खाने के लिए उठे तो दुल्हन को उसकी ये सहेलियाँ फिर अदर ले गई।

४२

****

चूंकि इकराम को अनीस के यहाँ दावते-वलीमा (विवाह-भोज) मे भी शिरकत करनी थी लिहाज़ा वह आज भी यहीं था और शिहाब के कमरे में सब

ही जमा थे, यानी अर्जमंद और फ़ारूक़ी भी और उस मौक़े से फ़ायदा उठाने के लिए महम्मद हुसैन भी मौका निकालकर आ गया था और सब सर जोड़े अपनी उस मुहिम पर तबादल-ए-खयाल कर रहे थे कि नीलोफ़र की आमद ने उन सबकी तवज्जो उसी की तरफ़ करदी। सबसे पहले इकराम ने बडी सुर्खरूई के साथ कहा :

"देख लीजिये नीली बहन, वह रहा मेरा सूटकेस और वह बिछा हुआ है बिस्तर। जिस सामान पर आपको एतराज़ था कि होटल में क्यों है वह देख लीजिये आपके दरे-दौलत पर मौजूद है।"

नीलोफर ने कहा, "गोया आप ही ने तो मँगाया है। यह नही कहते कि मैंसे अर्जमंद भाई की ड्यूटी लगा दी थी कि रात ही को सामान घर पर आ जाये। मगर यह सूझी क्या थी आपको होटल की ? हद करदी आपने भी।"

इकराम ने जल्दी से कहा, "अस्तगफिरुल्लाह* ! किस काफ़िर का इरादा था होटल में ठह रने का ? वह तो हुआ यह कि मैं उस वक़्त पहुँचा जब अजरू-ए-कायदा आप लोगों को यहाँ से रवाना हो जाना चाहिये था और चूंकि मैं बगैर गुस्ल किये और कपडे बदले शिरकत न कर सकता था लिहाजा महज़ गुस्ल करने के लिए होटल मे जाना पड़ा।"

नीलोफर ने बडे विक़ार से कहा, "चलिये माफ़ किया आपका कुसूर। अच्छा अर्जमद भाई, मै इस वक्त आप लोगों के लिए एक ताजा लतीफा लाई हूँ, मगर खुदा के लिए सारा खेल बिगाड़ न दीजियेगा। बस खामोशी से लुत्फ़-अंदोज होते रहिये।"

यह कहकर उसने रुबी और फरीद की पूरी दास्तान उन सब के कहकहों की गूँज में मन-व-अन (ज्यो-की-त्यो) सुना दी तो शिहाब ने कहा, "भई, यह है तो बड़ा दिलचस्प मजाक, मगर यह भी वाक़या है कि है निहायत बेरहमी का खेल।"

अर्जमंद ने कहा, "उस शख्स के साथ क्या बेरहमी हो सकती है जिसके दिल की हैसियत थाली के बैंगन-सी हो। अभी एक दिन पहले अपने एक नामुराद इश्क का सोग लिये पडे थे, अब यह ताज़ा इश्क शुरू कर दिया।"

---

* ख़ुदा हमारी मग़फ़िरत (मुक्ति) करे।

फ़ारूकी ने कहा, "बड़ा सस्त ईडियट है यह शख्स भी। और मैं तो उससे ऐसा बोर होता हूँ कि उससे महफूज़ रहने ही की खुदा से दुआ माँगता हूँ। इकराम तुमने गालिबन गौर से उस शख्स को नही देखा है। मेरा खयाल यह है कि हिमाकत के जरासीम फैलाने की यह शख्स मशीन है।"

महम्मद हुसैन ने घड़ी देख कर कहा, "अच्छा तो अब मुझे इजाज़त दीजिये, वहाँ पहुँचने का वक़्त आ गया।"

इकराम ने कहा, "अच्छी बात है मगर महम्मद हुसैन साहब, क्या खयाल है आप को हम लोग सही रास्ते पर जा रहे है ना ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "इस कद्र सही रास्ते पर कि मेरे खयाल में आप मंजिले-मक्सद को रौदते फिर रहे है। और मुझे कोई ताज्जुब न होगा अगर मैं कल ही यह सुन लूं कि आप गौहरे-मुराद (अभीष्ट रत्न) पा गये।"

शिहाब ने कहा, "मुझे आपकी इस खुशफहमी से इख्तेलाफ़ है। मेरे खयाल में मंजिल इतनी करीब भी नही है जितनी नजर आ रही है। बहरहाल हमारी कोशिश का रुख दुरुस्त जरूर है।"

नीलोफर ने उलझ कर कहा, "तौबा है। मैने इसीलिए पहले ही से यह नोटिस दे दिया था कि ये दो दिन सब की छुट्टी के दिन है और आप शेखूपुरा न जायेंगे। लो भला मुझे क्या मालूम था कि शेखूपुरा किसी जगह का नाम नहीं बल्कि इस माहौल का नाम है जहाँ यह जिक्र छिड जाये।"

इकराम ने कहा, "जी हाँ—'हम जहाँ बैठ के पीले वही मैखाना है।' बहरहाल आप नाराज है तो लीजिये यह जिक्र खत्म। अब हुक्म दीजिये कि हमारे लायक़ क्या खिदमत है ?"

महम्मद हुसैन हँसता हुआ सब को सलाम करके रुख्सत हो गया तो नीलोफ़र ने कहा, "अब मेरा हुक्म नही बल्कि नाचीज राय यह है कि इसी तरफ़ आप सब तशरीफ ले आयें। मैं रुबी, कौकब और बिरजीस से वादा करके आई थी कि अभी सबको पकड़ कर लाती हूँ।"

शिहाब ने उठते हुए कहा, "आओ भई, चलो वहाँ चलें, उनको दरअसल अपने ताज़ा नाटक के सीन दिखाना है।"

इकराम ने कहा, "तो भई जो चीज देखने की होती है। वह दिखाई ही

जाती है । ऐसे तमाशे कहाँ देखने को मिलते हैं । तशरीफ़ लाइये ।"

चुनाचे जिस वक़्त ये सब बड़े ड्राइँग रूम में पहुँचे है, वहाँ पूरा दरबार लगा हुआ था । बेगम साहबा ने सबसे पहले इकराम का खैरमकदम करते हुए कहा, "क्यो भई, अगर अब भी घर मे कोई तकलीफ़ हो तो होटल भिजवाने का इन्तेज़ाम कर दिया जाये ।"

नीलोफ़र ने कहा, "ममी उस किस्से को अब न छेड़िये । इकराम भाई एक माकूल बजा बताकर उस किस्से को साफ़ कर चुके है ।"

मिर्ज़ा साहब ने अपने बटुए से छालियो का खुश्क मसाला बनाकर फाँकते हुए कहा, "मगर बखुदा कमाल किया आपने । मेरी तो अक़्ल चक्कर मे है कि आपको होटल का खयाल आया ही कैसे ?"

डाक्टर साहब ने मूँछों को दुरुस्त करते हुए फ़र्माया, "यह खयाल भी इसी तरह आया होगा जिस तरह और खयालात इन्सान के ज़हन मे आ जाया करते हैं । बहरहाल जब यह क़िस्सा तै हो गया है तो अब उस पर रायजनी बेकार है । इकराम साहब, आप हमारे भाई साहब को कब से जानते है ?"

इकराम ने कहा, "अब तो एक मुद्दत गुज़र चुकी इस वाक़्ये को । कल शादी की महफ़िल में आपको सबसे पहले उस वक़्त देखा था जब आप निकाह के छुहारे लूट रहे थे । उसी वक़्त शिहाब के ज़रिये यकतरफ़ा तार्रुफ़ हो गया था ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "बस तो अब किसी मज़ीद तार्रुफ़ की ज़रूरत नही । मगर यह खूब कहा आपने कि एक मुद्दत गुज़र चुकी है । मै तो समझा था कि न जाने कब की जान-पहचान है ।"

मिर्ज़ा साहब ने फ़र्माया, "जी हाँ, बाज़ मुलाक़ातें इसी क़िस्म की होती हैं कि मिलने के बाद यह महसूस होता है कि जैसे न जाने कब से एक-दूसरे को जानते हैं ।"

डाक्टर साहब ने बात काट दी, "खैर, खैर । और इकराम साहब आप इनसे भी मिलें अज़ीज़ी-फ़रीद मियाँ से ?"

फ़रीद ने उठकर सलाम करते हुए मुसाफ़े के लिए हाथ जो बढ़ाया तो इकराम ने बड़ी संजीदगी से पूछा, "क्या चाहते हैं आप ?"

फ़रीद ने बड़ी मासूमियत से कहा, "तार्रुफी मुसाफ़ा·····।"

इकराम ने जल्दी से खडे होकर कहा, "ओह, माफ कीजियेगा मैं समझा था कि आप से तार्रुफ की कोई फीस मुकर्रर है। बहरहाल माफ कीजियेगा।"

लडकियाँ एक-दूसरे की आड लेकर हँसी से बेहाल थी कि मिर्जा साहब ने कहा, "इकराम साहब, इनसे मिलकर जाहिर है कि आपको मसर्रत भी हुई होगी मगर मजीद और तफसीली मसर्रत अब होगी। नही पैदा होते अब ऐसे लोग।"

फरीद ने खश्मगी नजरो से मिर्जा साहब को देखकर कहा, "आप आखिर क्यो हरेक के सामने मुझको जलील किया करते है ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "अच्छी बात है, आइंदा से तन्हाई में जलील करूँगा।"

बेगम साहबा ने मुँह बनाकर कहा, "तौबा है इन दोनो की छेड-छाड़ से भी।"

मिर्जा साहब ने बडा मजा लेकर कहा, "साहब इनसे तो छेड में मुझे वही लुत्फ आता है जिसका ज़िक्र 'गालिब' ने किया है। 'छेड़ खूबाँ से चली जाये असद'। लतीफ़ा यह है कि खुद इन हजरत को भी मालूम है कि मेरी इस छेड़ में कितना खुलूस होता है। ब खुदा इस भरी दुनिया में मुझसे बड़ा इनका हमदर्द शायद ही कोई और हो। खुदा के लिए अब तो कह दो कि मै सच कह रहा हूँ।"

फ़रीद ने हँसकर कहा, "यह भी वाक़्या है और यह भी वाक़या है कि आप से बडा बेदर्द मेरे लिए कोई नहीं है।"

मिर्जा साहब ने खुश होकर कहा, "भई, चश्मे-बद दूर, क्या हमदर्द के लिए बेदर्द लाये हो ! अब तुम खुद देख लो कि यह होता है सोहबत का असर, अभी और तरक्की करोगे अगर आते-जाते रहे मेरे पास।"

इकराम ने हँसकर कहा, "हमारे मिर्जा साहब हैं निहायत दिलचस्प आदमी।"

मिर्जा साहब ने आदाब बजा लाकर कहा, "यह तो हुस्ने-नज़र है आपका वर्ना अब इस पसमाँद-ए-दिले-मरहूम में रह ही क्या गया है। अलबत्ता ज़िन्दा-

दिली थी कभी ज़रूर जब दिल जिन्दा था।"

डाक्टर साहब ने चौककर कहा, "और इन्तेक़ाल कब हुआ मरहूम का ?"

लड़कियाँ डाक्टर साहब के इस सवाल पर खिल खिलाकर हँस पड़ीं। आखिर कहा, "इकराम भाई, आपने कलाम भी सुना है आपका ?"

इकराम ने गोया बडे इश्तियाक से कहा, "नही साहब, इस शर्फ़ (सौभाग्य) से तो महरूम ही रहा अब तक। तो क्या मिर्ज़ा साहब, किब्ला शेर भी फ़र्माते हैं ?"

डाक्टर साहब ने नीलोफर से कहा, "किस कद्र गलत वक़्त पर यह जिक्र तुमने छेडा है डार्लिंग ? अब अगर खुदा-न-खास्ता भाई साहब शुरू हो गये तो हम लोगों का दावते-वलीमा में जाना भी धरा रह जायेगा। बहरहाल मैं इजाज़त चाहता हूँ, मुझे तैयार होना है।"

नीलोफ़र ने कहा, "तो मैंने यह कब कहा है कि इसी वक़्त यह मरहला दर पेश हो जाये। मेरा मतलब तो यह था कि शाम को जरा मुशाइरा भी रहेगा।"

इकराम ने कहा, "शाम को तो शायद मैं इस्तफ़ादा (लाभ) हासिल न कर सकूं। इसलिए कि आज बहरहाल वापस भी जाना है।"

शिहाब ने कहा, "बकवास फर्माते है आप। आपके मुताल्लिक तै हो चुका है कि आप कल अलस्सुबह तशरीफ ले जायेंगे, बल्कि हम सब भी साथ चलेगे।"

नीलोफर ने कहा, "कम-से-कम मुझे इसी प्रोग्राम की इत्तला दी गई थी, इसीलिए रात के खाने पर मैने ताज़ा तरीन दूल्हा अनीस भाई और ताजा तरीन दुल्हन सुरैया को बुलाया था। हालांकि वहाँ एतराज यही था कि चौथी से भी पहले चाले शुरू हो गये। मगर मेरी यह दरख्वास्त आखिर मंजूर हो गई और यह हथेली पर सरसों मैंने दरअसल आप ही की वजह से जमाई थी।"

इकराम ने कहा, "अगर आपकी यही मर्ज़ी है तो सरे-तसलीम खम है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "बस तो फिर रात के खाने के बाद समा खराशी करूँगा।"

डाक्टर साहब ने फरमाया, "अल्लाह ताला मुझको उस वक्त सब्रे-जमील अता फ़र्माये। बहरहाल अब आप सबसे इत्तलाअन (सूचनार्थ) अर्ज़ है कि एक

बजे वहाँ पहुँचना है और मेरी घड़ी में जो कभी ग़लत नहीं होती साढ़े बारह हो रहे हैं।

चुनांचे सब तैयार तो थे ही, अपनी उस तैयारी पर एक मर्तबा नज़रे-सानी करने के बाद रवाना हो गये।

४३

****

आज का दिन था ही कुछ मसरूफियत का, इकराम के आ जाने से एक तो यों ही चहल-पहल थी इस पर तुर्रा यह कि अनीस के यहाँ दावते-वलीमा भी थी और चूंकि अपने खास एहबाब से अपनी दुल्हन को मिलाना भी चाहता था, लिहाज़ा सेपहर को असराना भी था जिसमें सुरैया बहैसियत एक फैशनेबुल दुल्हन के मेहमानों का खुद खैरमकदम कर रही थी। चुनांचे इस असराने में भी ये सब शरीक हुए और उसके बाद नीलोफ़र ने जो शानदार डिनर दिया था उसमें भी सब मौजूद थे। जब सब जमा हो गये तो मिर्जा साहब ने बैठे-बिठाये निहायत बुलन्द आवाज़ से एक शेर पढ़ दिया :

"दुनिया ने अपने आपको बदला घड़ी घड़ी
इक अहले इश्क़ थे कि जहाँ थे वहीं रहे।"

डाक्टर साहब ने निहायत सहमा हुआ चेहरा बना कर कहा, "क्या उस हादसे की इब्तेदा हो गई जिसका खतरा सुबह से महसूस किया जा रहा था ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "नहीं साहब मैं तो एक और ही बात अर्ज़ कर रहा हूँ कि आज सुबह से तीन तकरीबात में शिरकत का मौका मिला और उन तीनों तक़रीबात में सिवाय इस नियाज़मन्द के बाक़ी सब ही ने बदल-बदल कर

कपड़े पहने। खवातीन का और फ़रीद मियाँ का तो जिक्र नहीं बाक़ी हज़रात ने भी यह तकल्लुफ़ बरता है।"

शिहाब ने कहा, "साहब, मेरा अकीदा तो यह है कि 'दारम चरा न पोशम' मगर यह आपने क्या बात कही कि खवातीन का और फ़रीद मियाँ का तो ज़िक्र नही, खवातीन के साथ फ़रीद साहब का नाम किसी खास मस्लेहत से लिया है आपने ?"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "मेरी मुराद सिन्फ़े-नाजुक (नारी) से थी और चूँकि मैं फरीद मियाँ की नजाकत का भी बहरलाल कायल हूँ लिहाजा इनका नाम इसी तब्के (वर्ग) में ले गया। चुनाँचे मुलाहिजा फर्मा लीजिये कि दावते-वलीमा में सुर्मगीन सूट में हमारे ममदोह चश्मे-बद दूर नजर आ रहे थे ! बल्कि सुर्मगीन चश्मे-बद दूर का धोका होता था। असराने मे फाख्तई रग की शेरवानी में खलील मियाँ बने फिर रहे थे और यह बात गलत मालूम होती थी कि वह दिन गये जब खलील खाँ फाख्ता उडाते थे। अब इस वक़्त मेरी आँखों मे खाक आप खुद देख लीजिये कि यह स्याह शेरवानी, यह चूडीदार पाजामा, यह वार्निश का पम्प, ये स्याह मोजे क्या कमायत दा रहे है।"

फ़रीद ने कहा, "आपकी इत्त ला के लिए अर्ज़ है कि यह खाने का लिबास है।"

मिर्जा साहब ने कहा, "बाबा, वह तो मुझे मालूम है कि आप खाने का लिबास और खाने का जूता बाकायदगी से इस्तेमाल करते है।"

इकराम ने झूम कर दाद दी, "जवाब नही है मिर्जा साहब, खाने का जूता खूब फर्माया ! और इस्तेमाल करते है की भी दाद नहीं दी जा सकती।"

फ़रीद ने कहा, "आपकी इस दाद से वह समझेंगे कि उन्होंने वाकई कोई अच्छी बात कही है।

इस पर खवातीन के तब्के से फ़रीद को कहकहो की सूरत में दाद मिली तो वह हँस दिये। मगर रुबी ने उनको फौरन घूरकर हँसने से इस संजीदगी से रोका है कि लड़कियों की हँसी खाने की मेज़ तक जारी रही। खाने की मेज़ पर और लोग तो खाने में मसरूफ थे मगर रुबी को यह फिक्र थी कि किसी तरह सिर्फ़ सलाद से फ़रीद की प्लेट भर दे। खैर इसका तो उसको मौक़ा न

मिल सका अलबत्ता उसने सिवाय सूप के फ़रीद को इस तरह कुछ और खाने का मौका ही न दिया कि जब वह सूप की एक प्लेट खत्म कर चुका तो उसके पास जाकर कहा, "यह मैंने बनाया था पसंद आया आपको ? ।"

फ़रीद ने शर्माक[illegible] कहा, "बेहद लजीज़ था, क्या कहना है !"

रुबी ने बैरे को इशारा किया, "साहब को सूप की एक प्लेट और दो ।"

और जब तक वह उसको खत्म करे, उसने तीसरी प्लेट का भी इन्तजाम कर दिया । बेचारा सूप पीते-पीते परेशान हो गया । वह तो कहिये कि मिर्जा साहब को उसके हाले-जार (दुर्दशा) पर रहम आया कि करीब आकर बोले, "किस कदर इत्मिनान से आप खाना खा रहे है । यहाँ हम खाना खत्म करने को आये और अभी जनाब सूप ही पी रहे है ।"

फ़रीद ने बड़ी मासूमियत से कहा, "जनाब, यह तीसरी प्लेट है ।"

मिर्जा साहब को तो खुदा ऐसी बात दे । पकड़-पकड़ कर लोगों को लाने लगे कि आपसे मुलाकात कीजिये—तीन प्लेटें तो सिर्फ़ सूप की पीते है । और अब जो आता है वह बेचारे की खैरियत पूछता है । नतीजा यह कि थोडी देर में यह बात सारी महफिल मे मशहूर हो गई कि फरोद साहब की तबियत नासाज है, वह मुसलसल सूप पिये जा रहे है । और-तो-और लड़कियो ने भी अयादत के लिए आना शुरू कर दिया । कोई तजवीज कर गई कि आप सोडा-मिन्ट की एकाध गोली जरूर खा लीजिये । किसी ने जिंजर की बोतल तजवीज कर दी, मगर यह है कि इस राजे-इश्क को जुबान पर नही लाते कि चूंकि रुबी ने यह सूप बनाया था लिहाज़ा एक अहले-वफा की हैसियत से वह यक-मुश्त तीन प्लेटें सूप की पी गये । रुबी ने यह बात ज़ाहिर है कि अपनी सहेलियों को जरूर बता दी होगी और उन सहेलियों से यह नामुमकिन था कि गोया किसी को खबर ही नहीं है । यहाँ तक कि जब यह बात डाक्टर साहब तक पहुँची तो वह बहैसियत तबीब के आ मौजूद हुए और अपनी मूँछों से अपनी तिब्बी महारत बरसा कर बोले :

"आखिर किस्सा क्या है, मेदा गडबड है कुछ ?"

फरीद ने आफियत इसी में समझी कि घबरा कर उनकी ताईद कर दी, "जी हाँ कुछ तबियत बोझिल है ।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "दावते-वलीमा का पूरा हक इन हज़रत ने अदा किया। फिर अनीस मियाँ के यहाँ की पार्टी में लाख समझाया कि सामान पराया ज़रूर है मगर पेट तो अपना ही है, जरा गुंजाइश देख कर खाओ, मगर मेरी एक न सुनी।"

डाक्टर साहब ने नब्ज़ देख कर एक नुस्खा भी लिख दिया कि बस यह पीलो और अब आइस क्रीम या काफ़ी वगैरा कुछ न छूना। इस दवा से मेदा बिल्कुल साफ़ हो जायेगा।

और यहाँ लड़कियों का यह हाल था कि मारे हँसी के पेट में बल पड़े जा रहे थे। आखिर ये सब वहाँ से खिसक कर नीलोफ़र के कमरे में आ गई तो नीलोफ़र ने बमुश्किल हँसी पर काबू पाकर कहा :

"खुदा समझे तुझसे रुबी ! यह आखिर सूझी क्या थी तुझे ?"

रुबी ने कहा, "बहन, मुझे यहाँ का तरीका तो मालूम नही, हमारे मगरिब में तो इश्क इसी तरह हो सकता है कि पहले मेदा पूरी तरह साफ़ हो जाये, उसके बाद इश्क का असर दिल पर हो सकता है। अब सुबह देखना इस आशिके-नाशाद का कैसा पतला हाल होता है। बिल्कुल मरीजे-इश्क नज़र आयेगा आपका यह गुलाम।"

बिरजीस ने हँसते हुए कहा, "पतला हाल तो हो ही जायेगा इस ख्वाहम-ख्वाह के मुसहिल (जुल्लाब) से।"

कौकब ने कहा, 'मैं तो यह कहती हूँ कि उसने सब कुछ गवारा कर लिया, मगर यह न कहा कि यह सूप मै क्यों मुसलसल (निरतर) पिये जा रहा हूं।"

रुबी ने कहा, "तो क्या आपने उसको ऐसे हल्के पेट का आशिक समझा है ?"

नीलोफ़र ने हँसी से बेक़ाबू होकर कहा, "हल्के पेट के आशिक तो वह अब बनेगे सुबह तक।"

और इसी वक़्त बाहर से एक शोर जो सुनाई दिया तो सुरैया ने कहा, "मेरे खयाल में मिर्जा साहब ने गजल शुरू कर दी।"

कौकब ने उठते हुए कहा, "तो चलो ना वहाँ, मुझे तो मिर्ज़ा साहब के कलाम से ज़्यादा डाक्टर अन्कल की कैफ़ियत से लुत्फ़ आता है कि वह सख्त

बेज़ार हो जाते हैं मिर्ज़ा साहब का कलाम सुनकर।"

नीलोफ़र ने कहा, "कुछ न पूछो डैडी को वाक़ई सख़्त कोफ़्त होती है, बहरहाल चलो बाहर चलें। इस बोरडम में भी एक खास लुत्फ़ होता है।"

चुनांचे जिस वक़्त ये लडकियाँ बाहर आई हैं मिर्ज़ा साहब चारों तरफ़ घूम-घूम कर कमानीदार तसलीमे कर रहे थे। इकराम ने झूमते हुए कहा :

"क़िब्ला सेरी नही हुई, एक मर्तबा तो और ज़हमत फ़र्माइये।"

मिर्ज़ा साहब ने हाथ जोड़कर कहा, "हुस्ने-समाअत (श्रवण-सौंदर्य) है आपका। अर्ज करता हूँ :

हुस्न अगर बेनिक़ाब हो जाये
इश्क़ खाना खराब हो जाये।"

डाक्टर साहब ने मुँह बनाकर ज़ेरे-लब कहा, "हो भी चुके किसी तरह।" मगर उनकी यह आवाज दूसरों की दाद में डूब कर रह गई। मिर्ज़ा साहब ने फिर आदाब व तसलीमात के बाद फ़र्माया :

"अर्ज करता हूँ हुजूर शायद किसी काबिल हो।"

रुबी ने बुलद आवाज से कहा, "आप तो सलवाते सुना रहे है। शेर सुनाना है तो ज़रा तरन्नुम से सुनाइये।"

मिर्जा साहब ने हँसकर कहा, "भई तरन्नुम मे अब वह बात कहाँ जो कभी थी। बहरहाल अगर यही शर्त है तो तरन्नुम मे सही।"

और यह कह कर अब जो उन्होने तरन्नुम शुरू किया है तो हँसी रोकना दुश्वार हो गया। उनका तरन्नुम और उस पर डाक्टर साहब का तनफ्फुर से मुँह बनाना बिल्कुल यह मालूम हो रहा था कि जैसे कोई बडी बी रो-रोकर तलाक की दरख्वास्त कर रही हैं और एक बागैरत शौहर इस मुतालबे पर कर्ब में मुब्तिला है। कहने लगे :

"अर्ज करता हूँ समाअत फ़र्माइये—

वह जो आईना सामने रख ले
आप अपना जवाब हो जाये।"

और इकराम वगैरा ने दाद के डोंगरे बरसाना शुरू कर दिये। डाक्टर साहब ने सरगोशी में फ़ारूक़ी से पूछा, "इस किस्म के शाइरों का यह जुर्मे-

शाइरी काबिले-दस्तअंदाज़-ए-पुलिस नही है ?"

फारुकी तो हँसकर रह गये। मगर मिर्जा साहब ने मुँह इस तरह बनाया कि जैसे चूरन खा गये हों। फारुकी से कहने लगे :

"मैं तिब्बी हैसियत से गौर कर रहा हूँ कि यह पागलपन की कौन-सी किस्म है। कमाल यह है कि हजरत किस कद्र संजीदगी से अपनी इस खुराफात में मुब्तिला है। लोग इनको बेवकूफ बना रहे है और यह शुक्रिया अदा कर रहे हैं, सलाम कर रहे है।"

मिर्ज़ा साहब की गजल जब खुदा-खुदा करके खत्म हुई तो इकराम गालिबन दूसरी गजल की फ़र्माइश करने वाले थे, मगर अनीस ने जो बडी देर से कसमसा रहे थे एकदम खडे होकर कहा, "मैं अब इसलिए इजाजत चाहूँगा कि आज का दिन सख्त थका देने वाला दिन था और इस वक़्त थकन के बाइस यह हाल है कि मिर्जा साहब का एक भी शेर समझ में न आ सका।"

डाक्टर साहब ने अनीस के शाने को थपथपाकर कहा, "कम-से-कम एक तो समझदार आदमी निकला इस इज्तेमाअ मे।"

और फिर सबने उठकर अनीस और सुरैया को रुख़्सत किया और यह नशस्त खत्म हो गई।

४४

****

महम्मद हुसैन की मसाई (प्रयत्न) की बदौलत जमीला से वहीदा और उसके साथी गुजराँवाला और उसके नवाह (समीप) में ठोकरें खा रहे थे और हर रोज़ एक नये उलझावे में फँस जाते थे। इधर शेखूपुरा में शिहाब, अर्जमंद, फ़ारुक़ी

और इकराम रोज एक नया उक़्दा (गुत्थी) हल करके अपने मक़्सद से करीबतर हो रहे थे। डाक्टर साहब के घर में शाम के वक़्त जरा चहल-पहल हो जाती थी जब शिहाब मय अपने एहबाब के वापस आ जाता था। वर्ना दिन भर सब अपने-अपने कमरों में रहते थे और डाक्टर साहब अपने मतब और दवाखाने की मसरूफियतों में गुम रहते थे, अलबत्ता एक फरीद ऐसे थे जिनकी सरगर्मियाँ आजकल निहायत पुरअसरार थी कि सुबह नाश्ते के बाद जो गायब हुए तो कभी दोपहर के खाने पर आये और कभी उस वक़्त भी गायब रहे। अलबत्ता यह सबको मालूम था कि आजकल वह कुछ खुशपोशाक जरूरत से ज्यादा हो गये थे। सूरतगरी मे नोक-पलक का बेहद खयाल रखते थे और कुछ जोर, अंग्रेजी लिबास पर ज़्यादा था। किस्सा दरअसल यह था कि आजकल ऑजनाब ने रुबी के यहाँ निहायत पाबन्दी से हाजिरी देना शुरू कर दी थी। वह बेचारी सख्त आजिज थी कि यह ख़्वाहमख़्वाह का रोग जो इसे लग गया है उसका क्या इलाज करे। मगर नीलोफ़र और उसकी सहेलियों की ज़िद यही थी कि इस लतीफ़े को जारी रखा जाये। चुनांचे दिन को जो हिमाकतें फ़रीद साहब उसके यहाँ जाकर फर्माते थे, उनकी मुफ़स्सिल रिपोर्ट वह शाम को नीलोफ़र को पहुँचा दिया करती थी। चुनाचे इन हिमाकतों को बचश्मे-खुद देखने का इन सबको ऐसा इश्तियाक पैदा हुआ कि आज सुरैया और कौकब, बिरजीस और नीलोफर सब रुबी के घर आई हुई थी और उसके नशस्त के कमरे से मिली हुई ख्वाबगाह में यह इज्तेमाअ था ताकि जब फ़रीद आ जाये तो यह दरवाज़ा अंदर से बन्द करके वह रूदादे-इश्क सुनी जाये और वह मुहब्बत की बदहवासियाँ देखी जायें जिनका सबको इश्तियाक था। चुनांचे नौ बजते ही रुबी ने सबसे कहा :

"नौ बज रहे है, बस अब वह आते ही होंगे। लिहाज़ा यह दरवाज़ा बन्द करके अब खामोशी से तमाशा देखने को तैयार हो जाओ।"

चुनाचे दरवाजा बन्द कर दिया गया और दरवाज़े से कुर्सियाँ मिलाकर सब बैठ गई। रुबी अपनी नशस्त के कमरे में जाकर सरापा इन्तेज़ार बनकर बैठ गई और अभी चन्द ही मिनट गुज़रे होंगे कि सुर्मई सूट में मलबूस फ़रीद साहब ने पर्दा हटाकर कहा, "मैं हाज़िर हो सकता हूँ ?"

रुबी ने बड़े अंदाज़ से कहा, "ज़रा पहले घड़ी देख लीजिये।"

फ़रीद ने दाखिल होते हुए कहा, "मैं जानता था कि तुम बैठी एक-एक मिनट गिन रही होंगी, मगर वजह यह हुई कि घर से निकला ही था कि डिप्टी कमिश्नर साहब ने मुझको देखकर मोटर रोक लिया और लगे इसरार करने कि मै उनके साथ जाऊँ और आज लच भी उनके साथ खाऊँ।"

रुबी ने बड़ी मतानत से कहा, "यह वही डिप्टी कमिश्नर तो नहीं है जो अपने बंगले मे एक प्राइवेट जू भी खोले हुए है। सुना है कि जानवरों से बड़ी दिलचस्पी लेते है।"

फ़रीद बेचारे मे इतनी अक़्ल कहाँ कि वह अदाज़ा कर सकते कि आँच किधर जा रही है, निहायत फख्र से बोले, "मुमकिन है यह शौक भी हो, बहर-हाल मेरा बेहद एहतराम करते है और कभी-कभी निहायत अहम मामलात मे भी मुझसे मशविरा लेने आ जाते है।"

रुबी ने गोया बडी खुशामद से कहा, "अरे तो मैंने कहा सुनते है आप, हमारा भी एक काम उनसे करा दीजिये।"

फरीद ने बडे ठाठ से सिगरेट निकाल कर सुलगाते हुए कहा, "हाँ-हाँ, मामूली बात है। मेरा तो सिर्फ एक इशारा काफी है उसके लिए। बल्कि वह तो फ़ख्र करेगा इस बात पर कि मैंने भी उससे किसी काम के लिए कहा। बात क्या है आखिर ?"

रुबी ने कहा, "लो भला मुझे क्या मालूम था कि डिप्टी कमिश्नर आपके घर मे पानी भरता है, उस मूए अफजल को गिरफ़्तार कराइये उससे।"

फरीद ने सिगरेट के धुएँ से छल्ले बनाते हुए कहा, "देखो भई रुबी, बात दरअसल यह है कि अफजल को तो अगर आज कहो तो हथकडियाँ डलवाकर तुम्हारे दरवाजे पर नाक से लकीरें खिचवा दूं। मगर मै मस्लेहतन यह नहीं चाहता। पूछो क्यों ?"

रुबी ने लफ्ज-बलफ्ज तामील की, "पूछा मैंने क्यों ?"

फ़रीद ने गोया बड़े मुदब्बिराना अदाज से कहा, "मैं फ़िलहाल यह इसलिए नही चाहता कि ये जो कल के लौंडे है—शिहाब, अर्जमद और फारूकी मै ज़रा इनका तमाशा देख रहा हूँ। शिहाब तो खैर है ही एक बेवकूफ लौण्डा। मगर यह जो पुलिस के अफ़सर बने फिरते है अर्जमद और फ़ारुक़ी या वह जो आया

था शेखूपुरा से इकराम इन मसखरों के भी बनाये कुछ नहीं बनता। न हुआ मैं उनकी जगह, बाँधकर ले आता उसको और जो तहकारी करता कि नाक से भेजा बह जाता।"

रुबी ने बात काट कर कहा, "यही तो मैं भी कह रही हूँ कि उन लोगों से तो कुछ होगा नहीं और मिट्टी पलीद होती रहेगी मेरी।"

फ़रीद ने हैरत से पूछा, "तुमसे क्या मतलब ? तुम्हारी मिट्टी क्यो पलीद होगी ?"

रुबी ने बडी परेशानी से कहा, "हाय मेरे अल्लाह। यही तो आपको मालूम नहीं कि मैं किस अजाब में मुब्तिला हूँ खुसूसन जबसे यह हवा उडी है कि आप मेरी तरफ मुतवज्जे है। मेरी जान हर वक्त उस मुए ुडे के हाथो सूली पर है।"

फ़रीद ने अब ज़रा सँभलकर बैठते हुए कहा, "यह हवा कैसे उड़ सकती है ? मेरे खयाल मे तो यह तुम्हारा वहम है।"

रुबी ने रो देने के अदाज़ से कहा, "वहम नही यह वाक़्या है। आपको मालूम नही कि 'ताड़ने वाले कयामत की नज़र रखते है।' मेरा खयाल हे कि यह जो मिर्जा साहब है ये उस मुए से मिले हुए है और डाक्टर साहब के घर में उसके जासूस है कही ऐसा तो नही हुआ है कि आपने मेरे मामले मे मिर्ज़ा साहब को अपना राज़दार बना लिया है ?"

फ़रीद ने बड़ी परेशानी के साथ कहा, "तुम्हारा यह खयाल दुरुस्त हो सकता है। मैने उस बुड्ढे को राज़दार वगैरा तो कुछ नही बनाया अलबत्ता मेरी और तुम्हारी खतो-किताबत का उसे इल्म ज़रूर है।"

रुबी ने निहायत वसूक़ (निश्चय) से कहा, "बस तो फिर ठीक है। उसी ने वहाँ सारी बात पहुँचाई है, बल्कि यहाँ तक अफ़ज़ल से कहा है कि मुझ ही से लिखवा-लिखवा कर वह रुबी को खत भेजता है।"

फ़रीद ने अपने हाथों के तोते उड़ाते हुए कहा, "एक खत तो वाकई उसी का लिखा हुआ था। मगर मुझे क्या मालूम था कि वह ऐसा खतरनाक आदमी है। तो क्या अफजल ने तुमसे ये बाते कहलवाई है किसी के ज़रिये ?"

रुबी ने कहा, "किसी के ज़रिये नही कहलवाई है बल्कि वह खुद आ जाता है रोज़ पस्तौल बाँध कर कि तुम अभी तक मेरी बीवी हो और जो अलैहदगी

हो चुकी है उसको मैं तसलीम नही करता बल्कि कल वह तो तुम्हारे मुताल्लिक़ भी बड़ी ख़तरनाक बातें कर रहा था।"

फ़रीद के देवता साफ़ कूच कर गये, "मेरे मुताल्लिक भी ख़ौफ़नाक बातें ? ·····यानी·····?"

रुबी ने कहा, "यानी यह कि वह कह रहा था कि अगर मैंने फ़रीद को यहाँ किसी दिन देख लिया तो इस रिवाल्वर के सब कारतूस उसके जिस्म में पैवस्त कर दूँगा। मै तो यही कहती हूँ कि तुम्हारी भी खैर नही है। अब तुम यहाँ बैठे हो और मेरा दिल धड़क रहा है कि कही वह न आ जाये।"

फरीद ने वाकई लरजते हुए दरवाज़े की तरफ देखकर कहा, "यह तो गोया·····मेरा मतलब यह कि·····यानी मुझे फौरन उसका बन्दोबस्त करना चाहिये।"

रुबी ने बड़ी मासूमियत से कहा, "क्या तुम डर रहे हो ?"

फरीद ने पर तोलते हुए कहा, "नही···खैर ··गोया···मगर···एहतियात बहरहाल·· यानी···मेरा मतलब यह है कि मैं डिप्टी कमिश्नर से कह दूं फौरन।"

और यह कहकर जो वह उठा तो रुबी ने बढ़कर उसके दोनों हाथ पकड़ कर कहा, "मुझे इससे ज़्यादा डर यह है कि तुम मुझे मँझधार में छोड़ तो न दोगे ?"

फ़रीद ने घबराकर हाथ छुडाते हुए कहा, "वह भी देखा जायेगा। मेरा मतलब यह है कि मुझे अब बिल्कुल देर न करना चाहिये, इसका फ़ौरन इन्तेजाम करना चाहिये।"

और यह कहकर वह ऐसा भागा है सर पर पैर रखकर कि उसके कमरे से निकलते ही रुबी पर जो हँसी का दौरा पड़ा है तो वह सोफ़े पर जा गिरी। उधर ख्वाबगाह का दरवाज़ा खोल कर बाक़ी लड़कियाँ भी हँसी से बेताव उसी कमरे में दाखिल होकर—कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा—बनकर रह गईं, मगर नीलोफ़र ने अपने को क़ाबू में लाकर कर कहा :

"खुदा के लिए ज़रा अक़्ल से काम लो, ऐसा न हो कि वह फिर वापस आ जाये।"

रुबी ने पेट पकड़ कर बमुश्किल कहा, "तौबा करो अब कभी वह इधर का रुख कर ले बल्कि अब तो वह घर हो में चूड़ियाँ पहन कर बैठ रहेगा।"

बिरजीस ने कहा, "मज़ा तो आ गया, मगर यह समझ लो कि यह किस्सा अब खत्म हो गया। अब उसको खैरियत इसी में नज़र आयेगी कि जान बची लाखों पाये, अब वह गया तुम्हारे हाथ से।"

नीलोफ़र ने कहा, "मगर मिर्जा साहब से जो अब वह चौकन्ना रहेगा ख्वाहमख्वाह भी। वह होगी देखने की चीज़।"

कौकब ने कहा, "ऐसा न हो कि वह मिर्जा साहब से कह ही दे।"

सुरैया ने हँसकर कहा, "बुद्धू ही हो तुम भी कौकब। यह बात वह कयामत तक मिर्जा साहब से नही कह सकता। अलबत्ता इस रुबी की बच्ची ने यह तमाशा खत्म बडी जल्दी कर दिया।"

रुबी ने कहा, "मेरे खयाल मे तो तमाशा शुरू ही अब हुआ है। जरा तुम देखती रहो कि मै अब कैसा निगनी का नाच नचाती हूँ उस मसखरे को यह हजरत भागेंगे अब मुझसे और मै करूंगी उनका ताक़ुब। यह डरेंगे मुझसे कि मेरे पास उनके खत है और मै डराऊँगी उनको।"

नीलोफर ने कहा, "मगर मै तो हैरान हूँ कि यह तुम को सूझी क्या एक दम से ? तय तो यही था न कि वह आयेगा, मुहब्बत छिड़केगा, तुम उसको बेवकूफ बनाओगी और वह हस्बे-फ़र्माइश बेवकूफ बनेगा। मगर यह इतना बड़ा प्लाट एकदम से कैसे आगया तुम्हारे जहन में ?"

रुबी ने कहा, "भई जब उसने यह शेखी बघारी कि डिप्टी कमिश्नर मेरा मुरीद है तो मैने अफ़जल का जिक्र यों ही कर दिया था। उसके बाद बात खुद ही बनती चली गई। मगर एक बात बता दूँ कि अब यह बरखुरदार एकाध रात तो शायद सो भी न सकें।"

बिरजीस ने कहा, "अजी तौबा करो। वह इसी वक़्त क़ल्ब की हरकत बन्द होने से नही मरा यही सबसे बडा कमाल है।"

नीलोफ़र से फिर हँसी से बेताब होकर कहा, "मेरे सामने तो उसकी वह तसवीर फिर रही है कि यह मिर्ज़ा साहब को अब किन निगाहों से देखेगा और

उनसे कैसा भड़केगा।"

रुबी ने कहा, "मगर मिर्ज़ा साहब को कुछ न बताना, ख़बरदार।"

नीलोफ़र ने कहा, "यानी अब आपने सभी को बेवकूफ़ समझना शुरू कर दिया। मगर दाद देती हूँ कि यह बात तुमने खूब उगलवाई उससे कि हम लोगों को जिस खत पर शुब्हा था कि मिर्ज़ा साहब का लिखा हुआ है, वह वाक़ई उन्हीं का लिखा हुआ था।"

सुरैया ने कहा, "हाँ, जवाब नही है इसकी इस जहानत का। और भई ऐक्टिंग भी इस कमबख्त ने कयामत की है।"

नीलोफ़र ने उठते हुए कहा, "भई मुझे तो अब जल्दी है घर पहुंचने की। तुम आज ज़रा जल्दी आ जाना।" और यह कहकर यह क़ाफिला रवाना हो गया।

४५

****

रुबी ने फ़रीद की जो गत बनाई थी जब उसकी पूरी तफसील नीलोफर ने शिहाब, अर्जमन्द और फारूकी को सुनाई तो उन तीनों का हँसते-हँसते बुरा हाल हो गया और फ़ारूकी को बावजूद अपनी उस मतानत के जो वह नीलोफ़र के सामने क़ायम रखता था, यही कहना पडा कि :

"बहन, माफ़ कीजियेगा। सच तो यह है कि ख़ुदा पनाह में रखे आप लोगों से।"

अर्जमन्द ने कहा, "अच्छा, रात जो फ़रीद साहब की हालत गैर नज़र आ रही थी तो मैं वाक़ई यह समझा था कि उन पर या तो क़ल्ब का दौरा पड़ा

है या डाक्टर साहब ने जो नुस्ख़ा दिया था उसमें कोई ज़्यादती हो गई है, ज़र्द हो रहा था गरीब ।"

शिहाब ने कहा, "वह ज़र्द हो या नीला, मगर है वह इसी क़ाबिल जो सुलूक उसके साथ किया गया है । मगर मुझे रुबी के मुताल्लिक यह अंदाज़ा न था कि वह ऐसी खतरनाक हद तक ज़हीन है ।"

फ़ारूकी ने कहा, "अब मुसीबत यह होगी कि इन हज़रत को देखकर हँसी रोकना मुश्किल हो जायेगी ।"

नीलोफ़र ने कहा, "खुदा के लिए आप लोग हँसकर बना-बनाया खेल ख़राब न कर दीजिये । यह डर मुझको अर्जमन्द भाई की बेगम साहबा से भी रहता है । बिरजीस की हँसी भी उसके काबू की नही है, मगर अभी तक तो वह बड़े जब्त-व-तहम्मुल (सहिष्णुता) से काम ले रही है ।"

ये लोग ये बाते कर ही रहे थे कि शिहाब का मुलाज़िम कय्यूम कमरे में दाख़िल होकर बोला, "आप सब को डाक्टर साहब याद कर रहे है ।"

नीलोफर ने पूछा, "कौन-कौन है वहाँ ?"

क़य्यूम ने कहा, "सब ही है, कुलफियो वाला आया है उसको आर्डर देकर आबखोरे बनवाये गये थे वह लाया है ।"

नीलोफर ने याद करते हुए कहा, "हाँ ठीक है, याद आ गया मुझे । आइये फिर चलें वहाँ, मगर खुदा के लिए हँसिये-वसियेगा नहीं ।

चुनाचे जिस वक्त ये सब वहाँ पहुंचे है मिर्ज़ा साहब तारीखी हवाले देकर साबित कर रहे थे कि जैसे मलाई के बर्फ के आबखोरे वह खा चुके है, वैसे अब किसी को नसीब न होगे । कहने लगे, "खत्म था कचहरी वाले पर मलाई के बर्फ़ के कुलफे और आबखोरे बनाना ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "कचहरी वाले से क्या मतलब ? यह कोई जज था, मुन्सिफ था, मजिस्ट्रेट था आखिर था क्या बला ?"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "हजत, वह इसी नाम से मशहूर था । बात यह थी कि कचहरी के अहाते मे अपनी मटकी लेकर पहुँच जाता था और देखते-ही-देखते मटकी खत्म हो जाती थी । मगर सुभान अल्लाह क्या चीज होती थी वह मलाई की बर्फ़ ! बराबर का मेवा होता था उसमें, मलाई निहायत आला

दर्जे की। मजाल न थी किसी की कि एक से दो आबखोरे कोई खाले।"

डाक्टर साहब ने बेपरवाई से कहा, "इस कद्र बदमजा होते थे वह ?"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "नहीं साहब इस क़द्र संगीन होते थे।"

मलाई की बर्फ़ वाले ने कहा, "हुजूर, उसको मलाई की बर्फ़ न कहें, पत्थर की बर्फ़ कहे।"

डाक्टर साहब खुश हो गये, "वेरी गुड ! संगीन होती थी तो वाकई पत्थर की बर्फ़ हुई। बहरहाल तुम निकालो आबखोरे और दो सब को।"

मलाई की बर्फ वाले ने आबखोरे निकाल-निकाल कर सबको देना शुरू किये। मिर्ज़ा साहब ने पहला ही चमचा खाकर कहा, "बुरी नही है यह भी, मगर वह जो होना चाहिये उसमे तवाजुन बस वह नही है।"

मलाई की बर्फ वाले ने कहा, "हुजूरे वाला, कान पकड़ कर अर्ज़ करता हूँ कि अगर कोई बनादे इनसे उन्नीस भी तो [illegible] लिख दूँ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "नही नही, बहुत अच्छे है। क्यों भई शिहाब मियाँ, क्या राय है ?"

शिहाब ने कहा, "मुझे तो बहुत पसन्द आये। कम-से-कम उस आइस-क्रीम से तो अच्छे ही है जिसके लोग दीवाने नजर आते है।"

मिर्ज़ा साहब ने दाद दी, "लाख रुपये की बात कह दी आपने ! अजी अग्नगण्यिग्न्नाह ! आइसक्रीम भी कोई शुरफा (सज्जनगण) के खाने की चीज़ है। लाना भई एक और आबखोरा, मजा आगया।"

नीलोफ़र ने कहा, "फ़रीद साहब को पसन्द नही आई शायद, बहुत बेदिली से खा रहे है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "इनकी भली चलाई। आजकल इनका आलम ही कुछ अजीब है और आज तो अपने इस नियाज़मन्द से भी कुछ कतरा रहे है।"

फरीद ने एक पूरा चमचा लेकर कहा, "ख्वाहमख्वाह भी, खा तो रहा हूँ।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "हाँ कुछ ख्वाहमख्वाह ही खा रहे हैं आप। और अगर यही आलम रहा आपका तो खुद भी ख्वाहमख्वाह ही नज़र आयेंगे।"

बेगम साहबा ने जल कर कहा, "वहाँ शुरू हो गई जली-कटी। मेरी समझ में तो आती नही इन दोनों की लड़ाई कि मेल भी बहुत है और बनती भी नही।"

नहीं।"

मिर्जा साहब ने कहा, "दुरुस्त फर्माती हैं आप, कुछ : **ने ताबे-वस्ल दारम ने ताकते-जुदाई**"* वाला मामला है। क्यों भई झूठ तो नहीं कहता मैं ?"

फरीद ने कहा, "जो जी चाहे कहे जाइये। आप जो कुछ भी कहते हैं दुरुस्त ही कहते है।"

मिर्जा साहब कुर्सी फरीद के करीब खिसका कर ज़रा सरगोशी में बोले, "क्या कुछ जंग हो गई और ?"

फरीद ने कहा, "खाइये, खाइये, बर्फ खाइये आप।"

मिर्जा साहब ने कहा, "वह तो मैं बगैर आपकी सिफ़ारिश के भी खा रहा हूँ, मगर तुम्हें मेरी कसम बात क्या है ?"

फरीद ने उठ कर जाना चाहा, "आप का मतलब यह है कि चला चाऊँ मैं यहाँ से ?"

मिर्जा साहब ने उसका हाथ पकड कर बिठाते हुए कहा, "क्यों साहब, हमारी बिल्ली और हम ही से म्याऊँ ? बेहतर है तशरीफ रखिये, अब अगर बोलूँ न तो जो चोर की सजा वह मेरी। देना भई इनको एक और आबखोरा।"

फरीद ने कहा, "जी नहीं शुकिया, मैं अब न खा सकूंगा।"

मिर्जा साहब ने कहा, "ले तो लो, न खा सकोगे तो तुम्हारा यह गुलाम जो हाजिर है खाने के लिए। हम तो भई तुम्हारा झूटा खाने ही में अपनी सआदत (सौभाग्य) समझते हैं।"

शिहाब ने कहा, "आज वाकई फरीद साहब कुछ जरूरत से ज्यादा अफसुर्दा नजर आ रहे है। बात क्या है आखिर ?"

फ़रीद ने जबरदस्ती मुस्कराकर कहा, "नही तो कोई खास बात तो नही।"

मिर्जा साहब ने कहा, "हुजूर, एक शेर अर्ज़ करता हूँ :

मेरी सूरत को देखने वाले
मेरे हालात जान लेते हैं।"

अर्जमन्द ने दाद दी, "क्या कहना है मिर्ज़ा साहब। गालिबन आप ही का शेर है।"

*** न तो मिलन की शक्ति मुझ में है और न ही वियोग की सहनशीलता।**

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "मैं किस क़ाबिल हूँ, मगर आप मेरा रग समझते खूब हैं।"

अर्जमन्द ने कहा, "जी हाँ, वजह यह है कि पहले मिसरे में 'को' ज़ायद था ना।"

नीलोफ़र ने कहा, "यही मै भी कहने वाली थी कि इससे तो यू कहा होता कि: 'मेरी सूरत के देखने वाले'।"

मिर्जा साहब ने दाद दी, "ऐ सुभान अल्लाह ! क्या लाजवाब तरमीम है ! शेर सज गया बखुदा :

मेरी सूरत के देखने वाले
मेरे हालात जान लेते हैं।"

साहबजादी, आप शेर कहा कीजिये।"

डाक्टर साहब ने कहा, "जी नही, बख्शिये इस ग़रीब को। वह इस खुराफ़ात से ज्यादा जरूरी कामो के लिए पैदा हुई है।"

मिर्जा साहब ने अर्जमन्द से कहा, "मुलाहिजा फ़र्माया आपने यह गोया खुराफ़ात है। मगर हमारे यहाँ लतीफी का शुरू ही से यह हाल है, शेरो-शाइरी से बुग्जे-लिल्लही (व्यर्थ का बैर) रहा हमेशा। हालाँकि मै नीली बीबी को इस लिए मशविरा दे रहा था कि यह मौक़ा गनीमत है। मै यहाँ मौजूद हूँ, जो कुछ करना है करलें।"

डाक्टर साहब ने कहा, "गोया शेर भी कहे और आप से इस्लाह (सुधार) भी लें यानी सत्यानास और फिर साढ़े सत्यानास। आप फ़रीद मियाँ को अपनी शागिर्दी में ले लीजिये।"

मिर्जा साहब ने कहा, "बखुदा अगर यह ज़रा भी पढ़े-लिखे होते तो चोट खाये हुए दिल से दुनिया-ए-शहर में एक तहलका मचा देते।"

फ़ारुकी ने बडी मतानत से कहा, "तो क्या इतने लिखे-पढ़े भी नहीं हैं कि शाइरी कर सकें ?"

डाक्टर साहब ने दाद दी, "भई, क्या बात कही है। इतनी देर के बाद बोले मगर खूब बोले !"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, 'अच्छा साहब मैं क़ायल हो जाऊँगा अगर फ़रीद

मियाँ इस वक़्त किसी और का शेर जो इन को पसन्द हो सुनादें।"

नीलोफर ने कहा, "अब यह आपकी ज़्यादती है। क्या वह शेर भी नहीं सुना सकते ?"

अर्जमन्द ने कहा, "मेरा भी यही खयाल है कि नहीं सुना सकते।"

बेगम साहबा भी इस वक़्त मूड में आ गईं, "फ़रीद मियाँ, इस बात पर सुना दो कोई शेर, शाबाश।"

नीलोफ़र ने कहा, "वही सुना दीजिये ना। वह जो अकसर आप गुन-गुनाते है :

अंगड़ाई तिरी है बहाना।"

फ़रीद ने मुस्कराकर कहा, "वह तो यों ही-सा है :

अंगड़ाई तिरी है बहाना
साफ़ कह दो हमें है जाना जाना।"

डाक्टर साहब ने कहा, "लाहौल वला कूवत ! वह बेचारा बर्फ़ वाला तक हँस रहा है।"

बर्फ वाले ने कहा, "हुजूर, मेरी क्या मजाल है। मगर यह तो फ़िल्मी गाना है। अँगडाई का एक शेर तो मुझे भी याद है।"

शिहाव ने कहा, "वह हम जरूर सुनेंगे, क्या है वह ?"

बर्फ वाले ने कहा, "हुजूर, वह किसी का शेर है न :

अंगड़ाई भी वो लेने न पाये उठा के हाथ
देखा मुझे तो छोड़ दिये मुस्करा के हाथ।"

डाक्टर साहबा ने कहा, "तुम आ जाया करो हमारे भाई साहब के पास कभी-कभी मुशाइरा करने।"

बर्फ़ वाले ने कहा, "हुजूर, हमारा सबसे बड़ा मुशाइरा यही पेट का धन्धा है।"

बेगम साहब ने कहा, "अच्छा भई, इस बेचारे का हिसाब कर दो। इसको जाना भी होगा दूर।"

नीलोफर ने उठकर बर्फ़ वाले का हिसाब कर दिया। मगर उसके उठते ही यह महफ़िल ही बरहम (विसर्जित) हो गई। और फ़रीद तीर की तरह पहुँचे अपने कमरे में।

४६

****

वाक़्या यह है कि आजकल फ़रीद का आलम यह था कि उसको अपने साये से भी डर लगता था। रात को कमरा हर तरफ से बंद करके सोने की कोशिश में करवटें बदलता रहता था और कई मर्तबा उठ-उठकर पलंग के नीचे, पर्दो के पीछे, गुस्लखाने में और न जाने कहाँ-कहाँ अपने उस दुश्मन को ढूँडता रहता था जो कज़ा बनकर उसके सर पर मँडला रहा था। मिर्जा साहब से तो अब वह इस तरह कतराने लगा था कि गोया अगर अकेले में उनसे कभी मुठ-भेड हो गई तो खैर नहीं और सबसे बडी मुसीबत यह थी कि रुबी ने अब उसे बुरी तरह घेरना शुरू कर दिया था। वह रुबी से जितना भागता था इतना ही वह उसका पीछा करती थी। मगर फ़रीद को यकीन था कि यही मगरिबी-हसीना मेरी मौत का फ़रिश्ता है। और इसी के लिए मुझको अपनी जाने-अजीज़ (प्रिय प्राण) से हाथ धोने पडेंगे। मगर मुसीबत यह थी कि उसकी समझ मे न आता था कि करे तो क्या करे। वह तकरीबन हर सेपहर को आ जाती थी। वह किसी-न-किसी बहाने से उसके पास आकर अपनी वफा और उसकी बेवफ़ाई की दास्तान छेड देती थी, और उसके दम पर बन जाया करती थी कि मिर्जा साहब यह सब कुछ देख रहे है और अब जाकर अफ़जल से एक-एक की दस-दस जडेंगे। आखिर उसने इस रोज की मुसीबत से छुटकारे की यही सूरत निकाली कि इस तरह घुल-घुल कर मरने से तो यही अच्छा है कि एक दिन सर पर कफ़न बाँध कर खुद चला जाये, अफजल के पास और उसको अपनी बेगु-नाही का यकीन दिलाने की कोशिश करे। और उससे वादा करे कि वह रुबी से अब किसी किस्म की कोई दिलचस्पी न रखेगा। उसका दिल गवाही दे रहा था कि इस तरह अफ़ज़ल उसकी जान का गाहक न रहेगा; वर्ना खुदा जाने

किस दिन उसके रिवाल्वर की तमाम गोलियाँ उसके जिस्म में पैवस्त होकर रह जायेंगी। चुनांचे हिम्मत करते-करते एक दिन वह जान पर खेल कर अफजल के घर सचमुच जा ही पहुँचा और अफ़ज़ल से मिल कर जब उसने बमुश्किल तमाम अपनी बेगुनाही के सुबूत फ़राहम करने की कोशिश की तो शुरू-शुरू में तो अफ़जल को इन हजरात पर सी० आई० डी० के एजण्ट होने का शुब्हा हुआ, मगर जल्द ही इन हजरत ने अपनी हिमाकतों के ऐसे बेसाख्ता नमूने पेश किये कि उसको यह अंदाजा करने में देर न लगी कि ऐसे अहमक सी०आई०डी० से मुताल्लिक नही हो सकते। चुनांचे उनसे लुत्फ़ अंदोज़ होना शुरू कर दिया।

"तो क्या आपको वाकई रुबी से वालेहाना इश्क (उन्मत्त प्रेम) है ?"

फ़रीद ने कानो पर हाथ रख कर कहा, "अस्तगफिरुल्लाह ! अर्ज तो किया कि बखुदा मुझे उन मुसम्मात (महिला) से कोई दिलचस्पी नही। फिर यह कि जो औरत खुद अपने शौहर से वफ़ा न कर सके उससे किसी और को क्या उम्मीद हो सकती है ? मैं आपसे सही अर्ज करता हूँ कि उन मोहतरमा ने मुझे घेरा था।"

अफजल ने कहा, "गोया आपको रुबी से नही बल्कि रुबी को आपसे दिलचस्पी है। इस एतबार से तो आप और भी खुशकिस्मत साबित हुए। मुझे तो रश्क है आपकी किस्मत पर।"

फरीद ने कहा, "नही साहब, मैं बाज आया। मुझसे आप चाहे जैसी क़सम ले ले कि मै उन मोहतरमा से किसी किस्म का कोई ताल्लुक नही रखना चाहता और मेरी हाजिरी का मक़सद भी दरअसल यही था कि मैं आपको यकीन दिला दूँ कि अगर आपसे किसी ने यह कहा है कि मै रुबी साहवा से कोई दिलचस्पी ले रहा हूँ तो यह गलत है। उनके एकाध खत के जवाब मैने ज़रूर दिये है, मगर अब मैं अहद कर चुका हूँ कि वह मेरे लिए बहन है।"

अफजल ने रोकते हुए कहा, "अरे, अरे इतनी बडी बात न कहिये। इसलिए कि मै खुद आपके हक़ में रुबी से दस्तबरदार होने का इरादा कर रहा हूँ।"

फ़रीद ने फिर कानों पर हाथ लगाकर कहा, "बन्दा परवर, मुझे तो आप बख्श ही दें। मुझे बखुदा उससे कोई दिलचस्पी नहीं है।"

अफ़जल ने कहा, "मगर मुझे तो इससे दिलचस्पी है कि आप रुबी को

अपने एक नये दोस्त—यानी मुझ खाकसार का तोहफ़ा समझकर क़ुबूल करें। बात दरअसल यह है कि जनाबे वाला कि :

बुलबुल ने आशियाना चमन से उठा दिया
उसकी बला से बूम रहे या हुमा रहे "

फ़रीद ने कहा, "मै बगैर इस तोहफ़े के आपकी नियाजमन्दी पर फ़ख्र करूंगा। गुज़ारिश सिर्फ यह है कि मेरी तरफ़ से अपना दिल साफ कर लीजिए और मुझ को अपना वाकई नियाजमन्द समझिये।"

अफज़ल ने कहा, "देखिये बन्दा नवाज़, वाक़ई नियाज़मन्द तो मैं आपको उस वक़्त समझूंगा जब आप मेरा यह तोहफा क़ुबूल फर्माकर मुझको इस काम में मदद दें जो आपके ज़रा से ताव्वुन से हो सकता है।"

फरीद ने सीने पर हाथ रखकर कहा, "बख़ुदा मैं अगर किसी खिदमत के काबिल हूँ तो हरगिज दरेग न करूँगा।"

अफ़ज़ल ने कहा, "यह एक शरीफ़ आदमी का वादा है ना ?"

फरीद ने कहा, "कतई ! और मै आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि मै आप की मदद करने में फख्र महसूस करूँगा।"

अफजल ने बडी सजीदगी से कहा, "खैर आप फख्र महसूस करें या न करें मगर एक बात मै आपको बताये देता हूँ कि यह काम आपको करना ही होगा। और अगर आपने इस सिलसिले में गद्दारी की कोशिश भी फ़र्माई या अफ़शा-ए-राज का इरादा भी किया तो मै आपको ज़िन्दा न छोड़ूंगा। इसलिए कि यह है मेरी मौत और ज़िन्दगी का मामला और अपनी जिन्दगी के लिए इंसान क्या कुछ करता है इससे गालिबन आप नावाकिफ़ न होंगे।"

फ़रीद ने दिल-ही-दिल मे काँपते हुए कहा, "बहरहाल मै आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आपका राज मुझ तक पहुँचने के बाद अब मेरा राज़ होगा और अगर मैं गद्दार साबित हो जाऊँ तो बेशक उस गद्दारी की सज़ा मौत ही होनी चाहिए।"

अफज़ल ने बढ़कर कहा, "बस तो रहा यह वादा। लाइये हाथ मिलाइये और अब सुनिये मुझसे कि रुबी आज से आपकी है, मुझे उससे कोई वास्ता नही। जब वास्ता था तब था। अब तो मैं आपको अपना मोहसिन समझूंगा

अगर आप उसे समेट लें। अलबत्ता मेरा गौहरे-मुराद और है जिसे मुझ तक आप निहायत आसानी से पहुँचा सकते है। बस आपका काम सिर्फ इतना है कि उसे मुझ तक पहुँचा दें। और फिर इस राज़ को अपने सीने में दफ़न करके रह जायें। आपके जरिये किसी को यह पता न चले कि इस सिलसिले मे क्या हुआ है।"

फ़रीद ने कहा, "क्या मजाल है, मगर मालूम तो हो वह है कौन?"

अफ़ज़ल ने कहा, "वह भी कोई नाजायज़ बात नही है। मैं आपसे कोई जुर्म नहीं करा रहा हूँ, बल्कि आप हकदार को उसका हक़ पहुँचा रहे है। वह हैं मेरी मनकूहा और आपके डाक्टर लतीफ़ी की दुख्तरे-नेक अख्तर नीलोफ़र।

फ़रीद के चेहरे का रंग उड गया, "नीलोफ़र···!"

अफ़ज़ल ने निहायत गम्माज़ मुस्कुराहट के साथ फ़रीद को देखा। जेब से पिस्तौल निकाला और उससे खेलते हुए कहा, "आप तो कुछ परेशान से हो गये यह नामे-नामी इस्मे-गरामी सुनकर।"

फरीद ने घबराकर जल्दी से कहा, "जी नहीं तो, मैं बिल्कुल परेशान नहीं हूँ, आपके हुक्म की पूरी तामील होगी। मैं तो सिर्फ उसकी तरकीब सोच रहा था।"

अफजल ने कहा, "इस सिलसिले में आप अपने दिमाग को जहमत न दें, यह तरकीब भी आपको बता दी जायेगी और सूरत ऐसी पैदा कर दी जायेगी कि आप पर उस वक्त तक कोई आँच न आने पायेगी। जब तक आप मेरी तरकीब पर अमल करते रहेगे। डाक्टर साहब के यहाँ भी आपको इस साजिश में शरीक न समझा जायेगा। और आप हर तरह से महफूज रहेंगे। अलबत्ता अगर आपने हिमाकत का सुबूत दिया तो फिर मैं जिम्मेदार नहीं हूँ। मेरा तो फिर भी कोई नुकसान न होगा अलबत्ता आपके नाम के साथ मरहूम व मगफूर लिखा जाने लगेगा।"

फ़रोद ने इस खौफ़नाक जिक्र को मुख्तसर करने के लिए कहा, "खैर मेरी तरफ़ से आप इत्मिनान रखे कि मैं हर्फ-ब-हर्फ वही करूँगा जो आप फर्मायेंगे।"

अफज़ल ने कहा, "तो अब आपका काम सिर्फ यह है कि आज, कल, परसों, चार दिन के बाद सही या जब कभी आपको मौक़ा मिले आप नीलोफर

के साथ जब कभी वह तन्हा बाज़ार या अपनी किसी सहेली के यहाँ जाने वाली हो, तशरीफ़ ले जायें और जो नम्बर मैं आपको दे रहा हूँ इस पर मुझे टेलिफ़ोन कर दें। बाकी काम मैं ख़ुद कर लूँगा, आपको हाथ पैर बाँधकर उसी कार में छोड़ दिया जायेगा और नीलोफर को मैं जहाँ चाहूँगा ले जाऊँगा। बेहतर यह हो कि आप नीलोफर को रुबी ही के घर लाने की कोशिश करें। उसका घर ऐसे इलाके में है जहाँ निस्बतन जरा सन्नाटा रहता है। समझ में आ रही है आपके मेरी बात ?"

फरीद ने कहा, "जी हाँ, जी हाँ। मगर जरा तफसील से मुझे सब समझा दीजिये।"

अफजल ने जलकर कहा, "यार तुम तो बिल्कुल ही कोरे निकले। मेरे भाई तुम यह करो किसी दिन एक मफ़रूजा (कल्पित) लडाई लड लो रुबी से और फिर नीलोफ़र की खुशामद करो कि चलकर मेरा रुबी से मेल करा दो और यह कोशिश उस वक़्त करो जब नीलोफर की कोई और सहेली न हो। ज़ाहिर है कि वह कार खुद ड्राइव करती है। लिहाजा आप ही उसके साथ होंगे और चूँकि आपका टेलिफोन मुझे मिल चुका होगा लिहाजा मेरे आदमी रास्ते ही मे उस कार को रोककर नीलोफर को ले उड़ेंगे और आपको उसी कार में मुँह मे कपडा ठूँसकर और हाथ-पैर बाँधकर डाल दिया जायेगा। अब आपसे इस हादसे की जो तहकीकात हो तो सिर्फ यह बताइयेगा कि यह लोग सब मुँह पर ढाटे बाँधे हुए थे मै किसी को पहचान नही सकता, अलबत्ता जिस मोटर में उसको ले गये है उसका नम्बर ९९६९ था या ९९९६ था इसके अलावा आप और कुछ न कहियेगा। यह नम्बर अच्छी तरह याद कर लीजिये बल्कि लिख लीजिये और याद करते रहियेगा। ऐ यह लीजिये इस काग़ज़ पर लिखे देता हूँ मैं यह नम्बर।"

फरीद ने कहा, "बस यह ठीक है, मगर अपने आदमियों को हिदायत कर दीजियेगा कि मैं आप ही का नियाज़मंद हूँ और मुझे वाकई जदकोब न करें।"

अफज़ल ने हँसकर कहा, "नहीं नहीं, आप इत्मिनान रखिये। आपको इस किस्म की कोई जिस्मानी तकलीफ़ न होगी। बहरहाल इस वाक़्ये के बाद रुबी आपकी है और आप रुबी के साथ मज़े कीजिए। और यह मैं आपको बताये

देता हूँ कि अगर उसको आपसे वाक़ई मुहब्बत है तो वह आपकी जिन्दगी को रंगीनियों से भर देगी।"

फरीद ने कहा, "यह तो खैर आपकी इनायत है वर्ना मै तो इसके लिए भी तैयार था कि ऐसा दिल ही सीने से निकाल फेंकूँगा जिसमें उस रुबी की मुहब्बत हो, जो दरअसल आपकी है। मै आपकी रकाबत का सौदा तो कर ही नही सकता। अब एक बात और अर्ज करता है, अगर आप बुरा न माने तो मैं अर्ज कर दूँ।"

अफजल ने कहा, "क्या कुछ रुपये वगैरा की जरूरत है आपको ?"

फरीद ने कहा, "जी नही, अस्तगफिरुल्लाह ! मै कोई तिजारत थोड़ी कर रहा हूँ। अर्ज सिर्फ यह करना था कि यह जो मिर्जा साहब है, यह निहायत नाकाबिले-एतबार आदमी है और पेट के भी बहुत ही हल्के हैं। मै यह चाहता था कि उनको किसी तरह यह न मालूम हो कि मै आपकी खिदमत में हाजिर हुआ था या इस वाक़ये में मेरा कुछ हाथ है।"

अफजल ने तहक्कुम से कहा, "यह क्या बकवास है ? आपका ख्याल है कि यह राज सिर्फ आपका है, इसका मुझसे कोई ताल्लुक नही ? और आप मुझको इतना अहमक क्यो समझ रहे है कि मै यह बात कहने खास तौर पर डाक्टर लतीफ़ी के दरबार के उस मसखरे के पास जाऊँगा जिसको मिर्ज़ा साहब कहते है। यह बात आपने कही कैसे ?"

फरीद ने कहा, "जी वह गलती हुई मुझसे, बस मै अब इजाज़त चाहता हूँ और इशाअल्लाह आज-ही-कल मे आपको टेलिफ़ोन करूँगा।"

अफ़जल ने हँसकर उने रुख्सत किया और दरवाज़े तक पहुँचाकर वापस चला गया। फरीद साहब अपने ही खयालात में गर्क़-लौट आये।

४७

****

नीलोफर के कमरे मे इस वक्त उसकी सहेलियों का इज्तेमाअ था, इसलिए कि अब उन सबमें तै था कि शाम को सब कहीं-न-कहीं यकजा हो जाया करें। चुनाचे परसों ये सब सुरैया के घर जमा थी, कल यह महफिल बिरजीस के घर गर्म थी और आज नीलोफर के कमरे मे उन सबके कहकहे खनक रहे थे। आज सबकी आम राय यह थी कि रुबी ने वाक़ई जल्दबाजी से काम लेकर फ़रीद को ऐसा डरा दिया है कि अब इस क़िस्से मे कोई रंग बाकी नही रहा है और यह ड्रामा नुक्त-ए-उरूज (चरम बिन्दु) पर पहुँचने के बाद एण्टी क्लाइ-मेक्स का शिकार हो रहा है मगर रुबी को अब भी यकीन था कि इस तमसील (ड्रामे) मे जान बाक़ी है। चुनांचे उसने कहा :

"यानी आप लोगो का ख़याल यह है कि फ़रीद के फ़रार और मेरे ताक़्कुब (पीछा) मे कोई बात ही नही है। ज़रा महसूस तो करो मेरे इस भगोड़े आशिक़ की उन बदहवासियों को जो वह मेरे साथ बरतता है।"

बिरजीस ने कहा, "है तो यह भी दिलचस्प सूरत मगर इसमे उक्ता देने वाली यक रगी है कि बस वह भागता रहेगा, तुम ताक़्कुब करती रहना। अगर तुमने डराया न होता तो वह निहायत दिलचस्प सीन आते रहते।"

रुबी ने कहा, "आज मै उससे कहने वाली हूँ कि अपना और मेरा फैसला कर दो।"

इस लफ़्ज़ 'फ़ैसला' पर सब हँसते-हँसते लोट गये। कौकब ने कहा, "और जो उसने सचमुच फ़ारिग़ ख़ती लिख दी ?"

रुबी ने बडी अदाकारी के साथ कहा, "तो बहन फिर मेरी क़िस्मत। मुकद्दर का लिखा तो पूरा होना ही है।"

नीलोफर ने कहा, "मैं तो यह कहती हूँ कि उसके दिल से किसी तरह यह डर निकालो जो तुमने उसके दिल पर बिठा दिया है।"

बिरजीस ने राय दी, "मैं बताऊँ उससे यह कहो कि अफ़ज़ल फिर आया था और उसने अब कतई फैसला कर दिया है कि जब तुम ही मेरी नही हो तो किसी और का क्या कुसूर। यह मारे-बाँधे का सौदा तो है नही कि मैं तुमको मजबूर करके तुमको अपने से वाबस्ता रखूँ और तुम फरीद से दरपर्दा मुहब्बत करती रहो। अगर तुम मेरी नही हो सकती हो तो मैं तुमको आज़ाद करता हूँ।"

सुरैया ने कहा, "हाँ बस इसी किस्म की बातें बनाकर उसको ज़रा फिर एक मर्तबा शेर कर दो और अब न डराना उसे। नन्हा-सा तो उसका दिल है सहम कर रह जाता है।"

रुबी ने कहा, "अच्छा तो मैं जाती हूँ उसके कमरे में, तुम उसी दिन की तरह बातें सुनने को बागीचे वाली जाली के पास पहुँच जाओ।"

चुनाचे जिस वक़्त रुबी ने फ़रीद के कमरे का पर्दा उठाकर पूछा है कि, "मै आ सकती हूँ?" वह हजरत बैठे अपनी कमीस में बटन टाँक रहे थे। एक-दम चौककर बोले, "तशरीफ़ ले आइये।"

रुबी एक अदा-ए-दिलबरी के साथ लहराती-बल खाती उसके क़रीब पहुँच कर बोली, "यह काम मेरा है, लाइये मै बटन टाँक दूँ। अब ऐसी भी क्या ग़ैरियत कि इस किस्म के काम भी आप मुझसे नही लेते।"

फ़रीद ने क़मीस एक तरफ़ रखते हुए कहा, "जी नही यह काम आपका नही है बल्कि यह काम मेरे सिवाय किसी का नही। मुझे अभी किसी पर इतना हक़ हासिल नही है कि मैं अपना कोई काम उससे ले सकूँ।"

रुबी ने कहा, "हक़ तो ख़ैर आपको हासिल है। यह और बात है कि आपने खुद अपने को उस हक़ से महरूम कर रखा है। ज़रा-सी उस मुँए ने धमकी जो दी तो ऐसा डर गये आप तो कि मैं क्या कहूँ। वही जो किसी ने कहा है कि :

धमकी में मर गया जो न बाबे-नबर्द था*
इश्क़े-नबर्द-पेशा तलबगारे-मर्द था ।"

फरीद ने अकड़ककर कहा, "खैर यह तो न कहिये । बखुदा मुझे आपकी बदनामी का खयाल था वर्ना मजा चखा देता अफजल को ।"

रुबी ने डरकर इधर-उधर देखते हुए कहा, "खुदा के लिए ऐसी बातें जुबान से न निकालिये अगर मिर्जा साहब के कान में भनक भी पड़ गई तो खैरियत नही है ।"

फ़रीद ने और भी अकड़ककर कहा, "अजी तौबा कीजिये । इसकी परवा तो वह करे जो मिर्जा साहब या उस लफ़ंगे अफजल से दबता हो ।"

रुबी ने गोया खुश होकर कहा, "हाँ यह हुई न एक बात । अल्लाह नजरे-बद से बचाये, आज बडे दबंग बन रहे है आप । और जो सचमुच अफज़ल रिवालवर लेकर आ जाये तो ?"

फ़रीद ने कहा, "अगर रिवालवर मर्दो का खिलौना है तो मै भी उससे खेलना जानता हूँ । जो दो हाथ और पैर उसके है वही मेरे भी है और इसका फ़ैसला तो मुकाबिला होने ही से हो सकता है कि हम दोनों में उन्नीस कौन है और बीस कौन ?"

रुबी ने डर कर कहा, "हाय मैं तो कभी भी न लड़ने दूँ आपको उससे । एक ही मुट्ठी में लेकर आपको फाँक जाये वह मुँआ देवज़ाद (राक्षस तुल्य) ।"

फरीद ने तनकर कहा, "खैर इस मुगाल्ते (धोखा) मे भी न रहियेगा । छठी का दूध याद दिला दूँ उन हज़रत को मै भी ।"

रुबी ने हँसकर कहा, "मेरी आँखो मे खाक । आज तो सचमुच आप में वह शुजाअत और वह दिलेरी है जिसका शुब्हा भी न हो सकता था आपके लिए । अच्छा अब मेरी बात सुनिये कि मेरे और आपके दरम्यान अब किसी किस्म की कोई रुकावट नहीं है ।"

फरीद ने हैरत से पूछा, "क्या मतलब ?"

*** जो लड़ाई के योग्य न था वह मात्र धमकी ही से मर गया और जिसे इश्क़ की लड़ाई में आनंद आता है वह वीरों की तलाश करता रहता है ।**
—ग़ालिब

रुबी ने कहा, "मेरा और अफ़ज़ल का क़तई फैसला हो गया और अब मैं आपके लिए आज़ाद हूँ। वह अब आपको किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान नहीं पहुँचायेगा। वह आया था आज मेरे पास और अब मेरे और उसके दरम्यान निहायत सुलहजूयाना (संधि पूर्ण) अंदाज़ से यह तै हो गया कि मैं आपकी हो सकती हूँ।"

खुद अफ़ज़ल और फ़रीद के दरम्यान जो गुफ़्तगू हो चुकी थी उसकी रोशनी में फ़रीद को यक़ीन हो गया कि अफ़ज़ल ज़रूर आया होगा रुबी के पास और रुबी यह सच कह रही है कि उसने उसको हस्बे-क़रारदाद आज़ाद भी कर दिया होगा। मगर उसी करारदाद के मातहत अभी उसको रुबी से लड़ना भी था ताकि फिर नीलोफ़र को सुलह कराने के लिए ले जा सके। लिहाज़ा उसने कहा :

"गोया आपका मतलब यह है कि अफ़ज़ल ने मेरे कश्कोल में आपको ख़ैरात समझकर डाल दिया है ? यह मेरी खुददारी के खिलाफ है। मैं आपको उससे जीतना चाहता था।"

रुबी ने बनकर कहा, "हाय मेरे अल्लाह यानी ख़्वाहमख़्वाह भी आ बैल मुझे मार।"

फ़रीद ने कहा, "जी नहीं बल्कि आ बैल मैं तेरी खबर लूं।"

रुबी ने कहा, "मगर अब तो फ़ैसला ही हो चुका है। अब मेरे और आप के दरम्यान कोई रुकावट बाकी नहीं रही। बीच का काँटा खुद ही निकल गया तो अब आपको क्या पसो-पेश है ?"

फ़रीद ने कहा, "बहुत ज़्यादा पसो-पेश है और चाहता हूँ कि उस पर आप भी इन्साफ़ और ठण्डे दिल से गौर कीजिये।"

रुबी ने हमातन सवाल बनकर कहा, "किस बात पर इन्साफ़ और ठण्डे दिल से गौर करूँ ?"

फ़रीद ने कहा, "मेरी साफ़गोई को माफ़ कीजियेगा कि आपकी और अफ़ज़ल की शादी की इब्तेदा उस मुआशिक़े से हुई थी जो आपके और उसके दरम्यान विलायत में हुआ था यहाँ तक कि आपने अपने लिए उसमें इतनी

कशिश पाई कि अपना घर, अपना शहर, अपना मुल्क, अपने अज़ीज़, अपने दोस्त, अपनी मआशरत, मुख्तसर यह कि अपना सब कुछ छोड़ा और सात समुन्दर पार इस मुल्क में आ गई ।"

रुबी ने बात काट कर कहा, "जी हाँ इसी से अंदाज़ा कर लीजिये कि औरत किस हद तक ईसार कर सकती है और मुहब्बत पर क्या कुछ क़ुरबान करना जानती है ।"

फरीद ने कहा, "दुरुस्त है, मगर ज़रा मुझको बात कर लेने दीजिये । मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि जिस अफ़ज़ल के लिए आपने यह सब कुछ किया उसी को आपने अपनी निगाहों से गिराकर अपने दिल से निकाल दिया और जब आप उसकी न हो सकी तो मैं क्या उम्मीद कर सकता हूँ ।"

थी तो यह समझी-बूझी-सी बात और ज़ाहिर है कि यह तमाम लगावट की बातें ही मफरूजा थी मगर रुबी के वहमो-गुमान में भी यह बात न थी कि उसको कभी किसी से यह ताना सुनना पडेगा । वह यह सुनते ही एकदम जलबलाकर रह गई और एक लम्हे के लिए वह यह भी भूल गई कि यह वाक़या नही बल्कि तमसील है, चुनाचे उसने निहायत संजीदगी से कहा, "मेरी किस्मत में यह भी लिखा था कि आप मुझको यह ताना भी दे :

लो वो भी कहते हैं कि ये बेनंगो-नाम है
ये जानता अगर तो लुटाता न घर को मैं ।"

फरीद ने कहा, "मैं शर्मिन्दा हूँ कि मुझे यह तल्ख़ बात कहना पड़ी, मगर मैं अपना इत्मिनान चाहता हूँ ।"

अब रुबी ने सचमुच ग़ुस्से से कहा, "मुझे आपको मुतमइन करने की ज़रूरत नहीं । मगर यह मैं जरूर बता देना चाहती हूँ कि अफ़ज़ल के सिलसिले में बेवफाई का इल्जाम मुझ पर नही, खुद उसी पर आता है । वह बड़े चाव से मुझे लाया था मगर यहाँ पहुँच कर मुझ को पहले तो यह मालूम हुआ कि वह शादीशुदा न सही मगर निकाह कर चुका है और एक बेजुबान लड़की पहले ही से उससे वाबस्ता है । उसके बाद जब उस लड़की यानी नीलोफ़र से क़ता-ताल्लुक़ (सम्बन्ध-विच्छेद) और तलाक़ का मसला छिड़ा तो उसने नीलोफ़र की तमाम जायदाद और दौलत जाते हुए देख कर मुझसे अलैहदगी चाही । चुनांचे

अब मेरी भी यह कैफ़ियत हो चुकी थी कि मैं जिस मुहब्बत के फ़रेब में मुब्तला होकर आई थी वह मुझको नकाब उठने के बाद मुहब्बत नहीं बल्कि खबासत नज़र आई। चुनांचे मेरे दिल में भी मुहब्बत ने बगावत की करवट ली।

"दिल ऐसी चीज़ को ठुकरा दिया नख़वत परस्तों ने
बहुत मजबूर होकर हमने आईने-वफ़ा बदला।"

फ़रीद ने मुस्करा कर कहा, "यही तो मुझे डर मालूम होता है कि आप ठहरी आईने-वफ़ा बदलने की खूगर, हालाकि मेरे मजहब में आइने-वफ़ा बदल ही नही सकता।"

रुबी ने कहा, "यही दावा गलत है। मैं आपसे पूछती हूँ कि फ़र्ज़ कर लीजिये मेरी वफ़ा पर ऐतमाद करके आप मुझसे वफ़ा का दम निहायत ईमानदारी के साथ भरने लगते है मगर मैं आपसे बेईमानी करती हूँ और किसी और शिकार की तलाश में सरगर्दा हो जाती हूँ जिसका आपको इल्म भी हो जाता है। क्या जनाब के आईने-वफ़ा मे उस वक़्त भी कोई तब्दीली-वाके न होगी ?"

फरीद ने कुछ लाजवाब होकर कहा, "वह तो ज़ाहिर है कि होगी।"

रुबी ने कहा, "बस तो ज़ाहिर है कि वह हुई। बिल्कुल यही हालात मेरे सामने आये और ये वही हालात है जिनका आप मुझ को इस वक़्त ताना दे रहे है।"

फरीद ने कहा, "मैं ताना नहीं दे रहा हूँ बल्कि मेरे दिल में यह सवाल पैदा हुआ है कि जब यह अपने शौहर की न हुई तो मेरी क्या होंगी।"

रुबी ने उठते हुए कहा, "बेहतर है तो अब आप अपने इस सवाल का खुद ही जवाब देते रहिये। मैं इजाजत चाहती हूँ और उम्मीद है कि अब आप मुझ से कभी इस बाब में कुछ न फ़र्मायेंगे।"

फरीद को उसकी मुराद मिल चुकी थी, यानी रुबी रुठकर जा रही थी चुनांचे उसने रस्मी तौर पर भी उसको न रोका और वह चली गई।

४८

****

नाश्ते की मेज़ पर जो एक मुख्तसर-सी सोहबत होती थी, जब वह खत्म हुई और शिहाब मय अर्जमंद और फ़ारूकी के हस्बे-मामूल शेखूपुरा रवाना हो गया तो डाक्टर साहब भी अपने मतब के लिए रवाना हो गये। मिर्जा साहब का आज यौमे-खिजाब था लिहाजा वह अपने कमरे में चले गये, मगर फ़रीद आज खिलाफे-मामूल नीलोफ़र के इर्द-गिर्द मँडलाते रहे। आखिर जब वह बेगम साहबा के कमरे से निकल कर अपने कमरे की तरफ़ जाते हुए नौकरों को हिदायत कर रही थी कि शिहाब साहब का कमरा साफ़ करके बंद कर दिया जाय, फ़रीद ने उसके करीब जाकर निहायत आजिज़ी से अर्ज़ किया, "नीली बीबी, मुझे आपसे कुछ अर्ज़ करना था।"

नीलोफर ने बड़े ताज्जुब से कहा, "मुझसे ? हाँ हाँ, फ़र्माइये ना।"

फ़रीद ने कहा, "ज़रा तफ़सीली बात है।"

नीलोफ़र ने निहायत संजीदा शरारत से कहा, "तफ़सीली बात है तो मुख्तसरन फर्मा दीजिये।"

फ़रीद ने कहा, "मैं आज आपको अपने ऐतमाद में लेकर यह अर्ज़ करना चाहता हूँ कि वह जो आपकी सहेली है ना रुबी ।"

नीलोफ़र ने बात काट कर अनजान बनकर कहा, "रुबी ? क्या हुआ रुबी को ?"

फ़रीद ने कहा, "उनको कुछ ग़लतफ़हमी हो गई है मुझ से। मेरा मतलब यह है कि वह नाराज़ हो गई हैं कुछ मुझ से।"

नीलोफ़र ने और भी अनजान बन कर कहा, "नाराज़ हो गई हैं आपसे ? आपसे क्या मतलब उनको ? और यह वाक़्या कब का है ?"

फरीद ने बेरब्ती के साथ कहना शुरू किया, "अब मैं क्या अर्ज करूँ, दर-असल कुछ किस्सा था मेरे और उनके दरम्यान। मेरा मतलब यह है कि कुछ किस्सा तै हो रहा था कि वह कल यकायक मेरी एक बेहूदगी पर खफ़ा हो गई है।"

नीलोफर ने एक गार्डन चेयर खुद अपने लिए खिसकाते हुए और दूसरी की तरफ इशारा करते हुए कहा, "बैठ जाइये ना, आप कुछ घबराये हुए-से मालूम होते है। दरअसल मेरे पल्ले अभी तक कुछ नही पड़ा है—किस्सा था, किस्सा तै हो रहा था, बेहूदगी पर गोया बजाय खुश होने के नाराज हो गई। आप जरा खुल कर कहिये कि माजरा क्या है।"

फरीद ने बैठते हुए कहा, "साफ़ बात यह है कि मगर बात बस आप ही तक फिलहाल रहे कि हम दोनों को एक-दूसरे से दिलचस्पी है ज़रा।"

नीलोफर ने कहा, "दिलचस्प तो खैर वह भी बहुत है और आप भी कुछ कम दिलचस्प नही है। मगर आपका मतलब शायद कुछ और है।"

फ़रीद ने सँभल कर बैठते हुए कहा, "जी वह बात यह है कि हम दोनों ने एक दूसरे को अपना शरीके-हयात बनाने का दरअसल इरादा कर लिया था। मगर चूकि यह होता है ज़िन्दगी का साथ, लिहाज़ा शुरू ही में साफ़-साफ़ बातें हो जाना मुनासिब समझ कर, मैंने कुछ ज़रूरत से ज़्यादा सफ़ाई से काम लेकर कल जबकि वह मेरे पास आई थीं उनसे यह कह दिया कि जब आप अफ़ज़ल की न हो सकी तो मुझे यह मुतमइन कर दीजिये कि·····।"

नीलोफर ने जुमला पूरा कर दिया, "कि मेरे साथ भी वही सुलूक न करेंगी। बिल्कुल ठीक कहा आपने। मगर आपसे ज़्यादा खुद उसको दरअसल आपकी तरफ़ से मुतमइन होना चाहिये था, इसलिए कि दूध का जला छाछ को फूँक-फूँक कर पीता है। उसको यह इत्मिनान करना चाहिये था कि आप दूसरे अफजल साबित न होगे। बहरहाल फिर क्या हुआ?"

फ़रीद ने कहा, "फिर क्या होता, वह उसको ताना समझकर रूठ गईं।"

नीलोफ़र ने कहा, "तो रूठ जाने दीजिये, अब आप क्या चाहते है?"

फ़रीद ने कहा, "मैं दरअसल आपका ताव्वुन चाहता हूँ कि आप हम दोनों की सुलह करा दें।"

नीलोफ़र ने कडे तेवरों से कहा, "देखिये जनाब साफ बात यह है कि आप से तो मुझे खैर कोई शिकायत नही मगर चूंकि रुबी ने अपना यह राज़ मुझसे छिपाया है लिहाज़ा मै आखिर इस मामले मे क्यों पड़ूँ ?"

फरीद ने कहा, "मेरी बहन की हैसियत से और मैं यह जानता हूँ कि वह दुनिया मे अगर किसी की बात मान सकती है तो वह आप हैं।"

नीलोफ़र ने कहा, "आपको इस पर तो कोई एतराज न होगा कि मै पहले तो उसकी खबर लूंगी कि उसने यह चोरी की ही क्यों। उसके बाद आपकी सिफारिश कर दूंगी। वैसे सच्ची बात यह है कि मुझे आपकी किस्मत पर रश्क है कि रुबी ऐसी लड़की आपकी तरफ़ मुतव्वजे हुई है।"

फरीद ने सर झुका कर कहा, "जी हाँ उसका मुझ को अदाजा है और मैं वाकई कल वाली बात पर नादिम हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप इसी वक़्त चल कर यह गलतफ़हमी दूर कर देगी।"

नीलोफ़र ने कुछ पसो-पेश के बाद कहा, "बेहतर है मैं ज़रा तैयार हो जाऊँ तो चलती हूँ। आज वह खबर ली हो उसकी कि वह भी याद करे।"

यह कहकर नीलोफर तो अपने कमरे मे तैयार होने के लिए चली गई और फ़रीद ने इधर-उधर देखकर डाक्टर साहब के कमरे का रुख किया जहाँ टेलिफ़ोन था। चुनाचे अफ़ज़ल के बताये हुए नम्बर पर उसे टेलिफ़ोन कर दिया कि नीलोफ़र तैयार होने गई है और गालिबन एक घण्टे के अन्दर-ही अन्दर वह मेरे साथ रुबी के घर जाने के लिए रवाना हो जायेगी। टेलिफ़ोन तो उसने कर दिया मगर अब उसके हवास बजा न थे। वह अन्दर-ही-अन्दर खौफ से काँप रहा था। वह जुर्म जो अभी उससे सरज़द भी न हुआ था उसका दम घोटे देता था। और वह निहायत इज्तेराब के साथ मुठ्ठियाँ बन्द किये टहल रहा था। बार-बार उसकी हथेलियाँ पसीज रही थी और वह अपने उन ठण्डे हाथों के उस पसीने को रूमाल से खुश्क कर लेता था। कई मर्तबा उसने फ्रिज से बोतल निकाल कर पानी पिया, मगर उसको यही महसूस होता रहा जैसे उसकी ज़ुबान पर काँटे बिछे हुए है। उसके दिल में यह खयाल भी पैदा हुआ कि ऐसे में सवेरा है भाग खड़ा हो यहाँ से, जहन्नुम में डाले रुबी को, अफ़ज़ल से दूर भाग जाये। मगर अब उसको यह फ़रार भी नामुमकिन नजर आ रहा था और अब तो सिर्फ़

यही एक सूरत थी कि जो कुछ उसको करना है वह कर गुज़रे। ऐसी भी क्या कयामत आ जायेगी। ज़ाहिर है कि अफ़ज़ल नीलोफ़र को इसलिए तो हासिल करना नही चाहता कि उसे मार डाले। वह तो उसे अपनी महबूब बीवी की हैसियत से हासिल करना चाहता है। चन्द दिन ज़रा-सी कशमकश रहेगी, उसके बाद यही अफ़जल डाक्टर साहब के इसी घर में दूल्हा मियाँ कहलायेगे। अलबत्ता यह जो शिहाब मियाँ ने ढोंग रचा रखा है इसका खात्मा हो जायेगा। मुख्तसर यह कि वह इसी किस्म की गुत्थियाँ सुलझा-सुलझाकर उनमें अपने को उलझाता रहा कि इतने में नीलोफर अपने कमरे से तैयार होकर निकल आई और उसने फ़रीद को देखते ही कहा :

"अच्छा गोया आप यही टहल रहे है मेरे इन्तेज़ार मे ? मैं ज़रा ममी से कह आऊँ कि रुबी के यहाँ जा रही हूँ। बस अभी आई।"

उसके जाते ही फरीद ने इस तरह रूमाल से चेहरे को साफ़ किया गोया उसकी बदनियती चेहरे पर नजर आ सकती थी जिसे उसने छिपा दिया। मगर इसका क्या इलाज कि उसका दिल बदस्तूर धड़क रहा था जैसे किसी ऐसे मरीज का दिल धड़कता है जिसे निहायत खतरनाक आपरेशन के लिए आपरेशन थ्येटर में ले जाते हैं। वह मुसलसल टहल रहा था कि कहीं उसके पैरों मे लड़-खड़ाहट न पैदा हो जाये। वह अपनी इस कैफ़ियत से उस वक़्त खुद ही आजिज आ चुका था कि यह भी अजीब अनाड़ीपन है। उसने खुद ही अपना तजज़िया किया कि बरखुरदार ऐसे ही तुम मासूम थे तो यह इरादा ही क्यों किया और अब सवाल यह है यह नही करते तो करोगे क्या ? रुबी भी हाथ से जायेगी और यह भी तै है कि अफजल छोड़ेगा नहीं तुम को, कुत्ते की मौत मारेगा। लिहाजा जरा दिल को सभालो और हिम्मत से काम लेकर इस इम्तेहान में पूरे उतर जाओ। मुमकिन था कि फिर इस खयाल को रद करने वाला कोई और खयाल भी उसके ज़हन में आता कि खट-खट-खट करती नीलोफर सामने आ गई और बोली :

"तशरीफ लाइये जनाबे वाला।"

यह कह कर वह खुद कार ड्राइव करने बैठ गई और फ़रीद उसके बराबर ही दूसरे दरवाज़े से आकर बैठ गये। एक फ़र्राटे के साथ कार रवाना हो गई

और कोठी के कम्पाउण्ड से निकलते ही उस सड़क पर होली जो रुबी के घर को जाती थी। रुबी का मकान ज़रा फ़ासले पर था, खैर फ़ासले तक तो कोई मुज़ाइका (हानि) न था मगर रुबी की सहेलियाँ कहा करती थी कि ऐसे बेरौनक और सुनसान मुहल्ले में इस कमबख्त ने सुकूनत इख्तियार की है जहाँ मालूम होता है कि इन्सानियत का गुजर हुआ ही नही है। मगर रुबी को अपने इस घर पर नाज़ था कि शहर के अन्दर है मगर शहरियत से दूर, आबादी से बाहर नही मगर हंगामों से ग़ैर मुताल्लिक़। हर तरफ़ लहलहाते हुए खेत है, खुली हवा है, ट्रैफ़िक का शोर नही, सुबह में जो सबाहत यहाँ नजर आती है वह शहर के अन्दर कहाँ। और शाम की जो मलाहत (मनोहरता) यहाँ मयस्सर है वह शहर वाले क्या जानें। मगर वाक्या सिर्फ यह था कि बेचारी को इन्तेहाई तलाश के बाद अपने लिए उसी जगह मकान मिल सका था। लिहाज़ा उसने यह तमाम हुस्न ज़बरदस्ती उसमें पैदा कर रखे थे। इसी मकान की तरफ नीलोफ़र की कार फ़र्राटे भरती हुई चली जा रही थी कि एक मोड़ पर आकर एक दूसरी गाडी ने उसका रास्ता रोक लिया और जैसे ही उसने ब्रेक लगाया हर तरफ़ से बदमाशों ने उसकी कार को रोककर इस क़दर तेज़ी से उसको खेंचकर बाहर निकाला है कि फ़रीद देखता ही रह गया। उसने सिर्फ यह देखा कि उसको उस दूसरी गाडी में डालने से पहले काफी कशमकश से उन बदमाशों को दो-चार होना पडा। मगर थोडी ही देर में नीलोफर की तरफ से हर मदाफेअत (प्रतिकार) सर्द पड गई, उसकी चीखे बन्द हो गई और उसको निहायत आसानी के साथ उस गाडी में ठूँसकर उस गाडी को रवाना कर दिया गया। अभी वह गाड़ी ज्यादा दूर न गई होगी कि एक तीसरी गाडी करीब आई और उसमे से दो-तीन आदमियो ने उतर कर खुद उन हज़रत को रस्सियों से जकड़कर और उनके मुँह मे गूदड़ भर कर उनको उसी गाडी में डाल दिया और यह बेदस्तोपा (पंगु) उस वक़्त तक पड़े रहे जब तकरीबन दो घण्टे के बाद एक ताँगे वाले ने आकर शोर मचाना शुरू कि या कि "बाबू जी, अपने हाथ पर लगा लो गाड़ी को।" और जब कोई जवाब न मिला तो उसने बेनुकत शुरू कर दीं कि बाबा की जागीर समझ रखा है सड़क को। चुनाँचे वह बड़बड़ाता हुआ कार के क़रीब आया और उसमें फ़रीद को इस तरह बँधा हुआ देखकर

उसने अपनी सवारियों को भी आवाज़ दी कि जल्दी दौड़ो खून हो गया है । मगर जब सबने करीब आकर देखा तो कार के दरवाजे खोलकर फरीद को निकाला गया । रस्सियाँ खोली गई और मुँह से गूदड़ निकाल कर जो उससे पूछा तो उसने बमुश्किल सिर्फ यह कहा कि मुझे डाक्टर लतीफी की कोठी पहुँचा दो फौरन । चुनांचे उसको उसी ताँगे पर डाक्टर साहब की कोठी पहुँचाया गया और उसने आते ही वह कुहराम मचाया है कि और-तो-और बेगम साहबा भी हवास-बाख्ता घबराई हुई नगे पैर बाहर निकल आई । ताँगे वाले ने उनको और डाक्टर साहब को तमाम तफसील सुनाई कि यह किस तरह मोटर में बँधे पडे थे और उनसे जब यह मालूम हुआ कि किस तरह बदमाश कार रोककर नीलोफ़र को ले गये तो बेगम साहबा तो खडे कद से बेहोश होकर गिरी, मगर डाक्टर साहब के हवास इस हद तक बजा थे कि उन्होने सबसे पहला काम यह किया कि उसी वक़्त शेखूपुरा अर्जण्ट काल बुक कराकर गिर्जा साहब को उस काल पर तैनात किया और खुद बेगम साहबा की तीमारदारी मे मसरूफ हो गये ।

४६

**:*

नीलोफर को गायब हुए आज तीसरा दिन था । बेगम साहबा की हालत तो गैर थी ही, मगर खुद डाक्टर साहब भी निहायत सख्त किस्म के इख्तेलाजे-क़ल्ब (हृदय-रोग) के दौरे में मुब्तिला होकर बिस्तर से लग गये थे । शिहाब पर जो गुज़र रही थी उसको उसका दिल ही खूब जानता था । अर्जमन्द और फ़ारूकी के अलावा इकराम भी यही आ चुका था और पुलिस की पूरी तवज्जो इसी तफ़तीश की तरफ़ थी । मगर किसी की समझ में कुछ न आता था ।

फ़रीद ने जो नम्बर बताये थे उनमें से एक नम्बर वहीदा की गाड़ी का था मगर महम्मद हुसैन से मालूम हो चुका था कि उस अगवा में वहीदा का हाथ हरगिज़ नही है। बल्कि खुद वहीदा इस सिलसिले में परेशान है कि अब अफ़जल और तफज्जुल की गिरफ़्तारी अमल में आ जायेगी और मुमकिन है कि वह ऐसी बाते उगल दें जो उस तमाम राज ही को अफ़शाँ कर दें जिसमें अलावा दूसरे जराइम के कत्ल तक शामिल है। रह गये अफजल और तफज्जुल, उनके घर पर पुलिस छापा मार चुकी थी मगर अफ़जल और तफज्जुल दोनों मौजूद थे। अगर इस अगवा में उनका हाथ होता तो ज़ाहिर है कि वह क्यो बैठे रहते। शहर का चप्पा-चप्पा पुलिस ने छान मारा था। मुफस्सिलात में इत्तला दी जा चुकी थी मगर नीलोफर का कहीं पता न था। यह तो तै था कि इस अगवा में सिवाय अफ़जल और तफज्जुल के किसी का हाथ नही हो सकता। मगर बावजूद पूरी कोशिश के ये दोनों भाई अब तक बेदाग ही नज़र आये और अब अक्ल काम न करती थी कि नीलोफर आखिर कहाँ हो सकती है और उसका सुराग आखिर कहाँ लगाया जाये। फ़ारूक़ी की राय यह थी कि अफ़जल और तफ़ज्जुल को गिरफ्तार कर लिया जाये। मगर बाकी सबको इख्तेलाफ़ यह था कि इस तरह मुमकिन है कि नीलोफर को कोई नुक़्सान पहुँच जाये। चुनांचे उस वक़्त भी ये सब सर जोडे मशविरा कर रहे थे कि रुबी निहायत सरासीमा उनके कमरे मे दाखिल हुई और उसने इधर-उधर देखकर कहा, "वजह आप बाद में पूछियेगा, मगर ऐसा न हो कि वह निकल जाये। आप फरीद को फ़ौरन गिरफ्तार कर लीजिये।"

शिहाब ने कहा, "फरीद को, फरीद से क्या मतलब ?"

फारूकी ने कहा, "यह पूछ-गूछ बाद में करना पहले उसे गिरफ़्तार कर लिया जाये। इनको यकीनन कुछ पता लगा है।"

चुनांचे वह खुद ही जस्त् लगाकर उठा और इससे क़ब्ल कि अर्जमन्द और इकराम वगैरा भी पहुँचे उसने फ़रीद के कमरे में दाखिल होकर कहा :

"भागने की बिल्कुल कोशिश न करना, मैं तुमको गिरफ़्तार करता हूँ।"

हालाँकि उस वक़्त अगर फरीद को छोड़ भी दिया जाता तो वह गिर तो सकता था, मगर भागने का उसमें बूता नामुमकिन था। उसने घिघियाते हुए

हथकड़ी पहन कर कहा :

"मैं आपको सब बता दूँगा, मगर बखुदा मैं नहीं जानता कि नीली कहाँ है।"

फारूकी ने उसको डाँटा, "बकवास बन्द करो और निकलो इस कमरे के बाहर।"

इतनी ही देर में यह खबर डाक्टर साहब को भी हो गई थी कि फरीद को गिरफ़्तार कर लिया गया। वह दौड़े हुए मय मिर्जा साहब के पहुँचे और उधर से फारूकी फरीद के हथकडियाँ डाले हुए कमरे से निकला और अपने दो कान्स्टेबलों को इशारा करके उन हजरत को उनको सुपुर्द करके कहा, "इनको मेरे साथ लाओ।"

अब शिहाब, अर्जमन्द, इकराम और रुबी सब ही यहाँ पहुँच गये थे। चुनाचे रुबी ने फारूकी को देखते ही कहा, "अब आपको चाहिये कि इससे पहले कि अफजल और तफज्जुल को इनकी गिरफ़्तारी की खबर पहुँचे, उन दोनों को भी गिरफ्तार कर लीजिये।"

फारूकी ने कहा, "अभी लीजिये, वह भी अभी इसी हालत मे यहाँ पहुँचते है।" यह कहकर वह टेलिफोन करने डाक्टर साहब के कमरे मे चला गया। यहाँ डाक्टर साहब हैरत से एक-एक का मुँह देख रहे थे और मिर्ज़ा साहब घबरा-घबराकर कई मर्तबा बटुए से कुली फाँक गये थे। आखिर डाक्टर साहब ने अर्जमन्द से पूछा, "क्या कुछ पता चल गया है ?"

अर्जमन्द के बजाय रुबी ने कहा, "बस अभी चला जाता है पता। यह तो पता चल ही गया कि आपके यहाँ कैसे-कैसे नमक हराम मौजूद है जिन साँपों को आप आस्तीन में पाल रहे है।"

अर्जमन्द ने कहा, "फ़ारुकी को आ जाने दीजिये, फिलहाल सब तारीकी में हैं और रुबी बहन के एहकाम की तामील कर रहे है। उन्हीं को कुछ पता चला है।"

मिर्जा साहब ने कहा, "इनको पता चला है तो यकीनन दुरुस्त होगा। मगर हद करदी बखुदा इस मलऊन फ़रीद ने।"

फ़रीद ने आँसू बहाते हुए कहा, "मैं सच-सच बता दूंगा मगर अल्लाह

जानता है, मुझे बिल्कुल नहीं मालूम कि नीली बीबी को ये लोग कहाँ ले गये।"

फ़ारुकी टेलिफ़ोन करके आते हुए बोले, "बस अब आते ही होंगे वह दोनों भी। अब जरा बताइये तो सही रुबी बहन कि वाक़्या क्या है ?"

रुबी ने निहायत हिकारत से फ़रीद को देखते हुए कहा, "इसी नमक हराम ने नीली को यहाँ से ले जाकर अफजल के सुपुर्द किया है।"

और यह कहकर अपने और फ़रीद के उस मुआशिके की पूरी दास्तान सुनाई जो मजाक-ही-मजाक में बिरजीस के अक़्द के बाद से चल रहा था और इसी मजाक में उसने फ़रीद को अफ़ज़ल से जो डराया था उसका भी पूरा वाक़्या सुनाकर कहा, "आज यह हज़रत मेरे पास गये और मुझ को अपना समझकर सब कुछ उगल दिया कि अब अफजल मेरे और तुम्हारे दरम्यान इसलिए न आयेगा कि उसकी नीलोफ़र को उसके हवाले कर चुका हूँ और अब हम दोनों आज़ाद हैं।"

मिर्ज़ा साहब ने डाक्टर साहब से कहा, "बखुदा मुझको बन्दूक ला दो ताकि इसको गोली से उड़ाकर अपने को फाँसी के लिए पेश कर दूँ।"

अर्जमन्द ने कहा, "गोली मार देने से तो इनके मसाइब खत्म हो जायेंगे। इनके साथ तो वह सुलूक होगा कि यह मौत के लिए तरसें और इनको मौत मयस्सर न हो।"

फारूकी ने अब बाकायदा एक पुलिस अफसर की तरह फ़रीद से कहा :

"देखोजी यह तो अपने जहन से बिल्कुल निकाल ही दो कि तुम हमको कोई चक्मा देने मे कामयाब हो सकोगे। तुम्हारी खैरियत इसी में है कि जो कुछ हुआ वह तो हो चुका। मगर अब अपनी कब्र अपने हाथ से खोदने के बजाये हमको अफ़जल और तफ़ज्जुल के आने से पहले ही सच-सच सब कुछ बता दो।"

फ़रीद ने रोते हुए हाथ जोडकर कहा, "रुबी ने जो कुछ बताया है वह बिल्कुल ठीक है। मुझे खुद इन्ही ने अफ़ज़ल से ऐसा डराया था कि मै हर वक़्त अपने को खतरे मे पाता था। लिहाज़ा मैं एक दिन हिम्मत करके खुद अफ़ज़ल के पास इसलिए गया था कि रुबी से दस्तबरदार होने का ऐलान उसके सामने करूँ। मगर उसने मुझसे यह कहा कि मैं नीलोफ़र को किसी बहाने से अपने साथ ले जाकर उसके सुपुर्द कर दूँ और उसके बाद रुबी मेरी होगी।"

अर्जमन्द ने कहा, "गोया रुबी के दामों आपने नीली गरीब को उन बदमाशों के हाथ बेचा है। अच्छा यह जो आपने मोटर के दो नम्बर दिये थे, यह खुद आपकी जहानत थी या यह मशविरा भी आपको अफ़जल ही ने दिया था ?"

फ़रीद ने कहा, "बखुदा ये दोनों नम्बर भी मुझ को अफ़जल ही ने दिये थे ?"

इकराम ने कहा, "अच्छा तो तुम नीली को लेकर जब रुबी के यहाँ चले तो यह वक़्त गोया पहले से मुकर्रर था ?"

फ़रीद ने कहा, "जी नहीं, बस यह तै था कि जब नीली मेरे साथ जाने पर आमादा हो जायें तो रवानगी से पहले मैं अफ़ज़ल को टेलिफोन करूँगा चुनाँचे मैने टेलिफोन कर दिया था।"

शिहाब ने कहा, "देखिये किस कद्र मुनज़्ज़म साजिश थी कि नीली को वह लोग ले जायेगे और उनको इस तरह बाँध कर छोड जायेंगे कि यह बेचारे खुद भी मज़लूम मालूम हों। किसी को इन पर शुब्हा भी न हो।"

फ़ारुकी ने कहा, "मगर किस कदर एहमक है यह अफ़ज़ल और तफ़ज्ज़ुल भी कि इसके ऐसे उल्लू के पट्ठे को अपनी इस साज़िश में शरीक किया है।"

और उसी वक़्त पुलिस की एक वैगन से पुलिस की एक जमीयत (जत्था) के साथ अफ़जल और तफ़ज्ज़ुल भी हथकड़ियाँ पहने बरामद हुए। उनको देखते ही फारूकी ने कहा, "तशरीफ़ लाइये। 'बड़ी देर की मेहरबाँ आते-आते।' "

अफ़ज़ल ने कड़े तेवरों के साथ कहा, "डिप्टी साहब इसको मज़ाक न समझियेगा कि आपने दो शरीफ़जादों को इस तरह हथकड़ियाँ डलवाकर यहाँ बुला लिया है। आखिर हमारा जुर्म क्या था कि आपने अपने एक हुक्म से हमारी इज्ज़त-आबरू पर पानी फेर कर रख दिया ?"

फ़ारूक़ी ने डाँटकर कहा, "बकवास बन्द कर ! मुझे खूब मालूम है जैसा शरीफ़ तू है। उस शराफ़त का पता अभी चला जाता है।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "बखुदा यह ज़र्बुलमस्ल (कहावत) सुनी ज़रूर थी मगर आज देख भी ली कि उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।"

अफ़ज़ल ने बदस्तूर बिफरे हुए अंदाज़ से कहा, "चोर कहने से पहले चोरी साबित करना पड़ेगी आपको।"

फ़ारुक़ी ने एक कान्स्टेबल को इशारा किया, "जवान, ज़रा इन दोनो की मिज़ाजपुर्सी करके फिर लाओ मेरे सामने। अभी मिज़ाज अर्श-मुअल्ला पर है।"

यह सुनते ही उन दोनो को ज़रा दूर ले जाकर सिपाहियो ने जूताकारी जो शुरू की है तो सचमुच भेजा पिलपिला करके रख दिया। आखिर फ़ारुकी ने आवाज देकर कहा, "ले आओ अब उनको शायद नशा कुछ हरन हो गया हो।"

चुनांचे उन दोनों को जब निहायत खस्ता हालत मे पेश किया गया तो फ़ारुकी ने कहा, "कहिये अब क्या फर्माते है आप ? यह तो महज नमूना दिखाया गया है कि हम आपकी बस ऐसी ही खिदमत करेगे। अब अगर दिमाग ठिकाने आ गया हो तो यह देख लीजिये अपने इन हमज़ाद मियाँ फ़रीद को जो आपकी तमाम शराफ़त का कच्चा चिट्ठा पहले ही बयान कर चुके है। तुम इस कदर अनाडी हो कि अपना साथी भी बनाया तो इस गधे को। बहरहाल अब खैरियत इसी मे है कि साफ़-साफ़ बतादो कि नीलोफर कहाँ है ?"

अफ़जल ने कहा, "आप जो सुलूक मेरे साथ करना था कर चुके, और भी जो कुछ आपको करना है वह कर लेगे। मगर मुझे इस बात पर मजबूर नही किया जा सकता कि मैं नीलोफ़र का पता भी आपको बता दूं ताकि आप फिर मेरी मन्कूहा को मुझसे अलैहदा कर लें।"

इकराम ने कहा, "अभी मालूम होता है कि तबियत दुरस्त नही हुई है। टक्टकी पर बाँधकर जिस वक़्त हण्टरबाज़ी शुरू होगी उस वक़्त उगलोगे तुम।"

अर्जमंद ने कहा, "लातों का आदमी बातों से नही मान सकता।"

फ़ारुकी ने आदमियो को हुक्म दिया, "ले चलो इनको थाने और मेरे पहुँचने तक इनको इस काबिल बना दो कि ये सब कुछ साफ-साफ उगल दें।"

अर्जमंद ने कहा, "और इसको भी ले जाओ जो बड़ा मिस्कीन बना खड़ा है नमक हराम।"

उन तीनों को रवाना करने के बाद फ़ारुकी ने रुबी से कहा, "आपने हमारी वह मजिल हम से बहुत क़रीब कर दी है जहाँ तक पहुँचने में काफ़ी वक़्त लगता। मगर यह निहायत संगीन किस्म के जराइम पेशा हैं। सीधी उँगलियों घी मुश्किल ही से निकलेगा। बहरहाल मैं जा रहा हूँ उनके घर की मुकम्मल

तलाशी लेते । इंशा अल्लाह अब बहुत जल्द पता चल जायेगा ।"

डाक्टर साहब को भी सब ने मिलकर मुतमइन करना चाहा मगर उनको तो दरअसल उसी वक्त इत्मिनान हो सकता था जब वह नीलोफर को जीती-जागती देख लें ।

५०

****

रुबी अब मुस्तक़िल तौर पर डाक्टर साहब ही के घर रह रही थी; इसलिए कि एक तो उन हालात मे उसका तन्हा एक वीरान मुकाम पर रहना मुनासिब न था । दूसरे बेगम साहबा की हालत इस कद्र नाजुक थी कि उनको हर वक़्त सँभाले रखने की जरूरत थी । यों तो सुरैया, बिरजीस और कौकब के अलावा अनीस, आफाक और बिल्कीस का भी ज्यादा वक़्त यहीं गुज़रता था, मगर रुबी ने दरअसल उनका पूरा चार्ज ले रखा था । अफ़जल, तफ़ज्जुल और फ़रीद की गिरफ़्तारी के बाद यह उम्मीद पैदा हो गई थी कि अब बहुत जल्द नीलोफ़र का पता चल जायेगा । मगर अफ़जल और तफ़ज्जुल ऐसे गहरे और पक्के जराइमपेशा साबित हुए कि वह किसी तरह उसका सुराग़ ही न देते थे । तरह-तरह की सजायें उनको दी जा रही थीं मगर वह नीलोफ़र के मुताल्लिक यह बताने को अब तक तैयार न हुए थे कि वह कहाँ है । और नीलोफर का पता चलने में जितनी देर हो रही थी उतनी ही बेगम साहबा की हालत खराब हो रही थी । डाक्टर साहब तो इतने ही दिन में जैसे पहचाने न जाते थे । और-तो-और शिहाब को तो जैसे न जाने क्या रोग लगकर रह गया था कि उसका सुर्खी-सफ़ेद रंग काग़ज़ी लीमू की तरह ज़र्द होकर रह गया था और एक

चुप-सी लग गई थी। न उसका किसी से बात करने को जी चाहता था न वह चुस्ती और मुस्तैदी उसमें बाकी रह गई थी जिसके मुताल्लिक लोग कहा करते थे कि यह पाँच अनासिर (तत्त्व) से मुरक्कब (मिश्रित) इन्सान है और इसका पाँचवाँ उन्सर बिजली है। एहबाब को डाक्टर साहब और बेगम साहबा से कुछ कम फ़िक्र उसकी न थी बल्कि जिस शिद्दत से वह रोज़-बरोज़ घुल रहा था, यह रफ़्तार इन्तेहाई खतरनाक थी। आज भी जब सिवाय शिहाब के बाक़ी सब बेगम साहबा के पास बैठे हुए उनको आस बँधा रहे थे, आफ़ाक साहब ने शिहाब का जिक्र छेड़ दिया :

"मुझे आप से ज़्यादा फिक्र शिहाब मियाँ की है। आप पर जो गुजर रही है वह सब पर रोशन है। मगर उन हजरत पर जो गुज़र रही है उसको उनका दिल ही खूब जानता होगा।"

अर्जमंद ने कहा, "आप दुरुस्त फर्माते है। मै खुद भी शिहाब को सख्त खतरे मे देख रहा हूँ। वह बजाहिर बहुत लिये-दिये रहते है मगर मुझे मालूम है कि उनका हाल क्या है। जिस दिन से यह वाक्या हुआ है मैंने किसी वक़्त भी उनकी आँख झपकते नहीं देखी। कल रात ही इत्तेफाक से मेरी आँख खुल गई तो यह हजरत बिस्तर पर न थे। बाहर निकलकर देखा : हौज के किनारे मबहूत (स्तंभित) बैठे हुए थे। बमुश्किल उनको ले जाकर लिटाया मगर थोड़ी देर के बाद य: फिर उठे और दबे पाँव बाहर निकल गये और अब जो देखा तो नमाज पढ़कर सजदे में पड़े रो रहे हैं। जब मैंने बहुत समझाया तो उनके ऐसे जब्तो-तहम्मुल (सहनशीलता) के आदमी ने कहा कि हममें से किसी की हालत इतनी खराब नहीं है जितनी खुद नीली की होगी। न जाने उस ग़रीब पर क्या गुजर रही होगी।"

और यह सुनते ही बेगम साहबा ने जारो-कतार रोना शुरू कर दिया, "न जाने मेरी बच्ची पर क्या गुजर रही होगी ?"

इकराम ने कहा, "देखिये बेगम साहबा, मैं आपको अक़्ली दलाइल से क़ायल कर सकता हूँ कि नीली बहन पर कोई मुसीबत नही गुज़र सकती। उस के मुख्तलिफ़ वजूह (कारण) है। एक यह कि जो लोग उन पर मजालिम कर सकते थे वह फ़िलहाल उनके पास नहीं है, बल्कि अपने को उस जुर्म से पाक

साबित करने के लिए यहीं और अब हवालात में हैं। दूसरी निहायत मोटी-सी दलील यह है कि चूँकि उन लोगों का मकसद नीली बहन की ज़ात नहीं बल्कि उनकी दौलत है, लिहाज़ा उस दौलत को हासिल करने के लिए वह मजबूर हैं कि नीली बहन को जिन्दा-सलामत भी रखें और उनका दिल हाथ में लेने की भी कोशिश करें···।"

इकराम एकदम फ़ारुकी को आता देखकर खामोश हो गया, इसलिए कि फ़ारुकी के चेहरे पर सुर्खरूई (सफलता) और कामरानी (विजय) की चमक थी और इतने दिनों के बाद आज उनके चेहरे पर बशाशत नजर आ रही थी। इस महफ़िल के सभी लोग उनकी तरफ़ मुतवज्जे हो गये तो उन्होंने बैठते हुए कहा :

"लीजिये साहब, मुबारक हो। अब हमको अपनी मंज़िल का इस हद तक पता चल गया है कि हम अपनी तफतीश को सही रास्ते पर जारी रखकर बहुत जल्द नीली बहन को इन्शा अल्लाह बखैरियत तमाम (सकुशल) वापस ला सकेंगे। और यह शिहाब कहाँ है ?"

मिर्जा साहब ने कहा, "मैं बुलाता हूँ उनको मगर यह मुज़्दा (शुभ समाचार) मेरी अदम मौजूदगी (अनुपस्थिति) में न···लीजिये वह खुद आ रहे है। शिहाब मियाँ ज़रा जल्दी आइये।"

बेगम साहबा ने शिहाब को बड़े प्यार से देखकर कहा, "इधर आ जाओ मेरे पास शिहाब मियाँ। देखो तुम्हारे फ़ारूकी भाई तुम्हारे लिए कोई खुशखबरी लाये है।"

फ़ारूक़ी ने शिहाब को देख कर कहा, "बन्दा नवाज, इस तरह जान देने से कुछ हासिल न होगा। अब कमर कस लीजिये और चलकर ले आइये नीली बहन को।"

अर्जमन्द ने बेताबी से पूछा, "क्या अफ़ज़ल वगैरा ने कोई निशान देही की है ?"

फ़ारूक़ी ने कहा, "अजी तोबा कीजिये। चार रातों से उसको मुसलसल जगाया जा रहा है, निहायत मुरग़न खाने खिला-खिला कर यह एहतियात की

जा रही है कि वह सोने न पाये। मगर न जाने किस मिट्टी का बना हुआ है कि अब तक उसने कुछ नहीं बताया, अलबत्ता तलाशी में उसके घर से जो कागज़ात निकले हैं उनमें मशरिकी पाकिस्तान से आये हुए कुछ ख़ुतूत (पत्र) भी हैं। कोई अजीज़ है उनका या दोस्त है रशीद···।"

रुबी ने उछल कर कहा, "जी हाँ, जी हाँ। रशीद है उसका एक दोस्त जो चटगाँव में कुछ कारोबार करता है। बड़ा गहरा दोस्त है अफ़ज़ल का।"

फारूकी ने कहा, "जी हाँ, उसी के खत हैं जिनमे इस सिलसिले के मुताल्लिक कई इशारे है। मसलन यह देखिये मैं ये खत लाया हूँ। इस पहले खत में ये फ़िकरे गौरतलब है, जरा गौर से सुनियेगा—'अगर तुम अदालती तलाक़ को तसलीम नही करते तो भगा ले जाओ अपनी बीवी को, मगर उसके लिए भी ख़ुद उनकी रज़ामंदी जरूरी है। न हुआ मैं तुम्हारी जगह ऐसा इश्के-सादिक (सच्चा प्रेम) बघारता कि कच्चे धागे में सरकार बँधी चली आतीं खुद ही।'"

अर्जमंद ने बेसब्री से कहा, "यह तो पुलिन्दा हैं खतों का।"

फ़ारूकी ने कहा, "एक-एक करके सुनो। अब यह दूसरा खत है : इसमें ये फ़िकरे काबिले-गौर है—'वाकई ऐसी सोने की चिड़िया अपने क़ब्ज़े मे आकर निकल जाये तो सब्र मुश्किल ही से आ सकता है। मगर सवाल यह है कि अब वह हत्थे कैसे चढ़ेगी ? मगर अब भी वक़्त है, ऐसा न हो कि उसकी कही और शादी कर दी जाये।'"

रुबी ने कहा, "अभी पिछले दिनों वह आया हुआ भी था यहाँ।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "जी हाँ, वह मुझे इन खुतूत ही से मालूम हुआ। अच्छा यह तीसरा खत है जो निहायत अहम है—'मेरी राय यह है कि अगर तुम कामयाब हो जाओ तो खुद वही रहो और बेगम साहबा को इधर रवाना कर दो। मैं कोशिश करूँगा कि उनके दिल में तुम्हारे लिए गुंजाइश पैदा करूँ।'"

इकराम ने कहा, "बस तो ठीक है, उसने इसी मशविरे पर अमल किया है।"

शिहाब ने कहा, "आपको कुछ और खत सुनाना हैं या अब हम लोग रायज़नी करें ?"

फ़ारूक़ी ने कहा, "और ख़ुतूत में भी कुछ इशारे हैं और बाज़ ख़ुतूत में हम लोगों के नाम भी हैं। इसका मतलब यह है कि अफ़ज़ल अपने उस दोस्त को पूरी तफ़सीलात लिखता रहता था और उसी के मशविरे पर चलता था। बल्कि एक ख़त में रशीद ने उसको मना भी किया है कि शिहाब के ख़ून से हाथ रंगने से तुमको कोई फ़ायदा न होगा तुम को तो ऐसी सूरत इख़्तियार करना चाहिये कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "बस तो इसका मतलब यह हुआ कि आपने पता लगा ही लिया है।"

फ़ारुक़ी ने बड़ी संजीदगी से कहा, "देखिये जनाब मिर्ज़ा साहब, अज़रू-ए-क़ायदा (नियमानुसार) मुझे ये बातें आपके सामने न करना चाहिये थी, मगर मुझे उम्मीद है कि ये बाते इस महफ़िल से बाहर न जाने पायेगी और अगर इनमें की कोई बात भी बाहर गई तो मैं ज़िम्मेदार आपको ठहराऊँगा।"

मिर्ज़ा साहब ने कानों पर हाथ रखकर कहा, "अजी तौबा कीजिये। मैं इन मामलात की नज़ाकत को समझता हूँ। मुझे मालूम है कि अफ़ज़ल और तफ़ज्जुल की गिरफ़्तारी के बाद भी उसके जासूस लगे ही होगे। मेरी क्या शामत आई है कि मैं ये बातें ज़ुबान से निकालूं।"

डाक्टर साहब ने कहा, "अच्छा तो अब प्रोग्राम क्या है ?"

फ़ारूक़ी ने कहा, "प्रोग्राम तो जाहिर है कि अब तै ही है कि हमको अब एक मिनट भी जाया नही करना चाहिए। कल बाहर बजे जो तैयारा (वायुयान) मशरिकी पाकिस्तान की तरफ़ जा रहा है उसमें मैंने सीटें बुक करा दी हैं, मगर सिर्फ तीन सीटें मिली हैं। अब तै यह करना है कि कौन-कौन जायेगा ?"

अर्जमन्द ने कहा, "एक तो तुम खुद हुए, दूसरा मैं हूँ, अब सवाल यह है शिहाब जाये या इकराम ?"

इकराम ने कहा, "मैं तो इतनी जल्दी गालिबन इजाज़त भी हासिल न कर सकूंगा।"

डाक्टर साहब ने कहा, "इजाज़त तो खैर मैं अभी दिलवा सकता हूँ।

इकराम ने बात काट कर कहा, "जी हाँ वह तो मुझे मालूम है, मगर मेरी राय यह है कि मुझसे ज़्यादा ज़रूरी शिहाब का जाना है। वैसे अगर मेरी

ज़रूरत हो तो मैं परसों भी रवाना हो सकता हूँ।"

फ़ारूकी ने कहा, "मेरी भी यही राय है कि कल मेरे और अर्जमन्द के साथ शिहाब चले जायें। इकराम की इंशा अल्लाह ज़रूरत ही पेश न आयेगी।"

इकराम ने कहा, "रफ़ीक़ को तो जानते होंगे तुम ?"

अर्जमन्द ने कहा, "लीजिये अब रफ़ीक़ से भी आप तार्रुफ़ करायेंगे। अपना रफ़ीक़ बोंगा ना।"

इकराम ने हँसकर कहा, "हाँ ठीक है, बोंगा तुम्हारा ही तो रखा हुआ नाम है। वह आजकल चटगाँव ही में है।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "रफ़ीक के अलावा स्वालेह भाई भी आजकल चटगाँव ही में एस० पी० है।"

शिहाब ने कहा, वैसे मेरे भी कई दोस्त वहां हैं। बहरहाल कल की रवानगी तै रही। अभी टिकट मँगाये लेता हूँ।"

फ़ारूकी ने कहा, "टिकट आये हुए समझो। बहरहाल मैने यह इन्तेजाम कर लिया है कि हम लोगों की अदममौजूदगी मे इस बँगले की पूरी हिफाज़त होती रहेगी और रियाज से कह दिया है, वह रोज़ आकर खैरियत दरियाफ़्त कर लिया करेगे। लिहाजा यहाँ की तो कोई फिक्र नहीं है।

डाक्टर साहब ने कहा, "अल्लाह ताला तुमको वहाँ कामयाब करे और नीली तुमको बखैरियत तमाम मिले। हालाँकि मैं हैरान हूँ कि उसकी मर्जी के खिलाफ़ उसको वहाँ ले जाने में कामयाबी कैसे हासिल की होगी ले जाने वालों ने।"

फ़ारूकी ने कहा, "जी नही, उसकी बहुत सी सूरतें हैं। दिमागी मरीज़ा की हैसियत से ले जा सकते हैं, बेहोशी या नीम बेहोशी में ले जा सकते है। बहरहाल यह तै है कि वह वहाँ है और इन्शा अल्लाह हमारे साथ वापिस आयेंगी।"

इस महफ़िल से ये दोस्त कल का प्रोग्राम बनाने के लिए जब उठ गये तो सब कामयाबी की दुआओं के साथ अपनी-अपनी राह हो लिये।

५१

****

पाकिस्तान इन्टर नेशनल एयर लाइन्स का सुपर कॉन्स्टेलेशन तैयारा सोलह हज़ार फ़ीट की बुलदी पर बादलो से भी ऊपर ढाका की तरफ़ परवाज़ कर रहा था और फारूकी, अर्जमन्द और शिहाब उसी के फ़र्स्ट क्लास में सफ़र कर रहे थे। शिहाब उस वक़्त भी हस्बे-मामूल गुम-सुम था। फारूकी को चूंकि हवाई जहाज मे चक्कर आते है लिहाजा वह हज़रत अपनी सीट को नीम दराज़ करके आँखें बन्द किये और सीट के दोनों बाजू निहायत एहतियात से थामे लेटे थे कि अर्जमन्द ने इस खामोशी को तोडा :

"गोया जनाब का खयाल यह है कि अगर सीट के दोनों बाजू इस मज़बूती के साथ न थामें तो ख़्वाह हवाई जहाज़ बख़ैरियत तमाम परवाज़ करता रहे मगर आप ज़रूर सोलह हज़ार फ़ीट नीचे जा गिरेंगे।"

फ़ारूक़ी ने मुस्कराने की कोशिश करते हुए इसी तरह आँखें बंद किये हुए कहा, "मुझे चक्कर आ रहा है।"

अर्जमन्द ने शिहाब से कहा, "और जनाब किस चक्कर में है ?"

शिहाब ने कहा, "कौन मैं ? यानी आप देख रहे है कि मैं न नीमदराज़ हूँ, न इन हज़रत की तरह 'चे खुफ़्ता व चे बेदार' (क्या सोया, क्या जागा) नज़र आ रहा हूँ। निहायत शरीफ़ाना तरीके पर बैठा हूँ। आखिर आप चाहते क्या है ?"

अर्जमन्द ने कहा, "मैं यह चाहता हूँ कि ज़रा बातें करें हम लोग। ढाका तक ये पाँच-सवा पाँच घण्टे यों तो बसर न हो सकेंगे। मेरी समझ में तो इन हज़रत के ये चक्कर नही आ रहे है। किस क़दर हमवार परवाज कर रहा है तैयारा—न फ़िज़ाई डुबकियाँ हैं, न यह पता चल रहा है कि हम किस तेज़ी के

साथ मंज़िल के करीब आ रहे हैं। इस तैयारे में अगर इन हज़रत का यह हाल है तो उन तैयारों में क्या हाल होता होगा जो इतने बुलद नही उड़ते।"

शिहाब ने कहा, "इनकी भली चलाई। जो शख्स कुतुब मीनार पर चढ़कर नीचे न झाँक सके बल्कि सर थाम कर बैठ रहे, उसके लिए हवाई जहाज़ तो वाक़ई चकरा देने वाली चीज़ है।"

फ़ारूकी ने आँखें खोलकर कहा, "नहीं यह वक़्ती कैफियत है मैं अभी बिल्कुल ठीक हो जाऊँगा। दरअसल मुझको चक्कर उस वक़्त आते है जब तैयारा नीचे से ऊपर जाये या ऊपर से नीचे आये। जिस वक़्त यह एक सतह पर चलना शुरू करेगा···।"

अर्जमद ने बात काटकर कहा, "फिलहाल यह चल नहीं बल्कि उड़ रहा है। बहरहाल चूंकि आप चकराये हुए है लिहाज़ा माफ़ किया आपको।"

शिहाब ने कहा, "दूसरी बात यह है कि अब यह अपनी मुकर्ररा सतह तक बुलन्द हो चुकने के बाद निहायत हमवार परवाज़ कर रहा है। लिहाज़ा हस्बे-वादा अपने ये चक्कर खत्म कीजिये। लीजिये वह मेम साहबा लेमन ड्राप्स ला रही हैं ताकि आपके ऐसे बच्चे जरा बहल जायें।"

होस्टेस ने कानों के लिए छोटे-छोटे लिफ़ाफों में रुई और लेमन ड्राप्स की किश्ती जब उन तीनों के सामने बढाई तो अर्जमन्द ने फिर फ़ारूकी से कहा :

"चूंकि आपको चक्कर आ रहे है लिहाज़ा एहतियातन अर्ज़ है कि लेमन ड्राप्स कान में रखकर रुई तनावुल (खाना) न फ़र्मा जाइयेगा।"

फ़ारूकी ने सँभलकर बैठते हुए कहा, **"समझ लिया मिरे साक़ी ने बद-हवास मुझे"।**

और यह कहकर उसने चन्द दाने लेमन ड्राप्स के लेकर होस्टेस का शुक्रिया अदा किया और उनमें की एक डली मुँह में रखकर कहा, "बस अब मेरे चक्कर खत्म हो गये और अब मैं हस्बे-फ़र्माइश हर क़िस्म की बकवास के लिए हाज़िर हूँ।"

अर्जमन्द ने कहा, "गोया जनाब फ़न्ने-बकवास के इतने बड़े माहिर हैं कि लोग आपसे आपके इस फ़न के मुज़ाहिरे की फ़र्माइश तक करते हैं।"

फ़ारूकी ने कहा, "इतनी बुलन्दी पर उड़कर इतना पस्त मज़ाक आपको

जेब नहीं देता, वैसे आपको इख्तियार है। हम किसी के ज़ौके-सलीम (स्वस्थ रुचि) की रहनुमाई करने वाले कौन ?"

शिहाब ने उस बहस का रुख़ ही बदल दिया, "ढाका पहुँचने के बाद हमारा प्रोग्राम क्या है ?"

अर्जमन्द ने कहा, "अजीब मोहमल सवाल किया है जनाब ने ! क्या ख़याल यह है कि हम वहाँ पहुँचते ही ताश खेलने बैठ जायेंगे ?"

फ़ारूक़ी ने कहा, "क्यों उसको ऐसा जवाब देते हो ? वह बेचारा बज़ाहिर इस तैयारे मे हमारे साथ ही ढाके की तरफ़ जा रहा है, मगर दरअसल पहुँचा हुआ वही है, बल्कि ढाका भी नही चटगाँव। इसकी कैफ़ियत तो उस भूखे की है जो दो और दो चार रोटियाँ बताया करता है।"

अर्जमन्द ने कहा, "मगर अब ऐसी भी क्या बदहवासी कि इनके ख़याल में गोया हम उस सिलसिले में खालीउज्ज़हन (रिक्त मस्तिष्क) हैं।"

फ़ारूक़ी ने बड़ी मतानत से कहा, "यह बात नही है बल्कि किस्सा है दरअसल दिल का। हम ज़ाहिर है कि इस सिलसिले में अपने दिमाग़ पर बार डाल सकते है, मगर इस बेचारे के पास दिमाग से ज़्यादा दिल है और जब इन्सान दिल के हाथों मजबूर हो जाता है तो दिमाग़ को मुक़फ़्फ़ल (बन्द) कर देता है।"

शिहाब ने कहा, "अहमक़ है आप दोनों। मैं तो सिर्फ़ यह पूछ रहा था कि ढाके में तो हम लोगों को कोई खास काम भी नही है।"

अर्जमन्द ने पैवन्द लगाया, "लिहाज़ा इस हवाई जहाज़ से क्यों न कह दिया जाये कि सीधा चटगांव चले।"

शिहाब ने उठकर कही जाना चाहा तो फ़ारूक़ी ने उसको रोका, "क्या अब पैदल जाने का इरादा है ?"

शिहाब ने कहा, "मैं इस पागलखाने के अलावा कही और बैठना चाहता हूँ।"

अर्जमन्द ने उसको नशस्त (सीट) पर गिराते हुए कहा, "मेरी जान, ज़ाहिर है कि हम तुम्हारी तरह तो परेशान नही हो सकते, मगर थोड़ी-बहुत फ़िक्र हमको भी है। इरादा फ़िलहाल यह है कि ढाके में जो वक़्त भी मिलेगा उससे

यह फ़ायदा उठायेंगे कि पुलिस के मरक़ज़ी दफ़ातिर में जाकर अपना तार्रुफ़ करायेंगे ताकि वहाँ की पुलिस का पूरा ताव्वुन (सहयोग) हासिल हो सके। उसके बाद जो हवाई जहाज़ या ट्रेन सबसे पहले मिल सकी उससे चटगाँव रवाना हो जायेंगे।"

शिहाब ने कहा, "बस इतनी-सी बात मैं पूछ रहा था। लीजिये लंच आ रहा है नोश फ़र्माइये।"

होस्टेस ने पहली किश्ती लाकर अर्जमंद को दी, दूसरी फ़ारूक़ी को और तीसरी शिहाब को। जिस नफासत और शाइस्तगी के साथ यह लच पेश किया गया था काश उससे पूरा लुत्फ़ हासिल करने के काबिल ये तीनों दोस्त होते और उनके दिमाग इतने उलझे हुए न होते जितने इस उम्मीदो-बीम (कौतूहल) की कशमकश ने उलझा रखे थे कि देखिये वहाँ पहुँचने के बाद अब किन हालात से दो-चार होना पडता है। नीलोफर मिलती भी है या नही, या अगर मिल भी गई तो अल्लाह जाने किस हालत में मिलेगी। दरअसल यह उलझन वह थी जिसमें ये तीनों यकसाँ तौर पर मुब्तिला थे। खुसूसन शिहाब तो उसको बराहरास्त अपने मुकद्दर का नविश्ता (लिखा हुआ) समझ रहा था। वह नविश्ता जो अभी तक मलफूफ था, और दिल धडक रहा था कि देखिये क्या सामने आता है। मगर उसके बावजूद अर्जमन्द ने दो-चार ही लुक़्मे लेने के बाद कहा :

"या तो मैं भूखा ज्यादा था या यह खाना है ही कुछ लजीज···।"

शिहाब ने कहा, "लजीज होने के अलावा कितनी साफ़-सुथरी है यह चीज़।"

अर्जमन्द ने फ़ारूकी की तरफ हाथ बढ़ाकर कहा, "या हज़रत, आपको आते है चक्कर लिहाजा यह पुडिग आपके लिए मुफीद न होगी।"

फ़ारूकी ने पुडिग का कप बचाते हुए कहा, "क्यों क्या भंग की है पुडिंग ?"

शिहाब ने अपने हिस्से का पुडिंग अर्जमन्द की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "यह लो मुझसे ले लो, मैं मिठास का वैसे भी चोर हूँ।"

फारुक़ी ने कहा, "तुम मिठास के चोर हो और यह मिठास के उठाईगिरे

वाक़े हुए हैं।"

ये लोग इसी किस्म की बातों में मसरूफ़ थे कि हवाई जहाज़ ने एक ऐसी ज़बरदस्त डुबकी ली कि फ़ारूक़ी के हाथों के तोते उड़ गये। अर्जमन्द ने हँसकर कहा :

"लाहौल वला क़ूवत ! बादल हैं, ऐसी भी घबराने की कौन-सी बात है ?"

मगर फ़ारुक़ी ने अपनी नशिस्त के दोनों बाज़ू मज़बूती से थाम लिये, इसलिए कि उस डुबकी के अलावा बादलों की वजह से तैयारा डावाँडोल हो रहा था। उसी वक्त सामने दीवार पर ये बर्की हुरूफ़ नमूदार (प्रकट) हुए कि 'अपनी हिफाजती पेटियाँ कस लीजिये।' चुनांचे सबसे पहले फारुकी ने और उसके बाद शिहाब और अर्जमन्द ने हिफाजती पेटियाँ बाँध लीं। तैयारा उस वक़्त घने बादलों में से गुजर रहा था चुनाचे तैयारे के अंदर अँधेरा भी छाया हुआ था और महसूस यह हो रहा था जैसे यह तैयारा नहीं बल्कि बैलगाडी है जो निहायत नाहमवार सडक पर जारी है। फारुकी का हाल वाकई दिगर गूँ था और उसको फिर चक्कर शुरू हो गये थे मगर थोडी ही देर के बाद 'हिफाजती पेटियाँ बाँध लीजिये।' वाले बर्की हुरूफ भी गायब हो गये और तैयारे में रोशनी भी पैदा हो गई। अब वह निहायत हमवार परवाज कर रहा था, मगर फारूकी की तबियत बदस्तूर नाहमवार थी। यहाँ तक कि जब होस्टेस बर्तन उठाने आई तो भी वह आँखें न खोल सके। आखिर अर्जमंद ने उनको झिझोडा :

"बाबा वह फ़िजाई गडबड खत्म हो गई, अब खुदा के लिए उठ चुको।"

और फारुकी ने ज़बरदस्ती अपने को उठाया। उसने अपनी सफाई पेश करते हुए कहा, "आप गालिबन इसको डर समझते हैं हालाँकि मैं अर्ज कर चुका हूँ कि मुझको चक्कर आते हैं इस किस्म के मौकों पर, वर्ना मैं जानता हूँ कि हमारे हवाबाज बफज़्ले ही (ईश्वर की कृपा से) निहायत काबिले-ऐतमाद (विश्वस्नीय) हैं और पी. आई. ए. इस सिलसिले में निहायत नेक नाम कम्पनी है।"

अर्जमंद ने कहा, "मैं पी. आई. ए. की तरफ से आपका शुक्रिया अदा करता हूँ, मगर आपको होश में रखना इसलिए जरूरी है कि आप इन हज़रत

को ज़रा तलाश करते रहें जो थोड़ी-थोड़ी देर के बाद बैठे-बैठे गुम हो जाते हैं।"

शिहाब ने कहा, "कौन मैं ? जनाब के इस वहम का तो इलाज नही वर्ना मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ ।"

फ़ारुकी ने अपनी सीट का ज़ाविया दुरुस्त करते हुए कहा, "खैर ठीक तो आप नही हैं, मगर सुनिये बिरादरम, बात दरअसल यह है कि आपका यह तरद्दुद (चिंता) ख्वाह कितना ही हक बजानिब क्यो न हो मगर मेरा दिल गवाही दे रहा है कि नीली बहन हमको बखैरो-आफियत (सकुशल) मिल जायेगी। बखैरो-आफियत मिलने की एक दलील यह है कि अफ़ज़ल उनके साथ नही है बल्कि उसका एक दोस्त उनका मेज़बान बना हुआ है। दूसरी बात यह है कि खुद नीली बहन में अपनी मुदाफेअत (प्रतिकार) का जो बल-बूता है मेरी तरह उससे आपको भी नावाकिफ होना चाहिये। अलबत्ता अगर अफ़ज़ल उनके साथ होता तो मैं भी तरह-तरह के वहमों में मुब्तिला हो जाता।"

फ़ारुकी ये बातें कर ही रहा था कि तैयारे मे लाउड स्पीकर की आवाज़ गूंजी, 'खवातीन व हजरात, आपका सफ़र चद मिनट बाद खत्म हो जायेगा और आप ढाका के हवाई अड्डे पर उतर जायेगे। पी. आई. ए. को उम्मीद है कि इस सफर में आपको कोई तकलीफ न हुई होगी।" और इस ऐलान के थोड़ी ही देर बाद तैयारा ढाका के हवाई अड्डे पर जा उतरा।

५२

****

इस वक़्त रात के ग्यारह बजे हैं। ढाका के अज़ीमुश्शान और हसीन व जमील होटल शाह बाग के एक ऐसे कमरे में ये तीनों ठहरे हुए हैं जो दरअसल

दो डबल रूम हैं और उन दोनों को एक मुश्तरका नशिस्त (मिली-जुली सीट) का कमरा मिलाता है। लिहाज़ा ये दोनों कमरे अंदर-ही-अंदर एक भी समझे जा सकते हैं। चुनांचे उस वक़्त ये तीनों इसी मुश्तरका नशिस्त के कमरे में सोफों पर बैठे काफी से शग्ल कर रहे हैं। इस वक्त तीनों निहायत बश्शाश नजर आ रहे है जिसकी वजह गालिबन यह होगी कि बारह सौ मील की इस परवाज के बाद होटल शाह बाग के पुरतकल्लुफ गुस्लखानों में गुस्ल करने के बाद ताजा दम हो चुके है। मगर शिहाब के लबों पर जो तबस्सुम है। उससे अदाजा होता है कि सिर्फ यही बात नही बल्कि कुछ और भी है। चुनाचे इस शगुफ्तगी का राज इस बाहमी गुफ़्तगू से खुलना शुरू हो गया। फ़ारुकी बड़ी सुर्खरुई से चहक रहा था :

"शिहाब साहब, मैं आपसे पहले ही कह चुका था कि मेरा दिल गवाही दे रहा है कि हम नीली बहन को निहायत आसानी के साथ बख़ैरो-आफियत बहुत जल्द बरामद कर लेंगे।"

शिहाब ने कहा, "चुनांचे आपने बरामद कर लिया।"

फ़ारुकी ने कहा, "इस वक़्त न सही कल सही, बहरहाल अब बाकी ही क्या रह गया है। रशीद साहब को तो रफीक और स्वालेह अब तक गिरफ़्तार भी कर चुके होंगे।"

अर्जमद ने कहा, "मगर आपने देखा जनाब फ़ारुकी कि हम लोगों को इसी वक़्त यहाँ के अफ़सरों से मिलना कितना मुफ़ीद साबित हुआ है यह जो एस. पी. है क्या नाम रियाज़, आदमी भला मालूम होता है।"

शिहाब ने कहा, "वह तुमसे देर तक न जाने क्या सरगोशी करता रहा ?"

अर्जमंद ने कहा, "भई वह यही कह रहा था कि रशीद को मैं ज़ाती तौर पर खुद भी जानता हूँ और जहाँ तक मुझे इल्म है वह आदमी इस क़िस्म का है नही कि उसको गुण्डा या बदमाश कहा जा सके। हैरत है कि वह इस बेहूदा साजिश में कैसे शरीक हो गया। वह तो कह रहा था कि यह रशीद चटगाँव के सर बआवर्दा (प्रमुख) ताजिरों में से है और बड़ी साख है उसकी जूट और पटसन के बाज़ार में। चुनांचे जहाँ तक जूट और पटसन की तिजारत का काम है वह ढाका से क़रीब ही नारायण गंज में फैला हुआ है, मगर चूंकि स्टीमर

कम्पनी का भी कर्त्ता-धर्ता है लिहाज़ा ज़्यादातर चटगाँव में रहता है।"

फ़ारुकी ने कहा, "साहब वह जहन्नुम में रहता हो, सवाल तो यह है कि कहीं वह इन रियाज साहब का ऐसा दोस्त तो नहीं है कि यह हज़रत हमको यह सब्ज बाग दिखाकर उसे रफू चक्कर करा दें ?"

अर्जमंद ने कहा, "कमाल करते हो, मालूम होता है अब तक दिमाग चकरा रहा है। खुद तुम्हारे ही सामने उसने ट्रंक काल बुक की थी और मुझसे वादा किया था कि चटगाँव पुलिस इसी वक़्त से उन हजरत की निगरानी शुरू कर देगी और कल हवाई जहाज से आप वहाँ पहुँच कर चटगाँव पुलिस का ताव्वुन (सहयोग) खुद ही हासिल कर लेंगे।"

शिहाब ने कहा, "हम लोगों से एक गलती हुई। हमको चाहिये था कि लाइन मिलने तक वहाँ ठहरते।"

अर्जमद ने कहा, "ना ना ना, इसमें कोई मुजाइका नही। चटगाँव में तो रफ़ीक या स्वालेह को यही मालूम हो जाना काफी होगा कि हम लोग आ गये है। दूसरे हमको रियाज बेचारे की नियत पर शक न करना चाहिये। मुझे तो वह बडा भला आदमी मालूम होता है।"

ये लोग ये बाते कर ही रहे थे कि उन्ही के कमरे में टेलिफ़ोन की घण्टी बजी और चूंकि शिहाब करीब था लिहाजा उसने टेलिफोन उठा लिया, मगर फ़ौरन ही टेलिफ़ोन पर कहा :

"कौन अर्जमद साहब ? जी हाँ मौजूद है। जी हाँ फ़ारुकी भी है।"

और रिसीवर अर्जमद साहब की तरफ़ बढाते हुए कहा, "चटगाँव से काल है।"

ये तीनो-के-तीनो टेलिफ़ोन के करीब सिमट आये। अर्जमंद ने रिसीवर लेकर कहा, "मै बोल रहा हूँ अर्जमद—कौन स्वालेह साहब ?—अस्सलाम अलैकुम।—अजी खुदा महफ़ूज रखे आपकी इस कोशिश से।—जी हाँ फ़ारुकी भी है और शिहाब को जानते हैं ना आप ?—अच्छा खैर जान जायेंगे तो सिर्फ़ उन्ही के होकर रह जायेगे। वह हज़रत भी हैं—जी।—बस सुबह सात बजे यहाँ से चलकर आठ बजकर पाँच मिनट पर चटगाँव में होंगे।—ना ना ना।—यह तक़ल्लुफ़ है, बस गाड़ी भेज दीजियेगा।—अच्छी बात है ख़फ़ा न हों

सरकार, आप भी आ जाइयेगा।—सबसे बड़ी खातिर यही है कि रशीद निकलने न पाये।—बस तो फिर हमको भी इत्मिनान है।"

फ़ारुक़ी ने रिसीवर छीन कर कहा, "स्वालेह भाई, मैं हूँ फ़ारुकी—तफ़सीली मुआनका (भेंट) सुबह होगा।—ज़ाहिर है।—शामत थोड़ी आई है कि कहीं और ठहरें।—अच्छा खुदा हाफ़िज।—शब बखैर।—बल्कि शब दरम्याँ।"

जब फ़ारुक़ी ने टेलिफ़ोन का रिसीवर रख दिया तो अर्जमंद ने शिहाब से कहा, "मुझे यकीन था कि हम लोगों का नाम सुनकर स्वालेह भाई और रफ़ीक़ उछल पड़ेंगे।"

फ़ारुकी ने कहा, "कह रहे थे कि अगर कहीं और ठहरना है तो अभी से बता दो, मैं दौरा बनाकर निकल जाऊँ चटगाँव से।"

शिहाब ने बेसब्री से पूछा, "रशीद के मुताल्लिक क्या कहा ?"

अर्जमन्द ने कहा, "कहते क्या, कह रहे थे कि रियाज का फ़ोन मिलते ही रफीक उसको घेरने रवाना हो चुके है, उसकी तरफ़ से इत्मिनान रखो। अब अपने दिले-नादाँ से कहो कि बहलाने से बहल जाये और मेहरबानी फर्मा कर थोड़ी देर सो लो। बारह बजकर बीस मिनट हो चुके हैं। पाँच बजे रियाज़ की गाड़ी आ जायेगी, हम लोगों को हवाई अड्डे ले जाने के लिए। इसका मतलब यह है कि चार बजे उठना भी चाहिये ताकि वक़्त पर आदमियों के जामे में आ सकें।"

फ़ारूकी ने उठते हुए कहा, "वाकई अब सोना चाहिये।" और यह कह कर आपने यकमुश्त कई जमाइयाँ भी ले डालीं।

सुबह चार बजे शिहाब ने उन दोनों को जगाया और उन दोनों ने जागकर देखा कि यह हज़रत नहाये-धोये अपना सामान बाँधे बिल्कुल तैयार हैं। इसका मतलब यह हुआ कि या तो रात भर सोये नहीं या बजाय चार बजे के दो ही बजे उठकर तैयार होना शुरू कर दिया। फ़ारूकी और अर्जमन्द दोनों जानते थे कि शिहाब पर जो आलम गुज़र रहा है उसमे नीद का सवाल ही पैदा नहीं होता, लिहाज़ा उनको इस पर कोई ताज्जुब न हुआ कि वह इस क़द्र जल्द बिल्कुल तैयार कैसे था। इन दोनों ने गुस्लखाने का रुख किया और शिहाब ने मारे इज़्तेराब (व्याकुलता) के इन दोनों का सामान भी बाँध कर रख दिया।

हालाँकि वह सामान इन दोनों को गुस्लखाने से निकल कर फिर खोलना पड़ा। इसलिए कि शबख़्वाबी का लिबास दोनों को रखना था और बाहर निकलने के लिए दोनो के कपडे भी निकालना थे।

बैरे को रात ही को हिदायत कर दी थी कि बिस्तर की चाय सुबह पाँच बजे मिल जाये लिहाज़ा ठीक वक़्त पर चाय मिल गई और अभी ये लोग चाय पी ही रहे थे कि रियाज़ खट-खट करता उनके कमरे में आ पहुँचा और उसने आते ही बताया कि वह भी उन सबके साथ चटगाँव चल रहा है ताकि ज्यादा-से-ज्यादा सब के साथ रह सके। अधा-क्या-चाहे-दो-आँखे ? इन लोगो को ज़ाहिर हे कि किस कद्र तक़वियत हासिल हुई होगी रियाज की इस इन्सानियत से। चुनाचे वफूरे-मसर्रत (हर्षोन्माद) में अर्जमन्द ने रियाज को गले से लगा लिया और वे सब तकरीबन साढ़े पाँच बजे होटल से हवाई जहाज के अड्डे के लिए रवाना हो गये।

एक घण्टा पाँच मिनट की मुद्दत भी कोई मुद्दत है ? ठीक सात बजे तैयारा उडा और आठ बज कर पाँच मिनट पर चटगाँव पहुँच गये ये सब। हवाई अड्डे पर स्वालेह और रफ़ीक दोनो मौजूद थे। चुनाचे अर्जमन्द और फ़ारूकी को देखकर ये दोनो बढ़कर गुँथ गये उन से। और जब यह तफसीली मुआनके खत्म हो गये तो अर्जमन्द ने शिहाब का तार्रूफ उन दोनों से कराया। हालाकि शिहाब इस तार्रुफ़ के बजाय यह मालूम करना चाहता था कि रशीद और नीलोफ़र का कुछ पता भी चला या नही। और यही बात ये दोनो न जाने जब तक क्यो न बता सके थे।

अर्जमन्द ने स्वालेह से कहा, "रियाज़ साहब ने बड़ा करम फ़र्माया कि हम लोगों के साथ आ गये।"

स्वालेह ने चेहरे को करख़्त (कठोर) बना कर कहा, "करम फ़र्माया या तामीले-हुक्म की है ? मैंने रात ही को कह दिया था कि तुम भी इन लोगों के साथ आ जाओ तो अच्छा जमघटा रहेगा।"

रफ़ीक़ न कहा, "और अब तो और भी लुत्फ़ आयेगा। कॉक्स बाज़ार मे।"

रियाज़ ने हैरत से कहा, "कॉक्स बाज़ार ? कॉक्स बाज़ार से क्या मतलब?"

रफ़ीक़ ने कहा, "बस लंच के बाद कॉक्स बाजार चलते है, यही तै

हुआ है।"

स्वालेह ने अर्जमन्द से कहा, "भई पता यह चला है कि रशीद कॉक्स बाजार में कई दिन से समुंदरी हवायें खा रहा है। वहाँ उसको पुलिस ने पाबंद कर दिया है कि वहाँ से खिसकने न पाये। और यह खुशखबरी भी सुन लो कि मिस नीलोफर' भी वहीं मौजूद है।"

फ़ारूकी ने कहा, "तो गोया अब कॉक्स बाज़ार का सफर दरपेश है ?"

रफीक ने कहा, "जी हाँ, जी हाँ, अगर कुल पैंतीस मिनट की परवाज़ को आप सफ़र कह सकते है तो कह लीजिये।"

स्वालेह ने कहा, "प्रोग्राम यह है अजीजानेमन, घर चलो, ब्रेकफ़ास्ट करो, आराम करो या गप लड़ाओ। एक बजे लंच खाओ, फिर साढ़े तीन बजे का हवाई जहाज लेने के लिए दो-ढाई बजे घर से चल कर यहाँ आ जाओ। साढ़े तीन बजे हवाई जहाज़ उडेगा और चार बजकर पाँच मिनट पर आप कॉक्स बाजार में होंगे।"

फारूकी ने कहा, "मगर सवाल यह है कि यह रशीद नीलोफर को लेकर वहाँ गया क्यों ?"

स्वालेह ने कहा, "सुकून और सैर की जगह है। चाँदनी रातें हैं, आजकल ही तो रात को समुन्दर का मद्दो-जज़र (ज्वार-भाटा) देखने के काबिल होता है। खुसूसन आज की रात तो चौदहवी के चाँद की रात है। वह ज्वार-भाटा देखोगे वहाँ कि ज़िन्दगी भर न भूलो। बहरहाल अब घर तो चलो।"

ये सब-के-सब स्वालेह और रफ़ीक के हमराह हवाई अड्डे से स्वालेह के बँगले की तरफ़ रवाना हो गये और रास्ते में चटगाँव का दिल आवेज़ (चित्ता-कर्षक) हुस्न उनको मसहूर (मोहित) करता रहा कि अजीब मुकाम है यह भी। बयक वक़्त मैदान भी और पहाड़ भी; समुन्दर भी और दरिया-ए-कनफ़िली का बहरे आसार मंज़र भी। सच तो यह है कि अगर ये तीनों इस परेशानी में मुब्तिला होकर यहाँ न आये होते तो चटगाँव का जादू उनको बाँध कर डाल देता। इसी हमागीर (सर्वव्याप्त) फ़िरदौस में, मगर इस परेशानी में यह दिलावेज़ी भी उनको खुसूसन शिहाब को बेमहल नज़र आ रही थी।

५३

****

कॉक्स बाजार के हवाई अड्डे पर जो अड्डा कम, हवाई ज्यादा नज़र आता है कॉक्स बाज़ार के एस० डी० ओ० और पुलिस की एक मुख्तसर सी जमात ने उन सबका खैर-मकदम किया और हवाई अड्डे से मुत्तसिल ही लबे-साहिल उस रेस्ट हाउस में उन सबको पहुँचा दिया जहाँ उनके क़याम का एहतमाम (प्रबन्ध) था। अजीब पुरफ़ज़ा (मनोहर) मुकाम है यह भी ! ऐसी हसीनो-जमील (सुन्दर) बैच उनमे से किसी की नज़र से कभी न गुजरी थी। खुसूसन इस रेस्ट-हाउस का मन्ज़र तो निहायत ही दिल आवेज़ था कि बरामदे मे बैठ जाइये और सामने ही हद्दे नज़र तक मौजें मारता समुन्दर आप को नज़र आएगा। हर तरफ़ ऐसा सन्नाटा कि उन मौजों की जुबान में समुन्दर की कहानी आप आसानी से सुन सकें। मगर इस कहानी को सुनने और इस मजर से लुत्फ़ लेने का होश ही यहाँ किस को था ? सब जिस इश्तियाक़आमेज़ (उत्सुकतापूर्ण) परेशानी मे यहाँ तक पहुँचे थे उसका नतीजा मालूम करने के लिए बेकरार थे। शिहाब अपनी आली ज़र्फ़ी (उच्च प्रकृति) का सुबूत देने के लिए जबान से तो कुछ न कहता था मगर उसका इज़्तराब (बेचैनी) उसकी हर खामोश अदा से बरस रहा था। आखिर उसकी कैफ़ियत को स्वालेह साहब ने महसूस करते हुए कहा, "शिहाब साहब, ग़ालिबन आप हम लोगों को बड़ा सब्र आज़मा समझ रहे होगे। मगर हम दरअसल आप के इस सब्र का इम्तिहान नही ले रहे है बल्कि हमको खुद जल्दी है कि किसी तरह जल्द-से-जल्द नीलोफ़र साहिबा से आपकी मुलाक़ात करा दी जाय, वह बस पहुँचने ही वाली है, मालूम हुआ है कि हमारी इस इत्तला के पहुँचने से पहले ही रशीद उनको लेकर यहाँ से क़रीब ही महेसी-खाली नामी एक जज़ीरे

(द्वीप) में बुद्ध मन्दिर की सैर कराने ले गया है और अब वापस आने ही वाला है। वैसे उन दोनों का क़याम भी इसी रेस्ट हाउस में है।"

रफ़ीक़ ने दख़ल देकर कहा, "मगर ताज्जुब इस बात पर है कि ये दोनों अलैहदा कमरों में ठहरे हुए हैं।"

स्वालेह ने कहा, "इस में ताज्जुब की क्या बात ? रशीद के पास मिस नीलोफ़र उसके एक दोस्त की अमानत के तौर पर हैं लिहाज़ा ख़ुद रशीद की नियत में तो फ़ितूर हो ही नही सकता। ग़ालिबन यह जीप उन ही को ला रही है मैंने जीप साहिल पर भेज रखी थी कि जैसे ही उनकी लाँच पहुँचे उन को फ़ौरन यहां पहुँचा दिया जाय।"

ऐस० डी० ओ० ने कहा, "जी हाँ वही हैं।"

और देखते-देखते वह जीप रेस्ट हाउस के बरामदे के सामने पहुँच कर अभी ठहरी भी न थी कि नीलोफ़र ने उस पर से जस्त लगाते हुए कहा :

"अर्जमन्द भैया—!"

नाम तो लिया अर्जमन्द का मगर दौड़ी शिहाब की तरफ़ और आज यह पहला मौक़ा था कि शिहाब ने भी उसके बाज़ू थाम कर उसे ग़ौर से सर-से-पाँव तक देखकर न जाने क्या कहना चाहा मगर सिर्फ़ यह कह सका कि, "आप हैं तो बिल्कुल अच्छी ?"

नीलोफ़र ने कहा, "मैं तो बिल्कुल अच्छी हूँ मगर आप बीमार नज़र आ रहे हैं।"

और फिर उसने अपने को सँभाल कर अर्जमन्द और फ़ारुकी की तरफ़ मुतवज्जे होते हुए कहा, "मैं जानती थी कि आप लोग मुझे जल्द-से-जल्द ढूंढ निकालेंगे।"

इस वक़्त दरअसल कोई भी किसी से माक़ूल बातें न कर रहा था सब अपने को काफ़ी सँभाले हुए थे मगर अजीब अहमक़ाना बातें हो रही थीं, आख़िर अर्जमन्द ने होशमन्दी का सुबूत देते हुए नीलोफ़र से कहा :

"हम लोगों से तो आप बातें करती ही रहेंगी मगर हमारे इन एहबाब से भी मिल लीजिये।" और यह कह कर उसने उन सब से नीलोफ़र का बाक़ा-

यदा तार्रुफ़ करा दिया। इस तार्रुफ़ के ख़त्म होते ही नीलोफ़र ने कहा :

"अब मैं भी आपको अपने एक नये भाई से मिलाती हूँ जिनसे मिल कर आप हैरतअंगेज़ तौर पर खुश होंगे। यह हैं रशीद साहब। रशीद भाई। आप इन सबसे ग़ायबाना तौर पर मुतारिर्फ़ हो चुके हैं, लिहाजा बाक़ी है सिर्फ सूरतशनासी। यह हैं मेरे प्यारे भैया अर्जमन्द साहब, यह हैं भाई जान फ़ारुक़ी साहब और यह हैं शिहाब साहब।"

अर्जमन्द भला कब चुप रहने वाला था, "जी हाँ सिर्फ़ यही एक ऐसे बुज़ुर्ग हैं जिनको भैया और भाई जान वग़ैरा कुछ नहीं कहा जा सकता।"

शिहाब ने उसके पेट पर घूंसा मार कर कहा, "अपनी इस यावागोई (बकवास) के लिए कम-से-कम इतना ही इन्तेज़ार कर लो कि हम लोग रेस्ट हाउस के ड्राइंग-रूम में पहुँच जायें।"

चुनांचे ये सब रेस्ट हाउस के ड्राइंग-रूम में जा पहुँचे और एस० डी० ओ० साहब ने काफ़ी लाने का हुक्म दे दिया तो अर्जमन्द ने नीलोफ़र से कहा :

"तफ़सीली तौर पर तो बाद में गुफ़्तगू होगी मगर इस इजमाल (रहस्य) के लिए हम बेक़रार हैं कि दरअसल हम तो आए थे आपके इन बिरादरे-मुहतरिम रशीद साहब को गिरिफ़्तार करने और उनके चंगुल से आपको छुडाने, आप यहाँ बहन-भाई का रिश्ता पैदा किये हुए बैठी हैं।"

नीलोफर ने बड़े प्यार से रशीद की तरफ़ देखते हुए कहा, "जी हाँ मुझ को अल्ला मियाँ ने इस परदेश में एक चहीता भाई दे दिया है और सच्ची बात यह है कि अगर मेरे लिए यह रहमत का फरिश्ता साबित न होते तो मैं कहीं की न रहती।"

रियाज़ ने अर्जमन्द को मुख़ातिब किया, "अर्जमन्द मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि रशीद के सिलसिले में मुझे हैरत है कि वह इस बेहूदा साज़िश में कैसे शरीक हो सकते हैं।"

रशीद ने बड़े दिल आवेज़ और मुहज्जब तबस्सुम के साथ कहा, "अगर इजाज़त हो तो मैं खुद अपनी सफ़ाई में कुछ अर्ज़ करूँ ?"

फ़ारुक़ी ने कहा, "आपकी सफ़ाई के लिए तो हमारी नीली बहन का आप

को इस मुहब्बत से भाई कहना ही काफ़ी है मगर हम आपसे सुनना जरूर चाहते हैं कि आप इस झमेले में फँस कैसे गये।"

रशीद ने खन्दा पेशानी (प्रसन्न चित्त होकर) के साथ कहा, "साहब क़िस्सा दरअसल यह है कि अफ़जल से मेरे देरीना मरासिम है अब ख्वाह उसका कुछ ही हाल हो गया हो मगर जब तक मैं लाहौर में था उस वक़्त तक मैंने कभी यह अन्दाज़ा नहीं किया कि वह ऐसी मुजरिमाना ज़हनियत (अपराधियों की-सी प्रकृति) का आदमी भी हो सकता है जिसका तफ़सीली तौर पर बहन नीलोफर से आज ही मुझको इल्म हुआ है। जब डाक्टर लतीफ़ी साहब के यहाँ वह दूल्हा बनकर गया है, मैं उसके साथ था और मुझको उस अक़्द (निकाह) का इल्म है, इसके बाद डाक्टर साहब ने उसको यूरोप भेज दिया और मैं इधर आ गया। कुछ दिन हुए उसका एक खत मुझे मिला था कि डाक्टर साहब की नियत में फ़ितूर (दोष) है और वह मेरी मन-कूहा (निकाह की हुई) बीवी को मुझसे छीन कर कही और शादी करना चाहते हैं। इस मामले में बहैसियत एक दोस्त के मेरी मदद करो। चुनाँचे मैं उसका ख़त पाकर सीधा लाहौर पहुँचा और वहाँ तय यह पाया कि किसी-न-किसी तरह बहन नीलोफ़र को एक मर्तबा हासिल करके मशरिकी पाकिस्तान पहुंचा दिया जाय। मैं दरअसल इसको डाक्टर साहब की हठधर्मी और ज्यादती समझता था कि वह निकाह करने के बाद अब कोई और ऊँचा रिश्ता मिल जाने की वजह से अफजल से उसकी मनकूहा (पत्नी) को छुड़ाना चाहते है। चुनाँचे अफजल ने फ़रीद की मदद से बहिन नीलोफ़र को बुलवाया और उनको ज़बरदस्ती हासिल करके भंग के नशे में मेरे साथ यहाँ भेज दिया। मैंने कई दिन तक बहन नीलोफ़र को समझाने-बुझाने की कोशिश की और चाहता यही था कि इनका दिल बहला कर इनको इस क़ाबिल बना सकूं कि यह इस इगवा (अपहरण) के हादिसे को भूल कर सच्चे दिल से इस बात की क़ाइल हो जाँय कि लड़की का असली घर उसके बाप का घर नहीं बल्कि शौहर का घर होता है, और शरीफ़ज़ादियाँ जिसकी एक मर्तबा बोल पढ़वाकर हो जाती हैं ज़िन्दगी भर उसकी रहती है, उनको नीलाम पर चढ़ाना ग़ैर शरीफ़ाना हरकत है। चुनाँचे पहले तो बहन नीलोफ़र ने मेरी

गुज़ारिशात पर कान ही न धरे अलबत्ता आज हम दोनों महेसी खाली गए और मैं उनका दिल बहलाने के लिए इनको महात्मा बुद्ध और आदीनाथ के मन्दिर दिखा कर लाँच पर वापस ला रहा था तो मैंने फिर ज़िक्र छेड़ा। न जाने यह कौनसी मुबारक साअत थी कि बहन नीलोफ़र ने इस वक़्त शुरू से आख़िर तक मुझको सारी दास्तान सुनाई और मैं दंग रह गया कि अफ़ज़ल ऐसा जराइम पेशा बन चुका है। उसने मुझको यह भी इत्तला न दी कि वह किसी यूरोपियन खातून से अक़्द करके उसको भी वीरान कर चुका है। उसने उस तलाक़ की भी मुझे खबर न की। मुख़्तसर यह कि उसके विलायत जाने के बाद जो हालात भी पैदा हुए उनसे मैं हमेशा बेख़बर रहा आज पहली मर्तबा बहन नीलोफर से मुझको वह हालात मालूम हुए। अब हम दोनों ने यह तय किया था कि आज तो वक़्त निकल चुका है, कल के हवाई जहाज़ से हम दोनो चटगॉव जायेंगे और निहायत तफ़सीली तार डाक्टर साहब को देकर लाहौर जाने के लिए सबसे पहला मौक़ा जो मिल सकेगा उससे फायदा उठायेगे।"

फ़ारुक़ी ने कहा, "तो गोया यह बहन-भाई का रिश्ता आज ही क़ाइम हुआ है।"

नीलोफ़र ने कहा,"जी नहीं रशीद भैया की तरफ़ से तो यह रिश्ता अव्वल दिन ही से काइम है अलबत्ता मैंने आज इस रिश्ते को तस्लीम किया है। मैं इन की खान्दानी शराफ़त का अन्दाज़ा तो यहाँ पहुँच कर और होश में आने के बाद ही कर चुकी थी मगर इनकी ज़ाती शराफ़त का कलमा आज मैंने पढ़ा है कि जब इनको तमाम हालात मैंने सुना दिये तो देखने के क़ाबिल था इनका ग़ुस्सा यानी ग़ुस्सा करना आता नहीं है मगर ग़ुस्सा फ़र्मा रहे थे।"

रशीद ने हँसकर कहा, "बात यह है कि जो आईना आपने मुझको दिखाया उसमें अफ़ज़ल के बजाय मैंने अपना चेहरा देखा कि मैं खुद किस क़दर ज़लील इन्सान हूँ और कैसे नापाक और शर्मनाक जुर्म का मुर्तकिब (अपराधी) हुआ हूँ इस इआनते-मुजरिमाना (अपराध की सहायता) के बाद।"

रियाज़ ने कहा, "इआनते-मुजरिमाना तो यह जब होती जब आपको इस जुर्म की ख़बर होती।"

रशीद ने कहा, "जी हाँ ! मगर मेरी यह बेखबरी बजाय खुद जुर्म है। बहरहाल चूंकि मेरी नियत नेक थी लिहाज़ा अल्लाह ताला ने उसका यह अजर (बदला) मुझ को दिया कि ऐसी अच्छी बहन और इतने मुखलिस दोस्त मुझको मिल गये और सबसे बड़ा एहसान अल्लाह ताला का यह है कि अफ़ज़ल को मैंने बेनिक़ाब देख लिया वर्ना मेरा अन्धा खुलूस तो न जाने किस गढ़े में मुझको गिरा देता।"

शिहाब ने कहा, "भाई साहब, यह तो बाद में तय होगा कि खुशनसीब हम लोग ज़्यादा हैं आपको पाकर या आप हम लोगों को पाकर, इस वक़्त तो सवाल यह दरपेश है कि अब जल्द-से-जल्द चटगाँव और फिर वहाँ से लाहौर कैसे पहुँचा जाय ?"

रशीद ने कहा, "चटगाँव तो अब आप कल से पहले जा नहीं सकते और चटगाँव से मैं आपको इतनी जल्दी वापस न जाने दूंगा अलबत्ता डाक्टर साहब को और दूसरे अइज़्ज़ा (सम्बन्धियों) को मुत्मइन करने के लिए आपका तार काफ़ी होगा। इसके बाद आपको तफ़सील से यहाँ रहना पड़ेगा ताकि पाकिस्तान के इस बाज़ू की भी सैर कर लें और मुझे भी तशना न छोड़ें।"

अर्जमन्द ने कहा, "तो आपको तशना कौन छोड़ रहा है ? आप तो हमारे साथ ही चलेंगे लाहौर।"

एस० डी० ओ० ने जो कुछ इन्तेज़ामात के लिए बाहर गये थे वापस आकर कहा, "इन्तेज़ाम यह किया गया है कि इस वक़्त चाय से फ़ारिग़ होकर आप सब एक छोटा-सा कन्सर्ट मुलाहिजा फ़र्मायें। जिसमें मुकामी मौसीक़ी (संगीत) का नमूना पेश किया जायगा। इसके बाद मेरी तरफ़ से डिनर है जो इसी रेस्ट हाउस में पेश किया जायगा। फिर आप समुन्दर के किनारे मद्दो-जज़र (ज्वार-भाटा) देखने तशरीफ़ ले जायँगे। सुबह की चाय के बाद लाँच पर समुद्र की सैर है और उसी लाँच पर लंच का एहतमाम होगा। वापसी तीन बजे तक होगी ताकि चार बजे चाय नोश फ़र्माकर आप साढ़े चार बजे के हवाई जहाज़ से तशरीफ़ ले जा सकें।"

स्वालेह साहब ने कहा, "बिल्कुल ठीक है यह प्रोग्राम सुबह अलबत्ता ताश की दो गड्डियाँ लाँच पर रखवा दीजियेगा ताकि मैं अर्जमन्द और फ़ारूक़ी का

मिज़ाज दुरुस्त कर सकूं।"

अर्जमन्द ने कहा, "क्यों ? हम ग़रीबुलवतनों (परदेसियों) को लूटने का इरादा है ? बहरहाल देखना है आपके दम-खम भी। मैं तैयार हूँ।"

और इसी क़िस्म की बातों में आखिर कन्सर्ट का वक़्त आ गया और उस प्रोग्राम पर अमल दरामद शुरू हो गया जो ऐस०डी०ओ० ने मुरत्तब किया था।

५४

****

कॉक्स बाज़ार से चटगाँव पहुँच कर हवाई अड्डे ही पर यह झगड़ा शुरू हो गया कि स्वालेह साहब सब को अपने बंगले पर ले जाना चाहते थे और रशीद मचला हुआ था कि अब यह सब मेरे मेहमान होंगे। यह कोई मामूली झगड़ा न था और चूँकि दोनों तरफ से इसरार (हठ) रस्मी नहीं बल्कि वाक़ई था लिहाज़ा इस झगड़े को तय करने में काफ़ी वक़्त लग गया। इतना वक़्त कि शिहाब जाकर डाक्टर साहब को और इकराम को तार भी दे आया। अर्जमन्द को जब यह ख़बर हुई तो वह आफ़ाक साहब को तार देने गया फिर फ़ारूकी ने एक सरकारी तार जिसमें अफ़ज़ल, तफ़ज्जुल और फ़रीद वग़ैरा के लिए हिदायतें थीं, अलग दिया मगर इतनी देर में भी यह झगड़ा ख़त्म न हुआ। आखिर नीलोफ़र ने कहा :

"देखिये अगर आप दोनों मुझको सालिसे-बिलख़ैर (भलाई के साथ मध्यस्थ) मान लें तो मैं यह झगड़ा ख़त्म कराये देती हूँ।"

स्वालेह साहब ने कहा, "आप से डर यह है कि यह आपके नये-नये भाई हैं ऐसा न हो कि आप अक्रबा-पर्वरी (कुटुम्बियों का पोषण) शुरू कर दें।"

नीलोफ़र ने कहा, "तो गोया आप मुझको बहन समझने पर तैयार नहीं हैं। मैं इस झगड़े को अपने दो भाइयों का झगड़ा समझ कर तय कराऊंगी बशर्ते कि आप मेरे मुन्सिफ़ाना फ़ैसले को तस्लीम कर लें।"

रशीद ने सीने पर हाथ रखकर कहा, "मैं सरे तस्लीम ख़म (सादर स्वीकार) करता हूँ।"

स्वालेह साहब ने कहा, "बेहतर है साहब मैं भी राज़ी हूँ। सादिर फ़र्माइये फ़ैसला।"

नीलोफ़र ने कहा, "इस वक़्त हम सब मिन हैसिल क़ौम यानी मय रशीद साहब के स्वालेह भाई के यहाँ चलते हैं और वहीं सब रहेंगे। इसके बाद सुबह से उस वक़्त तक जब तक कि रवानगी तय न हो जाय हम सब मय स्वालेह भाई और रफ़ीक़ भाई के रशीद भाई के मेहमान रहेंगे।"

रफ़ीक़ ने कहा, "और मैं तो गोया यतीमखाने में रहता हूँ कि मेरा कहीं ज़िक्र ही नहीं है।"

स्वालेह ने कहा, "भई मेरा और तुम्हारा घर तो एक ही बात हुई।"

रशीद ने बात पकड़ी, "दुश्मनी तो मुझसे है कि मेरा घर इनका घर नहीं है।"

रियाज़ ने कहा, "ख़ैर अब बात बढ़ाने की जरूरत नहीं, मेरे खयाल में बहन नीलोफ़र ने निहायत मुन्सिफ़ाना और दानिशमन्दाना फ़ैसला किया है। इस फ़ैसले का एहतराम करना चाहिये यानी अब सबको चलना चाहिये स्वालेह के घर।"

चुनांचे यह सारा क़ाफ़िला उसी वक़्त उन मोटरों पर जो रशीद और स्वालेह दोनों ने टेलिफ़ोन करके मंगाये थे चटगांव के हवाई अड्डे से स्वालेह के बंगले की तरफ़ रवाना हो गये। मालूम होता है कि स्वालेह ने अलावा मोटर मंगाने के कुछ और हिदायतें भी कर दी थीं, चुनांचे जिस वक़्त ये लोग पहुँचे हैं वहाँ सब के उठने-बैठने और क़याम करने का बाक़ायदा एहतमाम नज़र आ रहा था। स्वालेह ने सबको मुख़्तलिफ़ कमरों में पहुँचा दिया कि आप हज़रात आदमियत के जामे मे आ जायें और अर्जमन्द और फ़ारूक़ी को पकड़ कर अपने साथ ले गया। चुनांचे जब बाक़ी सब ताज़ा दम होकर और लिबास तब्दील

करके बाहर निकले तो देखते क्या हैं कि स्वालेह, रियाज़, अर्जमन्द और फ़ारूक़ी की फड़ जमी हुई है और रमी जारी है। इन सबको देख कर स्वालेह ने फ़रियाद की :

"देखना भई शिहाब अपने इन गिरहकट दोस्तों को, दीवाला निकाल दिया है मेरा इस अर्जमन्द के बच्चे ने। एक सौ चालीस रुपये अब तक ऐंठ चुका है।"

अर्जमन्द ने कहा, "भाई साहब, हम खेलना जानते हैं आप की तरह अनाड़ी नहीं है।"

शिहाब ने फ़ारूक़ी की ख़ैरियत दरियाफ़्त की, "और जनाब के इक़्तेसादी (आर्थिक) हालात क्या है ?"

फ़ारूक़ी ने कहा, "बजट मुतवाज़िन (सन्तुलित) है। कॉक्स बाज़ार के लॉंच वाले खेल का खसारा (घाटा) पूरा हो गया है और कोई पन्द्रह रुपयों की जीत में हूँ।"

शिहाब ने कहा, "गोया तबाही सिर्फ़ स्वालेह भाई की है।"

रियाज ने कहा, "चुप की दाद मुझे मिलेगी कि सौ रुपये के फेर में हूँ और उफ़ नही करता।"

शिहाब ने कहा, "क्या मतलब ? एक सौ चालीस की लपेट में स्वालेह भाई हैं, सौ रुपये आप हारे हैं तो बाकी जीता कौन है क्या सिर्फ अर्जमन्द ?"

रफ़ीक ने कहा, "अगर आप चश्मे-बद दूर कहे तो अस्सी रुपये के क़रीब मैं भी जीत में हूँ।"

नीलोफ़र को आता हुआ देखकर सब खड़े हो गये और उसी वक़्त स्वालेह साहब ने अपना हाथ डिक्लेयर करते हुए कहा, "किस क़द्र मुबारक क़दम है आपके यकमुश्त (इकट्ठे) तीन जोकर आ गये थे।"

शिहाब ने कहा, "इस तरह न कहिये यह छींटा हम तीनों पर भी जाता है जो मग़रिबी पाकिस्तान से आये हैं।"

अर्जमन्द ने कहा, "शुक्र है ख़ुदावन्दा तेरा कि शिहाब को भी तूने चहकने की तौफ़ीक़ दी। कल से पहले तो जो कोई जनाब को देखता था क़द्दे आदम पेपर-वेट के इलावा और कुछ न समझता था।"

स्वालेह ने कहा, "अच्छा भाई उठाओ ये ताशारात को लगेगी बाज़ी तफ़सील से।"

रफ़ीक ने कहा, "रात को तो आपने गाने-बजाने का एहतमाम किया है।"

स्वालेह ने कहा, "उसके बाद सही। सोते तो रोज़ ही हैं आज न सोयेंगे तो कौन सी क़यामत आ जायगी। बहरहाल यह हाथ मिला अच्छा, कोई चालीस रुपये मिल गये।"

रशीद ने आते हुए कहा, "अच्छा साहब इतनी इजाज़त है मुझे कि मैं बस खड़े-खड़े अपने घर तक हो आऊँ ?"

स्वालेह ने चीख कर कहा, "ग़लत। यह नामुमकिन है, आज आप पर सोलह आने मुझको हक़ है, आज आपके घर का सवाल ही पैदा नही होता। कल चलेगे सब साथ और सवाल यह है कि आप घर जाकर क्या करेगे ? न जोरू न जाता अल्ला मियाँ से नाता। थोड़ी देर में खाने से फ़ारिग होकर वह लाजवाब गाना सुनवाऊँगा तुमको कि याद करोगे।"

शिहाब ने कहा, "मशरिक़ी पाकिस्तान मौसीक़ी का वतन है मुझको तो यहाँ की आबो-हवा में मौसीक़ी शामिल नज़र आती है।"

अर्जमंद ने कहा, "शुक्र है कि जनाबे वाला भी इन महसूसात (अनुभवों) से मुतस्सिर (प्रभावित) होने के क़ाबिल बन गये वर्ना कल तक तो यही आबो-हवा मे शामिल मौसीक़ी गोया भैंस के आगे बीन बजा रही थी।"

शिहाब ने कहा, "यह कल तक का ताना आखिर कब तक दिया जायगा ? हालाँकि खुद जनाबे वाला की जो कैफ़ियत थी वह ज़बरदस्ती की शगुफ़्तगी से भी छिपाये न छिपती थी।"

नीलोफ़र ने कहा, "छोड़िये इस तक्लीफ़देह ज़िक्र को। अब तय यह करना है कि हम सबका प्रोग्राम क्या होगा ?"

रियाज़ ने कहा, "देखिये साहब, प्रोग्राम ख्वाह कुछ भी हो मगर उसमें ढाका और ढाके में मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ आप सबका क़याम ज़रूर शामिल होगा।"

रशीद ने कहा, "यह प्रोग्राम सिवाय मेरे कोई नहीं बना सकता और मैंने जो प्रोग्राम बनाया है वह यह है कि रोज-रोज़ तो आप सबका मशरिक़ी पाकि-

स्तान आना होता नहीं लिहाज़ा अब आये हैं तो अपने वतन के इस हिस्से को अच्छी तरह देख लें। कल और परसों तो चटगाँव की सैर कीजिये। पोर्ट देखिये, यहाँ के मुख्तलिफ़ इदारों (संस्था) की सैर कीजिये, इसके बाद चलेंगे दर्याई रास्ते से कप्ताई, ताकि आप को वह करना फिली पेपर मिल भी दिखा दें जो आपके मुल्क की सनअत साजी (कला-निर्माण) का इतना बड़ा मरकज़ है, फिर यह कि दर्याई सफ़र निहायत खुशगवार होगा।"

नीलोफ़र ने कहा, "रशीद भाई आपका प्रोग्राम कुछ बहुत ही तवील नज़र आता है।"

रशीद ने उसको रोकते हुए कहा, "पहले मेरा प्रोग्राम सुन लीजिये। कप्ताई से वापस आकर आपको ट्रेन के ज़रिये ले चलेंगे सिलहट। इतनी बड़ी कामयाबी के बाद जो हम सबको हासिल हुई है हज़रत शाह जलाल की दरगाह पर हाज़िरी न देना ग़लत है। फिर यह कि चाय के आप सब ही आशिके जार हैं। सिलहट से करीब ही मौलवी बाज़ार में चाय के बागात दिखाने ले चलेंगे आप को, चाय की फ़ैक्टरी दिखायेंगे, अनन्नास के बाग़ों की सैर करायेंगे।"

अर्जमंद ने कहा, "मेरा खयाल यह है कि मुझको और फारुकी को इस्तीफ़े भेज देने दो, इसके बाद बस फ़रागत ही फ़रागत है।"

फ़ारुकी ने कहा, "सुनिये रशीद साहब, मेरी मुदब्बिराना राय यह है कि फ़िलहाल तो हम सबको आप चटगाँव और ढाका के मुख्तसर क़याम के बाद इसलिए जाने दे कि वहाँ डाक्टर साहब और नीली बहन की वालिदा-माजिदा की परेशानी के इलावा और भी ऐसे पेचीदा मसाइल दर पेश है कि अगर हम सैर-सपाटे मे रहे तो किये-धरे पर पानी फिर जायगा और मैं आपको तफ़सील से बताऊँगा कि मसाइल कितनी अहमियत रखते है। हाँ यह हो सकता है कि आप शिहाब से यह वादा लें कि यह यकसूई (एकाग्रता) के बाद जब पर्वान चढ़े तो साथ-ही-साथ हवाई जहाज़ पर भी चढ़ जायें और हनीमून मशरिक़ी पाकिस्तान में मनालें।"

अर्जमंद ने नीलोफ़र को जाता हुआ देखकर कहा, "यह आप कहाँ चलीं ? इनकी बातों का खयाल न कीजिये हवाई जहाज़ पर इतने चक्कर आये हैं कि अक़्ल अब तक चक्कर में है।"

रशीद ने कहा, "बहरहाल मैं इन नाजुक हालात के बावजूद जिस क़दर जल्द आप लोग वापस जाना चाहते है इतनी जल्दी तो न जाने दूंगा ख्वाह सत्याग्रह करना पड़े।"

अर्जमद ने कहा, "मेरे भाई, मैं आपके इस जज़्ब-ए-खुलूस का एहतराम करता हूँ मगर मैं आपसे तफ़सीली बात करूँगा।"

स्वालेह ने कहा, "लाहौल वला क़ूवत। क्या बेहूदा ज़िक्र छिड़ गया है। इससे तो रमी ही जारी रहती। मेरा खयाल यह है कि हम लोगों को ज़रा वक़्त का भी अन्दाज़ा होना चाहिये। आठ बज चुके है। हम जिस क़दर जल्द खाने से फ़ारिग़ होंगे उतती ही जल्दी महफ़िले-मौसीक़ी का एहतमाम हो सकेगा।"

शिहाब ने कहा, "और जितनी जल्दी महफ़िले-मौसीक़ी खत्म होगी इतनी ही जल्दी रमी की महफ़िल गर्म हो सकेगी।"

अर्जमन्द ने कहा, "मैंने कहा स्वालेह भाई, खुदा के लिए इस बलाये बेदर्मां (दुःख जिसका इलाज नहीं) से रमी खेलने न बैठ जाना। अल्ला जाने पत्ते बाज़ी करता है या राजा नल से कुछ खास मरासिम है, मैने तो आज तक हारते देखा नहीं।"

स्वालेह ने कहा, "क्या खूब! यानी यह बात आप अब बता रहे है? देखेंगे साहब आज इनके हाथ भी। बहरहाल खाने का क़िस्सा तो निम्टा ही देना चाहिये।"

इसके बाद ये सब खाने की पुरतकल्लुफ़ मेज़ पर पहुँच गये जिस पर स्वालेह ने खास तौर पर कुछ बंगाली डिशेज़ का भी एहतमाम किया था। जिन को सबने पसन्द किया, खुसूसन दाल-मछली नीलोफ़र को बहुत पसन्द आई। खाने के बाद बड़े सलीक़े की बज़्मे-सुरूद (संगीत-सभा) आरास्ता हुई जिसमें बंगाल का जादू हर एक को मसहूर (मोहित) करके रहा। यह महफ़िले-मौसीक़ी बारह बजे के क़रीब जब खत्म हुई तो सिवाय नीलोफ़र के बाक़ी सब रमी खेलने में ऐसे मह्व हुए कि सुबह चार बजे तक तो महफ़िल गर्म थी इसके बाद अल्लाह जाने क्या हुआ?

५५

****

जैसा कि तय हो चुका था सुबह तो नहीं मगर लंच के वक़्त से पहले-ही-पहले रशीद सबको अपने घर ले आया। रशीद का मकान एक ख़ूबसूरत-सी सर सब्ज पहाडी पर था जिसके हर बरामदे से चटगाँव का दिलफरेब मन्जर एक रंगीन तस्वीर की शक्ल में नज़र आता था। इस ठाठ के मकान की सजावट में रशीद के सलीक़े के इलावा उसकी दौलत का भी हाथ था। बात यह है कि कारोबार हर तरफ फैला हुआ था। रुपये की इफ़रात (बहुतात) थी और खर्च करने वाला कोई था ही नहीं। बीवी बेचारी शादी के दूसरे ही साल बगैर कोई निशानी छोडे मर चुकी थी मगर रशीद के एहसासात में इस हद तक आज भी जिन्दा थी कि जिन्दा रहने के लिए और तो वह सब कुछ करता था अलबत्ता दूसरी शादी या जिन्से-मुखालिफ से किसी किस्म की दिल बस्तगी (मन का नाता जोडना) का तसव्वुर भी उसके आस-पास न था। तमाम एह-बाब और अइज्जा (सम्बन्धी) समझा-समझा कर थक गये थे मगर इस बाब में वह किसी की सुनने को तैयार न था। मुख्तसर यह कि इतनी दौलत थी और उसकी अकेली जान, यही वजह है कि उसके घर पर किसी फ़र्मारवा (राजा) के महल का गुमान होता था। अब मसलन इसी वक़्त उसके डाइनिंग रूम की निहायत वसी मेज़ पर खानों की पुरतकल्लुफ़ रेल-पेल के इलावा बर्तन और क्राकरी ही इतनी क़ीमती थी कि इस ख़याल ही से पसीना आने लगता था कि अगर खुदानखास्ता (भगवान न करे) इनमें की कोई चीज़ टूट जाय तो क्या हो ? चाँदी की हसीनो-जमील कटलरी पर उसका मोनोग्राम, बैरों की पगड़ियों पर उसके नाम का 'आर' डिनर सैट से लेकर

काफ़ी सैट तक सब पर उसका अपना निशान, सिर्फ़ एक-एक कमरे में चार-चार जहाज़ी फ़िजिडेयर, मुख़्तसर यह कि इस सामान और इस एहतमाम को देखकर हैरत होती थी कि एक अकेले आदमी के लिए आख़िर इस एहतमाम की क्या ज़रूरत है। मसलन इतने बैरे ही आख़िर क्यों थे। मगर स्वालेह सब को बता चुके थे कि निहायत शाहे-खर्च किस्म का आदमी है। जैसी आमदनी है वैसा ही खर्च है, मुश्किल से कोई दिन ऐसा होता होगा जब किसी-न-किसी वक़्त की दावत इन हज़रत के यहाँ न हो। ज़ाहिर है कि उनमे से कुछ दावतें तो कारोबारी किस्म की होती होंगी मगर अपनी तल्ख (कड़वी) ज़िन्दगी को इन्ही बहलावों में डाले रखने के लिए यह हजरत इस किस्म के हंगामों के बहाने भी ढूंढा करते थे। खैर इस वक़्त का लंच तो फिर भी खामोश किस्म का गैर रस्मी लंच था मगर रात को इन हजरत ने डिनर का जो एहतमाम किया उसको देखकर तो मालूम होता था कि जैसे किसी वालि-ए-मुल्क (राजा) ने अपने वली अहद का अकीका (उत्तराधिकारी का मुंडन संस्कार) किया हो। कोठी के सब्ज़ाजार के हर दरख़्त पर रंगा रंग कुमकुमे थे। जाबजा रोशनी की महराबें थीं, चमन के वस्त फ़ौवारा मोती उछाल रहा था। इस एहतमाम से तो सब दंग थे ही कि इत्तिफ़ाक़ से शिहाब की नज़र उसी दावत के एक बाक़ायदा कार्ड पर पड़ गई जिसे लिए हुए वह तमाम एहबाब के सामने आ कर बोला :

"और सुनिये, इस डिनर के बाक़ायदा कार्ड भी तक़सीम हुए हैं लिहाज़ा तैयार रहिये, मेहमानों की आमद का सिलसिला शुरू होने ही वाला है। ज़रा कार्ड का मज़मून सुनिये :

बतक़रीबे-मुलाक़ात

हमशीरा अज़ीज़ा आनूसा नीलोफ़र लतीफ़ी

मुहतरम व मुहतरमा—से इलतमास है कि मेरे साथ तुआमेशब (रात्रि का भोजन) नोश फ़र्माकर ममनून फ़र्मायें। मैं १६ फरवरी १९५७ ई० को बवक़्त ८ बजे शब चश्म बराह (रास्ते पर आँखें लगाए हुए) रहूंगा।

मुखलिस—रशीदुज़्ज़मां

नीलोफर ने कार्ड हाथ से लेकर एक मर्तबा खुद भी पढ़ा और रशीद को क़रीब से गुज़रता हुआ देखकर उसे टोका :

"मैंने कहा रशीद भाई सुनियेगा, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि यह तकल्लुफ़ नहीं तो और क्या है ?"

रशीद ने जो किसी काम से जा रहा था एकदम ठहरते हुए कहा, "कैसा तकल्लुफ़ ? क्या तकल्लुफ किया मैने ?"

शिहाब ने कहा, "तकल्लुफ तो खैर हर तरफ़ नज़र आता है मगर यह कार्ड तो तकल्लुफ की इन्तेहा है ।"

रशीद ने बडी संजीदगी से कहा, "इसको आप तकल्लुफ समझ रहे हैं ? यानी मुझको पली-पलाई एकदम से इतनी बडी बहन मिल गई है तो आप चाहते हैं कि मैं उसको अपने दोस्तों और अजीजों से भी सुर्खरूई (सफलता) के साथ न मिलाऊं हर एक यही समझता है कि मैं इस दुनिया मे अकेला हूँ । मेरा कोई नहीं है, माँ-बाप, भाई-बहन, औलाद, बीवी हर तरफ से बेसहारा हूँ। मगर आज मैं उन सबको दिखा तो सकूंगा कि देख लो मैं अकेला नही हूँ, मेरी भी एक बहन है और मै भी एक बहन का भाई हूँ। आप इसी को तकल्लुफ़ कह रहे हैं। मेरा तो जी चाहता था कि ऐसी बहन मिलने के सिल-सिले मे इतनी बड़ी तक़रीब मनाऊँ कि मुद्दतों यहाँ के लोग याद रखें मगर क्या करूँ वक़्त ही न मिल सका। जो कुछ सिर्फ एक दिन में हो सका वह है यह। बहरहाल इस सरसरी एहतमाम के पैमाने से आप मेरी उस मुहब्बत को न नापें जो ऐसी क़ीमती बहन मिलने से मुझे हासिल हुई है।"

नीलोफ़र ने तक़रीबन आब-दीदा (रुआँसी) होकर कहा, "अब मैं आपको कैसे बताऊँ कि मैं भी एक ऐसे ही भाई के लिए हमेशा तर्सी हूँ जैसा अब मुझको मिला है ।"

रशीद ने बढ़कर उसके सिर पर हाथ रखा ही था कि उसने टप-टप आँसू गिराते हुए अपना सिर उसके सीने पर रख दिया। यह मन्ज़र कुछ ऐसा पुर-खुलूस और रिक़्कत अंगेज़ था (दुःखदायी) कि यह पुलिस के सख्त-दिल लोग भी ज़ब्त न कर सके और हद यह है कि इस इज्तमाअ का सबसे क़द-आवर (बड़े डील-डौल का) और मोटा ताज़ा इन्सान जो इन लतीफ़ एहसासात

से कोसों दूर नज़र आता था यानी रियाज़, उसने भी रूमाल निकाल कर अपने आँसू खुश्क करना शुरू कर दिये और बाकी तमाम लोग भी बेहद मुतास्सिर नज़र आये। स्वालेह ने बड़ी संजीदगी से कहा :

"नहीं साहब इस एहतमाम को तकल्लुफ़ कहना गलत है। वाक़ई रशीद के लिए यह ज़िन्दगी की इतनी बड़ी खुशी है कि यह जिस कदर भी एहतमाम करें कम है।"

रशीद ने नीलोफ़र को प्यार से देखते हुए कहा, "यह तो मेरी खुशी का वह हिस्सा है जो छलक पड़ा है वर्ना इस बहन के मिलने से मेरी वीरान ज़िन्दगी में यकायक जो चहल-पहल पैदा हो गई है उसका इज़हार तो बाद में होता रहेगा और अभी तो मुझको अपनी खुशी के इज़हार के बहुत से मौके मिलेंगे। अपनी बहन की शादी ऐसी करूँगा कि देखने वाले देखेंगे मेरा हौसला और मेरी सेर चश्मी (छककर देखना)।"

फ़ारूकी ने आगे बढ़कर बड़ी मिस्कीन सूरत बनाते हुए कहा, "रशीद भाई ग़ालिबन आपको एक बहन के इलावा एक भाई की भी ज़रूरत होगी।"

शिहाब ने बर्जस्ता कहा, "भाग इन बर्दा फ़रोशों से कहाँ के भाई।"

और सबके एक कहकहे ने इस मुहब्बत के आँसुओं में डूबे हुए माहौल को यक्सर बदल दिया। गालिबन फ़ारूकी का मकसद भी यही था। उसी वक़्त मेहमानों की आमद का सिलसिला शुरू हो गया। लिहाज़ा रशीद ने नीलोफ़र को अपने साथ लिया ताकि मेहमानों का इस्तकबाल ये दोनों बहन-भाई करें। वह एक-एक से नीलोफ़र को अपनी बहन की हैसियत से मिलाता और शिहाब से तो इस तरह मिलाता कि गोया इस महफिल का नीलोफर के बाद रूहे रवाँ (जीवन देने वाला) वही है। थोड़ी ही देर में कोठी के बाहर मोटरों की क़तारें लग गईं और कोठी के सब्ज़ाज़ार पर चटगाँव के सरकारी और ग़ैर सरकारी हर तब्क़े के मुअज्ज़िज़ीन (प्रतिष्ठित व्यक्ति) और खवातीन का इज्तेमाअ हो गया जिनको बा सलीका बैरे फलों का अरक़ और सिगरेट-सिगार वग़ैरा पेश करते फिर रहे थे। इस इज्तेमाअ ही से यह अन्दाज़ा हो रहा था कि यहाँ की ऊँची सोसायटी मे रशीद का कितना रुसूख (पहुँच) है कि सिर्फ़ एक दिन के

नोटिस पर ये तमाम हाज़िरीन शिरकत के लिए पहुँच गये, चुनांचे इस वक़्त जहाँ कहीं कोई मिनिस्टर बैठा हुआ था वहाँ मौज़ू-ए-बहस (वाद विवाद का विषय) था आइन्दा होने वाला इलेक्शन; जहाँ सी. एस. पी. के कुछ अफ़सर बैठे हुए थे वहाँ तबादले और तैनातियाँ जेरे-बहस थीं, नेवी के लोग अपनी महक्माजाती गुफ़्तगू में मसरूफ़ थे और जहाँ खवातीन यक्जा हो गईं थी वहाँ किसी की सैन्डिल ज़ेरे-बहस थी और किसी की साड़ी का काम; कोई अपने बीमार बच्चे की सेहतयाबी के बाद अपनी उस अलालत की तफ़सील बयान कर रही थीं जो उन से दूर पार नज़र आती थी और कुछ शोख और तर्रार (चंचल) लड़कियाँ इसी इज्तमाअ की बड़ी-बूढ़ियों की आपस में नक़ले कर-कर के एक-दूसरे की आड़ लेकर हँस रही थी कि रशीद की तजवीज़ पर उनमे से हर गिरोह में खुसूसी महमानों का एक-न-एक फ़र्द भेज दिया गया मसलन औरतों मे नीलोफ़र पहुँच गई हालाँकि अर्जमन्द ने एहतजाज भी किया कि खवातीन ने यह डेढ़ ईट की मस्जिद अलग क्यों बना रक्खी है। रशीद को उस सोफे पर भेज दिया गया जहाँ मिनिस्टर साहब सियासी नशेबो-फ़राज (राजनैतिक ऊँच-नीच) मे सबको उलझाए हुए थे और इसी तरह अर्जमन्द और फ़ारुकी भी मुस्तलिफ़ हलक़ो में भेज दिये गये मगर यह एहतमाम इसलिए आर्ज़ी साबित हुआ कि थोड़ी ही देर के बाद रशीद ने सब को अपनी कोठी के उसी पाईं बाग के हिस्से में चलने की ज़हमत दी जहाँ खाने की मेज़ें अंग्रेजी के हर्फ़ "एन" की सूरत में लगाई गई थीं। गालिबन इस हर्फ़ का इन्तखाब (चुनाव) इस लिए किया गया था कि नीलोफ़र के नाम का पहला हर्फ़ यही था। यह डिनर वही था जिसके मुतल्लिक़ सैयद मुहम्मद जाफ़री (पाकिस्तान में हास्यरस के कवि) ने कहा है :

खड़ा डिनर है ग़रीब-उद्दयार खाते हैं

खाने की इन मेज़ों को देख कर रशीद की उलुल-अज़मी (साहस) का हर एक को अन्दाज़ा हो रहा था। अनवायो-इक़साम (भाँति-भाँति) के खानों से मेज़ें पटी पड़ी थी। मेहमान खाने में मसरूफ़ थे और फ़ोटो ग्राफ़र अपने कैमरों के शिहाबे-साक़िब (तारा विशेष) हर तरफ़ रोशन करते फिर रहे थे। खानों की इतनी क़िस्में थीं कि बमुश्किल किसी ने हर डिश को चक्खा होगा। इसी से अन्दाज़ा कर

लीजिये कि आइसक्रीम के इलावा चार तो सिर्फ़ मीठी डिशेज़ थीं। रशीद पहले तो मेज़बान बने फिरते रहे मगर जब नीलोफ़र ने भी अपनी प्लेट यह कह कर रख दी कि आख़िर मैं भी तो मेज़बान ही हुई तो वह हज़रत भी खाने में शामिल हो गये। मुख्तसर यह कि तक़रीबन सवा घण्टे के बाद यह डिनर खत्म हुआ और मेहमान वहाँ से अपनी-अपनी नशस्तों पर वापस आ गये। तो यहाँ अब नक़्शा ही दूसरा था। इस अर्से में यहाँ एक स्टेज-सा बन चुका था और सोफ़े अब इस तरह बिछे हुए थे कि सब का रुख़ स्टेज की तरफ़ था। चुनांचे मेहमानों के यहाँ पहुंचने के बाद ही पहले तो काफ़ी सबकी ख़िदमत में पेश की गई उसके बाद स्टेज का पर्दा उठाया गया और सबसे पहले राबिन्द्रो संगीत का नमूना पेश किया गया, जिसको तमाम हाज़िरीन ने बेहद पसन्द किया। फिर क़ाजी नज़रुल इसलाम के एक तराने को उसी शक्ल में सुनाया गया जिस मे मुसलमानो को बेदारी और अमल का पयाम दिया गया था। इस तराने में बगला ज़ुबान की मिठास, बगाली मौसीकी की सहर आफ़रीनी (जादू) और शाइर के जज़्ब-ए-इसलामी का ऐसा मुतवाज़िन इम्तज़ाज (मिलावट) था कि मजमा वाकई लहरें लेने लगा मगर तीसरा गाना जिसके बोल थे : 'अल्ला मेघ दे, पानी दे, छाया दे,' मश्रिक़ी पाकिस्तान के एक माहिरे-मूसीकी (संगीत में निपुण) ने इस दिलावेज़ अन्दाज़ में पेश किया कि उस पर बार-बार तालियाँ बजती रही और इस गाने के ख़त्म होने के बाद नीलोफ़र ने इस गाने को सुनने की खास तौर पर फ़र्माइश की जिसकी शिहाब और अर्जमन्द ने भी ताईद की। फिर राधाकृष्ण-नाच का का निहायत दिलावेज़ मुज़ाहिरा हुआ और यह मालूम करके सबको हैरत हुई कि इस पूरे कन्सर्ट में सब यहाँ के शरीफ़ और मुअज़्ज़िज़ ख़ान्दानों की लड़कियाँ और अफ़राद हिस्सा ले रहे हैं जो अभी थोड़ी देर पहले इसी डिनर में सबके साथ शरीके-तुआम (भोजन में शरीक) थे। रक़्स के बाद भटयाली से सब लुत्फ़ अन्दोज़ हुए, फिर एक ऐसा अर्केस्ट्रा पेश किया गया जिसमें सिर्फ़ छः तो वाइलिन ही थे इतने ही सितार थे, और बाक़ी साज़ इसी मुनासिबत से थे। साज़ नवाज़ों में अक्सरियत जिन्से-लतीफ़ (स्त्रियों) की थी और

पूरे आर्केस्ट्रा में जो तवाज़ुन और यक्सानियत थी उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर कोई भी न रहा। मुख़्तसर यह कि कन्सर्ट रात को बारह बजे के क़रीब ख़त्म हुआ तो मेहमानों को रुख़्सत करते-करते रशीद को एक बज गया। मगर वह जब सब को रुख़्सत करके वापस आया तो क्या देखता है कि स्वालेह साहब की रमी की महफ़िल लगी हुई है और आज इस मैदान का एक मर्दे-मैदान शिहाब भी है। नीलोफ़र अलबत्ता सोने चली गई थी बाक़ी सब जाग रहे थे। रशीद को भी पहले तो अख़लाकन बैठना पड़ा मगर जब नींद के झोंके बदअख़लाक़ी का मुज़ाहिरा करने लगे तो वह भी अपने कमरे में चला गया।

५६

****

रशीद की ज़िद संजीदगी से गुज़र कर तिफ़लाना (बचपन) हद तक पहुँच गई थी कि ये लोग अभी कुछ दिन और ठहरें और उसके साथ मशरिकी पाकिस्तान की पूरी सैर करें। आख़िर अर्जमन्द ने उसको अलैहदा ले जा कर तमाम नशेबो-फ़राज़ समझाये कि हम सब कुछ उलझन में फँसे हुए हैं और जल्द-से-जल्द लाहौर पहुँचना कितना ज़रूरी है। जब तफ़सीली तौर पर उसे तमाम हालात मालूम हो गये तो उसने एक हद तक अपनी ज़िद छोड़ दी मगर अर्जमन्द से कहा :

"बहरहाल आज तो मैं इन्तेज़ाम कर ही चुका हूँ कि आप सब मेरे साथ अभी क्लोर घाट चलेंगे जहाँ लाँच हमारा मुन्तज़िर है। इस लाँच के ज़रिये हम बाईस मील दरिया-ए-क़ीनाफ़िली में सफ़र करेंगे और चन्द्र गोना पेपर मिल

देखेंगे। मेरे आदमी वहाँ पहुँच चुके हैं और आपके लिए लंच का इन्तज़ाम वहीं है। लंच के बाद हम लोग बारह मील और आगे जायेंगे यानी कप्ताई, वहाँ सेपहर की चाय और रात का खाना खा कर हम वही के रेस्ट-हाउस में क़याम करेंगे और सुबह ब्रेक-फ़ास्ट लेकर क्लोर घाट के लिए रवाना हो जायंगे। कल का लंच लाँच पर ही होगा, सेपहर को चटगाँव पहुँच ही जायंगे, फिर आपको इख्तियार है।"

अर्जमन्द ने बड़े पसोपेश के बाद कहा, "अगर तुम ये इन्तज़ामात कर ही चुके हो तो मजबूरन ठहरना पड़ेगा। लाहौर तार तो बराबर जा रहे हैं मगर जल्द पहुँचना भी ज़रूरी है।"

रशीद ने कहा, "इन्तेज़ाम तो ख़ैर मैं बहुत कुछ कर चुका हूँ। सिल्हट, मौलवी बाज़ार और चाय के बाग़ात वग़ैरा में भी पैगामात भेज चुका था मगर अब इस प्रोग्राम की मन्सूख़ी की इत्तला आज भेज दूंगा अलबत्ता यह चन्द्र गोना और कप्ताई का प्रोग्राम नही बदल सकता।"

अर्जमन्द ने कहा, "अच्छी बात है, मैं सबको समझाये देता हूँ कि कल रात ढाके के लिए रवानगी तय रही।"

यह कह कर अर्जमन्द बाहर आया और उसने शिहाब और फ़ारूक़ी वग़ैरा को समझा-बुझाकर इस बात पर राज़ी कर लिया कि बजाय आज रात के कल रात की रवानगी रखो इस लिए कि रशीद बेचारा बड़े एहतमाम कर चुका है। चुनांचे यह सब दर्याई सफ़र के लिए जल्दी-जल्दी तैयार हो गये और मोटरों पर क्लोर घाट तक जाकर उस लांच में चन्द्र गोना की तरफ़ रवाना हो गए जो रशीद ने पहले ही इस क़ाफ़िले के लिए आरास्ता करा रखी थी। इस लाँच में सबके लिये बाकायदा सोफ़े लगे हुए थे। काफ़ी वग़ैरा का सामान रशीद के मुलाज़िम लेकर चले थे मगर लाँच के रवाना होते ही स्वालेह ने ताश की गड्डियाँ निकाली ही थीं कि नीलोफ़र ने बढ़कर ताश के पैकिटों पर क़ब्ज़ा करते हुए कहा :

"दिन ताश, रात ताश कोई हद भी होती है स्वालेह भाई।"

स्वालेह ने बर्जस्तगी से कहा, "अच्छा तो निकालिये अपनी गुड़ियाँ वही खेलें या कहिये तो हण्ड कुलिया पकायें।"

कोशिश न कीजिये और इस मौक़े से फ़ायदा उठाकर अपनी एक गजल सुना दीजिये।"

नीलोफर ने बड़े इश्तियाक से कहा, "हाँ फ़ारुकी भाई यह ठीक है। लीजिये मुझे तो यह मालूम ही न था कि आप शाइर भी है।"

शिहाब ने कहा, "शाइर तो खैर यह नहीं हैं। दुआ दें उन कालेज के साथियों को जिन्होंने कालेज के हर मुशायरे में इन पर हूटिंग कर के इनको शाइर बनने से महफूज रक्खा वरना यह तो बन ही गये थे शाइर।"

फारुकी ने कहा," खैर यह तो आप हजरात की सुखन ना शनासी (कविता को न पहिचाना) थी कि आपने मेरी शाइरी की उस वक़्त कद्र न की और एक जौहरे-काबिल (अमूल्य रत्न) को क़द्र ना शनासी की बदौलत जाया कर दिया वर्ना आज मैं साहिबे-दीवान*शाइर होता, मुशाइरों में मेरे नाम का सिक्का चल रहा होता।"

अर्जमन्द ने कहा, "बहरहाल हम इस खूने-नाहक पर शर्मसार हैं अब आप अपने उन जवाहिरे-फकार (कविता) से हमको मुस्तफ़ीद फ़र्मायें।"

फ़ारुकी ने कहा, "लाहौल वला कूव्वत अब किस कमबख्त को याद है वह खुराफात ?"

शिहाब ने कहा, "मैं दिलाता हूँ। लीलावती पर जो नज्म थी तुम्हारी जिसका उन्वान (शीर्षक) था 'लिल्ली घोड़ी' मतला मुझे याद रह गया है बाकी शेर तुम सुनाओ। याद है अर्जमन्द वह मतला :

ऐ समन्दे नाज़ की इक्लौती बेटी अस्सलाम
वाए क़िस्मत हुस्न का तुझ पर लगा है इत्तहाम

फ़ारुकी ने हँस कर कहा, "हाँ हाँ वाकिआ याद रह गया है मगर बखुदा यह मतला भी मुझ को याद न था और किसी शेर का तो सवाल ही नहीं।"

नीलोफ़र ने कहा, "आपके इस मतले ने तो और भी इश्तियाक पैदा कर दिया। ज़रा ज़हन को खुरचिये शायद कोई और नज़्म या ग़ज़ल याद आ जाय।"

अर्जमन्द ने कहा, "अच्छा वह याद है अपनी गज़ल तुमको :

***जिसकी कविता का संग्रह प्रकाशित हो गया हो।**

नीलोफ़र ने कहा, **"निकाला चाहता है काम क्या तानों से तू ग़ालिब ।"**

स्वालेह ने कहा, "बहरहाल कोई मशग़ला तो होना चाहिए । यह दर्याई सफ़र आखिर किस तरह तय होगा ?"

नीलोफ़र ने कहा, "बातें कीजिए, लहरों का ज़ीरो बम्म (नीचा-ऊँचा होना) देखिए, किनारों की दिलफ़रेबियाँ मुलाहिज़ा फ़र्माइए, हँसिए, बोलिए, यह क्या नहूसत है कि बस ताश शुरू हो जाँयगे ।"

स्वालेह ने बेचारगी से कहा, "यानी आपको रमी से कोई दिलचस्पी नहीं है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "दिलचस्पी और जुनून में बड़ा फ़र्क़ होता है । दिलचस्पी तो मुझे है, मगर यह कैफ़ियत तो जुनून की है ।"

स्वालेह ने कहा, "कभी आपने इस पर भी ग़ौर किया है कि हम अहले-रमी अपने इस वाहिद गुनाह की बदौलत कितने गुनाहों से इस इनहिमाक की बदौलत बच जाते है । इस अर्से में हम झूठ नही बोलते, चोरी नही करते, बे-ईमानी नही करते, किसी की गीबत (पीठ पीछे बुराई करना) नहीं करते ।"

नीलोफ़र ने कहा, "सिर्फ़ आपस मे एक-दूसरे की जेब काटने की धुन रहती है ।"

फ़ारुकी ने कहा, "जेब ही नहीं गर्दन तक काट ली जाती है । मुझको तो इन लोगों ने उलटी छुरी से जिबह किया है । एक-एक पाई हार चुका हूँ और अब ढाका चलकर शिहाब की जीत में से कुछ क़र्ज़ लेना पड़ेगा मुझे, इसलिए कि कुछ शापिंग भी तो करना है ।"

अर्जमन्द ने कहा, "कुछ जूट या पटसन वगैरा साथ ले जाने का इरादा है ?"

फ़ारुकी ने कहा, "मैं आपकी तरह वाहिद हाज़िर तो हूँ नहीं । बहनों को क्या मुँह दिखाऊँगा कि ढाके से उनके लिए साड़ियाँ और मलमल वग़ैरा भी न ले जाऊं । इसके इलावा और बहुत-सी चीजें है, यहाँ के केले, यहाँ के पान, रसगुल्ले, सियाह गुलाब जामुनें और बेशुमार चीज़ें ।"

शिहाब ने कहा, "क़र्ज़ तो खैर मै आपको देने से रहा अलबत्ता ये चीज़ें आप को मुहैया कर दी जायेंगी । बहरहाल मेरी जीत को ज्यादा उछालने की

दुआ को हाथ उठा कर यह दिल पुकारा है
तिरे शबाब को मौत आये जिसने मारा है।"

इस मतले ही पर सब-के-सब हँसते-हँसते लोट गये। नीलोफ़र ने हँसते हुए कहा, "मगर फ़ारुकी भाई तवारुद (टकराव) हो गया है निहायत खतरनाक क़िस्म का 'ज़रीफ़' जबलपुरी का एक मिसरा याद आ रहा है कि :

अपने बदले तिरे मरने की दुआ करते हैं

शिहाब ने कहा, "खैर तवारुद हो सकता है मगर सर्क़ा (चोरी) हरगिज़ नहीं है। इसकी मैं भी गवाही दे सकता हूँ।"

फ़ारुकी ने कहा, "कमाल है कि आप लोगों को अब तक यह एक आध शेर याद है, मुझे बखुदा कुछ भी याद नही।"

स्वालेह ने कहा, "अच्छा साहब अगर यही बात है तो हम अपना शाइर आपकी खिदमत मे पेश करते है। सुनाओ भई रफ़ीक ! अपनी कोई ताज़ा नज़्म या ग़जल जो मुनासिब समझो।"

अर्जमन्द ने कहा, "हाँ हाँ खूब याद दिलाया आपने। रफ़ीक़ भी तो शेर कहते है—इर्शाद इर्शाद !"

चुनांचे रफ़ीक़ ने बावजूद शाइर होने के किसी तकल्लुफ़ से काम न लिया और निहायत गवारा किस्म के शरीफ़ाना तरन्नुम (लय) से पहले अपनी एक ग़ज़ल सुनाई जिससे सब ही लुत्फ़ अन्दोज हुए इसके बाद सबके इसरार पर एक नज़्म भी सुनाई जिसने वाक़ई समाँ बाँध दिया। इसके बाद रशीद के इशारे पर उसके मुलाज़िमों ने सब को बिस्किट, खुश्क मेवा और काफ़ी पेश की। मुख्तसर यह कि इसी तरह हँसते-बोलते ये लोग लंच के वक़्त से कुछ पहले ही दरिया-ए-क्रिनाफ़िली के साहिल पर उस जगह जा उतरे जहाँ दोनों तरफ़ ऊँचे-ऊँचे टीले थे। यह उनकी पहली मंज़िल थी और यहीं उनको चन्द्र गोना पेपर मिल देखने के अलावा लंच भी खाना था। मिल के अक्सर ज़िम्मेदार अफ़राद यहाँ इस पार्टी के खैरमक़दम को मौजूद थे। चुनांचे ये सब मोटरों पर बैठ कर मिल के इलाक़े की तरफ़ रवाना हो गये और कागज़ साज़ी के इस मायए-नाज़ इदारे को तकरीबन डेढ़ घन्टे तक देखते रहे। काग़ज बनाने की हर मशीन को देखा कि कहाँ पूरे-पूरे बाँस मशीन में डाले जाते हैं, कहाँ वह टुकड़े-

टुकड़े होकर खपचियों की शक्ल इख्तियार करते हैं, कहां उनका एक मलग़ोबा (मलबा) सा बनता है और कहाँ वह मलग़ोबा बेलनों के ज़रिये एक सतह में आकर एक चादर की-सी शक्ल इख्तियार करता है फिर यह चादर किन दर्जों से गुज़र कर बारीक होते-होते काग़ज़ की शक्ल इख्तियार करती है। ये तमाम मराहिल यानी बांस से काग़ज़ तक के तमाम दर्जे देख कर फ़ारूक़ी ने कहा :

"अब वह लतीफ़ा सच्चा नज़र आने लगा कि विलायत में मशीन में एक तरफ़ गाय डाल दी जाती है और दूसरी तरफ़ बने-बनाये जूते निकलना शुरू हो जाते है।"

शिहाब ने कहा, "बल्कि सुना है कि उस मशीन को अगर उल्टा चलाया जाय और जूते डाले जायें तो दूसरी तरफ़ से गाय निकल कर भागती है।"

हँसते-हँसाते ये लोग मिल से निकल कर एक पुरफ़जा कोठी में पहुँचे, जहाँ लंच का बाक़ायदा एहतमाम था। लंच के बाद यह पार्टी फिर लाँच के ज़रिये कप्ताई की तरफ़ रवाना हो गई जो यहाँ से बारह मील के फ़ासले पर है जहाँ हाइड्रो इलेक्ट्रिक का निहायत अज़ीमुश्शान मरकज़ बनाया जा रहा है। यह रास्ता निहायत खुशगवार था। दोनों तरफ़ सरसब्ज़ लहलहाती हुई पहाड़ियाँ थीं और दरिया-ए-क्रिनाफ़िली एक अजीब दिलरुबाई (मन मोहना) के साथ बल खाता और कतराता हुआ बह रहा था। कप्ताई के साहिल पर भी खैर मक़दम करने वाले मौजूद थे। चुनांचे यहाँ से भी मोटरों पर यह सब रेस्ट हाउस पहुँचा दिये गये जो निहायत ख़ूबसूरत और आरामदेह था। यह पूरी आबादी जदीद वज़ा (नये ढंग) की थी और निहायत हुस्न के साथ उसको आरास्ता किया था। चाय से फ़ारिग़ होने के बाद सब-के-सब वह बर्क़ी माडल और वह दरियाइ नक़्शे देखने गये जो यहाँ तैयार किये गये हैं और रात को सब को डिनर के बाद दस्तावेज़ी फ़िल्म दिखाये गये। इसके बाद नीलोफ़र के सो जाने के बाद स्वालेह साहब ने अपनी महफ़िल जमाई जो खुदा जाने रात को कब तक जारी रही, अलबत्ता सुबह को जब ये लोग नाश्ते के बाद चटगाँव के लिए रवाना होने लगे तो नीलोफ़र ने देखा कि फ़ारूक़ी आज बहुत खुश हैं और दर्याफ़्त करने पर मालूम हुआ कि इन हज़रत की वह इक़्तसादी हालत जो

कल तक ग़ैर थी अब सँभल गई है और ख़सारा एक हद तक पूरा हो गया है। ज़्यादा ख़ुशी की बात यह है कि शिहाब की जीत पर असर पड़े बग़ैर यह हज़रत अपने नुकसानात की तलाफ़ी करने में कामयाब हो गये है। सबने मिलकर फ़ारूकी को मुबारकबाद दी और यह सब इसी ख़ुशगवार माहौल में लाँच पर चटगाँव की तरफ चल दिये।

५७

****

चटगाँव पहुँच कर नीलोफर का सिर्फ़ यह कह देना काफ़ी था कि रशीद भाई आख़िर हमारे साथ लाहौर क्यों न चलें, रशीद ने तो आमादगी ज़ाहिर करने में ज़रा भी देर न लगाई बल्कि निहायत मुस्तैदी से कहा, "गालिबन आप यह समझ रही थीं कि मैं इन्कार करूँगा। चुनाँचे यह देख लीजिये आप सब के साथ मेरा टिकट भी मौजूद है।"

नीलोफ़र ने कहा, "इस टिकट की तो मुझे ख़बर न थी मगर यह ढाके तक का हुआ ना, मैं ज़िक्र कर रही हूँ लाहौर का।"

रशीद ने कहा, "इसी किस्म का एक टिकट ढाके में भी आप को दिखा कर मुतमइन कर दूंगा जो लाहौर तक का होगा। मैं लाहौर जाना पहले ही तय कर चुका हूँ और यह कोई आप पर एहसान नहीं है बल्कि आप लोगों के जाने के बाद अगर मैं यहाँ रह गया तो यह तन्हाई फाड़ खायेगी मुझे। दूसरे अब यह भी तो मेरे लिए ज़रूरी हो गया है कि इस बहन के रिश्ते से अपने वालिदैन की कदमबोसी भी जाकर कर आऊँ।"

अर्जमन्द ने कहा, "साहब सच्ची बात यह है कि बच्चे के पैर पालने ही में

नज़र आ जाते हैं। मुझे कॉक्स बाज़ार में इन हज़रत को देखने के बाद ही यह अन्दाज़ा हो गया था कि ख़ुदा उम्र में बरकत दे निकलेंगे होनहार।"

रशीद ने सर झुका कर कहा, "यह आपकी शफ़क़त (प्रेम) है चचा जान, वर्ना 'मन आनम कि मन दानम' (जैसा मैं हूँ, जानता हूँ)।"

फारूकी ने टोका, "यह चचा जान हैं या अपने अन्दाज़े-बयान के एतबार से चच्ची जान, जरा अच्छी तरह ग़ौर कर लीजिये।"

बहरहाल नीलोफ़र बहुत ख़ुश थी कि रशीद भी उसके साथ लाहौर चल रहा है और शिहाब बडी प्यार की नज़रों से रशीद को देख-देख कर गौर कर रहा था कि किसी हमजिन्स को मिलाने के लिए क़ुदरत भी क्या-क्या इन्तेजाम करती है। रशीद अपने सफ़र की तैयारियाँ अब तक दर पर्दा कर रहा था अब उसने वह खुल्लम-खुल्ला शुरू कर दीं। मसलन अपने मैनेजर को बुला कर अहम कारोबारी मुआमलात समझाये, घर के मुताल्लिक जरूरी हिदायतें दीं, कुछ चाबियाँ खुद रखीं कुछ उसके हवाले कीं, न जाने किन-किन हिसाबात के चेक काटे और आखिर सब कुछ समझा-बुझा कर उससे कहा, "मुझे अभी खुद नहीं मालूम है कि वापसी कब तक होगी। एक बहन की मुहब्बत तो खींचे लिये जा रही है अब अल्लाह जाने माँ-बाप की मुहब्बत वहाँ कब तक गिरफ्तार रखे। बहरहाल मै हिदायत भेजता रहूँगा।"

रात का खाना खा कर ये सब रेलवे स्टेशन पहुँच गये और वहाँ रशीद ने अपने उन मुलजिमीन को मुन्तज़िर पाया जो दो फर्स्ट क्लास के डिब्बों में उन सबका सामान क़रीने से लगा कर और बिस्तर बिछा कर उनके मुन्तज़िर थे। वह मन्ज़र निहायत तकलीफ़देह था जब स्वालेह साहब और रफीक़ ने सब को गले लगा-लगा कर रुख़्सत किया और आखिर में नीलोफ़र के पास आ कर स्वालेह ने जेब से एक डिब्बा निकाल कर कहा—"बहन मैं भी आखिर आपका भाई हूँ। रशीद की तरह सगा न सही रिश्ते ही का सही यह कंगन अपने हाथ से इस भाई की तरफ़ से उस जहेज़ में रख दीजियेगा जो आप को दिया जाय।"

अर्जमन्द ने कहा, "यह ग़लत है। यह कंगन लेकर आप खुद आइयेगा। दे दो इनको नीली बहन!"

स्वालेह ने कहा, "मैं यह कब कह रहा हूँ कि मैं न आऊँगा मगर मेरी खुशी यही है कि यह तोहफ़ा इनके साथ जाय।"

नीलोफर ने कहा, "मैं अपने भैया की खुशी ज़रूर पूरी करूँगी। लाइये, तस्लीम।"

स्वालेह ने वाक़ई आबदीदा होकर उसके सर पर हाथ रखते हुए कहा, "जीती रहो।"

और उसी वक़्त इंजिन ने सीटी जो दी तो शिहाब, रशीद, अर्जमन्द और नीलोफ़र एक डिब्बे में और रियाज़ और फ़ारूक़ी दूसरे डिब्बे में चले गये और ट्रेन रवाना हो गई। रशीद और नीलोफ़र अपने लिए अपर बर्थ कुबूल कर चुके थे हालाँकि शिहाब का इसरार यह था कि नीलोफ़र नीचे की बर्थ पर रहेगी मगर उसने कहा :

"चूँकि आपने मुझको औरत समझ कर यह रिआयत दी है, लिहाज़ा मैं इसे हरगिज़ कुबूल न करूँगी।"

रशीद ने कहा, "और मुझे क्या समझ कर यह रिआयत दी जा रही थी?"

नीलोफ़र ने बर्जस्तगी से कहा, "औरत का भाई समझ कर।"

इस पर एक कहकहा पड़ा और देर तक सब रशीद को औरत का भाई कहते रहे। उसी वक़्त एक स्टेशन पर गाड़ी जो ठहरी तो फ़ारूक़ी और रियाज़ दोनों आ धमके और फ़ारूक़ी ने आते ही कहा, "क्या खूब यानी आप सब लेटे हुए हैं!"

अर्जमन्द ने कहा, "तो क्या आपके खयाल में वर्ज़िश करने का वक़्त है यह?"

फारूक़ी ने कहा, "कमाल है बखुदा आप लोगों का लेटना। हम तो लेटना नामुनासिब समझ कर आये है कि अगर बैठना ही है तो सब मिलकर बैठेंगे। आप लोगों ने इस ट्रेन का कुछ अन्दाज़ा नही किया कि यह चलती किस तरह से है—न शोले में यह करिश्मा न बर्क में यह अदा—यानी जुनूब से शुमाल की जानिब तो आप तशरीफ़ ले जा रही हैं मगर उसी के साथ-साथ थोड़ा-बहुत मगरिब से मशरिक़ की तरफ़ भी चल रही हैं, थोड़ा-बहुत ऊँचे-नीचे भी चल रही हैं वही मसल है कि :

जनाबे शैख़ का नक़्शे-क़दम यूं भी है और यूं भी ।"

संजीदा-से-संजीदा आदमी बैठा हुआ नृत करता नज़र आता है । यह बेचारे रियाज़ तो बखुदा फुदक रहे थे और जब लेट गये तो वही आलम कि—बड़ी सी तोंद थलथलहा—अब ज़रा मुलाहिज़ाफ़र्माइये इन हज़रत को फिर ।"

और अब जो सबने रियाज़ को देखा तो वाकई यह ट्रेन की अजीबो-ग़रीब जुम्बिशों में कुछ इस तरह मुतहर्रिक (हिलता) नज़र आये कि हँसी के मारे सबका बुरा हाल हो गया । वह जितना-जितना सँभलना चाहते थे उतनी ही उनकी जुम्बिशे मजहक (उपहासास्पद) होती जा रही थी । फ़ारूक़ी ने उनकी तरफ़ इशारा करते हुए कहा :

"बखुदा ज़रा ग़ौर से देखो यह, **'बिन पानी चला जाय रे बजरा'** की नृत है या नहीं ?"

सबका वाकई हँसते-हँसते बुरा हाल हो रहा था, ख़ुसूसन शिहाब के तो पेट में साँस ही नहीं समाती थी । उसने अपनी हँसी से खुद ही परेशान होकर कहा, "लिल्लाह रहम करो फ़ारूक़ी, अब नही हँसा जाता ।"

नीलोफर ने हँसी के मारे निकल आने वाले आँसुओ को पोछते हुए कहा "रियाज भाई, ज़रा खुद इन हज़रत को देखिये फारूकी भाई को ।"

फ़ारूकी ने कहा, "मुझे मालूम है कि मै भी किसी थर्ड क्लास मडवे के गेट पर नाचने वाला मस्ख़रा नज़र आ रहा हूँगा । ऐ सुभान अल्लाह ज़रा अर्ज-मन्द को देखिये किस क़द्र बारीक काम दिखा रहे है । भई साथ-ही-साथ गाते भी जाओ :

"राजा जानी न मारो नैनवा के तीर ।"

अब फिर सब पर हँसी का दौरा पड़ा और रफ़्ता-रफ़्ता यह कैफ़ियत हो गई कि सब एक-दूसरे को देखकर हंस रहे थे और यह कम्पार्टमेंट अ- ा-सा किसी पागलखाने का कमरा नज़र आरहा था । आखिर बमुश्किल तमाम नीलो-फ़र ने अपनी हँसी जब्त करते हुए कहा :

"खुदा के लिए रहम कीजिए सब ही की गत बनी हुई है । मुझे खुद शर्म आ रही है कि न जाने मैं क्या नज़र आ रही हूँगी । उम्मीद है कि फ़ारूक़ी भाई

मुझे तो अपने तब्सरे (आलोचना) से महफ़ूज़ ही रखेंगे। डर ही मालूम हो रहा है कि न जाने क्या कह दें।"

फ़ारूकी ने कहा, "आप की तरफ तो जितनी मर्तबा नज़र उठी है कठपुतली का तमाशा याद आ गया। मगर मैं यह कहता हूँ कि वाकई यह है क्या क़िस्सा ? आखिर दुनिया जहान में रेलें चलती देखी हैं मगर यह ई. बी. आर. तो अजीब चीज़ निकली।"

रशीद ने कहा, "कुछ तो वजह यह है कि जो फ्रेंच कोचेज़ आई हैं उनके अंजर-पंजर ढीले हैं कुछ यहाँ की ज़मीन भी इसकी ज़िम्मेदार है।"

शिहाब ने कहा, "वाकई कुछ अजीब डान्स, वर्जिश, और जम्नास्टिक का इम्तेजाज है। ट्रेन क्या है अच्छा-खासा रवां-दवाँ जल्जला है।"

अर्जमन्द ने कहा, "अच्छा ही हुआ कि हम लोग चटगाँव से बजरिये हवाई जहाज़ ढाका नहीं गये वर्ना यह तजुरबा कैसे होता ?"

रियाज़ ने नीलोफर से कहा, "आप इस ट्रेन में बैठकर सूई में धागा गालिबन न डाल सकें।"

फ़ारूकी ने कहा, "सूई में धागा ? मैं कहता हूँ आप कागज पर अपना नाम नहीं लिख सकते। मसलन अर्जमन्द अपना नाम लिखें तो वह किसी जानवर का बनेगा। कभी या तो अजवायन बन जायगा वर्ना अर्जुन सिंह।"

शिहाब ने कहा, "लीजिये गाड़ी ठहर रही है अब तशरीफ़ ले जाइये ताकि कुछ देर सब सो लें।"

फ़ारूकी ने फिर उसी हैरत से कहा, "सो लें ? क्या आपका खयाल है कि इस हरकत में जो बरकत है वह सोने भी देगी ?"

अर्जमन्द ने जबरदस्ती की, "फिर भी कुछ-न-कुछ तो आराम मिल ही जायगा, आप दफ़ा हों यहाँ से।"

आखिर रियाज़ जबरदस्ती फ़ारूक़ी को लेकर अपने कम्पार्टमेंट में चला गया और ये लोग बत्ती बुझाकर लेट गये ताकि एक-दूसरे की मज़हक हरकात न देख सकें। रात जू-तूँ बसर की और सुबह होते ही शिहाब चूंकि सबसे पहले बेदार हुआ था, लिहाज़ा वह मशरिक़ी पाकिस्तान के उन सरसब्ज़ मनाज़िर (दृश्यों) में गुम होकर रह गया जो नूरे-सहर (प्रातःकाल का उजाला) में कुछ

और भी दिलावेज़ नज़र आ रहे थे। शिहाब के बाद रशीद बेदार होकर और शिहाब को जागता हुआ देखकर उसी की बर्थ पर आ गया तो शिहाब ने कहा :

"मालूम यह होता है कि ज़मीन अपना सीना फाड़-फाड़कर सरसब्ज़ी और शादाबी के खज़ाने लुटा रही है। ऐसे घने जंगल और यह हरियाली मैंने कभी न देखी थी। हद यह है कि किसी एक दरख़्त की जहाँ से दो शाखें फूटी हैं उसी मुख़्तसर-सी जगह में कोई और बूटा फूट निकला है।"

रशीद ने कहा, "आपने इतनी शबनम भी कहीं और न देखी होगी।" उसी वक़्त अर्जमन्द की आवाज आई—"अस्सलाम-अलैकुम !"

शिहाब ने कहा, "व-अलैकुमस्सलाम ! मगर यह क्या नहूसत है कि दिन चढ़ गया है और पड़े-पड़े ऐंठ रहे हो ? ख़ुदा को याद नहीं करते तो ख़ुदा की क़ुदरत के मनाज़िर ही देख लो।"

एक छोटे-से स्टेशन पर गाड़ी के ठहरते ही रशीद के मुलाज़िम बिस्तर बाँधने के लिए आ पहुंचे और उनके साथ ही फ़ारूकी और रियाज़ भी आ गये। फ़ारूकी रात भर जागने और नाचने की रूदाद ले बैठे। मगर यह क़िस्सा इसलिए तूल न खींच सका कि रशीद के मुलाज़िमीन सबके लिए बिस्तर की चाय लेकर आ गए जिसमें थोड़ा-सा नाश्ता भी इस खयाल से था कि शायद क़यामगाह तक पहुँचते-पहुँचते देर हो जाय और ब्रेकफ़ास्ट देर में मिले। बहरहाल उन सबने हाथ-मुँह धोकर चाय पी और सब सामान बँधवा दिया इसलिए कि ढाका अब क़रीब ही था।"

५८

****

ढाका पहुँच कर रियाज़ से इस मुआमिले में थोडी सी झड़प भी हो गई कि वह चाहता था कि सब उसके यहाँ क़याम करें और ये सब शाहबाग़ होटल की ताईद में थे। आख़िर तय यही पाया कि क़याम के मुकाम से ज़्यादा मुक़द्दम (प्रथम) क़याम की मुद्दत का तय होना है। रियाज़ अब फिर मचला हुआ था कि कम-से कम तीन दिन तो यहाँ भी ठहरा जाय मगर अर्जमन्द और रशीद ने मिलकर उसको भी समझाया कि जो हालात लाहौर में हैं उनके पेशे-नज़र उनमें से किसी को यहां दिलचस्पी न होगी लिहाज़ा इस जब्र से कोई फ़ायदा नहीं। चुनांचे तय यह हो गया कि आज के दिन और आज की रात सब रियाज़ के यहाँ ठहरेंगे और कल जो हवाई जहाज़ जाता है उसी में सीट्स आज ही बुक करा ली जायें। कल दो बजकर चालीस मिनट पर तैयारा परवाज़ करेगा और शाम को साढ़े छः बजे लाहौर पहुँचेगा चुनांचे बादिले नाख़्वास्ता (न चाहते हुए) रियाज़ को सरे-तस्लीम ख़म करना (मान लेना) पड़ा और उसने फ़ारूक़ी से कहा :

"आपको शाहबाग़ होटल बहुत अज़ीज़ है, लिहाज़ा आज का डिनर वहीं होगा।"

शिहाब ने कहा, "यह ग़लत है जनाब। हम घर ही पर बिल्कुल घरेलू खाना खायेंगे और अगर आपने ज़रा भी तकल्लुफ़ किया तो···।"

रियाज़ ने जल्दी से कहा, "तो आप क्या करेंगे ?"

फ़ारुक़ी ने कहा, "तो मजबूरन पुरतकल्लुफ खाना ही खालेंगे।"

अर्जमन्द ने सबको समझाया, "देखो भई अब रियाज़ बेचारा हमारा कहना मान चुका है तो इस मुद्दत में हमको उसका हर कहना मानना पड़ेगा।"

रियाज़ ने अर्जमन्द की पीठ पर हाथ मारते हुए कहा, "शाबाश, ऐसे ही होते हैं फ़र्माबरदार बच्चे।"

रशीद ने कहा, पहले अपने घर चलिये ताकि हम वहाँ से टेलिफ़ोन करके सीट्स बुक करायें।"

रियाज़ ने अकड़ कर कहा, "क्या मतलब ? यानी आपको याद रखना चाहिए कि मैं यहाँ एस० पी० हूँ कोई घसियारा नही हूँ। यह सब कुछ हो जायगा बहम्दिल्ला काफी असर और रुसूख़ है, तशरीफ़ लाइये।"

चुनाँचे सबको मोटरों पर लेकर वह अपनी कोठी पहुँचा और उसके आदमियों ने मुख़्तलिफ़ कमरों में सब सामान पहुँचा कर रशीद के मुलाज़िमों की मदद से करीने से लगा दिया। इसके बाद सब नाश्ते की मेज़ पर आ गये और अभी ये लोग नाश्ते से फारिग़ होने भी न पाये थे कि एक सब इन्पेक्टर ने आकर बताया कि पाँच टिकट फ़र्स्ट क्लास के और दो टिकट टूरिस्ट के यहाँ तैयार रखे हैं हुक्म हो तो जाकर ले आऊँ।"

नीलोफ़र ने कहा, "मगर रशीद भाई टूरिस्ट के दो क्यों ? मुलाज़िम तो आपके चार हैं।"

रशीद ने कहा, "दो यहाँ से नारायन गंज जायेंगे।"

शिहाब ने कहा "मेरे ख़याल में तो दो के बजाय तुम चारों को नारायन गंज भेज दो। वहाँ भी तुम्हारी ख़िदमत के लिए मुलाज़िम आख़िर हैं ही।"

नीलोफ़र ने कहा, "नहीं नहीं, अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अपना ही आदमी काम कर सकता है। लीजिये रशीद भाई दो आदमी।"

शिहाब ने उठकर सब इन्सपैक्टर को कुछ नोट दिये ही थे कि रशीद रूठ गये कि यह मेरे साथ ज़्यादती हो रही है। मगर नीलोफ़र ने रशीद को समझा दिया कि आपको बहरहाल यह इत्मिनान रखना चाहिए कि अगर आपके साथ ज़्यादती हो रही होती तो आपकी यह बहन इस ज़्यादती को गवारा न करती। चुनाँचे सब इन्सपैक्टर के जाने के बाद अब रियाज़ ने आज का तफ़सीली प्रोग्राम सब को सुनाया :

"सुनिये साहब, अब प्रोग्राम यह है कि फ़िलहाल तो आप सब अपने-अपने कमरों में तशरीफ़ ले जायें मैं आपको एक घण्टा देता हूँ कि इस अर्से में बिल-

कुल तैयार हो जायें इसके बाद आपको ढाके की सैर कराई जायगी। मसलन बल्दा बाग और उसी के करीब एक शख्सी अजायब खाना है वह दिखाया जायगा। फिर यहाँ का ज़ेरे-तामीर स्टेडियम देखियेगा और भी जो क़ाबिले-दीद (देखने योग्य) मुकामात है उनकी सैर कीजियेगा। फिर गैररस्मी लंच है उसी जगह। इसके बाद आराम कीजिये और शाम को चाय के बाद गुलिस्तां सिनेमा में डाक्टर टैगोर की कहानी 'काबुली वाला' का फ़िल्म आपको दिखाया जायगा। मगर मैं साथ न रहूँगा इसलिए कि मुझे रात के खाने का एहतमाम करना है जो होटल शाह बाग में होगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "होटल में जो खाना होता है उसका एहतमाम भी आप ही बनफ़्से नफ़ीस (भली भाँति) करते है।"

रियाज़ ने कहा, "नही साहब, मुझे आखिर अपने चन्द दोस्तों से आप लोगों को मिलाना भी तो है। उनमे से किसी को खत लिखूँगा किसी को टेलिफ़ोन करूँगा, किसी को गाड़ी भेजूँगा। लिहाजा मुझे लंच के बाद से आप फ़ारिग़ कर दें।"

फ़ारूक़ी ने कहा, "साहब लंच के बाद से सिनेमा के वक़्त तक के लिए अगर आप हमें भी फ़ारिग़ कर दे तो बहुत अच्छा है। हम कुछ शापिंग भी करना चाहते है।"

रियाज़ ने कहा, "निहायत शौक़ से लंच के बाद से सिनेमा के वक़्त तक आपका जो जी चाहे करें।"

रशीद ने कहा, "इस अर्से में रियाज़ भाई की तरफ़ से मेज़बानी के फ़राइज़ मैं अन्जाम दूंगा। बहरहाल अब यह मजलिस ख़त्म कीजिये ताकि शेव वग़ैरा करके सब आदमियों की सूरत बन जाये।"

चुनांचे सब अपने-अपने कमरों में पहुँच गये और जो वक़्त उनको दिया गया था उसी के अन्दर तैयार होकर ढाके की सैर को निकल गये। बल्दा बाग़ ने नीलोफ़र को तो सचमुच पागल ही कर दिया। उसको ठहरा फूलों से इश्क़ और यहाँ फूलों की इतनी किस्में उसके सामने आईं कि वह तो जैसे चुंधियाकर रह गई। सिर्फ़ गुलाब ही की इतनी क़िस्में थीं कि उसका बे इख्तियार जी चाह रहा था कि अपनी कोठी के लिए यह सब नहीं तो कम-से-कम सियाह गुलाब,

चाँदी के रंग का वह गुलाब जो तक़रीबन गोभी का फूल नज़र आता था और वह जापानी गुलाब तो लेती ही जाय जो यहाँ न जाने क्यों उगा है, उसको तो चन्द्रगोना पेपर मिल में उगना चाहिए था। इसलिए कि बिल्कुल काग़ज़ का मालूम होता था। हर फूल कि खुशबू है न ताज़गी मगर हुस्न अपना गिर्वीदा (लुभाना) किये लेता है। मैदानी, पहाड़ी और दर्याइ हर क़िस्म के फूल उसने देखे। उसका तो जी ही न चाहता था यहाँ से जाने को मगर वक़्त कम था और चीज़ें बहुत सी देखना थी चुनांचे बल्दा बाग़ से ये सब क़रीब ही एक अजायब-ख़ाना देखने गये। फिर जेरे-तामीर स्टैडियम वग़ैरा देखते हुए बमुश्किल लँच के वक़्त रियाज़ की कोठी वापस आ सके। हर चन्द कि यह लंच ग़ैररस्मी और खामोश किस्म का लच था मगर इसमे भी काफ़ी तकल्लुफ़ से काम लिया गया था। लंच के बाद रियाज़ ने इन सबको शापिंग के लिए रवाना कर दिया और ख़ुद रात के खाने के लिए ज़रूरी इन्तेज़ामात करने को घर ही पर रहा। हर चन्द कि शापिंग की सबसे ज़्यादा फ़िक्र फ़ारूक़ी को थी मगर खरीदारी सबसे ज्यादा नीलोफर ने की। उसने इस मौक़े पर अपनी किसी सहेली को फ़रामोश (भूल जाना) नही किया। रुबी, सुरैया, बिरजीस, कौकब सब ही के लिए साड़ियाँ, दुपट्टे, हाथी दाँत की चूड़ियाँ और न जाने क्या-क्या ख़रीदा। अपनी वाल्दा और बिरजीस की वाल्दा के लिए भी मलमल के थान और साड़ियाँ ख़रीदी। ख़ुद शिहाब के और अपने वालिद के कुर्तों के लिए भी मलमल के थान खरीदे। हद यह है कि वह इस मौक़े पर मिर्ज़ा साहब को भी न भूली और मिर्ज़ा साहब तो-मिर्ज़ा-साहब उसने तो मिर्ज़ा साहब के अलावा महम्मद हुसैन, इकराम और अनीस के लिए भी तोहफे खरीदे और जब उसने एक शेरवानी का कपड़ा शिहाब के मुलाज़िम क़य्यूम के लिए ख़रीदा तो शिहाब को हैरत हो गई कि वह हर एक का कितना ख़याल रखती है। इधर वह यह तमाम सामान ख़रीद रही थी उधर रशीद ने दर्जनों साड़ियाँ, न जाने कितने दुपट्टे, ब्लाउज़ के टुकड़े और न जाने क्या-क्या ख़रीद डाला और जब नीलोफ़र ने पूछा कि यह आप आख़िर दूकान-की-दूकान क्यों ख़रीदे डालते हैं तो उसने कहा :

"भाई के घर से बहन ख़ाली हाथ नही जाया करती। माँ के पास बेटा

ख़ाली हाथ नहीं जाता ।"

नीलोफ़र ने इसको रशीद की ज़्यादती क़रार दिया मगर वह रशीद के लतीफ़ एहसासात से भी बेख़बर न थी । अगर टोका गया तो बुरा मान जायगा । लिहाज़ा दबी ज़बान से सिर्फ़ यह कहा कि, "मैं ज़िन्दगी भर आपसे तोहफ़े-तहाइफ़ लूंगी मगर आप तो शायद कपड़े का व्यापार कराना चाहते हैं मुझसे, एक-दो भी नहीं दर्जनों तो ये साड़ियाँ हैं और ये इतने बहुत से दुपट्टे क्या सारी ज़िन्दगी का बन्दोबस्त कर दिया है ।"

रशीद ने बड़े प्यार से उसको देखते हुए कहा, "मेरी दस-पाँच नहीं सिर्फ़ एक बहन है और सारी ज़िन्दगी के बाद अब बहन का अरमान पूरा कर रहा हूँ ।"

अर्जमन्द ने इस वक़्त निहायत बेहूदा-सी बात कही, "अरे भई रशीद, अपने दैरीना दोस्त अफ़ज़ल के लिए भी कुछ ख़रीद लो ।"

रशीद ने इसका कोई जवाब न दिया सिर्फ़ एक ऐसी निगाह अर्जमन्द पर डाली कि वह ख़ुद अपनी इस यावागोई पर शर्मसार हो गया और अपनी ख़रीदारी के हिसाब की तरफ़ मुतवज्जे हो गया । इस दुकान से लदे-फंदे ये लोग निकल कर बंगाल की मिठाई भी लाहौर में तक़्सीम करने के लिए न जाने कितनी ख़रीदते हुए रियाज़ की कोठी वापस आये और चूँकि वक़्त क़रीब था लिहाज़ा जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धोकर ताज़ा दम हुए और रात के खाने की इसी वक़्त तैयारी करके गुलिस्ताँ सिनेमा रवाना हो गये ।

'काबुली-वाला' बंगाली ज़ुबान का फ़िल्म था । डाक्टर टैगोर की कहानी सही मगर फ़िल्मसाज़ी के कुछ रिवायती तक़ाज़े भी बहरहाल होते हैं । मसलन कुछ नाच, कुछ गाने, शानदार सैटिंग, मेकप के एहतमाम वग़ैरा और यह फ़िल्म इन सबसे यक्सर ख़ाली था । गाना नदारद, नाच ग़ायब, न हुस्नो-इश्क़ के मुआमिलात, न कोई जिन्सी अपील । हीरोइन एक मासूम पाँच-छः साल की बच्ची और हीरो एक मुअम्मर पठान, मगर किस बला का असर था इस सादा मगर पुरकार (चालाक) फ़िल्म में कि सिनेमा-हाल के अंधेरे में ख़ुदा जाने पलकों से कितने सितारे टूटे और उसी अंधेरे में जज़्ब हो गये । फ़िल्म देख कर जब ये सब बाहर निकले हैं तो हर एक की आँख उस तास्सुर

(प्रभाव) की ग़म्माज़ी (चुग़ली) कर रही थी जो इस बंगाली फ़िल्म से इन सब ने क़ुबूल किया था हालाँकि इनमें से कोई बंगला न जानता था । मुकालमों में से कहीं-कहीं कुछ पल्ले पड़ गया हो तो दूसरी बात है वर्ना समझ में सिर्फ़ वही आया था जो आँखों ने देखा । सिनेमा-हाल से निकलने के बाद देर तक कोई किसी से कुछ न कह सका । आखिर शिहाब ने सिर्फ़ यह तब्सरा किया, "अगर मेरे इम्कान में हो तो साले-रवाँ (इस वर्ष) की बेहतरीन तस्वीर का इनाम इसी तस्वीर को दूँ ।"

नीलोफ़र ने कहा, "फ़िल्मसाज़ ने टैगोर की अज़्मत से तमस्ख़ुर (उपहास) नहीं किया है यही सबसे बड़ी बात है ।"

और इसी क़िस्म का तब्सरा करते हुए ये सब बजाय रियाज़ की कोठी के रियाज़ की हिदायत के मुताबिक़ बराहेरास्त शाह बाग़ होटल पहुँचा दिये गये जहाँ रियाज़ दरवाज़े पर खड़ा उनका इन्तेज़ार कर रहा था उसने बताया कि बाक़ी तमाम मेहमान आ चुके हैं सिर्फ़ आप ही का इन्तेज़ार था । चुनांचे इन लोगों को यह देख कर इन्तहाई ताज्जुब हुआ कि इस मुख़्तसर-से वक़्त में रियाज़ ने तक़रीबन साठ-सत्तर मेहमानों को यहाँ जमा कर दिया था जिनमें ढाके के हर शोब-ए-ज़िन्दगी (जीवन-क्षेत्र) के लोग मौजूद थे । रियाज़ ने इन सब का तारुफ़ उन मेहमानों से कराया और इसके बाद सब शाह बाग़ के उस वसी डाईनिंग हाल में पहुँच गये जहाँ इस वक़्त सिर्फ़ इसी पार्टी का इन्तेज़ाम था । बाक़ी इस होटल में खाना खाने वाले आज इस डाइनिंग हाल में न थे । ये शानदार डिनर तक़रीबन डेढ़ घण्टे तक जारी रहा और साढ़े ग्यारह बजे के क़रीब ये लोग कोठी वापस आ सके ।

५६

****

ढाके के हवाई अड्डे पर रियाज़ ने सब को बड़े खुलूस से रुखसत किया और नीलोफ़र को एक पैकेट देते हुए कहा :

"कितनी लाडली होती है वह बहन जिसके इतने भाई हों। यह भाई का हकीर तोहफ़ा है बहन के लिए।"

नीलोफ़र ने कहा, "मगर यह है क्या ?"

रियाज़ ने उसको खोलने से मना करते हुए कहा, "मेरी शर्म रखने के लिए इसे यहाँ न खोलिये, लाहौर पहुँच कर खुद देख लीजियेगा। बहरहाल इस तोहफ़े के मेयार (कसौटी) पर मेरा खुलूस न परखियेगा। मुझे न खुलूस का इज़हार आता है न मैं इतने खूबसूरत अलफ़ाज़ इस्तेमाल कर सकता हूँ कि आप पर उनका असर हो, अलबत्ता यह बताए देता हूँ कि मेरे दिल में एक बहन की मुहब्बत आप जगा कर जा रही हैं।"

नीलोफर ने कहा, "कितनी खुशनसीब हूँ मैं कि मेरे चाहने वाले इतने भाई मौजूद हैं। खुदा इन सब को मेरे लिए सलामत रखे।"

चूंकि जहाज़ में सवार होने के लिए सब बढ़ रहे थे लिहाज़ा रियाज़ ने उस को भी रुखसत कर दिया और वह रियाज़ को सलाम करके उसका दिया हुआ पैकेट हाथ में लिये सबके साथ जहाज़ पर सवार हो गई।

जिस वक़्त तैयारा उस सतह पर पहुँच गया जब हिफ़ाजती पेटियाँ खोल दी जाती है तो नीलोफ़र ने उस पैकेट को खोल कर देखा। एक निहायत क़ीमती बनारसी काम की साड़ी और एक जदीद तर्ज़ की चूड़ी घड़ी थी। इस तोहफ़े को सिवाय फ़ारूक़ी के सब ही ने देखा। फ़ारूक़ी साहब हस्बे-मामूल आँखें बन्द किये अपनी नशस्त को दोनों हाथों से थामे दम बखुद पड़े हुए थे।

अर्जमन्द ने उस तोहफ़े को देख कर कहा :

"मुझे सबसे ज़्यादा ताज्जुब रियाज़ पर है इसलिए कि उस बेचारे से हमारे न कोई मरासिम, न कभी की जान पहचान मगर हद ही कर दी इस शरीफ़ आदमी ने।"

शिहाब ने फ़ारूक़ी की तरफ़ इशारा किया, "और इस शरीफ़ आदमी के मुताल्लिक़ क्या राय है ?"

नीलोफ़र ने भी उसको गौर से देख कर कहा, "अरे यह क्या ? कमाल कर दिया फ़ारूकी भाई आपने भी। सचमुच क्या आप डरते है हवाई जहाज़ पर ?"

फ़ारूकी ने उसी तरह आँखें बन्द किये किये कहा, "डर नहीं, चक्कर।"

नीलोफ़र ने कहा, "आँखें खोलिये यह चक्कर अभी रफ़ू चक्कर हो जायगा। आप अपनी जान को हम सबकी जानों से आखिर इतना क़ीमती क्यों समझते हैं ?"

मुख़्तसर यह कि इन सबने ज़बरदस्ती फ़ारूकी को उठा कर बैठा दिया और वाक़ई इतने साफ़ मौसम में जिस गैर महसूस तौर पर तैयारा पर्वाज़ कर रहा था उसके बाद फ़ारूकी का इस फज़ाई अलालत में ज़बरदस्ती मुब्तला हो जाना था भी बे महल। न हिचकोले थे न डुबकियाँ, अपनी एक सतह पर निहायत तवाज़ुन के साथ तैयारा पर्वाज़ कर रहा था। फ़ारुक़ी को ज़बरदस्ती बैठाने और उसकी आँखें खुलवाने के बाद नीलोफ़र ने उससे कहा, "ज़रा खिड़की से नीचे तो देखिए और अपनी बुलन्दी का अन्दाज़ा तो कीजिए।"

फ़ारुकी ने बड़ी संजीदगी से कहा, "बस यह न कहिएगा मुझसे। मैंने नीचे देखा और आया मुझे चक्कर।"

इसी तरह तमाम रास्ते नीलोफर और बाकी तमाम लोग बेचारे फ़ारूक़ी को छोड़ते हुए लाहौर के क़रीब आ गए। दिल्ली गुज़री उसने न देखा, लखनऊ गुज़रा उसने न देखा वह तो बखत्ते-मुस्तक़ीम (सरल रेखा के साथ) अपनी नशस्त के बाज़ू मजबूती से थामे बैठा रहा और उन लोगों की बे जिगरी पर ताज्जुब करता रहा जो इस पर्वाज़ करते हुए तैयारे में अपनी जगह से उठकर ग़्सलखाने तक चले जाते हैं। आखिर जब तैयारे के लाउड स्पीकर पर यह

एलान हुआ कि, 'आप लाहौर के हवाई अड्डे पर उतरने के लिए अपनी हिफ़ाज़ती पेटियाँ बाँध लीजिए' तो उसकी जान-में-जान आई।

हवाई अड्डे पर उनका इस्तक़बाल करने के लिए सिर्फ़ डाक्टर साहब ही नहीं बल्कि पूरा मजमा था। रुबी, सुरैया, बिरजीस, कौकब, आफ़ाक़ साहब बिलकीस बेगम, अनीस, मिर्ज़ा साहब, हद यह है कि बेगम साहबा भी और शेखूपुरे से इकराम तक आ गया था। चुनाँचे जैसे ही ये लोग हवाई जहाज़ से उतर कर हवाई अड्डे की बसों पर सवार होकर हवाई अड्डे के कस्टम आफ़िस तक पहुँचकर उतरे हैं सब से पहले डाक्टर साहब ने लपक कर नीलोफ़र को चिमटा लिया और लगे बच्चो की तरह रोने, उनकी मूछों पर इस वक़्त भी ताव था मगर इस ताव पर ये आँसू और यह रोनी सूरत कुछ अजीब बेजोड़-सी नज़र आ रही थी। बेगम साहबा के लिए हरचन्द कि आराम कुर्सी बिछा दी गई थी मगर वह इस वक़्त ख़ाली थी और बेगम साहबा बग़ैर नीलोफ़र से मिले ही ज़ारो-क़तार रो रही थीं आखिर डाक्टर साहब को अपनी खुद-गर्ज़ी का एहसास हुआ और उन्होंने नीलोफ़र को बेगम साहबा की आग़ोश (गोद) में दे दिया और खुद शिहाब से चिपट गये। फ़ारुकी और अर्जमन्द ने इस किस्से को तवील समझकर कस्टम आफ़िस का रुख किया ताकि वहाँ से जल्द छुटकारा हो सके। मगर अफ़सोस है कि उन्होंने यह तमाशा नहीं देखा कि मिर्ज़ा साहब हवाई अड्डे ही पर तेल माश लेकर आये थे चुनाँचे नीलोफ़र से कहा कि, "बेटी ज़रा इस तेल के प्याले में अपनी शक्ल देख लो और इन माशों पर हाथ रख दो, मैं इस सदक़े का बेहद क़ायल हूँ।"

नीलोफ़र इस इर्शाद की तामील करने के बाद अपनी सहेलियों की तरफ़ बढ़ी और एक-एक से खूब चिमट-चिमट कर मिली। फिर आफ़ाक़ साहब और बिलक़ीस बेगम ने उसको घेर लिया। मुख्तसर यह कि उसको कभी कोई और कभी कोई अपनी तरफ़ घसीट लेता था। आखिर अर्जमन्द और फ़ारुक़ी कस्टम से निजात हासिल करके आ गये और सामान गाड़ियों पर रखवा दिया गया तो सब एक बाकायदा बरात के जुलूस की शक्ल में डाक्टर साहब की कोठी की तरफ़ रवाना हुए।

डाक्टर साहब की कोठी भी आज दुल्हन की तरह सजी हुई थी। चराग़ाँ

का बाकायदा एहतमाम था । जब अर्जमन्द ने इस एहतमाम पर ताज्जुब का इज़हार किया तो डाक्टर साहब ने बड़ी शाइराना बात कही,"मियाँ इस घर को बे चराग कर देने की साजिश हुई थी। यह चरागाँ इसीलिये है कि यह साज़िश खुदा के फ़ज़्ल से और तुम सबकी कोशिशों से नाकाम रही । यह सब कुछ मियाँ शिहाब के मुलाज़िम क़य्यूम ने एहतमाम किया है ।"

जब सब-के-सब बैठ गये और शर्बत वगैरा पीकर सबके हवास दुरुस्त हुए तो डाक्टर साहब की नज़र एकदम रशीद पर पड़ी, "जनाब की तारीफ़ ?"

नीलोफ़र ने रशीद को आँख से इशारा करके कहा, "डैडी यही तो हैं अफ़ज़ल के दोस्त जो मुझको भंग पिलाकर यहाँ से ले गए थे ।"

डाक्टर साहब ने गुस्से से बल खाकर कहा, "अच्छा तो गोया गिरफ़्तार होकर आया है यह बद ।"

शिहाब ने एक चीख मार कर कहा, "अरे अरे, इनको कुछ न कहियेगा वर्ना नीली अभी खफ़ा हो जायेंगी आप से ।"

और नीली ने वाकई अपनी कुर्सी से उठकर रशीद की कुर्सी के हत्थे पर बैठते हुए कहा, "वाह इतने तो अच्छे हैं यह, आप इनको...।"

डाक्टर साहब ने कड़क कर कहा, "नीली हट जाओ वहाँ से ! मैं यह दीदादिलेरी बर्दाश्त नहीं कर सकता । समझ लूंगा तुम पैदा ही नहीं हुई थीं ।"

नीलोफ़र ने कहा, "और जो मैं आपके लिए एक बेटा और अपने लिए एक भाई पैदा कर दूं तो ?"

मिर्ज़ा साहब की एक गोशे से आवाज़ आई, "भई यह किस क़िस्म की भंग पिलाई गई थी जिसका असर अब तक है ?"

इस पर सबके फ़लक शिग़ाफ़ (गगन भेदी) क़हक़हे से डाक्टर साहब भी चौंक पड़े और अब शिहाब ने निहायत तफ़सील से सारा वाक़िआ सुना कर रशीद का सबसे तारुर्फ़ कराया तो डाक्टर साहब की बाछें खिल गईं और दौड़े रशीद की तरफ़, "वाक़ई यह तो अल्लाह ताला ने बैठे-बिठाए एक बेटा भी अता कर दिया ।"

और यह कह कर रशीद को गले से लगा लिया फिर गले से लगाए बेगम साहबा के पास लाये कि, "लो सबसे ज्यादा तुम ही को अरमान था औलादे

नरीना (पुत्र) का उसके यहाँ देर है अन्धेर नहीं ।"

रशीद को बेगम साहबा ने भी मुहब्बत से चुमकारा और अपने पास ही बैठा लिया । अब सब-के-सब बेकरार थे कि इस तमाम किस्से की तफ़सीलात बयान हों चुनाँचे शिहाब ने कहा, "यह तमाम तफ़सीलात सिर्फ रशीद भाई सुना सकते हैं उन्ही से सुनिये ।"

डाक्टर साहब ने बडी मुहब्बत से रशीद को देखते हुए कहा, "हाँ बेटे, तुम से ज्यादा मोतबर रावी (वर्णन करने वाला) और कौन हो सकता है ?"

अब रशीद ने अपने और अफ़जल के ताल्लुकात से लेकर इस वक़्त तक के तमाम हालात पर इस तफसील और तसल्सुल से रोशनी डाली कि जो तश्नगी सब महसूस कर रहे थे वह दूर हो गई । आफ़ाक साहब ने सारी दास्तान सुन कर कहा :

"इस तमाम दास्तान का हासिल सिर्फ यह है कि हमारी बेटी है क़िस्मत की धनी कि उसको क़ज़्जाक (डाकू) भी मिला तो रशीद मियाँ जैसा फ़रिश्ता ।"

डाक्टर साहब ने कहा, "यह तो किस्मत की धनी है ही मगर हमारी नसीबावरी देखिये कि हमको न सिर्फ़ नीली सही सलामत मिली बल्कि अपने साथ एक भाई भी लाई ।"

और फिर यकायक संजीदा होकर बोले, "आफ़ाक मियाँ, आज मैं आपसे कहता हूँ कि इस अर्से में मैने सिर्फ़ यह दुआ की है कि इलाहुल आलमीन (समस्त संसारों के ईश्वर) अगर मेरी नीली अपनी इज्ज़तो-आब्रू के साथ सलामत है तो उसको बिछड़े हुए बाप से मिला दे और अगर उसकी आब्रू जब्रो-इस्तब्दाद की नज्र हो चुकी है तो मुझे सब्र दे कि मैं अपनी उस ज़िन्दा बेटी के लिए न तडपूं । ईमान की बात तो यह है कि मैं तो समझ चुका था कि मेरे घर का चिराग गुल हो गया ।"

मिर्ज़ा साहब फिर बोले, "**फूंकों से यह चिराग बुझाया न जायगा ।**"

डाक्टर साहब ने चिढ़ कर कहा, "ख़ैर,ख़ैर । निहायत बे महल था यह मिसरा । तो मैं यह अर्ज़ क़र रहा था कि...।"

बेगम साहबा ने टोका, "अब आप अर्ज़ ही करते रहेंगे या खाना भी

लगवायेंगे । ये बेचारे थके-हारे आये हैं ।"

मिर्ज़ा साहब ने नुक्ता निकाला, "थके हुए तो बेशक है मगर हारे हुए हर्गिज़ नही है बल्कि जीते हुए आये है ।"

आफाक साहब ने दाद दी, "क्या बात पैदा की है मिर्ज़ा साहब ! मुद्दत के बाद आज आपको भी चहकना नसीब हुआ है ।"

डाक्टर साहब ने अनीस की तरफ़ इशारा किया, "मियाँ खाना लगाने के लिए जरा कह दो और ज़रा देख लो कि सब ठीक है ?"

फ़ारूकी ने कहा, "अफसोस यह है कि इस वक़्त फ़रीद नही है ।"

डाक्टर साहब ने बड़ी किरअत* से कहा, "लाहौल वला कूव्वत ! किस मर्दूद नमकहराम का ज़िक्र किया है तुम ने भी । हवालात में आराम फ़र्मा रहे होंगे हुजूर ।"

और इसी किस्म की बातें करते ये सब लोग खाने की मेज पर आ गए जहाँ वाकई दावत का-सा एहतमाम था ।

६०

****

रात को और सब तो रुखसत हो गए थे मगर नीलोफर ने अपनी सब सहेलियों को रोक लिया था जिनसे वह इतने दिनों के बाद मिली थी । चुनांचे ये सब सहेलियाँ न जाने किस वक़्त तक जागती रहीं और उसके बाद सब नीलोफ़र के कमरे ही में बग़ैर किसी तकल्लुफ़ के कालीन ही पर उल्टे-सीधे कुशन रख कर लोट लगा गईं । सुबह नाश्ते के लिए उनको कई मर्तबा बैरा

* एक विशेष लय से क़ुरान पढ़ना ।

देखने आया मगर सब सो रही थीं और डाक्टर साहब की हिदायत यह थी कि उनको तफ़सील से सो लेना चाहिए इसलिए कि रात गए तक उन सबके जागने का उनको इल्म था।

आख़िर सबसे पहले रुबी उठी और उसने घड़ी देखकर जब नौ पर सुई देखी तो एक-एक को झंझोड़-झंझोड़ कर और गुदगुदा कर जगाना शुरू कर दिया और जब सब को जगा लिया तो तय यही पाया कि बजाय डाइनिग रूम में जाने के नाश्ता वही मंगा लिया जाय ताकि नाश्ते से फारिग हो कर सब इत्मिनान से तैयार होकर बाहर निकलें। बैरे को नाश्ता लाने की हिदायत करके रुबी ने कहा :

"हाँ भई कौकब अब कहो क्या कह रही थी ? मैंने बैरे के सामने इसलिए मना कर दिया था कि तुम ठहरीं बे लगाम न जाने क्या बक जाओ।"

कौकब ने कहा, "मैं तो नीली से सिर्फ़ यह तफ़सीलात सुनना चाहती हूँ कि शिहाब भाई से बड़ी तफसीली मुलाक़ातें रही होंगी। अल्लाह जाने क्या-क्या अहदो-पैमान हुए होंगे। भई सब नहीं तो कुछ ही हम को बता दें।"

नीलोफ़र ने कहा, "देखिये साहबज़ादी ! एक बात मैं हमेशा के लिए आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किये देती हूँ कि हम दोनों में से कोई भी ऐसा छिछोरा नहीं है और हम दोनों में से किसी से भी इस कमज़र्फ़ी की उम्मीद आप न रखिये कि हम बाज़ारी क़िस्म की ये हरकतें कभी कर सकते है।"

बिरजीस ने कहा, "तौबा है भई। यह मतलब न था कौकब का। पूछा तो यह जा रहा है कि इस सफ़रे-वसीलतुज़्ज़फ़र* में आप दोनों एक दूसरे के किस क़द्र करीब आये ?"

सब ने ताईद की कि हाँ यही पूछना मकसद है। दर असल सबके तेवर ये नज़र आ रहे थे कि नीलोफ़र को सब मिल कर परेशान करें और नीलोफ़र यह महसूस कर चुकी थी कि इस साज़िश में सब शरीक हैं। यह सिलसिला दर-असल रात ही से शुरू हो चुका था जो इस वक़्त इस अंदाज़ से जारी था। आख़िर नीलोफ़र ने ढिठाई से कहा, "बात दर असल यह है कि शिहाब भी एक शरीफ़ ज़ादा है और मैं भी एक शरीफ़ खान्दान की लड़की हूँ···।"

---

* ऐसी यात्रा जो किसी सफलता का कारण बने।

रुबी ने बात काटी, "हम आप दोनों का शजर-ए-नसब (वंश-वृक्ष) नहीं बल्कि कुछ वाक़ियात मालूम करना चाहते हैं।"

नीलोफ़र ने आजिज़ आ कर कहा, "शजर-ए-नसब की बच्ची मेरी पूरी बात तो सुन ले। वाक़िआ सिर्फ़ यह है कि हम दोनों एक-दूसरे का इस क़द्र एहतराम करते है कि···"

सुरैया ने दाँतों में उँगली दबा कर कहा, "हाय मेरे अल्लाह एहतराम ! यानी तुम उनको कुछ क़िब्ला व काबा वग़ैरा कहने लगी हो या वह तुमको कुछ मद्दे ज़िल्लहू (श्रद्धेय) वगैरा समझने लगे है ?"

रुबी ने संजीदगी से कहा, "न न न। एहतराम से मतलब यह है कि एक-दूसरे को देखकर ताज़ीमन (सम्मान हेतु) खड़े हो जाते हैं। क्यों भई नीली झूठ तो नहीं कहती मैं ?"

नीलोफ़र ने कहा, "ठहर जा काफ़िर फ़िरंगन तू भी, मैंने तेरा भी इन्तेज़ाम कर लिया है।"

बिरजीस ने कहा, "मेरी बहनो ग़ौर करो—तेरा भी इन्तेजाम कर लिया है—इसमें लफ़्ज़ 'भी' काबिले-गौर है। यानी मेरा तो इन्तेज़ाम हो ही चुका है या यह कि मैंने अपना तो इन्तेज़ाम कर ही लिया है मगर तेरा भी इन्तेज़ाम कर लिया है।"

सुरैया ने जल्दी से कहा, "ख़ुदा के लिए ज़रा तालू से ज़बान तो लगाओ। पहले वह इन्तेज़ाम तो सुन लो जो रुबी के लिए किया गया है। रुबी बेचारी खुद भी इसी इनकिशाफ़ की मुन्तज़िर है।"

रुबी ने कहा, "अपनी क़िस्मत का फ़ैसला सुनने के लिए मैं खुद बेक़रार हूँ।"

नीलोफ़र ने कहा, "मेरे रशीद भैया को देखा है ?"

सिवाय रुबी के सबने तालियाँ बजाकर इस इन्तेख़ाब की ताईद की, मगर रुबी ने कहा :

"देखो भई मुझसे इस क़िस्म का मज़ाक न किया करो। फ़रीद सल्लमह के साथ मेरा मज़ाक़ उड़वा कर उसे हवालात भिजवा चुकी हो अब दूसरी दिल्लगी सूझी।"

नीलोफ़र ने संजीदगी से कहा, "अल्लाह जानता है कि मैं बिल्कुल दिल्लगी नहीं कर रही हूँ।" रशीद भैया से जब मैं बहन की हैसियत से मिली हूँ और उनकी जिन्दगी का मैंने मुतालिया किया है उसी वक़्त उनके साथ तुम्हारा तसव्वुर मेरे जहन में आया था।"

रुबी ने कुछ गौर करते हुए कहा, "खैर बुरे तो नहीं हैं वह बेचारे मगर आख़िर उनसे कौन सी खता हुई है जिसकी यह सज़ा तजवीज़ हो रही है ?"

कौकब ने कहा, "बहनो होशियार ! इस चालाक लड़की ने एक दूसरा ही किस्सा छेड़कर अपना किस्सा गोल करने की कामियाब चाल चली है।"

सुरैया ने भी बडे खतीबाना (प्रवक्ता के-से) अन्दाज से कहा, "वाकई :

दौड़ो ज़माना चाल क़यामत की चल गया।"

कौकब ने कहा, "हम इस मसले पर भी संजीदगी से गौर करेंगे मगर पहले मुसम्मात नीली बिन्त (पुत्री) डाक्टर लतीफ़ी साकिने-शहरे-लाहौर अपने हालात और वाक़िआत से कतराने की कोशिश न करें।"

नीलोफ़र ने बडी बेसाख्तगी से कहा, "ज़रा देखो तो सही इस अदालत की बच्ची को। सवाल यह है कि मैं आख़िर क्या वाक़िआत सुनाऊँ ? जिस वक़्त ये तीनों कॉक्स बाज़ार के रेस्ट हाउस में मुझे मिले हैं मैंने उन हज़रत को कुछ ऐसा देखा जैसे नसीबे-दुश्मनाँ (शत्रुओं के भाग्य) न जाने कब के बीमार हों और मुझको उस वक़्त उनके चेहरे पर ज़रा रौनक-सी नज़र आई जब मैंने रशीद भाई का तफ़सीली तार्रुफ़ उनसे कराया।"

रुबी ने कहा, "जी हाँ :

उनके देखे से जो आ जाती है मुंह पर रौनक़
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।"

नीलोफ़र ने हाथ जोड कर कहा, "बाबा हम एतराफ़ कर चुके हैं कि इस मेम ने न सिर्फ़ हमारी ज़ुबान पर उबूर (पूरी जानकारी) हासिल कर लिया है बल्कि हम सबसे ज्यादा घटिया और बढ़िया हर क़िस्म के अशआर भी याद हैं। इस एतराफ़ के बाद आख़िर हमको बात-बात पर शेर क्यों सुनाये जाते हैं।"

कौकब ने कहा, "बयान जारी रहे।"

नीलोफ़र ने कहा, "जी बहुत अच्छा। मैं यह अर्ज़ कर रही थी कि इतने ही दिनों में इन हज़रत ने अपनी सेहत जिस हद तक खोई थी उसका एक ही नज़र में मुझको अन्दाज़ा हो गया था मगर मैंने देखा कि यह हज़रत अपने को बहुत लिये-दिये हैं। न किसी बेताबी का इज़हार कर रहे हैं, न बज़ाहिर मुझसे कुछ पूछ रहे हैं मगर कैफ़ियत वही है कि :

पुर्सिश है और पा-ए-सुख़न दर्मियाँ नहीं।"

रुबी ने टोका, "अब तुमने मिसरा क्यों पढ़ा ?"

नीलोफर ने रवानी में कहा, "मैं माफ़ी चाहती हूँ। बहरहाल मुझको उन बेचारे की यह बेबसी देखकर तरस आने लगा और उसी रात जब हम सब चौदहवीं के चाँद में समुन्दर की लहरों का इज़्तराब देखकर वापस आ रहे थे मैंने खुद उन हजरत से कहा, 'यह जनाब ने हुलिया क्या बना रखा है ?' यह सुनकर वह कुछ सटपटा गये और जल्दी से बात खत्म करने के लिए कहा कि, 'अब ठीक हो जाऊँगा।' भई, मुझसे क़सम ले लो जो इसके अलावा मुझसे कोई और बात इस सफ़र में इस किस्म की उनसे हुई हो।"

कौकब ने तेवरियों पर बल डालकर कहा, "इस क़िस्म की से क्या मुराद है ?"

नीलोफ़र ने कहा, "इस किस्म की से मुराद है तेरा सर।"

कौकब ने फर्श पर हाथ मार कर कहा, "आर्डर ! आर्डर ! मुल्ज़िमा को चाहिए कि आदाबे-अदालत का खयाल रखे।"

नीलोफ़र ने उस पर हमला करते हुए कहा, "ऐसी अदालत का इलाज यह है।" और ऐसी गुदगुदी शुरू की है कि वह तड़पने लगी और हाथ जोड़-जोड़ कर माफ़ी माँगने लगी और जब उसको छोड़ दिया गया तो उसने सँभल कर कहा :

"अच्छा साहब अब मुझसे सुनिये कि क्या हुआ होगा। यह ठीक है कि सब कुछ अल्फ़ाज़ में नहीं कहा जाता मगर जब कॉक्स बाज़ार में एक ने दूसरे को देखा होगा तो देर तक निगाहें गले मिली होंगी। देर तक इनको सिवाय शिहाब भाई के और कोई नज़र न आया होगा और शिहाब भाई को भी इस चाँद से मुखड़े को घेरे हुए सितारे सुझाई न दिये होंगे। इसके बाद निगाहों-ही-

निगाहों में इन भोली बेगम ने अपने दिले-बेक़रार को तसल्लियाँ दी होंगी कि मैं तेरी ही थी, तेरी ही रही और तेरी ही हूँ।"

नीलोफ़र ने कहा, "तौबा है तुझ से भी, ये बातें आखिर सीखी कहाँ से हैं ?"

रुबी ने कहा, "बहन, मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखाता है ?"

बिरजीस ने अब इस ज़िक्र से कुछ उलझ कर कहा, "खैर छोड़ो इस क़िस्से को बहरहाल यह तय है कि इस सफ़र ने इन दोनों को और भी एक-दूसरे से क़रीब कर दिया होगा।"

नीलोफ़र ने कहा, "आपके इत्मिनान के लिए अर्ज यह करना है कि हम दोनों इस सफ़र से पहले भी एक-दूसरे से दूर न थे। बे-हया कहीं की अब तो ठंडक पड़ गई कलेजे में मुझ से यह बेहयाई करा के..."

इसी वक़्त बैरे ने नाश्ता लाकर लगाते हुए कहा, "साहब ने फ़र्माया है कि आप सब नाश्ता करके जरा जल्दी से तैयार हो जायें।"

रुबी ने कहा, "क्यों क्या कोई खास बात है ?"

बैरे ने कहा, "पता नहीं, मुझे हुक्म बस यह मिला है कि रात को कोई जल्सा है कोठी मे सौ-सवासौ मेहमानों के लिए छः कोर्स का डिनर तैयार किया जाय।"

नीलोफ़र ने उठते हुए कहा, "बस यही बातें मुझको बुरी लगती है, पूछ तो लिया होता मुझ से। डिनर की मैं मुख़ालिफ़ नही हूँ मगर मेरे ज़हन में कुछ और ही सूरत थी।" और यह कहती हुई वह बाहर निकल गई। यहाँ इन सबने पहले तो उसका इन्तेज़ार किया और उसके बाद नाश्ता शुरू कर दिया। मगर वह खिलाफ़े-उम्मीद जल्द ही निहायत बश्शाश वापस आकर बोली, "शुक्र है कि जिस गड़बड़ का मुझे खयाल था वह न होने पाई। डैडी ने तो खैर मेरे वापस आने की खुशी ही में जैसा कि मैं समझ रही थी डिनर का इन्तेज़ाम कर डाला था मगर शिहाब साहब ने बात बना दी और यह डिनर रशीद भाई के ऐज़ाज़ में करवा दिया।"

रुबी ने कहा, "इसी को कहते हैं दिल को दिल से राह होती है।"

नीलोफ़र ने कहा, "जी हाँ होती तो है राह, फिर आपका इजारा ? नाश्ता

करो तमीज़ से बैठ कर।"

और नाश्ते से जल्द ही फ़ारिग़ होकर ये सब कंघी-चोटी मे मसरूफ़ हो गईं ताकि बाहर निकलने के क़ाबिल बन सकें।"

६१

****

डाक्टर साहब की कोठी सजी हुई तो ख़ैर कल भी थी मगर आज की बात ही कुछ और थी। रंग-रंग के बर्की-कुमकुमों से कोठी के दरो-दीवार के अलावा पाईं बाग़ का हर पेड़ इस तरह जगमगा रहा था गोया यह सब उन्हीं दरख्शाँ फलों के शजर (वृक्ष) हैं। कोठी के बड़े लान के बीचों-बीच जो हौज़ था उसमें भी रंगा-रंग क़ुमक़ुमे इस तरह लगाए गए थे कि फ़ौवारा गोया कौसे-क़ज़ह (धनक) का चश्मा (स्रोत) नज़र आता था। यह एहतमाम शिहाब ने ख़ुद अपनी निगरानी में कराया था। इस चराग़ाँ के अलावा वैसे भी तकल्लुफ़ात की हद का अन्दाज़ा इसी से हो सकता है कि इस लान में दाख़ले के लिये चार निहायत हसीनो-जमील फाटक बनाए गए थे जिन पर महकते हुए बेले और चम्बेली के फूलों की चिल्मनें पड़ी हुई थी और मेहमान इन्हीं फूलों की लड़ियों को हटा कर अन्दर आते थे। एक दूसरे लान पर पुलिस-बैंड था जिसके सुरीले और वज्द-आफ़रीं जमज़मे (मनमोहक गीत) इस फ़ज़ा-ए-रंगो-बू को मूसीक़ी से मामूर (भरपूर) किये देते थे। इस तक़रीब के दूल्हा की हैसियत रशीद को हासिल थी जिनके ऐज़ाज़ में यह इशाइया (रात का खाना) दिया गया था। चुनाँचे डाक्टर लतीफ़ी अपने तमाम मेहमानों से रशीद को मिलाते फिरते थे कि, "यह हैं रशीद जिनको मैं बहैसियत खल्फ़ुर्रशीद (सुपुत्र) के आप

से मिला रहा हूँ।" यह इज्तमाअ था तो तक़रीबन डेढ़ सौ अफ़राद का जिनमें खवातीन व हज़रात सब शामिल थे मगर इसी तादाद में लाहौर के हर ऊँचे तब्के की नुमाइंदगी हो गई थी और शायद ही शहर का कोई काबिले-ज़िक्र आदमी ऐसा हो जो यहाँ नजर न आ रहा हो। मर्दों की अक्सरियत (बहुमत) डिनर जैकेट या सियाह शेरवानियों में नजर आ रही थी और खवातीन का तो यह आलम था कि किसी के आँचल से कहकशाँ (सप्तर्षि) लिपटी जा रही थी तो किसी का दामन निज़ामे-शम्सी को तहोबाला (उलट-पुलट) किए देता था। और-तो-और खुद मेजबानों के ठाट भी आज देखने के काबिल थे। हद यह है कि शिहाब तक ने आज डिनर जैकेट मे पूरे एहतमाम के साथ अपने को पेश किया था। चुनाँचे लड़कियों के इज्तमाअ में इस वक़्त वही मौजू-ए-बहस (वाद-विवाद का विषय) बना हुआ था और रुबी उस पर तब्सरा कर रही थी।

"मैं शिहाब भाई की जामा ज़ेबी (वस्त्र-फबन) की तो हमेशा से कायल हूँ मगर मेरी आँखों में खाक डिनर जैकेट में तो वह फूटे निकलते है।"

नीलोफ़र ने शरारत से कहा, "ज़रा अपनी एड़ी की खाक चाट लो थोड़ी-सी और अगर यह इसलिए कहा है कि मैं रशीद भाई की सियाह शेरवानी और चूड़ीदार पाजामे पर एक क़सीदा सुना दूं तो साफ क्यों नहीं कहती ?"

रुबी ने कहा, "भई ईमान की बात तो यह है कि जवाब उनका भी नहीं है। बस अब तो खुश हो गईं। ज़रा देखना बिरजीस हमारे अर्जमन्द भैया क्या किसी से कम हैं ? जी चाहता है अभी काला दाना उतरवा दूं उन पर से। आज मैंने इनको भी पहली मर्तबा डिनर जैकेट में देखा है।"

सुरैया ने गोया बुरा मान कर न जाने कैसे तेवरियों पर बल डाल कर कहा, "क्यों भई मेरे वाले ने क्या गुनाह किया है जिसकी छब का कोई ज़िक्र ही नहीं। खाक चाट कर कहती हूँ सारी महफ़िल में ऐसा बाँका, छबीला, रसीला एक भी नहीं है।"

चुनांचे सबकी नज़रें एक साथ अनीस पर पड़ीं जो वाकई सियाह शेरवानी पर तिर्छी जिनाह-कैप लगाए आज कुछ अजीब नवाबी ठाठ में इधर-उधर फिर रहे थे और मेहमानों को ला-लाकर बैठा रहे थे। चुनांचे सब ने उनके मुताल्लिक़

भी ख़िराजे-अक़ीदत (श्रद्धा) पेश किया। आख़िर नीलोफ़र ने कहा, "देखो भई और सबका जो ज़िक्र हुआ वह तो ठीक है मगर इन रुबी बेगम ने आज गोया सबके सामने यह तस्लीम कर लिया कि रशीद भाई को जो निस्बत इनसे दी गई है वह इनके नज़दीक कोई क़ाबिले-एतराज़ बात नही है। शर्बत के घूंट की तरह पी गई।"

सुरैया ने कहा, "बल्कि बाद में जजाक अल्लाह* भी कहा इनके तेवरों ने।"

बिरजीस बोली, "तो आखिर इसमें काबिले-एतराज बात ही क्या है? अल्लाह जानता है बराबर के मिसरे है।"

रुबी ने कहा, "वल्लाह है कि बडी सुखन-फहम है आप। भई जब तुम सब ही मेरे सिर उन बेचारे को मढे देती हो तो मै आखिर कब तक सिर हिला सकती हूँ।"

कौकब ने कहा, "फिर यह कि मन-चाहे-मुँडिया-हिलाए की भी आप कायल नहीं हैं।"

रुबी ने आसमान की तरफ देख कर कहा, "शुक्र है खुदावन्दा तेरा कि तूने इस पत्थर की मूरत को भी गोयाई (वाक्शक्ति) अता की। वाकई बीबी तुम कभी-कभी बोल लिया करो। इन्शा अल्लाह आ जायगा इसी तरह बोलना।"

नीलोफर ने बात का रुख बदलते हुए कहा, "हाँ रुबी तुमसे यह तो पूछना भूल ही गई कि अफजल के यहाँ तुमने तो पहले भी देखा होगा रशीद भाई को?"

रुबी ने कहा, "नहीं मेरे सामने वह कभी नही आये, अलबत्ता तज्करा उन का बहुत रहता था। एक-आध खत भी उनका देखा था। जियारत (दर्शन) तो पहली मर्तबा अब हुई है।"

बिरजीस ने कहा, "समझ में नहीं आता कि ऐसा शरीफ़ आदमी अफ़जल ऐसे शख्स का दोस्त कैसे बन गया।"

नीलोफर ने कहा, "मैं इस सिलसिले मे रशीद भाई से तफ़सीली गुफ़्तगू कर चुकी हूँ। वह अफजल को दरअसल जराइम-पेशा समझते ही न थे और अफ़ज़ल के जिस जमाने के उनके ताल्लुक़ात थे उस वक़्त तक अफ़ज़ल दर-

*ईश्वर इसका बदला दे।

असल जराइम-पेशा बना भी न था।"

रुबी ने इस खुश्क गुफ़्तगू का रुख़ फिर बदला, "भई मैं तो दिल से मजबूर हूँ अब चाहे तुम सब कुछ ही कहो मगर मुझे रह-रह कर फ़रीद याद आ रहे है वह होते तो आज इस महफ़िल मे उनकी सज-धज देखने से ताल्लुक रखती।"

बिरजीस ने कहा, "बे वफ़ा औरत ! वह तेरी ही वजह से इस वक़्त हवालात की सलाखो मे बैठा किस्मत को रो रहा होगा।"

रुबी ने कहा, "पर्वान तो वह जब चढ़ेगे जब हवालात के बजाय जेल जायेगे। अभी तो फारूकी भाई ने ढाका ही से तार-वार देकर अफ़जल, तफ़ज्जुल और फ़रीद को महज़ गिरफ़्तार कराया है मुकद्मा तो अब शुरू होगा।"

बिरजीस ने एक तरफ़ मुतवज्जे होते हुए कहा, "इलाही खैर ! जल तू जलाल तू आई बला को टाल तू।"

नीलोफर ने चौकते हुए कहा, "वाकई ग़ज़ब हो गया। बेगम जैदी का रुख़ इसी तरफ है। आ रही है लुढ़कती हुई। अपने-अपने दुपट्टे ठीक कर लो।"

सुरैया ने कहा, "मै क्या करूँ मेरी तो एक रिश्ते से सास यह भी होती हैं।" और वाकई वह निहायत अजीमुश्शान बड़ी-बी बेगम जैदी आ ही पहुँचीं इन बेचारियों के सिर पर।"

"ऐ है, तुम सब यहाँ बैठी हो। लो भला मुझे क्या मालूम था ? मुझे ले जा कर ठूँस दिया दो मर्दुओं के बीच में। दोनो निगोडमारों ने अंग्रेजी बोल-बोल कर दिमाग अलग चाटा और सिगार की धूनी दे-देकर जी अलग मतला दिया मेरा। ऐ, यह कौन से है रशीद ?"

नीलोफर ने कहा, "खाला जान, वह क्या खड़े है कर्नल उस्मानी के पास। वह जिनके हाथ में जूस का गिलास है।"

बेगम जैदी ने गौर से देख कर कहा, "अच्छा यह हैं। आदमी तो सूरत से शरीफ़ ही मालूम होते हैं।"

रुबी ने कहा, "जी हाँ। मगर खान्दान अच्छा नहीं है बस सूरत ही सूरत है।"

बेगम जैदी ने बहुत खींच कर कहा, "हाँ—अच्छा किया बीबी तुमने बता

दिया । मैं तो नन्ही के लिए सोच रही थी कि भाई लतीफी से कहूँगी ।"

रुबी ने कहा, " मगर इनकी शादी तो कब की हो चुकी बल्कि बीवी मर-खप भी गई ।"

बेगम ज़ैदी ने कानो पर हाथ रख कर कहा, "ना बीबी ना । मै बेजुबान बच्ची को किसी बीवी वाले को क्यो दूँ ?"

रुबी ने कहा, "जी और क्या ? फिर यह कि मरी हुई बीवी का मियाँ तो बड़ा ही खतरनाक होता है । खुदा बचाये इस आसेबी (भूत) खलल से ।"

बाकी लडकियो का हँसी के मारे बुरा हाल था मगर रुबी कमबख्त को मजाल है जो जरा भी हँसी आये। वह तो कहिये कि उसी वक़्त सब खाने के लिये उठ गये और ये लड़कियाँ भी मौका पाकर वहाँ से खिसक गई हालाँकि खाने की मेज पर वह बहुत देर मे पहुँच सकी इसलिए कि मारे हँसी के उनका बुरा हाल था बल्कि उनकी इस मजनूनाना हसी को देख कर शिहाब ने बिरजीस के करीब आ कर पूछा, "हो गई कोई खास शरारत या कजा (पिछली) हँसी अदा की जा रही है ?"

बिरजीस ने कहा, "क्या बताऊँ शिहाब भाई, आप बेगम ज़ैदी को खाने की मेज पर ले आइये । वह अभी उसी तरफ लुढ़क रही है ।"

शिहाब ने बेगम ज़ैदी की तरफ देख कर कहा, "मुझमे तो इतनी हिम्मत है नही कि बगैर क्रेन के उनको उठा लाऊं। खुद ही आ जायेगी ।"

और यह कह कर वह तो निकल गया, यहाँ इन लडकियो से खाना खाक खाया गया होगा । उनको अब तक हसी ही से फ़ुर्सत न थी अलबत्ता रुबी बड़ी मिस्कीन सूरत बनाये अपनी प्लेट के साथ मसरूफ थी कि मिर्ज़ा साहब ने क़रीब आकर पूछा, "अरे भई साहबजादियो, कुछ चाहिये तो नही ?"

नीलोफर ने कहा, "अक्ल एक सवाब का काम यह कर दीजिये कि वह जो आ रही है बेगम ज़ैदी उनको जरा सहारा देकर ले आइये ।"

मिर्ज़ा साहब ने इधर-उधर देख कर कहा, "अल्ला हो अकबर ! मैं तो इनके करीब भी न जाऊँगा । चूज़ा समझ कर अगर मुंह मे रख लिया मुझे तो बस गया मैं । बगैर खाना खाये यह आलम है तो खाना खा कर तो अभी और हजम (घनत्व) बढ़ेगा ।"

रुबी ने कहा, "आप उन पर फ़िक्रे चुस्त कर रहे हैं और वह आप के मुताल्लिक पूछ रही थीं कि यह कौन साहब हैं जो इस महफ़िल में सबसे ज़्यादा सलीक़े के कपड़े पहने हुए नज़र आ रहे हैं ।"

मिर्जा साहब ने खुश हो कर कहा, "बखुदा ? मगर इनकी यह तवज्जो मेरे हक़ में तो अजीबो-गरीब है ।"

नीलोफ़र ने कहा, "अजीबो-ग़रीब तो नही यह तो वही मज़मून है कि किसी पहाड़ ने इक दिन कहा गिलहारी से ।"

और लडकियो ने जो एक बेसाख्ता कहकहा बुलन्द किया तो बहुत से मेहमानों की तवज्जो उसी तरफ हो गई यहाँ तक कि उन सब को यहाँ से भी खिसकना पड़ा । खाने के बाद गाने की महफ़िल जमी जिसके हीरो मिर्जा साहब थे जो बजोमे-खुद (अपने विचार से) सब से ज्यादा राग-रागिनियों से वाक़िफ़ थे । यह महफिल इधर जमी हुई थी और नीलोफर की महफिल अब इस महफ़िल से दूर पाई बाग के उस गोशे मे थी जहाँ थोड़ी देर पहले बेगम जैदी से शरफ़े-नियाज (भेट-सौभाग्य) हासिल हुआ था । चुनाँचे रात गए तक ये दोनों महफ़िले गर्म रही ।

६२

****

कई दिन तक तो यही हगामे रहे कि आज सब आफ़ाक साहब के यहाँ मदऊ है तो कल अनीस ने सबको मदऊ कर रखा है । कहीं दोपहर का खाना है तो कही रात का । हद यह है कि एक दिन तो इकराम की दावत पर सबको शेखूपुरे भी जाना पड़ा जहाँ इकराम ने तकल्लुफ़ात की हद

ही कर दी थी। खाने के अलावा गाना भी ऐसा था कि बक़ौल मिर्ज़ा साहब के इस जलसे में शिर्कत किये बग़ैर अगर वह मर जाते तो गोया ज़िन्दगी प्यासी ही खत्म हो जाती। हालाँकि यह बात सुन कर डाक्टर साहब ने बड़ी बर्जस्तगी से कहा था कि, "बहरहाल अब तो ज़िन्दगी सेराब हो चुकी है अब क्या इरादा है ?" और इस बात पर बेगम साहबा ने देर तक डाक्टर साहब की खबर ली थी कि तुम ख्वाह-मख्वाह भी भाई साहब की हर बात पर ऐसी ही जली-कटी बातें करते हो। हालाँकि खुद तुम को भी अन्दाजा हो चुका है कि नीली के ग़ायब होने के बाद इन बेचारे का भी अजीब हाल हो गया था। बात करते रो दिया करते थे। खाने-पीने के इतने शौकीन है मगर भूक-प्यास सब गायब हो चुकी थी। नमाजों के बाद सिजदों में पड़े रो दिया करते थे और दुआयें किया करते थे। मुख्तसर यह कि बेगम साहबा ने साफ़-साफ कह दिया था कि मेरे दिल में तो इनकी बडी कद्र पैदा हो गई है। डाक्टर साहब ने भी मिर्ज़ा साहब के खुलूस का तो एतराफ़ कर लिया मगर उनकी हिमाक़त-मआबी से बदस्तूर आजिज ही नजर आये। बहरहाल इन खुशगवार हंगामों के बाद जब ज़िन्दगी जरा मामूल पर आई तो शिहाब के कमरे में फिर वह गुत्थियाँ सुलझने लगी जिनको उलझा हुआ छोड़ कर ये सब एक और ही मुसीबत में मुब्तिला हो गए थे जिससे अब खुदा-खुदा करके निजात मिली थी। खुसूसन इस वक़्त की मज्लिस तो बड़ी अहम्मियत रखती थी इसलिए कि आज महम्मद हुसैन इन सबसे मिलने आया था और सब उसी से वहीदा के कैम्प के हालात सुन रहे थे। शिहाब ने कहा, "यह तो खैर हमको भी यकीन था कि अफ़ज़ल और तफज़्जुल की गिरफ़्तारी से वहीदा के हल्के में खल्बली पैदा हो जायगी।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "वजह दरअसल यह है कि वहीदा को इस बात का कुछ यकीन-सा है कि अफ़ज़ल और तफज़्जुल इस कद्र खामकार (अनाड़ी) हैं कि पुलिस ने अगर ज़रा भी सख्ती की तो ये दोनों ही सारा भाँडा फोड़कर रख देंगे। चुनाँचे आजकल वह सारा काम छोड़ कर मुकामाते-मुकद्दिसा (तीर्थ स्थान) की ज़ियारत के बहाने पासपोर्ट के लिए दौड़-धूप कर रहा है।"

फ़ारुक़ी ने कहा, "खैर पासपोर्ट तो इन हज़रत को मिलता नहीं मगर सवाल यह है कि क्या वह उस दफ़ीने की तलाश से भी हाथ उठा चुका है ?"

महम्मद हुसैन ने कहा, "दफीने के मुताल्लिक तो उसको यकीन है ना कि अगर यह काम फ़िलहाल इल्तवा (स्थगन) मे डाल दिया जाय तो भी कोई मुजायका नही इसलिए कि आज-न-सही-कल-सही यह दफीना अगर मिलेगा तो उसी को मिलेगा।"

अर्जमन्द ने कहा, "दफीना तो बाद मे मिलेगा इससे पहले ही हम उसकी तद्फीन (दबाना) का बदोबस्त कर लेगे।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "बहरहाल बावजूद इसके कि वह अपने को बहुत लिये-दिये रहता है मुझे मालूम है कि उसकी रातों की नीद तक हराम है और अब जब से आप लोग वापस आये है वह सख्त परेशान है कि अनकरीब इस सिलसिले मे तफतीशी (पूछ-गछ की) कार्रवाई शुरू हो जायगी और जहाँ अज़फ़ल और तफज्जुल शिकंजे मे कसे गये वह फौरन सब कुछ उगल देगे। उसको सब से ज्यादा फ़िक्र इस बात की है कि अलावा दूसरे जराइम के जिस सबसे ज्यादा खतरनाक बात का उन दोनो को इल्म है यानी अफज़ल और तफज्जुल को, वह है क़त्ल।"

इकराम अब तक खामोश था मगर अब उसने सँभल कर बैठते हुए कहा, "देखिये साहब जहाँ तक उस खजाने का ताल्लुक है वह किस्सा तो तकरीबन खत्म होने के करीब है, आप सबकी अदम-मौजूगी से फायदा उठा कर मैने इस मुहिम्मे को बडी हद तक हल कर लिया है बल्कि अगर तकरीबात का सिलसिला शुरू न हो जाता तो शायद मै कामयाब भी हो चुकता। चुनाँचे अब भी मैंने तय किया है कि मै इस मुहिम मे अब आप में से किसी की मदद न लूंगा। आप सब है कौम के लाल-बुझक्कड़ ख्वाह-मख्वाह मुझ को भी बहकायेंगे।"

अर्जमन्द ने कहा "साहब हमको आपकी समझदारी का भी एहसास है, कहिये तो पक्के कागज पर लिख दें कि हम आपको उस्ताद तस्लीम करते हैं मगर यह बात जरा तफसील-तलब है और आप है कि सिर्फ अपना रोब ही जमा रहे है हालाँकि हम सब-के-सब पहले ही से मर्ऊब है। ज़रा अपनी फतूहात पर तफसीली रोशनी तो डालो।"

इकराम ने कहा, "यह ग़लत है। आपको आम खाने से मतलब है पेड़

गिनना आपका काम नहीं है । बहरहाल इस सिलसिले में बाद में बात होगी और मौके पर पहँच कर होगी । फ़िलहाल मैं आपकी तवज्जो उन बदमाशों की तरफ मब्जूल (फेरना) कराना चाहता हूँ और चूंकि आप सबको निहायत जाहिल समझता हूँ लिहाजा मैं चाहता हूँ कि मुझसे कानूनी मशविरा भी लीजिये ।"

फारुकी ने शिहाब से कहा, "तेवर बता रहे हैं कि इन हजरत को वाकई कामयाबी हासिल हो चुकी है । लिहाजा इनको हक है कि जो मुँह में आये कहते चले जायें । जाहिल कहें, नालायक़ कहें, नाऐहल कहें । इस सुर्खरूई (सफलता) के बाद इस लबे-लालीं (लाल जैसे होंठ) की ये गालियाँ भी फूल बरसाती नज़र आती है ।"

इकराम ने कहा, "खैर मेरी खुशामद न कीजिये आप हज़रात, मैं खुशामद-पसन्द हरगिज नहीं हूँ । और न मुझको अपने दर्बार के लिए किसी कसीदा-गो (प्रशंसा करने वाला) शाइर की जरूरत है । मैं तो यह कह रहा था कि उन बदमाशों के जराइम पर भी मैंने तफ़सीली तौर पर गौर किया अगर आप लोग मेरे कानूनी तबाहुर (अत्यधिक जानकारी) से फायदा उठाना चाहें तो मौजूद हूँ ।"

शिहाब ने कहा, "हुजूर हम आपके खोशा-चीन (फायदा उठाने वाले) हैं आप कुछ इर्शाद तो फ़र्मायें ।"

इकराम ने कहा, "इन बदमाशों को जिन्हें आप गिरफ्तार करा चुके हैं उनके अलावा भी सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि वहीदा और उसके गिरोह पर फ़ौरन छापा मारिये, उसको पासपोर्ट मिले या न मिले वह यों भी भाग सकता है । उसको गिरफ़्तार कर लेने में अब कोई अमर (बात) माने (रुकावट वाली) नही है ।"

फ़ारूकी ने कहा, "बहरहाल अब जरा संजीदगी से हमको एक प्रोग्राम बना लेना चाहिये ।"

इकराम ने कहा, "भई मैं बिल्कुल संजीदा हूँ और प्रोग्राम भी बना चुका हूँ । अब मुझसे तफ़सील सुन लो कि वहीदा और उसका गिरोह तो चोरी, डाका, फ़रेब-देही, जालसाज़ी हद यह है कि क़त्ल तक के जराइम में माखूज़

(गिरफ़्तार) हो सकता है । खुद वहीदा पर ताजीराते-पाकिस्तान की ३०२, ३६६, और १०९ की दफात आइद होती है ।"

फ़ारूकी ने कहा, "मगर आपको यह भी मालूम है कि उसका असरो-रुसूख़ क्या है ?"

इकराम ने कहा, "यह असरो-रुसूख सब धरा रह जायगा जब वह ३०२ के मुजिरम की हैसियत से बाँध लिया जायगा । बहरहाल मैं हर तरह से अपना इत्मिनान कर चुका हूँ कि वहीदा और उसके साथियो को अब आजाद छोड़ने की कोई वजह नही, बल्कि अब महम्मद हुसैन साहब को भी वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं । आप फौरन उसको जकड़ लें । इसके अलावा अफ़ज़ल और तफ़ज्जुल भी दफात ३६६ और ३२८ मे तो आते ही हैं । रह गया सुस्त-रफ़्तार ज़हर देने वाला मामला, मेरे खयाल में ये दोनों भी फँसेंगे । बर्खुरदार फ़रीद भी दफात १०९, ३२८, और ३६६ की लपेट में आते है ।"

फारूकी ने बुरा मान कर कहा, "हुजूरे वाला इन दफ़ात को महज गिनना दूसरी बात है और अदालत में साबित करना कुछ और ही चीज़ है ।"

अर्जमन्द ने कहा, "नही, मुझे इकराम की राय से इत्तफाक है और मैं जानता हूँ कि इन हजरत ने काफ़ी ग़ौरो-फ़िक्र से काम लेकर यह बात जुबान से निकाली होगी ।"

इकराम ने कहा, "बहरहाल मेरा सिर्फ़ यह कह देना काफी है कि इन जराइम के काफ़ी से ज्यादा सुबूत हमारे पास है । आपकी इत्तला के लिए सिर्फ यह कह देना ग़ालिबन काफ़ी होगा कि जान बड़ी प्यारी होती है और इसी जान को बचाने के लिए मैने तफ़ज्जुल से वादा कर लिया है कि मै उसको सुल्तानी गवाह बनवा दूँगा -"

फ़ारूकी ने कहा, "इसका मतलब यह हुआ कि जनाब हम लोगों की अदम-मौजूदगी में हवालात में उन लोगों से मिल भी चुके है ।"

इकराम ने कहा, "हाँ मै न सिर्फ़ उन लोगो से मिल चुका हूँ बल्कि तफ़ज्जुल को इस हद तक आमादा कर चुका हूँ कि वह खुद अपने भाई अफ़ज़ल के खिलाफ़ सब कुछ अदालत के सामने उगल देगा । इससे उसको दो फायदे पहुँचेंगे : एक यह कि उसकी जान बच जायगी, दूसरा फ़ायदा यह कि वह

जायदाद जिसके ये दोनों भाइ मालिक है तन्हा उसी की हो जायगी ।"

अब रशीद ने भी कहा, "इन दोनों भाइयो के ताल्लुक़ात भी अन्दरूनी तौर पर शगुफ़्ता नहीं है । कम-से-कम अफ़ज़ल तो उससे हमेशा ही शाकी रहा ।"

इकराम ने कहा, "और वह अफज़ल से नालाँ है । चुनाचे वह खुद कहता है कि मैं पराई आग में क्यों जलूँ । बहरहाल यह मौका इस तरह बैठकर अफ्यून घोलने का नही है । आप सबसे पहला काम यह करें कि वहीदा और उसके साथियों को आज ही घेर लीजिये ।"

महम्मद हुसैन ने कहा, "मगर मैं आपसे यह अर्ज़ कर दूँ कि मुकाबिला निहायत सख्त होगा उसके पास काफी अस्लह (अस्त्र-शस्त्र) और गोला-बारूद वग़ैरा है ।"

इकराम ने कहा, "जी हाँ, मुझे मालूम है मगर इसके बावजूद उसको पकड़ना तो है ही, हमको भी हर तरह से सामान करके चलना पड़ेगा ।"

फ़ारूकी ने कहा, "मगर मैं फिर यही कहूँगा कि हम जल्द-बाज़ी में कोई ऐसी हरकत न कर बैठें कि उल्टी आँतें गले में पडें ।"

इकराम ने कहा, "बाबा मै बड़ा मोहतात (सावधान) आदमी हूँ और यह मशविरा समझे-बूझे बगैर नही दे रहा हूँ । अगर यकीन नही आता और मेरी जुबान पर भरोसा नही तो ये काग़ज़ात देख लो और सबसे पहले यह खत देख लो ।"

यह कह कर इकराम ने चन्द कागज़ात अपनी जेब से निकाल कर फारूकी के हवाले कर दिये और जिस खत की तरफ़ इशारा किया था उसको सबसे पहले फ़ारूक़ी ने देखकर अपनी कुर्सी से एक जस्त लगाई और इकराम को गोद में उठा लिया, "यह तुमको कहाँ से मिला ?"

इकराम ने कहा, "तफ़ज़्ज़ुल की निशानदिही पर मैंने उनके घर की तलाशी लेकर यह सब कुछ बरामद किया है । अब इसके बाद भी वहीदा की गिरफ़्तारी में कोई पसो-पेश हो सकता है ?"

फारूकी ने शिहाब से कहा, "जानते हो यह क्या है ? यह वही खत है जिसमें सुस्त-रफ्तार जहर देने और उस जहर के तदरीजी (क्रमिक) असरात की तफ़सील है । अब तो वाक़ई हमको सबसे पहले वहीदा के अड्डे पर

छापा मार कर उसको गिरफ्तार करना है। मैं कोतवाली जाकर अभी वापस आता हूँ तुम सब मेरा इन्तेजार करो।"

इकराम ने कहा, "अब जल्द-बाजी तुमने शुरू कर दी। कोतवाली हम सब चलते हैं ताकि सही किस्म के इन्तेजामात के साथ वहीदा के दर्बार मे हाजिर हो सकें। इसलिए कि यह वाकिआ है कि वह मुदाफिअत (रोक) जरूर करेगा और मुकाबिला सख्त होगा।"

चुनाचे थोडी ही देर में सब-के-सब तैयार होकर फ़ारूकी के साथ कोतवाली रवाना हो गये।

६३

****

पुलिस और वहीदा के गिरोह का मुकाबिला वाकई मामूली न था। इस मुकाबिले का चर्चा आज सारे शहर में था। अख्बारों की हैड लाइन आज इसी खबर के मुताल्लिक थी। दोनो तरफ से धुआँ-धार गोलियाँ चलीं, कई आदमी उधर के और कई इधर के जख्मी हुए। खुद वहीदा उस वक्त गिरफ्तार हुआ जब गोली उसकी रान पर लगी और वह राइफल छोडकर गिर पड़ा। बहरहाल पुलिस के इस कारनामे की धूम थी और वहीदा मय अपने तमाम साथियों के गिरफ़्तार हो चुका था मगर डाक्टर साहब की कोठी में इस वक़्त हीरो की हैसियत पुलिस के किसी आदमी को नहीं बल्कि शिहाब को हासिल थी जिसने ऐन उस वक्त वहीदा को रिवाल्वर से ज़ख्मी कर दिया था जबकि वह फारुकी पर गोली चलाने ही वाला था चुनांचे फ़ारुकी ने सबके सामने एतराफ किया,

"सौ बातों की एक बात यह है कि अगर आज शिहाब का निशाना चूक जाता तो मैं गया था।"

डाक्टर साहब ने कहा, "मियाँ बचाने वाला तो खुदा है मगर मुझे खबर न थी कि शिहाब मियाँ माशाकल्लाह ऐसे कादिर-अन्दाज़* है।"

अर्जमन्द ने कहा, "साहब इन हजरत ने तो ऐसा बिजन बोला है वहाँ कि मैं क्या अर्ज करूँ। वहीदा को तो खैर बड़ी खतरनाक पोजीशन पर इन्होंने जख्मी किया वर्ना वह फारुकी को तो ले ही गया था मगर इसके अलावा भी बदमाशों के छक्के दरअसल इन्हीं की निशानाबाजी ने छुड़ाये।"

रशीद ने कहा, "मैं तो उसी वक्त हैरान रह गया था जब हम लोगो के वहाँ पहुँचते ही यह हजरत एकदम से दीवार फाँद कर धम से उनके सहन में जा कूदे और शुरू कर दी एकदम से चौमुखी लडाई।"

फारुकी ने कहा, "मगर यह थी इनकी गलती अलबत्ता यह जरूर हुआ कि इनके देखा-देखी पुलिस के कई जवान भी इसी तरह फाँद गए।"

इकराम ने कहा, "थी तो यह गलती जरूर मगर हम इस आसानी के साथ जो उन लोगों पर गालिब आ गए उसकी वजह यही थी कि शिहाब ने उनको तैयारी का मौका ही न दिया वर्ना यह वाकिआ है कि उनकी तैयारियाँ बहुत कुछ थीं। मैं तो उनके असलह का जखीरा ही देखकर हैरान रह गया।"

शिहाब ने कहा, "उनको तो तैयार होने का बिल्कुल ही मौका न मिलता अगर सबने एक-साथ यल्गार (आक्रमण) किया होता। हुआ यह कि तकरीबन दस मिनट मुझको तन्हा मुकाबिला करना पड़ा चुनाँचे इस अर्से मे बहुत से लोग भाग-भाग कर मुसल्लह हो गये।"

मिर्जा साहब ने कहा, "दस मिनट ! बाप रे बाप ! बहुत होते है इस किस्म के मौक़े पर दस मिनट।"

बेगम साहबा ने कहा, "मैं कहती हूँ इन पर से सदका उतरवाना चाहिये।"

मिर्ज़ा साहबा ने कहा, "बिल्कुल ठीक कहा। मै भी यही सोच रहा था। अभी लाया बकरा।"

रशीद ने मिर्ज़ा साहब को रोकते हुए कहा, "आप ज़हमत (कष्ट) न

---

*निशाना लगाने पर पूरा अधिकार रखने वाला।

फ़र्मायें, मैं भेज चुका हूँ कथ्थूम को बकरा लाने के लिये। दरअसल आप में से तो किसी ने देखा नहीं मैने तो घबरा कर आँखें बन्द कर ली थीं उस वक़्त जब एक बदमाश की गोली इनके कान के पास से सनसनाती हुई निकली है।"

शिहाब ने कहा, "जी हाँ उस वक़्त तो मैं भी समझा था कि हो गया ख़ात्मा।"

बेगम साहबा ने घबरा कर कहा, "यह कहो कि अल्लाह ही ने बचाया। मगर मैं पूछती हूँ कि जब इतनी पुलिस गई थी तो तुमको आखिर क्या ज़रूरत पड़ गई थी इस तरह जान-जोखम मोल लेने की ?"

अर्जमन्द ने कहा, "आन्टी आप यकीन जानिये कि उस वक़्त पुलिस के सबसे बडे अफसर यही हजरत नजर आ रहे थे हम सब तो इनके मातहत दिखाई देते थे।"

ये लोग इन बातों में मसरूफ़ ही थे कि एक कार कोठी के अहाते में दाखिल होकर जैसे ही पोर्टिको में ठहरी है फ़ारुकी ने एकदम खड़े होकर कहा, "एस० पी० साहब।" और सबकी तवज्जो उसी तरफ़ हो गई। फ़ारुकी और अर्जमन्द ने आगे बढ कर शुएब साहब का खैरमकदम किया और खास पुलिस के अन्दाज से सैल्यूट झाड़ कर उनको अपने साथ ले आये। डाक्टर लतीफ़ी ने भी उनको देख कर चन्द कदम बढकर खैर मकदम किया। शुएब साहब ने बडी खन्दा-पेशानी के साथ उनसे हाथ मिला कर कहा, "डाक्टर साहब मैं आपको मुबारक-बाद देने आया हूँ कि आज के यलगार में शिहाब साहब के सिर सेहरा रहा है और उन्होंने न सिर्फ पुलिस की लाज रख ली बल्कि अगर सच पूछिये तो हम लोगों की भी आँखें खोल दीं कि जुर्अत और शुजाअत कोई पेशा नहीं बल्कि खुदा जिसको भी उसकी तौफीक़ दे दे।"

और यह कहते हुए वह शिहाब की तरफ़ बढ़ कर बोले, "शिहाब साहब, मुझे आप पर फख्र है आप तो इन पुलिस अफ़सरों के दोस्त नहीं बल्कि खुद भी निहायत पुलिस साबित हुए।"

शिहाब ने हँसकर हाथ मिलाते हुए कहा, "जी हाँ यह इन्हीं हज़रात का फ़ैज़े-सोहबत है :

जमाले-हमनशीं दर मन असर कर्द ।"*

इसके बाद शिहाब ने रशीद और मिर्ज़ा साहब के अलावा बेगम साहबा, नीलोफर, रुबी और तमाम हाजिरीन से शुएब साहब का तार्रुफ़ कराया। शुएब साहब दर असल इतने खुश थे कि इस घर में बेतकल्लुफ होने के लिए उन्होंने नीलोफ़र से कहा, "मैं आपको कुछ ज़हमत देना चाहता हूँ। क्या यह मुमकिन होगा कि आप इस मुसर्रत के मौके पर काफ़ी पिला दें मुझको ज़रा लाजवाब किस्म की ?"

बजाय नीलोफर के डाक्टर साहब ने जल्दी से कहा, "यकीनन, यकीनन। मैं भी बडी देर से यह सोच रहा था कि मेरा किस चीज के लिए जी चाह रहा है। अब आपके कहने से पता चला कि यह काफी की तलब थी।"

सबसे पहले नीलोफर और उसके बाद ही शिहाब यहाँ से उठ कर चले गये। नीलोफर ने काफी तैयार करने की हिदायत देना शुरू की और शिहाब ने फौरन सैंडविच और खुश्क मेवे का एहतमाम शुरू कर दिया। इसी सिलसिले में इन दोनो का सामना जो हुआ तो नीलोफ़र ने गोया कुछ कहते-कहते अपने को रोका मगर इसके बावजूद शिहाब ने पूछा, "कुछ मुझसे कह रही थी आप ?"

नीलोफर ने कहा, "कह तो नही रही थी, इरादा कर रही थी कुछ कहने का फिर मैने सोचा कि फ़ायदा क्या आखिर इन बातो का ?"

शिहाब ने कहा, "इसका मतलब यह हुआ कि कुछ कहने का नही बल्कि खफ़ा हो जाने का इरादा था।"

नीलोफ़र ने कहा, "काश आपको मालूम होता कि महज़ ये वाक़िआत ही सुन कर मेरा खून किस कद्र खुश्क हुआ है।"

शिहाब ने कहा, "और काश आपको मालूम होता कि आपके इस इर्शाद से मेरा कितना खून बढ़ गया है।"

नीलोफ़र ने कहा, "मगर यह तो बताइये कि अगर कुछ हो जाता तो क्या होता ?"

शिहाब ने कहा, "आप यक़ीन जानिये कि उसका बाल-बीका भी नहीं हो सकता जिसको आपके ऐसे दुआ देने वाले हासिल हों।"

***मित्र की सुन्दरता और गुणों का मेरे ऊपर प्रभाव पड़ा।**

नीलोफर ने कहा, "अच्छा खैर मुझे बनाने को तो रहने दीजिये मगर आपको अब कम-से-कम यह अन्दाज़ा तो होना ही चाहिये कि—कि—खैर फिर कभी सही।"

शिहाब ने कहा, "यह गलत है। यह बात तो आपको कहना ही पडेगी और मैं सुनकर रहूँगा। हाँ मुझको कम-से-कम क्या अन्दाजा होना चाहिये ?"

नीलोफर ने जिज-विज होकर कहा, "अब आप क्यों मुझको उस सतह पर लाना चाहते है जहाँ न कहने वाली बाते कह कर घटिया बना दी जाती है।"

शिहाब ने उसके करीब आकर कहा, "मुशाहिद-ए-हक़* की गुफ्तगू मे भी बादा-व-साग़र (शराब और प्याला) कहे बगैर नही बनती। मै यह बात आप से सुन कर रहूंगा।"

नीलोफर ने आंखो-मे-आँखे डालकर एक शरारतआमेज तबस्सुम से कहा, "यह अच्छी जबरदस्ती है और फर्ज कर लीलिये कि मै न सुनाऊं वह बात तो ?"

शिहाब ने कहा, "तो मै सब से यही कहता फिरूंगा कि आज नीली ने मुझसे कहा है कि आपको कम-से-कम यही अन्दाज़ा होना चाहिये था कि अब आप किसी और की भी अमानत है।"

नीलोफर ने अपने दोनो हाथ मुँह पर रख कर कहा, "सचमुच हद नहीं है आपकी शरारत की। मै इसीलिए तो यह बात अल्फाज मे अदा न करना चाहती थी कि बहुत से पैगाम बगैर कहे भी पहुँच जाया करते है। मै सच कहती हूँ कि मै वाकई यही बात कहने वाली थी।"

शिहाब ने कहा, "तो अब कह दीजिये ना।"

नीलोफ़र ने हैरत से कहा, "अब क्या कह दूँ ? आपने जो कह दी सारी बात।"

शिहाब ने कहा, "जी नही, मै खुद आपकी जुबान से यह बात सुनना चाहता हूँ।"

नीलोफ़र ने उसको घूरते हुए कहा, "यह क्या बच्चों की सी-बातें हैं ? हम दोनो के दरमियान ये बात किस क़द्र बेहूदा मालूम होती है।"

शिहाब ने कहा, "बेहतर है आइन्दा मैं इस क़िस्म की बातें बेगम ज़ैदी से

---

*ईश्वर को पहचानना।

करूँगा।"

बेगम ज़ैदी का नाम सुन कर दरवाजे के पीछे से किसी के एकदम हँस पड़ने की आवाज ने इन दोनों को चौका दिया। चुनाँचे रुबी हँसी से दोहरी होती हुई सामने आकर नीलोफर से लिपट गई और शिहाब ने यहाँ से खिसक जाना ही मुनासिब समझा। नीलोफर को रुबी की यह हरकत सख्त नागवार हुई थी मगर वह ऐसी बलाए-बेदर्मा का कर ही क्या सकती थी जिसने खुद यह कह दिया कि, "भई देखो यह बदतमीजी जरूर है कि किसी की इस किस्म की बाते सुनी जायें मगर मैने अपनी खुशी के लिए यह बदतमीजी भी गवारा कर ली अब चाहे तुम मुझको मार डालो। दूसरी बात यह है कि तुमको खुद शिहाब से कहना चाहिए था कि--सजन धीरे बोल कोई सुन लेगा।"

नीलोफर को यह बात इतनी नागवार हुई थी कि वह गीत के इस बोल पर भी न मुस्कराई और शायद वह तफसील के साथ लडती मगर रशीद इन दोनो के बुलाने के लिए आगया कि काफी पर इन्तेजार हो रहा है। चुनाँचे ये दोनो भी वहाँ पहुँच गई। शुएब साहब काफी पीकर और एक मर्तबा फिर सब को मुबारकबाद देकर फिर किसी वक्त आने का वादा करके रुखसत हो गये और जब यह महफिल बरहम हुई तो शिहाब तो कुर्बानी के बकरे पर हाथ रखने के लिए चले गये और रुबी नीलोफर को मनाने के लिए अपने साथ घसीट लाई और उससे कहा, "अच्छा तुम यह बतादो कि यह शर्म है या खफगी ?"

नीलोफ़र ने कहा, "कुछ भी नही सिर्फ हैरत है कि मैने तो मगरिबी अख्लाको-आदाब की बडी तारीफ सुनी थी।"

रुबी ने कहा, "तुमको हक है कि इस बदतमीजी के जवाब मे तुम मुझको कौमियत के ताने दो मगर बदतमीज़ी हर मुल्क और हर कौम मे बदतमीजी ही है। मगर काश, तुमको यह मालूम होता कि मैने कैसी रूहानी मुसर्रत हासिल करने के लिए यह बदतमीजी गंवारा की थी !"

यह कह कर वह कुछ उदास-सी हुई थी कि नीलोफ़र ने उसको डाँटा, "अच्छा अब उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। उल्टी आप खफ़ा हो रही है। बदतमीज कहीं की।"

लीजिये दोनों की खफ़गी खत्म और दोनों खिलखिला कर हँस दी।"

६४

****

आज इन तमाम दोस्तों का इज्तेमाअ शेखूपुरे में था जो उस मुअम्मे को हल करने पर तुले हुए थे जिसके मुताल्लिक इकराम का दावा था कि वह कामयाबी की आखिरी मंज़िल तक पहुँच चुका है मगर यहाँ आकर जब दोस्तों ने इकराम की कामयाबी का जाइजा लिया तो मालूम हुआ कि 'हनोज-दिल्ली-दूर-अस्त ।'* इसमें शक नही कि इकराम ने बडी जहानत से काम लेकर बहुत सी उलझनों को सुलझा दिया था जिनकी दाद तमाम दोस्तों को देना पडी और महम्मद हुसेन ने भी जो वहीदा की गिरफ्तारी के बाद से अब इन लोगों के साथ था इकराम की सूझ-बूझ को सराहते हुए कहा, "अगर इस किस्म का एक भी समझदार आदमी वहीदा के साथ होता तो वह कब का उस खजाने पर काबिज हो चुका होता ।"

फ़ारुकी ने कुछ गोर करते हुए कहा, "इकराम जिन नताइज पर पहुंचे है उनसे मुझे सोलह आने इत्तेफ़ाक है, मगर मैं इस आखिरी नतीजे का कायल नहीं कि अब हमारी मंजिल हमारे कदम चूमने ही वाली है । मेरा ख़याल यह है कि अभी बहुत सी गुत्थिगाँ सुलझाना बाकी हैं ।"

इकराम ने कहा, "यह तुम इसलिए कह रहे हो ना कि नक़्शे और इस रिसाले के बहुत से निशानात और बहुत से इशारे अभी बाकी है । यह दुरुस्त है मगर खयाल यह है कि ये आखिरी गुत्थियाँ खुद-ब-खुद निहायत आसानी से सुलझती जायेंगी । अब मसलन यह दो हाथों की तस्वीर जो बनाई गई है इसका मतलब यह है कि जहाँ तक हम पहुँच चुके हैं वहाँ से दस क़दम दूर या दस गज़ के फासले पर कोई और निशान मिलना चाहिए ।"

***अभी दिल्ली दूर है ।**

शिहाब ने बात काट कर कहा, "न न न। आप हाथों की दस उंगलियाँ गिनकर ग़ालिबन इस नतीजे पर पहुँचे हैं। हालाँकि मेरा खयाल यह है कि फ़ातिहा के लिए उठे हुए दोनों हाथ हैं।"

अर्जमन्द ने क़हक़हा लगा कर कहा, "फ़ातिहा की भी एक ही रही। क्या-क्या अक़्ली गद्दे लगा रहे हैं आप लोग।"

शिहाब ने बदस्तूर संजीदगी से कहा, "हँसी में न टालो यह बात बल्कि इसके बाद इस रिसाले में जो मिसरा दिया हुआ है वह पढ़ो—**जाइये बस जाइये मिट्टी में मिट्टी मिल गई।**"

फ़ारुकी ने कहा, "तुम्हारा खयाल यह है कि यह हमवार ज़मीन नहीं बल्कि दरअसल कोई क़ब्र है।"

इकराम ने गौर करते हुए कहा, "हो सकता है कि इनका खयाल दुरुस्त हो। हम क्यों न इस शक को दूर करने के लिए यहाँ खुदाई शुरू कर दें।"

चुनाँचे सबकी मुत्तफ़िका राय (सहमति) से थोड़ी ही देर के बाद वहाँ फावड़े चलने लगे और ये सब दोस्त निहायत बे-सब्री से इन्तेज़ार करने के लिए मुख्तलिफ़ सम्तों से उस जगह को घेर कर खड़े हो गये। अभी दस-पाँच ही फावड़े चले होंगे कि एक बेलचा किसी निहायत ही सख्त चीज से टकराया और उसकी आवाज पर सब इधर-उधर से सिमट कर उसी जगह पर आ गए। इकराम ने बड़ी सुर्खरूई के साथ कहा, "देखो यह क्या चीज़ है, खोदकर निकाल लो इसको।"

चुनाँचे मज़दूरो ने उसी जगह ज़मीन गहरी खोदकर एक खाक-धूल मे अटा हुआ सफ़ेद पत्थर निकाला जिस पर कुछ कन्दा (खुदा हुआ) था। अर्जमन्द ने पानी आने का भी इन्तेजार न किया बल्कि अपने रूमाल से पत्थर को साफ करके पढ़ने की कोशिश की और एक नारा लगाया, "मिल गया, मिल गया! बिल्कुल सही जगह पहुँचे है हम। वही मिसरा है बल्कि पूरा शेर है :

जाइये बस जाइये मिट्टी में मिट्टी मिल गई
पहले जो मदफ़न के बाहर था वही मदफ़न में है।"

और यह देखकर एक ने दूसरे को बेसाख्तगी से लिपटा लिया। मगर इकराम इस कत्बे की बाकी इबारत पढ़ने में मह्व था। इसी अर्से में मज़दूर

बाल्टी में पानी ले आये चुनाँचे वह पत्थर अच्छी तरह धोया गया और अब उसकी इबारत साफ़ पढ़ी जाती थी जो यह थी :

"जाइये बस जाइये मिट्टी में मिट्टी मिल गई
पहले जो मद्फ़न के बाहर था वही मद्फ़न में है

'उस शहीदे-इन्तेज़ार, 'पैकरे-वफ़ा की आराम-गाह जिसने एक बेवफ़ा का आख़िरी हिचकी तक इन्तेज़ार किया।' "

यह इबारत पढ़ कर अर्जमन्द ने कहा, "इसका मतलब यह हुआ कि यह तो तय है कि यह मफ़रूज़ा (कल्पित) क़ब्र है। किसी असल क़ब्र पर इस किस्म का कत्बा मैने देखा नही।"

शिहाब ने कहा, "मगर मेरी राय यह है कि यह असल क़ब्र है। इसलिए कि जिन हालात में दफ़ीना यहां रखा गया है वे ऐसे न थे कि एक मफ़रूज़ा क़ब्र बनवाई जाती और सिर्फ़ कब्र ही नहीं बल्कि इस एहतमाम से उसका कत्बा भी तैयार कराया जाता।"

इकराम ने कहा,"बहरहाल यह ख्वाह असल क़ब्र हो या मफ़रूज़ा हमको इसे आखिर तक खोदना ज़रूर है।"

और यह कहकर अपने मजदूरों को खुदाई का हुक्म दे दिया और ये सब एहबाब निहायत बेचैनी के साथ नताइज का इन्तेज़ार करते रहे। अर्जमन्द अब तक इस बात का क़ायल न था कि यह क़ब्र वाकई कब्र है और खयाल इस एतबार से दुरुस्त भी था कि इस किस्म के कत्बे शाज़ो-नादिर ही हुआ करते हैं। अगर इस इबारत और इस शेर को सही मान भी लिया जाय तो भी अर्जमन्द का कहना दुरुस्त था कि इसके बावजूद मुतव्वफ़ी (मरने वाला) का नाम और इन्तेक़ाल की तारीख वग़ैरा तो होनी ही चाहिए थी। मगर इकराम बड़े वसूक से कह रहा था कि कब्र तो यह असल ही है इसलिए कि बक़ौल शिहाब के यहाँ दफ़ीना रखते वक़्त इस एहतमाम का तो कोई मौक़ा ही न था कि एक फ़र्ज़ी क़ब्र बनाई जाती, एक मफ़रूज़ा कत्बा तैयार कराया जाता और इस इत्मिनान के साथ यहाँ यह दौलत रखी जाती। ये लोग इन बातों में मसरूफ़ ही थे कि महम्मद हुसैन ने जो इस खुदाई का एहतमाम कर रहे थे और मज़दूर जिनके इशारों पर ज़मीन खोद रहे थे सबको आवाज़ देकर बुलाया।

चुनाँचे यह सब झपट्टा मार कर उस जगह पहुँचे और सबने देखा कि एक आहनी (लोहे की) सतह है जिससे फावड़ा और बेलचा टकरा रहा है। इकराम ने उस गार में कूदकर करीब से उस जगह को देखा और फ़र्ते-मुसर्रत (हर्षोन्माद) से एक नारा-सा बुलन्द किया कि, "वह मारा !"

अर्जमन्द ने ऊपर ही से पूछा, "है क्या आखिर ?"

इकराम ने कहा, "अब वह रिसाला और वह नक़्शा मुझको दे दो।"

शिहाब ने कहा, "बन्दा-नवाज़ ! पहले बाहर तशरीफ़ लाइये जो कुछ निकला है वह भागा नहीं जाता। नक़्शे और रिसाले पर इस गार के अन्दर घुस कर गौर नहीं किया जा सकता।"

फ़ारूकी ने कहा, "वाकई इकराम तुम बाहर आ जाओ उस जगह को चारों तरफ़ से मजीद खुदाई करके देख लो फिर इस नक़्शे और रिसाले को सामने रख कर ग़ौर करेंगे।"

इकराम ने बाहर आते हुए कहा, "मुझे तो यह लोहे की चादर-सी मालूम होती है जिस पर कुछ नुकूश हैं।"

शिहाब ने कहा, "फ़ारूकी वाकई ठीक कह रहे है कि चारों तरफ़ से खुदाई हो जाय फिर इस सतह को अच्छी तरह साफ़ कर लिया जाय ताकि जो नुकूश नज़र आ रहे हैं वह वाज़ेह (साफ) हो जायें।"

फ़ारूकी ने कहा, "इसके बाद ही तो नक़्शे और रिसाले की मदद से हम आगे बढ़ सकेंगे।"

इकराम ने सरे-तस्लीम खम कर दिया, और उस जगह चारो तरफ़ खुदाई शुरू हो गई। इसके बाद उस जगह को अच्छी तरह साफ़ करके लोहे की उस सतह को खाक-धूल से पाक कर दिया गया यहाँ तक कि उसके धुधले नुकूश अब निहायत वाजेह थे। चुनाँचे इकराम ने फिर उस गार के अन्दर कूद कर उस नुकूश पर नजर जमा दी। लोहे की उस चादर पर पाँव का एक निशान साफ नजर आ रहा था और उसके अन्दर ४६ का हिन्दसा निहायत वाज़ेह था। यह निशान और यह हिन्दसा देखने के लिए इकराम के इलावा

अब उस आहनी सतह पर अर्जमन्द, फ़ारूकी, शिहाब और रशीद के अलावा महम्मद हुसैन भी आ चुका था। आखिर शिहाब ने कहा, "यह तो मालूम हो गया होगा कि यह पाँव का निशान है और इसके अन्दर ४६ का हिन्दसा है अब सवाल यह है कि इन दोनों में से कोई अलामत नक़्शे या रिसाले में है ?"

अर्जमन्द ने नक़्शा देखकर कहा, "यही पाँव का निशान और उसके अन्दर ४६ का हिन्दसा नक़्शे में भी है।"

फ़ारूकी ने कहा, "देखो देखो, इस रिसाले में इसी निशान और इसी हिंदसे के आगे 'गालिब' का मक़्ता* दिया गया है:

'असद' खुशी से मेरे हाथ-पैर फूल गये
कहा जो उसने ज़रा मेरे पाँव दाब तो दे।"

इक्राम ने कहा, "मतलब क्या हुआ इसका ?"

शिहाब ने कहा, "शेर का मतलब आप पूछ रहे हैं या यह दर्याफ्त कर रहे हैं कि यहाँ यह शेर क्यों दिया गया है ?"

रशीद ने गौर करते हुए कहा, "मेरा खयाल है कि इस शेर ही के अन्दर राज़ की कुंजी है।"

शिहाब ने उसकी बात सुनी-अनसुनी करते हुए कहा, "अच्छा अच्छा ज़रा ठहरो। हट जाओ तुम सब मेरी समझ में एक बात आती है।"

यह कहकर वह तो बढ़ा आगे और बाकी सब पीछे हट गए। चुनांचे उसने उस पाँव के निशान पर अपना पैर रख कर उसको जोर लगाकर दबाना जो शुरू किया तो थोडी सी जोर-आज़माई के बाद वह निशान धँसने लगा और साथ ही वह आहनी चादर एक तरफ़ से खिसकने लगी। यह देखकर सब उस तरफ़ से हट गए जिधर से वह चादर खिसक रही थी। शिहाब ने एक मर्तबा पूरा ज़ोर लगाकर उस नक़्शे-पा को जो दबाया तो एक घड़घड़ाहट की आवाज़ के साथ वह चादर एक तरफ़ से दर्वाज़े के एक पट की तरह खुल गई और अब एक ज़ीना-सा सामने था। तमाम दोस्तों ने दौड़कर पहले तो शिहाब को सँभाला कि कहीं वह भी उस गहरे ग़ार में न जा गिरे, उसके बाद फ़र्ते-मसर्रत से उसको लिपटा लिया। अर्जमन्द ने कहा, "पाँव दाब तो दे की तरफ़

*वह शेर जिसमें कवि अपना नाम डालता है।

तुम्हारा ज़हन ऐसा मुन्तक़िल हुआ है कि दाद नही दी जा मकती ।"

शिहाब ने कहा, "दाद बाद में दीजियेगा अब हमको फ़ौरन रोशनी का इन्तेज़ाम करके इस ज़ीने से नीचे उतरना चाहिए ।"

इकराम ने टोका, "यह ग़जब भी न करना । इस ज़ीने से इस वक्त नीचे उतरना ख़तरे से खाली नहीं है न जाने कब के घुटे हुए अब्खरात होगे । यह दरवाज़ा फ़िल्हाल खुला छोड दो और इत्मिनान से बैठो ताकि अन्दर की फ़जायें ज़हरीली हवा से साफ हो जायें ।"

यह राय निहायत मुनासिब थी । चुनाँचे सब ने बावजूद इन्तेहाई बे-सब्री के सब्र से काम लेना मुनासिब समझ कर यह तय किया कि रात को सबका पडाव यहीं होगा और सुबह इस मंजिल को सर किया जायेगा जो अब वाकई कदम चूम रही थी । इस वक़्त सूरतेहाल ही कुछ ऐसी थी कि लाहौर जाने का खयाल न आया कि वहाँ जब रात तक कोई न पहुँचेगा तो सबका क्या आलम होगा और किस क़दर सब परेशान होंगे । इन तमाम खयाल से बेनियाज इन एहबाब ने इसी जगह रात गुजारने का फैसला कर लिया और यही इकराम ने सबके उठने-बैठने और खाने-पीने का इन्तेज़ाम कर दिया ।

६५

****

डाक्टर लतीफी के यहाँ शाम से रात के खाने के वक़्त तक तो सबका इन्तेज़ार रहा इसके बाद शुरू हो गई परेशानी कि डाक्टर साहब अलग टहल रहे हैं परेशान, बेगम साहबा अलग बैठी हौल खा रही हैं, मिर्ज़ा साहब अपनी क़यास-

आराइयों में मसरूफ़ हैं और नीलोफर के तरद्दुद (चिन्ता) में गुस्से का उन्सर गालिब है। आखिर उसने जिल्बिला कर कहा, "देख लीजियेगा यह खजाने की तलाश कोई-न-कोई गुल-खिलाकर रहेगी।"

डाक्टर साहब ने जिज़बिज होकर कहा, "ये लोग पागल होकर रह गये है और सबसे बड़े पागल खुद हमारे शिहाब मियाँ हैं। न जाने उनसे किसने कहा है कि अपनी जान के लिए खतरे मोल लेते रहें। अब खुदा जाने वहाँ क्या बीती है उन सब पर ?"

बेगम साहबा ने कहा, "चूल्हे में गया वह खज़ाना। सदके किया वह दफीना उन सब पर से। आज खैर-खैरियत से वापस आ जायें फिर मैं देखूं कि कैसे जाते है ये लोग उस मुए खजाने की तलाश में। अल्लाह का दिया सब कुछ मौजूद है हमको खजाने की जरूरत ही नहीं। भर पाया हमने, जान का सदका मान। उनकी जान ही बच जाय तो मैं समझूँगी कि लाखों पाये।"

नीलोफर ने कलाई की घड़ी रोशनी के करीब लाकर देखते हुए कहा, "पौने बारह बज रहे हैं। मैं कहती हूँ कि ज़रूर कुछ दाल-में-काला है।"

डाक्टर साहब एकदम से चौके, "अस्तग़फिरुल्लाह ! यानी हम लोगों की अक्ल पर भी पत्थर पड गये है। बाबा टेलिफोन मौजूद है शेखूपुरे से मिला कर बात ही क्यों न कर लें ?"

डाक्टर साहब का यह कहना था कि नीलोफर तीर की तरह भागी टेलिफ़ोन के कमरे में और उसने ट्रंक-काल बुक करा दी। उसी वक़्त डाक्टर साहब, बेगम साहबा और मिर्जा साहब सब-के-सब कमरे मे आ गये। मिर्जा साहब ने कहा, "मैने तो साहब, दाता साहब की एक देग मान ली है जर्दे की, कि साथ खैरियत के ये लोग आ जायें तो देग बाटूंगा दाता-दरबार में।"

बेगम साहबा ने कहा, "इन्शा अल्लाह जरूर बाटेगे आप। मेरा दिल तो गवाही दे रहा है कि कोई और बात नही कुछ मोटर-वोटर रास्ते में खराब हो गया है।"

नीलोफर ने कहा, "नहीं मम्मी ! आप नहीं जानती उन लोगों में एक-से-एक जिद्दी मौजूद है। अपनी जान से खेलना तो उनका रोज़मर्रा का तमाशा बन गया है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "वाकई शिहाब तो अपनी जान के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है। बहरहाल वह वापस आ जायें आज वह ख़बर ली होगी कि वह भी याद करे। उसको कम-से-कम इसका एहसास होना चाहिये कि उससे कितने लोगों की मुसर्रतें वाबस्ता हैं। अब वह इतने नासमझ भी नही हैं कि इतनी-सी बात न समझ सकें।"

बेगम साहबा ने कहा, "किस्मत में होगा तो वह खजाना यों भी मिल जायगा और न मिले ता न मिले। इस झगडे में आखिर हमारे अर्मान क्यों खटाई में पडे रहें। आज मैं उससे साफ बात ही कर लूंगी।"

इसी वक़्त टेलिफ़ोन की घण्टी बजी और नीलोफर ने दौड कर टेलिफ़ोन का रिसीवर उठाकर शेखूपुरे के थाने से बात करना शुरू कर दी। उसे न तो इकराम मिल सका न कोई और अलबत्ता यह मालूम हो गया कि ये सब बखैरियत हैं मगर कहाँ हैं यह टेलिफोन पर बताना चूंकि खिलाफे-मस्लिहत है लिहाज़ा बताया नहीं जा सकता।

नीलोफ़र को जो इत्मिनान होना चाहिए था वह इस टेलिफ़ोन से भी न हुआ। आखिर सबने मिलकर यही तय किया कि ये सब भी इसी वक़्त शेखूपुरे रवाना हो जायें वहाँ जाकर उन लोगों का पता चल सकता है। टेलिफोन पर तो वाकई थाने वाले यह नहीं बता सकते थे कि वह लोग कहाँ हैं इसलिए कि मालूम नहीं किसका फोन हो और कौन यह भेद ले रहा हो। डाक्टर साहब ने बहुत चाहा कि सिर्फ़ वह और मिर्ज़ा साहब जायें। खवातीन न जायें मगर नीलोफ़र किसी तरह घर में रहने पर राजी न हुई और बेगम साहबा ने भी डाक्टर साहब को डाँटा, "कमाल करते हैं आप भी यह कैसे घर में रह सकती है।"

डाक्टर साहब ने कहा, "अच्छा अच्छा। मैं समझ गया। मगर तुम तो खुदा के वास्ते न चलो।"

बेगम साहबा ने कहा, "मैं अकेली यहाँ पड़ी रहूँ? यह ग़लत है, सब ही चलते हैं।"

नतीजा यह कि रात को एक बजे ये सब-के-सब शेखूपुरे की तरफ़ रवाना हो गए। अजीब इज़्तेराब में रास्ता काटा और जब थाने में पहुँचे हैं तो वहाँ

अब भी वही जवाब था जो टेलिफ़ोन पर दिया गया था कि हमको मालूम तो है कि वह लोग कहाँ है मगर हम बता नहीं सकते जब तक कि ख़ुद डिपुटी साहब की इजाज़त न हो। आखिर बड़े शशो-पंज के बाद नीलोफ़र ने कहा, "अच्छा आप यह तो कर सकते है कि मैं एक पर्चा इकराम साहब के नाम लिखती हूँ वह उनको पहुँचा दिया जाए।"

सब इन्सपेक्टर इन्चार्ज ने यह बात मान ली और उन सबको निहायत एहतराम के साथ बैठाकर नीलोफ़र का पर्चा एक साइकिल सवार सिपाही के हाथ रवाना कर दिया और यहाँ उन सबकी तवाज़ो शुरू कर दी। थोड़ी ही देर में मीठे पानी की बोतलें, पान, डाक्टर साहब और मिर्ज़ा साहब के लिए सिगरेट सब ही कुछ मौजूद हो गया। मगर इन सबको उस पर्चे के जवाब का इन्तेज़ार था। चुनांचे बजाय जवाब के ख़ुद इकराम कार पर दौड़ा हुआ आया और उन सबको साथ लेकर वापस होते हुए इजमाली तौर पर अपनी मुहिम के उस आखिरी और नाज़ुक मर्हले के हालात सुना कर एक हद तक नीलोफ़र का ग़ुस्सा ठंडा कर दिया। चुनाँचे वहाँ पहुँचते ही जब शिहाब ने आगे बढ़ कर उन सबका खैरमकदम किया तो डाक्टर साहब ने कहा, "बखुदा सख्त परेशान किया तुम सबने गो तुम बिल्कुल हक-बजानिब हो कि इस मौक़े पर तुम यहाँ से हट नहीं सकते थे।"

नीलोफ़र ने बात काट दी, "मगर टेलिफ़ोन भी तो एक चीज़ है जो इस क़िस्म के मौक़ों पर बड़ी कारामद होती है।"

शिहाब ने माज़रतख्वाह (क्षमा याचक) निगाहों से नीलोफ़र को देखते हुए कहा, "जो हालात यहाँ पैदा हुए उनके बाद सच तो यह है कि टेलिफ़ोन का होश ही न रहा और यह वाकई हम से ज़्यादती हुई।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "ज़्यादती जनाब से हुई और सज़ा हमने भुगती कि चले आ रहे हैं भूखे-प्यासे मंज़िलों-पर-मंज़िलें मारते।"

इकराम ने चौक कर कहा, "ओ हो! आप लोगो ने तो इस परीशानी में वाक़ई खाना भी न खाया होगा।"

मिर्ज़ा साहब ने बड़े अन्दाज से कहा, "अजी आप की बला से।"

इकराम ने कहा, "जी नहीं अभी इन्तेज़ाम करता हूँ खाने का।"

डाक्टर साहब ने कहा, "न न, अब यह ज़हमत न करो बेटे, दो बज रहे हैं अब कौन-सा वक़्त है खाने का।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "चलिये छुट्टी हुई। यही मौका रह गया था तकल्लुफ़ का भी। यहाँ जान निकली जा रही है भूख के मारे वह कह रहे हैं खाने का अब कौन-सा वक़्त है।"

नीलोफ़र ने मुस्करा कर कहा, "अंकल को वाकई कुछ खिला दीजिये और हम लोग सिर्फ चाय पियेंगे।"

मिर्ज़ा साहब ने कहा, "चाय तो ख़ैर मैं भी पी लूंगा मगर खाली पेट नहीं।"

शिहाब ने फैसला कर दिया, "इकराम तुम चाय और कुछ नाश्ता मंगा लो। खाने का वाकई अब कोई वक़्त नहीं है।"

इकराम इस एहतमाम के लिए रवाना हो गया। यहाँ उन लोगों ने बेगम साहबा के लिए एक पलंग बिछा कर बिस्तर लगा दिया ताकि वह इत्मिनान से बैठ सकें। इसके बाद डाक्टर साहब ने कुरेद-कुरेद कर उस मुहिम की तफ़्सीलात दर्याफ़्त कीं और इन लोगों की ज़हानत की दाद देते रहे। खुसूसन जब उनको यह मालूम हुआ कि शिहाब ने उस नक़्शे पर इशारे को समझ कर इस मुहिम को सर किया है तो शिहाब की पीठ पर थपकी देकर बोले, "मुझको इस खज़ाने से ज़्यादा कीमती खज़ाना तो यह मिला है! खुदा इसकी उम्र में बरकत दे। जो कुछ मेरे पास है वह भी इन्हीं का है और जो कुछ यह मेरे लिए हासिल कर रहे हैं वह भी इन्हीं का है।"

और अब वाकई शिहाब के खुशी से हाथ-पाँव फूल गए। उसने कनअँखियों से नीलोफ़र की तरफ़ देखा जो निहायत फ़ख्र से उसकी तरफ देख रही थी मगर निगाहें चार होते ही निगाहें फेर लीं। मिर्ज़ा साहब इस तमाम गुफ़्तगू से बेनियाज पेट पर हाथ रख कर टहल रहे थे मगर उनको ज़्यादा इन्तेजार न करना पड़ा। थोड़ी ही देर में गर्म चाय मय निहायत भरपूर नाश्ते के आ गई। और सब ने तो वाकई चाय पी अलबत्ता मिर्ज़ा साहब ने बड़ी तफ़्सील से नाश्ता भी किया।

इधर-उधर की बातों में वक़्त आखिर गुज़र ही गया और दिन की रोशनी

निकल आई चुनाँचे सुबह की चाय से फ़ारिग़ होते ही इस रोज़े-रोशन में खुद डाक्टर साहब और नीलोफ़र ने उस आहनी फाटक और उन सीढ़ियों का मुआइना किया। इकराम ने रात ही को रोशनी वग़ैरा के इन्तेज़ामात कर रखे थे चुनाँचे अब ये सब-के-सब उन सीढ़ियों से नीचे उतर गए। शिहाब ने बहुत चाहा कि नीलोफर साथ न जाय मगर वह न मानी और सबके साथ वह भी उस तैखाने में उतर गई। ये सीढ़ियाँ एक जगह जाकर खत्म हो गईं और सामने सिर्फ एक बुत नजर आया जो क़द्दे आदम इस्तादा (खड़ा हुआ) था उस पर सिर्फ़ ४७ का हिन्दसा दर्ज था। चुनाँचे अर्जमन्द ने पहले नक़्शे में ४६ का हिन्दसा तलाश किया उसके बाद रिसाला ढूंढा तो ४७ के हिन्दसे के सामने फिर 'गालिब' का शेर नजर आया :

भरम खुल जाय ज़ालिम तेरी क़ामत की दराज़ी का
अगर इस तुर्रे-ए-पुरपेचो-खम का पेचो-खम निकले

अभी ये लोग समझने की कोशिश ही कर रहे थे कि नीलोफ़र ने आगे बढ़-कर उस बुत के सिर पर बंधी हुई पगड़ी को टटोला और उसको महसूस हुआ कि एक आहनी कमानीन्सी है जो सिर पर बंधी हुई है। उसने उस कमानी को पकड़ कर खीचना चाहा मगर वह इस क़दर सख्त थी कि उसके हाथ से छूट कर फिर बुत के सिर पर जा लगी। अब शिहाब ने ज़ोर-आज़माई की और उसने उस कमानी का सिर पकड़ कर उसके पेंच निकालना शुरू कर दिए। यहाँ तक कि सारी कमानी खुल गई और उस बुत के सिर पर अब एक कील सी नज़र आने लगी। शिहाब ने पहले तो उसको दबाना चाहा, फिर ऊपर को उभारा ही था कि वह बुत भी दो हिस्सों में तक़्सीम हो कर दर्वाज़े की तरह खुल गया और अन्दर जो रोशनी गई तो मालूम हुआ कि वह एक दालान-सा है। इकराम ने मशअल अपने हाथ में लेकर उस दालान में कदम रखा और अन्दर ही से वफ़ूरे-मुसर्रत में चीखा, "आ जाओ अन्दर ! मिल गया सब कुछ !"

और सब-के-सब मय मुतद्दिद (अनेक) मशअलों के उस दालान में पहुँच गए जहाँ ुख्तलिफ़ मेज़ों पर कुछ थैलियाँ-सी रखी हुई थीं और चन्द सरबमुहर बर्तन थे। शिहाब ने आगे बढ़कर एक थैली मेज़ पर उल्टी तो जगमगाती हुई अंगूठियाँ

ढेर हो गईं। नीलोफ़र ने बढ़कर एक अंगूठी उठाई ही थी कि शिहाब ने उसके हाथों से वह अंगूठी छीनकर अपने हाथ से उसकी उंगली में पहना दी । ऐन उसी वक़्त क़रीब ही से डाक्टर साहब की आवाज़ आई, "बिस्मिल्ला कह कर पहनाओ बेटा ! यह रस्म इसी मुबारक मौके पर अदा होना चाहिए थी।" और यह कहकर एक दूसरी अंगूठी उठा कर रशीद को दी, "तुम भी मेरे बेटे हो यह अंगूठी अपने हाथ से रुबी को चलकर पहनाना जिसे मैं अपनी ही बेटी समझता हूँ।"

इस के बाद वही कुछ हुआ जो अब तक होता चला आया है। यानी शादियाँ !

शौकत थानवी की अन्य रचनायें

मोर साहब की ईद	मूल्य	३.७५
ग़ज़ाला	,,	३.७५
नसीम	,,	३.५०
इन्शा अल्लाह	,,	३.००
कुतिया	,,	४.२५
कार्टून	,,	४.२५
दिल फेंक	,,	२.७५
चार सौ बीस	,,	३.२५
साँच को आँच	,,	३.२५
खानम खाँ	,,	१.२५
सौतिया चाह	,,	१.२५